CUET (UG-Entrance)

प्रश्न पत्र-2023 (हल सहित)

चौखम्बा

संस्कृतपथप्रवेशिका

केन्द्रीय विश्वविद्यालय (बी. ए. संस्कृत/शास्त्री)
प्रवेश परीक्षा हेतु एकमात्र विश्वसनीय पुस्तक

- CUET (UG- Entrance) के नवीन पाठ्यक्रम पर आधारित प्रत्येक बिन्दु का विश्लेषण
- उदाहरण, आरेख, टेबल आदि माध्यमों से विषयों का सरल प्रस्तुतिकरण
- विषयानुसार प्रश्नों का अभ्यास
- राष्ट्रीय व राज्यस्तरीय प्रतियोगिता एवं संस्कृत विषयक अन्य परीक्षा हेतु भी उपयोगी

BHU, DU, JNU, AU, JMI & OTHER CENTRAL UNIVERSITIES

करुणेश कुमार पाण्डेय

॥ श्री ॥

नागरदास संस्कृत ग्रन्थमाला
३१

चौखम्बा

संस्कृतपथप्रवेशिका

केन्द्रीय विश्वविद्यालय (बी.ए. शास्त्री-संस्कृत)
प्रवेश परीक्षा हेतु एक मात्र विश्वसनीय पुस्तक

लेखक :
करूणेश कुमार पाण्डेय

चौखम्बा संस्कृत पुस्तकालय
पत्रमञ्जूषा-संख्या १०९१
सी.के. २८/१५, ज्ञानवापी-चौक
वाराणसी-२२१ ००१ (भारत)
फोन: ०५४२-२४०११७०

संस्कृतपथप्रवेशिका
ISBN : 978-81-938049-7-1
Page No. : X+278

प्रकाशक
चौखम्बा संस्कृत पुस्तकालय
पत्रमञ्जूषा-संख्या १०९१
सी.के. २८/१५, ज्ञानवापी-चौक
वाराणसी-२२१ ००१ (भारत)
फोन : ०५४२-२४०११७०
E-mail : cspustakalaya@yahoo.com

प्रथम संस्करण : सन् २०२४
वि.सं. २०८०

अन्य प्राप्तिस्थान
चौखम्बा अमरभारती प्रकाशन
पत्रमञ्जूषा-संख्या ११३८
के. ३७/१३० गोपाल मन्दिर लेन
वाराणसी-२२१ ००१ (भारत)
फोन : ०५४२-२३३३५०८
E-mail : capvns@yahoo.com

शुभाशंसा

सूक्ष्माय शुचये तस्मै नमो वाक्तत्वतन्तवे ।
विचित्रो यस्य विन्यासो विदधाती जगत्पटम् ।।
तद्दिव्यभव्ययं धाम सारस्वतमुपास्महे ।
यत्प्रसादत् प्रलीयन्ते मोहान्धतमसस्छटाः ।।

सफलता जीवन का ऐसा पक्ष है; जिसे समाज में रहने वाला प्रत्येक मनुष्य प्राप्त करना चाहता है ।जीवनयापन करता हर व्यक्ति अपने प्रत्येक कार्यव्यापार में, प्रत्येक भूमिका के निर्वाह में एवं प्रत्येक धर्म के परिपालन में सफल होना चाहता है । ज्ञान-विज्ञान, उद्योग-व्यापार,खाद्योन्नात्पादन एवं संरक्षण,चिकित्सा,प्रौद्योगिकी, अभियान्त्रिकी, प्रबन्धन,प्रशासन,सुरक्षा, नीतिनिर्धारण, कलाप्रदर्शन इत्यादि । भिन्न क्षेत्रों से जुड़े छोटे से लेकर बड़े उत्तरदायित्व का वहन करने वाले व्यक्ति तत् तद् क्षेत्रों में सफल होना चाहते हैं । मातापिता अपनें गृहस्थ धर्म का भली प्रकार सम्पादन कर अपनी सन्तानों को सफल होते देखना चाहते हैं । शिक्षा के क्षेत्र में भी यही स्थिति है । आचार्य गण अपने आचार्य धर्म के निर्वाह में ज्ञान के आदान प्रदान संलग्न होकर यशो- भाजन हुआ करते हैं तो विद्यार्थीवृन्द अपने ज्ञानार्जन रूपी यज्ञ में परिश्रम रूपी समिधाओं को प्रज्ज्वलित कर अभ्यास रूपी हवि प्रदान कर ज्ञान रूपी फल पाना चाहता हैं । ज्ञानार्जन भी निष्प्रयोजन नहीं होता । इसके माध्यम से व्यक्ति पद-प्रतिष्ठा, गौरव, सामाजिक सम्मान, पुरस्कार, धन-वैभव आदि अनेक ऐहिक कामनाओं की संसिद्धि करता हैं । इस सफलता, इस ज्ञानार्जन रूपी फल को प्राप्त करने के अनेक सोपान होते हैं । पुस्तकों को पढ़ना, पढ़े हुए पाठ को स्मरण रखना तदनुरूप-अभ्यास करना, विभिन्न परीक्षाओं में परीक्षार्थी के रूप में परीक्षा देना, अच्छे अंक प्राप्त कर सफल होना, उपाधि साफल्य रूपी शिखर को प्राप्त करने के अनेक सोपान हैं । ज्ञानार्जन में पुस्तकें बहुत सहायक होती हैं । ये सूचनाओं का भण्डार होती हैं, व्यक्ति के लिए निधि स्वरूप हुआ करती हैं । इनका अध्ययन कर व्यक्ति शिक्षित, सजग, जागरूक, ज्ञानी एवं गुणग्राही बनता है ज्ञानोपलब्धि में सहायक एवं ऐसी ही निधि का संचय किया है; करूणेश पाण्डेय जी ने। उनकी सूक्ष्मेक्षिका ने शास्त्री एवं बी.ए की कक्षाओं में अध्यनेच्छुक विद्यार्थीयों की कठिनाइयों को सभक्ता और उनके लिए सरल भाषा में सभी प्रष्टव्य विषयों की जानकारी देने वाली पुस्तक की परिकल्पना की और उसे 'संस्कृतपथप्रवेशिका' शीर्षक से आकार प्रदान किया।

इस पुस्तक में शास्त्री/B.A की प्रवेश परीक्षा में पूछे जाने योग्य विषयों यथा शब्दरूपों, धातुरूपों, सन्धियों, समासों, प्रत्ययों, छन्दों, अलंकारों के वर्णन के साथ संस्कृत साहित्य विषयक सामान्य विषय भी सरल भाषा में दिया गया है । यह पुस्तक संस्कृत अध्ययन की पारम्परिक पृष्ठभूमि न रखने वाले उन सभी विद्यार्थियों के लिए उपयोगी होगी; जो उच्च कक्षाओं में प्रविष्ट हेतु प्रतियोगी परीक्षाओं की तैय्यारी कर रहे हैं। मैं करूणेश पाण्डेय जी को इस हेतु हार्दिक साधुवाद देती हुँ और उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करती हुँ ।

दिनांक
18/04/2023

मनुलता शर्मा
प्रोफेसर एवं पूर्व विभागाध्यक्ष
संस्कृत विभाग कला संकाय
काशीहिन्दूविश्वविद्यालय

भूमिका

वर्तमान युग संस्कृत का युग है। संस्कृत का स्वर्णिम काल कहें तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। संस्कृत में शोध क्रियात्मक अनुसंधान एवं संगणक इत्यादि आधुनिक संसाधनों से जोड़ने का उपक्रम किया जा रहा है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के आने से संस्कृत मुख्यधारा में आ गई। शिक्षा एवं उच्च शिक्षा के लिए पर्याप्त अध्ययन सामग्री उपलब्ध है, परंतु किसी भी भाषा एवं साहित्य की रीढ़ नवनिहाल छात्र होते हैं। पारंपरिक विषय से उत्तर मध्यमा उत्तीर्ण छात्र एवं आधुनिक-परम्परा से इंटरमीडिएट उत्तीर्ण छात्र जब संस्कृत विषय के साथ शिक्षा का सपना देखता है तो उसके सामने सबसे बड़ी चुनौती स्नातक प्रवेश परीक्षा की होती है। बड़े ही हर्ष का विषय है कि स्नातक (BA) स्तरीय संयुक्त प्रवेश परीक्षा संस्था ने एक समुचित पाठ्यक्रम निर्धारित किया परंतु इसके मार्गदर्शन हेतु वर्तमान समय में ऐसी कोई समग्र पुस्तक नहीं दिखती जिसमें संस्कृत सम्बन्धित समस्त पाठ बिन्दु उपलब्ध हो।

छात्र जीवन में मैं भी इस समस्या का सामना कर चुका हू अतः इससे प्रेरित होकर अथवा सीख लेकर अपने छोटे भाइयों, अनुजों के सुगमता हेतु यह नवीन संकलन का कार्य करने जा रहा हूँ। इसके प्रेरणा भी आप लोग हैं अतः मेरी संकल्पना इस संस्कृत-पथ-प्रवेशिका के रूप में साकार हुई।

मुझे आशा है कि यह संस्कृतपथप्रवेशिका BA संस्कृत व शास्त्री (परम्परागत और आधुनिक) में प्रवेश के लिए CUET UG (Central University Entrance Test-Under Graduation) की तैयारी कर रहे छात्रों को सुगम मार्ग उपलब्ध करायेगी।

करूणेश कुमार पाण्डेय
शोधच्छात्र
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय
वाराणसी (उ०प्र०)

आभार

भवानीशङ्करौ वन्दे श्रद्धा विश्वास रूपिणौ ।
याभ्यां विना न पश्यन्ति सिद्धाः स्वान्तस्थमीश्वरम् ।।

गुरुजनों व श्रेष्ठजनों एवं मातापिता के चरणों में प्रणाम व छोटे अनुजों को स्नेह। आज सम्पूर्ण विश्व की प्राचीन नगरी काशी में भगवती भागरथी के तट पर विद्यमान ज्ञान के स्त्रोतबाबा विश्वनाथ से प्राप्त ज्ञान के लेशमात्र से अनुगृहीत मैं, पूज्य श्रीमहामना के चरणों में प्रणतिपूर्वक् सम्पूर्ण भारत के विद्यार्थियों के सुगमता हेतु इस पुस्तक का संकलन कर रहा हूँ। मुझे विश्वास है कि इस जाह्नवी के तट पर परम्परा से प्राप्त यह धारा संस्कृतानुरागी विद्यार्थियों को संस्कृतरूपी पथ पर चलने हेतु सुगम मार्ग उपलब्ध करायेगी। इस पुस्तक को आप तक प्राप्त कराने में बहुत लोगों का योगदान रहा है, जिनके अनन्य सहयोग से इस कार्य को प्रगति मिली। हमारे साथ इस धारा को गति देने के लिए पुत्रवत् स्नेही अभिषेक पाण्डेय जी और हृदयस्थ मित्र सुधांशु कु० तिवारी जी विशेष आभार जिनके योगदान से इस कार्य की प्रेरणा व सम्पूर्णता मिली। पितृवत् स्नेह हमारे बड़े भाई आचार्य राजकिशोर पाण्डेय जी का रहा। सखायो मे लोकेऽतुलहृदयिनः कल्पतरवः- अन्य प्रमुख मित्र गौरव तिवारी, सुनील झा, शुभम कुकरेती, मोहित चन्द्र परगाँई गौरीशंकर और प्रवीण जोशी, नेहा सिंह आदि का रहा, जिनके सहयोग से इस ज्ञानरूपी जाह्नवी के प्रवाह में जाने की ऊर्जा प्राप्त हुई। आदरणीय गुरुजनों की कृपा से हमारे द्वारा यह प्रथम प्रयास किया गया है । विशेष रूप से ग्रन्थ की साज सज्जा एवं प्रूफ आदि में सहायक चौखम्बा संस्कृत पुस्तकालय के श्रेष्ठी श्री रविन्द्र कुमार गुप्त जी एवं अग्रणी श्री नितेश कुमार गुप्त जी के प्रति अपना आभार व्यक्त करता हूँ और यह पूर्णतः प्रयास किया गया कि आप सभी पाठकगण के पास यह पुस्तक त्रुटि-रहित प्राप्त हो, यदि कुछ त्रुटि प्राप्त होती है तो हमें अवश्य सूचित करें आपकी सलाह सर्वोपरि है।। इसी के साथ मैं सात्रपूर्णा बाबा विश्वनाथ के चरणों में प्रणाम करता हूँ।

करूणेश कुमार पाण्डेय

Sanskrit (Domain) - 325 (पाठ्यक्रम)

Note:There will be one Question Paper with 50 questions, out of which 40 must be attempted.

1. शब्दरूपाणि- वाक्येषु विभक्तिप्रयोगाः

- अजन्ताःबालक, फल, रमा, कवि, मति, वारि, नदी, शिशु, धेनु, मधु, पितृ, मातृ, द्वितीय, सखि, दातृ, नृ,स्वसृ, अक्षि
- हलन्ताःराजन्, भवत्, आत्मन्, विद्वस्, वाच्, पथिन्, मरुत्, तादृक्, दिश्, धनिन्, पञ्चन्, अष्टन्, नवन्, दशन्
- सर्वनामानि :सर्व, तत्, यत्, किम्, इदम् (त्रिषु लिङ्गेषु), अस्मद्, युष्मद् ।

2. धातुरूपाणि

- **परस्मैपदिनः-**गम्, नम्, अस्, हस्, श्रु, नश्, आप्, शक् इष्, प्रच्छ्, कृ, ज्ञा, भक्ष्, चिन्त्, नृत्, कथ्, नी, पच् (लट्, लृट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ् इति पञ्चलकारेषु प्रयोगाः)
- **आत्मनेपदिनः-** लभ्, सेव्, वन्द्, याच् (लट्-लृट्-लङ् लकारेषु)

3. सन्धयः सन्धिविच्छेदाः च

- **स्वरसन्धिः-** दीर्घः गुणः, वृद्धिः, यण्, अयादिः, पूर्वरूपम्
- **व्यञ्जनसन्धिः -** श्चुत्वम्, ष्टुत्वम्, जश्त्वम्, अनुनासिकः, अनुस्वारः, परसवर्णः
- **विसर्गसन्धिः -** उत्वम्, रत्वम्, लोपः, विसर्गस्थाने स्, श्, ष्

4. समासाः विग्रहाः च

- **अव्ययीभावः -** यथा, प्रति, उप, अनु, निर्, सह, अधि ।
- **द्वन्द्वः -** इतरेतरद्वन्द्वः, समाहारः, एकशेषः ।
- **तत्पुरुषः -** विभक्तितत्पुरुषः, कर्मधारयः, द्विगुः, उपपदतत्पुरुषः ।
- **बहुव्रीहिः**

5. प्रत्ययाः -

- **कृत्-प्रत्ययाः -** क्त, क्तवतु, तव्य, अनीयर्, शतृ, शानच् क्तिन् ।
- **तद्धित प्रत्ययाः -** मतुप्, इन्, ठक्, ठञ्, त्व, तल्

- **स्त्री-प्रत्ययौ -** टाप्, ङीप् ।

6. उपपदविभक्तिप्रयोगाः
7. भाषिककार्यम्
   - **विशेषण-** विशेष्यपदचयनम्
   - **कर्तृक्रिया-**पदचयनम्
   - पर्याय / विलोमपदचयनम्
8. **छन्दसां सोदाहरणलक्षणपरिचयः श्लोकेषु छन्दोऽभिज्ञानम्**
   - **छन्दांसि –** अनुष्टुभ्, उपजातिः, वंशस्थम्, वसन्ततिलका, मालिनी, शिखरिणी, शार्दूलविक्रीडितम्, मन्दाक्रान्ता ।
9. **शब्दालङ्काराः अर्थालङ्काराः च**
   - **शब्दालङ्काराः -** अनुप्रासः, यमकः, श्लेषः ।
   - **अर्थालङ्काराः -** उपमा, रूपकम्, उत्प्रेक्षा, अर्थान्तरन्यासः ।
10. **संस्कृतसाहित्यस्य सामान्यपरिचयः**

विषयानुक्रमणिका

यूनिट-1

अजन्ताः

बालक, फल, रमा, कवि, मति, वारि, नदी, शिशु, धेनु, मधु, पितृ, मातृ, द्वितीय, सखि, दातृ, नृ, स्वस्, अक्षि।

अकारान्त पुंल्लिङ्ग

बालकः (बालक)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	बालकः	बालकौ	बालकाः
द्वितीया	बालकम्	बालकौ	बालकान्
तृतीया	बालकेन	बालकाभ्याम्	बालकैः
चतुर्थी	बालकाय	बालकाभ्याम्	बालकेभ्यः
पञ्चमी	बालकात् /बालकाद्	बालकाभ्याम्	बालकेभ्यः
षष्ठी	बालकस्य	बालकयोः	बालकानाम्
सप्तमी	बालके	बालकयोः	बालकेषु
सम्बोधन	हे बालक !	हे बालकौ !	हे बालकाः !

अन्य अकारान्त पुंलिङ्ग शब्द

राम,कृष्ण, वृक्ष, कोविद (विद्वान्), सिंह (शेर), नृप, चन्द्र, चिकित्सक (डॉक्टर), नाग (साँप), छात्र,अश्व, वैद्य (डॉक्टर), जनक (पिता), नर, वानर, मधुप (भौंरा), सुत (पुत्र), पुत्र, सुर, खग (पक्षी), कर (हाथ), मूषक, अर्चक (पुजारी), तस्कर (चोर), नायक (हीरो), मातुल, काण (काना), गर्दभ (गदहा), गायक (गाने वाला), गज, कृपण (कंजूस), याचक (भिक्षुक), चालक (ड्राइवर), सर्प, विप्र (ब्राह्मण), इन्द्र, कूप, नारिकेल (नारियल), गणेश, तडाग, केशव (कृष्ण), मयूर आदि अनेक अकारान्त पुंलिङ्ग शब्दों के रूप 'बालक' की तरह चलेंगे।

फल (नपुंसक लिंग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	फलम्	फले	फलानि
द्वितीया	फलम्	फले	फलानि
तृतीया	फलेन	फलाभ्याम्	फलैः
चतुर्थी	फलाय	फलाभ्याम्	फलेभ्यः
पञ्चमी	फलात्/फलाद्	फलाभ्याम्	फलेभ्यः
षष्ठी	फलस्य	फलयोः	फलानाम्
सप्तमी	फले	फलयोः	फलेषु
सम्बोधन	हे फल !	हे फले !	हे फलानि !

अन्य अकारान्त नपुंसकलिङ्ग शब्द

मित्रम्, पापम्, उपनेत्रम्, उद्यानम्, उदकम्, रत्नम्, मुखम्, क्रीडनकम्, कमलम्, ज़लजम्, वचनम्, पात्रम्, गृहम्, कार्यम्, कुसुमम्, मौनम्, द्वारम्, फलकम्, चरणम्, उदरम्, पुस्तकम्, सोपानम्, समाचारपत्रम्, तैलम्, पृष्ठम्, वस्त्रम्, मन्दिरम् अक्षरम्, धनम्, नयनम्, कारयानम्, जलम्, अरण्यम्, ज्ञानम्, सुखम्, व्यजनम्, दुग्धम्, अमृतम्, दुःखम्, चित्रम्, तिलकम्, आसनम् आदि। नोट- उपर्युक्त शब्दों के रूप 'फल' की तरह बनाइये।

अजन्तस्त्रीलिङ्गप्रकरणम्

रमा (लक्ष्मी)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	रमा	रमे	रमाः
द्वितीया	रमाम्	रमे	रमाः
तृतीया	रमया	रमाभ्याम्	रमाभिः
चतुर्थी	रमायै	रमाभ्याम्	रमाभ्यः
पञ्चमी	रमायाः	रमाभ्याम्	रमाभ्यः

षष्ठी	रमायाः	रमयोः	रमाणाम्
सप्तमी	रमायाम्	रमयोः	रमासु
सम्बोधन	हे रमे !	हे रमे !	रमाः !

दुर्गा=पार्वती, अम्बिका=दुर्गा । विद्या, दया, कृपा, गङ्गा, नर्मदा, इन्दिरा, चण्डिका । अम्बा, अक्का, अल्ला ये तीनों शब्द माता के पर्याय हैं। गोपा=गायों की रक्षा करने वाली । कन्या=लड़की । लज्जा=लाज। छाया छाँह । कथा=कहानी। तृष्णा=प्यास । आज्ञा=आज्ञा, क्रीडा=खेल । चिन्ता=सोच । कान्ता=स्त्री ! निशा=रात। आशा=उम्मीद । परीक्षा । शोभा=सौन्दर्य । वार्ता=बात । सन्ध्या=सायंकाल ।

इकारान्त पुल्लिंग शब्द

कवि (कवि)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	कविः	कवी	कवयः
द्वितीया	कविम्	कवी	कवीन्
तृतीया	कविना	कविभ्याम्	कविभिः
चतुर्थी	कवये	कविभ्याम्	कविभ्यः
पञ्चमी	कवेः	कविभ्याम्	कविभ्यः
षष्ठी	कवेः	कव्योः	कवीनाम्
सप्तमी	कवौ	कव्योः	कविषु
सम्बोधन	हे कवे !	हे कवी !	हे कवयः !

अन्य इकारान्त पुंल्लिङ्ग शब्द

अग्नि (आग), मणि (मणि), अरि (शत्रु), अहि (साँप), यति (संन्यासी), अतिथि (मेहमान), कपि (वानर), राशि (ढेर), उदधि (समुद्र), ध्वनि (आवाज), सभापति (सभाध्यक्ष), गिरि (पहाड़), पशुपति (शिव), परिधि (एक रेखा), नृपति (राजा), पाणिनि (वैयाकरण), आधि (मानसिक कष्ट), मारुति (हनुमान्), सन्धि (मेल), अवधि (सीमा), रमापति (विष्णु), सारथि (ड्राइवर), प्रणिधि (प्रार्थना), विधि

(तरीका), उपाधि (उपाधि), रश्मि (किरण), समाधि (समाधि), निधि (खजाना), अद्रि (पर्वत), पाणि (हाथ), बलि (राजा बलि), अवि (भेंड) आदि।

नोट- इसीप्रकार सभी इकारान्त पुंलिङ्ग शब्दों के रूप 'कवि' के समान बना लीजिए।

इकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द

मति (बुद्धि)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	मतिः	मती	मतयः
द्वितीया	मतिम्	मती	मतीः
तृतीया	मत्या	मतिभ्याम्	मतिभिः
चतुर्थी	मत्यै/मतये	मतिभ्याम्	मतिभ्यः
पञ्चमी	मत्याः/मतेः	मतिभ्याम्	मतिभ्यः
षष्ठी	मत्याः/मतेः	मत्योः	मतीनाम्
सप्तमी	मत्याम्/मतौ	मत्योः	मतिषु
सम्बोधन	हे मते !	हे मती !	हे मतयः !

बुद्धि=मति मूर्ति=मूरत : भक्ति=भक्ति प्रीति=प्यार स्तुति=बड़ाई । श्रुति=वेद । धृति=धैर्य स्मृति=याद कीर्ति=यश कान्ति=शोभा । जाति=जात । मुक्ति=छूट। रात्रि रात भूमि=जमीन शक्ति : ताकत रीति=रिवाज । आकृति शकल। हानि=नुकसान रुचि=इच्छा । दृष्टि=नजर । वृष्टि=वर्षा । सृष्टि=दुनिया वीचि=लहर

इकारान्त नपुंसकलिङ्ग शब्द

वारि (पानी)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	वारि	वारिणी	वारीणि
द्वितीया	वारि	वारिणी	वारीणि
तृतीया	वारिणा	वारिभ्याम्	वारिभिः

चतुर्थी	वारिणे	वारिभ्याम्	वारिभ्यः
पञ्चमी	वारिणः	वारिभ्याम्	वारिभ्यः
षष्ठी	वारिणः	वारिणोः	वारीणाम्
सप्तमी	वारिणि	वारिणोः	वारिषु
सम्बोधन	हे वारि/हे वारे !	हे वारिणी !	हे वारीणि !

इकारांत स्त्रीलिङ्ग शब्द

नदी (नदी)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	नदी	नद्यौ	नद्यः
द्वितीया	नदीम्	नद्यौ	नदीः
तृतीया	नद्या	नदीभ्याम्	नदीभिः
चतुर्थी	नद्यै	नदीभ्याम्	नदीभ्यः
पञ्चमी	नद्याः	नदीभ्याम्	नदीभ्यः
षष्ठी	नद्याः	नद्योः	नदीनाम्
सप्तमी	नद्याम्	नद्योः	नदीषु
सम्बोधन	हे नदि !	हे नद्यौ !	हे नद्यः !

उकारान्त पुलिङ्ग शब्द

शिशु (छोटा बालक)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	शिशुः	शिशू	शिशवः
द्वितीया	शिशुम्	शिशू	शिशून्
तृतीया	शिशुना	शिशुभ्याम्	शिशुभिः
चतुर्थी	शिशवे	शिशुभ्याम्	शिशुभ्यः
पञ्चमी	शिशोः	शिशुभ्याम्	शिशुभ्यः

षष्ठी	शिशोः	शिश्वोः	शिशूनाम्
सप्तमी	शिशौ	शिश्वोः	शिशुषु
सम्बोधन	हे शिशो !	हे शिशू !	हे शिशवः !

उकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द

धेनु (गाय)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	धेनुः	धेनू	धेनवः
द्वितीया	धेनुम्	धेनू	धेनूः
तृतीया	धेन्वा	धेनुभ्याम्	धेनुभिः
चतुर्थी	धेन्वै/धेनवे	धेनुभ्याम्	धेनुभ्यः
पञ्चमी	धेन्वाः/धेनोः	धेनुभ्याम्	धेनुभ्यः
षष्ठी	धेन्वाः/धेनोः	धेन्वोः	धेनूनाम्
सप्तमी	धेन्वाम्/धेनौ	धेन्वोः	धेनुषु
सम्बोधन	हे धेनो !	हे धेनू !	हे धेनवः !

मधु मद्य (शराब)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	मधु	मधुनी	मधूनि
द्वितीया	मधु	मधुनी	मधूनि
तृतीया	मधुना	मधुभ्याम्	मधुभिः
चतुर्थी	मधुने	मधुभ्याम्	मधुभ्यः
पञ्चमी	मधुनः	मधुभ्याम	मधूभ्यः
षष्ठी	मधुनः	मधुनोः	मधूनाम्
सप्तमी	मधुनि	मधुनोः	मधुषु
सम्बोधन	हे मधु / मधो !	हे मधुनी !	हे मधूनी !

ऋकारान्त पुलिङ्ग शब्द

पितृ (पिता)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	पिता	पितरौ	पितरः
द्वितीया	पितरम्	पितरौ	पितृन्
तृतीया	पित्रा	पितृभ्याम्	पितृभिः
चतुर्थी	पित्रे	पितृभ्याम्	पितृभ्यः
पञ्चमी	पितुः	पितृभ्याम्	पितृभ्यः
षष्ठी	पितुः	पित्रोः	पितृणाम्
सप्तमी	पितरि	पित्रोः	पितृषु
सम्बोधन	हे पितः !	हे पितरौ !	हे पितरः !

ऋकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द

मातृ (माता)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	माता	मातरौ	मातरः
द्वितीया	मातरम्	मातरौ	मातृः
तृतीया	मात्रा	मातृभ्याम्	मातृभिः
चतुर्थी	मात्रे	मातृभ्याम्	मातृभ्यः
पञ्चमी	मातुः	मातृभ्याम्	मातृभ्यः
षष्ठी	मातुः	मात्रोः	मातृणाम्
सप्तमी	मातरि	मात्रोः	मातृषु
सम्बोधन	हे मातः !	हे मातरौ !	हे मातरः !

द्वितीय (दूसरा)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	द्वितीयः	द्वितीयौ	द्वितीयाः
द्वितीया	द्वितीयम्	द्वितीयौ	द्वितीयान्
तृतीया	द्वितीयेन	द्वितीयभ्याम्	द्वितीयैः
चतुर्थी	द्वितीयस्मै	द्वितीयभ्याम्	द्वितीयेभ्यः
पञ्चमी	द्वितीयस्मात्	द्वितीयभ्याम्	द्वितीयेभ्यः
षष्ठी	द्वितीयस्य	द्वितीययोः	द्वितीयानाम्
सप्तमी	द्वितीयस्मिन्	द्वितीययोः	द्वितीयेषु
सम्बोधन	हे द्वितीय !	हे द्वितीयौ !	हे द्वितीयाः !

सखि (मित्र)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सखा	सखायौ	सखायः
द्वितीया	सखायम्	सखायौ	सखीन्
तृतीया	सख्या	सखिभ्यम्	सखिभिः
चतुर्थी	सख्ये	सखिभ्याम्	सखिभ्यः
पञ्चमी	सख्युः	सखिभ्याम्	सखिभ्यः
षष्ठी	सख्युः	सख्योः	सखीनाम्
सप्तमी	सख्यौ	सख्योः	सखिषु
सम्बोधन	हे सखे !	हे सखायौ !	हे सखायः!

दातृ (देने वाला)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	दाता	दातारौ	दातारः
द्वितीया	दातारम्	दातरौ	दातृन्
तृतीया	दात्रा	दातृभ्याम्	दातृभिः
चतुर्थी	दात्रे	दातृभ्याम्	दातृभ्यः
पञ्चमी	दातुः	दातृभ्याम्	दातृभ्यः
षष्ठी	दातुः	दात्रोः	दातृणाम्
सप्तमी	दातरि	दात्रोः	दातृषु
सम्बोधन	हे दातः !	हे दातारौ !	हे दातारः !

ऋकारान्त पुलिङ्ग शब्द

नृ (मनुष्य)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	ना	नरौ	नरः
द्वितीया	नरम्	नरौ	नॄन्
तृतीया	न्रा	नृभ्याम्	नृभिः
चतुर्थी	न्रे	नृभ्याम्	नृभ्यः
पञ्चमी	नुः	नृभ्याम्	नृभ्यः
षष्ठी	नुः	न्रोः	नृणाम्/ नॄणाम्
सप्तमी	नरि	न्रोः	नृषु
सम्बोधन	हे नः !	हे नरौ !	हे नरः !

ऋकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द

स्वसृ (भगिनी)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	स्वसारौ	स्वसारौ	स्वसारः
द्वितीया	स्वसारम्	स्वसारौ	स्वसॄः
तृतीया	स्वस्रा	स्वसृभ्याम्	स्वसृभिः

चतुर्थी	स्वस्रे	स्वसृभ्याम्	स्वसृभ्यः
पञ्चमी	स्वसुः	स्वसृभ्याम्	स्वसृभ्यः
षष्ठी	स्वसुः	स्वस्रोः	स्वसृणाम्
सप्तमी	स्वसरि	स्वस्रोः	स्वसृषु
सम्बोधन	हे स्वसः !	हे स्वसारौ !	हे स्वसारः !

इकारान्त नपुंसकलिङ्ग शब्द

अक्षि (नेत्र)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	अक्षि	अक्षिणी	अक्षीणि
द्वितीया	अक्षि	अक्षिणी	अक्षीणि
तृतीया	अक्ष्णा	अक्षिभ्याम्	अक्षिभिः
चतुर्थी	अक्ष्णे	अक्षिभ्याम्	अक्षिभ्यः
पञ्चमी	अक्ष्णः	अक्षिभ्याम्	अक्षिभ्यः
षष्ठी	अक्ष्णः	अक्ष्णोः	अक्ष्णाम्
सप्तमी	अक्षिणि/अक्ष्णि	अक्ष्णोः	अक्षिषु
सम्बोधन	हे अक्षि/हे अक्षे !	हे अक्षिणी !	हे अक्षीणि !

हलन्ताः

राजन्, भवत्, आत्मन्, विद्वस् वाच् पथिन्, मरुत्, तादृक् दिश्, धनिन्, पञ्चन्, अष्टन्, नवन्, दशन्।

अकारान्त नपुंसकलिङ्ग शब्द

राजन् (राजा)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	राजा	राजानौ	राजानः
द्वितीया	राजानम्	राजानौ	राज्ञः

तृतीया	राज्ञा	राजभ्याम्	राजभिः
चतुर्थी	राज्ञे	राजभ्याम्	राजभ्यः
पञ्चमी	राज्ञः	राजभ्याम्	राजभ्यः
षष्ठी	राज्ञः	राज्ञोः	राज्ञाम्
सप्तमी	राज्ञि	राज्ञोः	राजसु
सम्बोधन	हे राजन् !	हे राजानौ !	हे राजानः !

भवत् (आप)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	भवान्	भवन्तौ	भवन्तः
द्वितीया	भवन्तम्	भवन्तौ	भवतः
तृतीया	भवता	भवद्भ्याम्	भवद्भिः
चतुर्थी	भवते	भवद्भ्याम्	भवद्भ्यः
पञ्चमी	भवतः	भवद्भ्याम्	भवद्भ्यः
षष्ठी	भवतः	भवतोः	भवताम्
सप्तमी	भवति	भवतोः	भवत्सु
सम्बोधन	हे भवान् !	हे भवन्तौ !	हे भवन्तः !

नकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द

आत्मन् (आत्मा)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	आत्मा	आत्मानौ	आत्मानः
द्वितीया	आत्मानम्	आत्मानौ	आत्मनः
तृतीया	आत्मना	आत्मभ्याम्	आत्मभिः
चतुर्थी	आत्मने	आत्मभ्याम्	आत्मभ्यः

पञ्चमी	आत्मनः	आत्मभ्याम्	आत्मभ्यः
षष्ठी	आत्मनः	आत्मनोः	आत्मानाम्
सप्तमी	आत्मनि	आत्मनोः	आत्मसु
सम्बोधन	हे आत्मन् !	हे आत्मानौ !	हे आत्मानः !

विद्वस् (पण्डित)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	विद्वान्	विद्वांसौ	विद्वांसः
द्वितीया	विद्वांसम्	विद्वांसौ	विदुषः
तृतीया	विदुषा	विद्वद्भ्याम्	विद्वद्भिः
चतुर्थी	विदूषे	विद्वद्भ्याम्	विद्वद्भ्यः
पञ्चमी	विदुषः	विद्वद्भ्याम्	विद्वद्भ्यः
षष्ठी	विदुषः	विदुषोः	विदुषाम्
सप्तमी	विदुषि	विदुषोः	विद्वत्सु
सम्बोधन	हे विद्वन् !	हे विद्वांसौ !	हे विद्वांसः !

वाच् (वाणी)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	वाक्/वाग्	वाचौ	वाचः
द्वितीया	वाचम्	वाचौ	वाचः
तृतीया	वाचा	वाग्भ्याम्	वाग्भिः
चतुर्थी	वाचे	वाग्भ्याम्	वाग्भ्यः
पञ्चमी	वाचः	वाग्भ्याम्	वाग्भ्यः
षष्ठी	वाचः	वाचोः	वाचाम्
सप्तमी	वाचि	वाचोः	वाक्षु
सम्बोधन	हे वाक्/वाग्	हे वाचौ	हे वाचः

पथिन् (मार्ग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	पन्थाः	पन्थानौ	पन्थानः
द्वितीया	पन्थानम्	पन्थानौ	पथः
तृतीया	पथा	पथिभ्याम्	पथिभिः
चतुर्थी	पथे	पथिभ्याम्	पथिभ्यः
पञ्चमी	पथः	पथिभ्याम्	पथिभ्यः
षष्ठी	पथः	पथोः	पथाम्
सप्तमी	पथि	पथोः	पथिषु
सम्बोधन	हे पन्थाः !	हे पन्थानौ !	हे पन्थानः !

मरुत् (वायु)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	मरुत्	मरुतौ	मरुतः
द्वितीया	मरुतम्	मरुतौ	मरुतः
तृतीया	मरुता	मरुद्भ्याम्	मरुद्भिः
चतुर्थी	मरुते	मरुद्भ्याम्	मरुद्भ्यः
पञ्चमी	मरुतः	मरुद्भ्याम्	मरुद्भ्यः
षष्ठी	मरुतः	मरुतोः	मरुताम्
सप्तमी	मरुति	मरुतोः	मरुत्सु
सम्बोधन	हे मरुत्/द् !	हे मरुतौ !	हे मरुतः!

तादृक् (वैसा)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	तादृक्/ तादृग्	तादृशौ	तादृशः
द्वितीया	तादृशम्	तादृशौ	तादृशः

तृतीया	तादृशा	तादृग्भ्याम्	तादृग्भिः
चतुर्थी	तादृशे	तादृग्भ्याम्	तादृग्भ्यः
पञ्चमी	तादृशः	तादृग्भ्याम्	तादृग्भ्यः
षष्ठी	तादृशः	तादृशोः	तादृशाम्
सप्तमी	तादृशि	तादृशोः	तादृक्षु
सम्बोधन	हे तादृक्/ तादृग्	हे तादृशौ!	हे तादृशः!

दिश् (दिशा)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	दिक्/दिग्	दिशौ	दिशः
द्वितीया	दिशम्	दिशौ	दिशः
तृतीया	दिशा	दिग्भ्याम्	दिग्भिः
चतुर्थी	दिशे	दिग्भ्याम्	दिग्भ्यः
पञ्चमी	दिशः	दिग्भ्याम्	दिग्भ्यः
षष्ठी	दिशः	दिशोः	दिशाम्
सप्तमी	दिशि	दिशोः	दिक्षु
सम्बोधन	हे दिक्/दिग् !	हे दिशौ !	हे दिशः !

धनिन् (धनवान)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	धनी	धनिनौ	धनिनः
द्वितीया	धनिनम्	धनिनौ	धनिनः
तृतीया	धनिना	धनिभ्याम्	धनिभिः
चतुर्थी	धनिने	धनिभ्याम्	धनिभ्यः
पञ्चमी	धनिनः	धनिभ्याम्	धनिभ्यः

षष्ठी	धनिनः	धनिनोः	धनिनाम्
सप्तमी	धनिनि	धनिनोः	धनिषु
सम्बोधन	हे धनिन् !	हे धनिनौ !	हे धनिनः !

पञ्चन्-नित्य बहुवचन (पाँच संख्या)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	×	×	पञ्च
द्वितीया	×	×	पञ्च
तृतीया	×	×	पञ्चभिः
चतुर्थी	×	×	पञ्चभ्यः
पञ्चमी	×	×	पञ्चभ्यः
षष्ठी	×	×	पञ्चानाम्
सप्तमी	×	×	पञ्चसु

अष्टन् -नित्य बहुवचन(आठ संख्या)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	×	×	अष्ट/ अष्टौ
द्वितीया	×	×	अष्ट/ अष्टौ
तृतीया	×	×	अष्टभिः/ अष्टाभिः
चतुर्थी	×	×	अष्टभ्यः/अष्टाभ्यः
पञ्चमी	×	×	अष्टभ्यः/ अष्टाभ्यः
षष्ठी	×	×	अष्टानाम्/अष्टानाम्
सप्तमी	×	×	अष्टसु/अष्टासु

नवन् -नित्य बहुवचन(नव संख्या)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	×	×	नव
द्वितीया	×	×	नव
तृतीया	×	×	नवभिः
चतुर्थी	×	×	नवभ्यः
पञ्चमी	×	×	नवभ्यः
षष्ठी	×	×	नवानाम्
सप्तमी	×	×	नवसु

दशन्-नित्य बहुवचन (दश संख्या)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	×	×	दश
द्वितीया	×	×	दश
तृतीया	×	×	दशभिः
चतुर्थी	×	×	दशभ्यः
पञ्चमी	×	×	दशभ्यः
षष्ठी	×	×	दशानाम्
सप्तमी	×	×	दशसु

सर्वनामानि

सर्व, तत्, यत्, किम्, इदम् (त्रिषु लिङ्गेषु), अस्मद्, युष्मद् ।

सर्व-पुल्लिङ्ग (सम्पूर्ण,सब)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सर्वः	सर्वौ	सर्वे
द्वितीया	सर्वम्	सर्वौ	सर्वान्
तृतीया	सर्वेण	सर्वाभ्याम्	सर्वैः
चतुर्थी	सर्वस्मै	सर्वाभ्याम्	सर्वेभ्यः
पञ्चमी	सर्वस्मात्	सर्वाभ्याम्	सर्वेभ्यः
षष्ठी	सर्वस्य	सर्वयोः	सर्वेषाम्
सप्तमी	सर्वस्मिन्	सर्वयोः	सर्वेषु
सम्बोधन	हे सर्व !	हे सर्वौ !	हे सर्वे!

सर्व-स्त्रीलिङ्ग (सम्पूर्ण,सब)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सर्वा	सर्वे	सर्वाः
द्वितीया	सर्वाम्	सर्वे	सर्वाः
तृतीया	सर्वया	सर्वाभ्याम्	सर्वाभिः
चतुर्थी	सर्वस्यै	सर्वाभ्याम्	सर्वाभ्यः
पञ्चमी	सर्वस्याः	सर्वाभ्याम्	सर्वाभ्यः
षष्ठी	सर्वस्याः	सर्वयोः	सर्वासाम्
सप्तमी	सर्वस्याम्	सर्वयोः	सर्वासु
सम्बोधन	हे सर्वे !	हे सर्वे !	हे सर्वाः !

सर्व- नपुंसकल्लिङ्ग (सम्पूर्ण,सब)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सर्वम्	सर्वे	सर्वाणि
द्वितीया	सर्वम्	सर्वे	सर्वाणि

तृतीया	सर्वेण	सर्वाभ्याम्	सर्वैः
चतुर्थी	सर्वस्मै	सर्वाभ्याम्	सर्वेभ्यः
पञ्चमी	सर्वस्मात्	सर्वाभ्याम्	सर्वेभ्यः
षष्ठी	सर्वस्य	सर्वयोः	सर्वेषाम्
सप्तमी	सर्वस्मिन्	सर्वयोः	सर्वेषु
सम्बोधन	हे सम् !	हे सर्वे !	हे सर्वाणि !

तत्-पुल्लिङ्ग (वह)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सः	तौ	ते
द्वितीया	तम्	तौ	तान्
तृतीया	तेन	ताभ्याम्	तैः
चतुर्थी	तस्मै	ताभ्याम्	तेभ्यः
पञ्चमी	तस्मात्	ताभ्याम्	तेभ्यः
षष्ठी	तस्य	तयोः	तेषाम्
सप्तमी	तस्मिन्	तयोः	तेषु

तत्-स्त्रीलिङ्ग (वह)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सा	ते	ताः
द्वितीया	ताम्	ते	ताः
तृतीया	तया	ताभ्याम्	ताभिः
चतुर्थी	तस्यै	ताभ्याम्	ताभ्यः
पञ्चमी	तस्याः	ताभ्याम्	ताभ्यः
षष्ठी	तस्याः	तयोः	तासाम्
सप्तमी	तस्याम्	तयोः	तासु

तत्-नपुंसकलिङ्ग (वह)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	तत्	ते	तानि
द्वितीया	तत्	ते	तानि
तृतीया	तेन	ताभ्याम्	तैः
चतुर्थी	तस्मै	ताभ्याम्	तेभ्यः
पञ्चमी	तस्मात्	ताभ्याम्	तेभ्यः
षष्ठी	तस्य	तयोः	तेषाम्
सप्तमी	तस्मिन्	तयोः	तेषु

यत्-पुल्लिङ्ग (जो)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	यः	यौ	ये
द्वितीया	यम्	यौ	यान्
तृतीया	येन	याभ्याम्	यैः
चतुर्थी	यस्मै	याभ्याम्	येभ्यः
पञ्चमी	यस्मात्	याभ्याम्	येभ्यः
षष्ठी	यस्य	ययोः	येषाम्
सप्तमी	यस्मिन्	ययोः	येषु

यत्-स्त्रीलिङ्ग (जो)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	या	ये	याः
द्वितीया	याम्	ये	याः
तृतीया	यया	याभ्याम्	याभिः
चतुर्थी	यस्यै	याभ्याम्	याभ्यः

पञ्चमी	यस्याः	याभ्याम्	याभ्यः
षष्ठी	यस्याः	ययोः	यासाम्
सप्तमी	यस्याम्	ययोः	यासु

यत्-नपुंसकलिङ्ग (जो)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	यत्	ये	यानि
द्वितीया	यत्	ये	यानि
तृतीया	येन	याभ्याम्	यैः
चतुर्थी	यस्मै	याभ्याम्	येभ्यः
पञ्चमी	यस्मात्	याभ्याम्	येभ्यः
षष्ठी	यस्य	ययोः	येषाम्
सप्तमी	यस्मिन्	ययोः	येषु

किम् पुल्लिङ्ग (क्या)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	कः	कौ	के
द्वितीया	कम्	कौ	कान्
तृतीया	केन	काभ्याम्	कैः
चतुर्थी	कस्मै	काभ्याम्	केभ्यः
पञ्चमी	कस्मात्/ कस्माद्	काभ्याम्	केभ्यः
षष्ठी	कस्य	कयोः	केषाम्
सप्तमी	कस्मिन्	कयोः	केषु

किम् -स्त्रीलिङ्ग (क्या)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	का	के	काः
द्वितीया	काम्	के	काः
तृतीया	कया	काभ्याम्	काभिः
चतुर्थी	कस्यै	काभ्याम्	काभ्यः
पञ्चमी	कस्याः	काभ्याम्	काभ्यः
षष्ठी	कस्याः	कयोः	कासाम्
सप्तमी	कस्याम्	कयोः	कासु

किम्-नपुंसकलिङ्ग (क्या)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	किम्	के	कानि
द्वितीया	किम्	के	कानि
तृतीया	केन	काभ्याम्	कैः
चतुर्थी	कस्यै	काभ्याम्	केभ्यः
पञ्चमी	कस्मात्/कस्माद्	काभ्याम्	केभ्यः
षष्ठी	कस्य	कयोः	केषाम्
सप्तमी	कस्मिन्	कयोः	केषु

इदम् पुल्लिङ्ग (यह)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	अयम्	इमौ	इमे
द्वितीया	इमम्/एनम्	इमौ/एनौ	इमान्
तृतीया	अनेन/एनेन	आभ्याम्	एभिः

चतुर्थी	अस्मै	आभ्याम्	एभ्यः
पञ्चमी	अस्मात्/ अस्माद्	आभ्याम्	एभ्यः
षष्ठी	अस्य	अनयोः/एनयोः	एषाम्
सप्तमी	अस्मिन्	अनयोः/एनयोः	एषु

इदम् स्त्रीलिङ्ग (यह)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	इयम्	इमे	इमाः
द्वितीया	इमाम्/एनाम्	इमे/एने	इमाः/एनाः
तृतीया	अनया/एनया	आभ्याम्	आभिः
चतुर्थी	अस्यै	आभ्याम्	आभ्यः
पञ्चमी	अस्याः	आभ्याम्	आभ्यः
षष्ठी	अस्याः	अनयोः/एनयोः	आसाम्
सप्तमी	अस्याम्	अनयोः/एनयोः	आसु

इदम्-नपुंसकलिङ्ग (यह)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	इदम्	इमे	इमानि
द्वितीया	इदम्/एनत्,द्	इमे/एने	इमानि/एनानि
तृतीया	अनेन/एनेन	आभ्याम्	एभिः
चतुर्थी	अस्मै	आभ्याम्	एभ्यः
पञ्चमी	अस्मात्/ अस्माद्	आभ्याम्	एभ्यः
षष्ठी	अस्य	अनयोः/एनयोः	एषाम्
सप्तमी	अस्मिन्	अनयोः/एनयोः	एषु

अस्मद् पुल्लिङ्ग (मैं)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	अहम्	आवाम्	वयम्
द्वितीया	माम्/मा	आवाम्/नौ	अस्मान्/नः
तृतीया	मया	आवाभ्याम्	अस्माभिः
चतुर्थी	मह्यम्/मे	आवाभ्याम्/नौ	अस्मभ्यम्/नः
पञ्चमी	मत्	आवाभ्याम्	अस्मत्
षष्ठी	मम/मे	आवयोः/नौ	अस्माकम्/नः
सप्तमी	मयि	आवयोः	अस्मासु

युष्मद् पुल्लिङ्ग (तू)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	त्वम्	युवाम्	यूयम्
द्वितीया	त्वाम्/त्वा	युवाम् /वां	युष्मान्/वः
तृतीया	त्वया	युवाभ्याम्	युष्माभिः
चतुर्थी	तुभ्यम्/ते	युवाभ्याम् / वां	युष्मभ्यम्/वः
पञ्चमी	त्वत्	युवाभ्याम्	युष्मत्
षष्ठी	तव /ते	युवयोः/ वां	युष्माकम्/वः
सप्तमी	त्वयि	युवयोः	युष्मासु

। यूनिट-1 इति ।

यूनिट-2

धातुरूपाणि

परस्मैपदिनः

गम्, नम्, अस्, हस्, श्रु, नश्, आप्, शक् इष्, प्रच्छ्, कृ, ज्ञा, भक्ष्, चिन्त्, नृत्, कथ्, नी, पच् (लट्, लृट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ् इति पञ्चलकारेषु प्रयोगाः)

(गम्-धातु) (जाना)

लट् लकार (वर्तमान काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	गच्छति	गच्छतः	गच्छन्ति
मध्यम पुरुष	गच्छसि	गच्छथः	गच्छथ
उत्तम पुरुष	गच्छामि	गच्छावः	गच्छामः

लङ् लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अगच्छत्	अगच्छताम्	अगच्छन्
मध्यम पुरुष	अगच्छः	अगच्छतम्	अगच्छत
उत्तम पुरुष	अगच्छम्	अगच्छाव	अगच्छाम

लृट् लकार (भविष्यकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	गमिष्यति	गमिष्यतः	गमिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	गमिष्यसि	गमिष्यथः	गमिष्यथ
उत्तम पुरुष	गमिष्यामि	गमिष्यावः	गमिष्यामः

लोट् लकार (आज्ञार्थक)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	गच्छतु	गच्छताम्	गच्छन्तु
मध्यम पुरुष	गच्छ	गच्छतम्	गच्छत
उत्तम पुरुष	गच्छानि	गच्छावः	गच्छामः

विधिलिङ (आज्ञा या चाहिए अर्थ)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	गच्छेत्	गच्छेताम्	गच्छेयुः
मध्यम पुरुष	गच्छेः	गच्छेतम्	गच्छेत
उत्तम पुरुष	गच्छेयम्	गच्छेव	गच्छेम

(नम्-धातु) (नमस्कार)

लट् लकार (वर्तमान काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	नमति	नमतः	नमन्ति
मध्यम पुरुष	नमसि	नमथः	नमथ
उत्तम पुरुष	नमामि	नमावः	नमाम

लङ् लकार (भूतकाल)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	
प्रथम पुरुष	अनमत्	अनमताम्	अनमन्
मध्यम पुरुष	अनमः	अनमतम्	अनमत
उत्तम पुरुष	अनमम्	अनमाव	अनमाम

लृट् लकार (भविष्यकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	नंस्यति	नंस्यतः	नंस्यन्ति
मध्यम पुरुष	नंस्यसि	नंस्यथः	नंस्यथ
उत्तम पुरुष	नंस्यामि	नंस्यावः	नंस्यामः

लोट् लकार (आज्ञार्थक)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	नमतु	नमताम्	नमन्तु
मध्यम पुरुष	नम	नमतम्	नमत
उत्तम पुरुष	नमानि	नमावः	नमामः

विधिलिङ (आज्ञा या चाहिए अर्थ)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	नमेत्	नमेताम्	नमेयुः
मध्यम पुरुष	नमेः	नमेतम्	नमेत
उत्तम पुरुष	नमेयम्	नमेव	नमेम

(अस्-धातु) (होना)

लट् लकार (वर्तमान काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अस्ति	स्तः	सन्ति
मध्यम पुरुष	असि	स्थः	स्थ
उत्तम पुरुष	अस्मि	स्वः	स्मः

लङ् लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	आसीत्	आस्ताम्	आसन्
मध्यम पुरुष	आसीः	आस्ताम्	आस्त
उत्तम पुरुष	आसम्	आस्व	आस्म

लृट् लकार (भविष्यकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	भविष्यति	भविष्यतः	भविष्यन्ति
मध्यम पुरुष	भविष्यसि	भविष्यथः	भविष्यथ
उत्तम पुरुष	भविष्यामि	भविष्यावः	भविष्यामः

लोट् लकार (आज्ञार्थक)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	भवतु	भवताम्	भवन्तु
मध्यम पुरुष	भव	भवतम्	भवत
उत्तम पुरुष	भवानि	भवावः	भवामः

विधिलिङ (आज्ञा या चाहिए अर्थ)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	स्यात्	स्याताम्	स्युः
मध्यम पुरुष	स्याः	स्यातम्	स्यात
उत्तम पुरुष	स्याम्	स्याव	स्याम

(हस्-धातु) (हँसना)

लट् लकार (वर्तमान काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	हसति	हसतः	हसन्ति
मध्यम पुरुष	हससि	हसथः	हसथ
उत्तम पुरुष	हसामि	हसावः	हसामः

लङ् लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अहसत्	अहसताम्	अहसन्
मध्यम पुरुष	अहसः	अहसतम्	अहसत
उत्तम पुरुष	अहसम्	अहसाव	अहसाम

लृट् लकार (भविष्यकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	हसिष्यति	हसिष्यतः	हसिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	हसिष्यसि	हसिष्यथः	हसिष्यथ
उत्तम पुरुष	हसिष्यामि	हसिष्यावः	हसिष्यामः

लोट् लकार (आज्ञार्थक)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	हसतु	हसताम्	हसन्तु
मध्यम पुरुष	हस	हसतम्	हसत
उत्तम पुरुष	हसानिं	हसाव	हसाम

विधिलिङ (आज्ञा या चाहिए अर्थ)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	हसेत्	हसेताम्	हसेयुः
मध्यम पुरुष	हसेः	हसेतम्	हसेत
उत्तम पुरुष	हसेयम्	हसेव	हसेम

(श्रु-धातु) (सुनना)

लट् लकार (वर्तमान काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	शृणोति	शृणुतः	शृण्वन्ति
मध्यम पुरुष	शृणोषि	शृणुथः	शृणुथ
उत्तम पुरुष	शृणोमि	शृणुवः/शृण्वः	शृणुमः/शृण्मः

लङ् लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अशृणोत्	अशृणुताम्	अशृण्वन्
मध्यम पुरुष	अशृणोः	अशृणुतम्	अशृणुत
उत्तम पुरुष	अशृणवम्	अशृणुव/अशृण्व	अशृणुम/अशृण्म

लृट् लकार (भविष्यकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	श्रोष्यति	श्रोष्यतः	श्रोष्यन्ति
मध्यम पुरुष	श्रोष्यसि	श्रोष्यथः	श्रोष्यथ
उत्तम पुरुष	श्रोष्यामि	श्रोष्यावः	श्रोष्यामः

लोट् लकार (आज्ञार्थक)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	शृणोतु	शृणुताम्	शृणवन्तु
मध्यम पुरुष	शृणु	शृणुतम्	शृणुत
उत्तम पुरुष	शृणवानि	शृणवाव	शृणवाम

विधिलिङ (आज्ञा या चाहिए अर्थ)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	शृणुयात्	शृणुयाताम्	शृणुयुः
मध्यम पुरुष	शृणुयाः	शृणुयातम्	शृणुयात
उत्तम पुरुष	शृणुयाम्	शृणुयाव	शृणुयाम

(नश् -धातु) (नष्ट होना)

लट् लकार (वर्तमान काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	नश्यति	नश्यतः	नश्यन्ति
मध्यम पुरुष	नश्यसि	नश्यथः	नश्यथ
उत्तम पुरुष	नश्यामि	नश्यावः	नश्यामः

लङ् लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अनश्यत्	अनश्यताम्	अनश्यन्
मध्यम पुरुष	अनश्यः	अनश्यतम्	अनश्यत
उत्तम पुरुष	अनश्यम्	अनश्याव	अनश्याम

लृट् लकार (भविष्यकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	नशिष्यति/नङ्क्ष्यति	नशिष्यतः/ नङ्क्ष्यतः	नशिष्यन्ति/ नङ्क्ष्यन्ति
मध्यम पुरुष	नशिष्यसि/नङ्क्ष्यसि	नशिष्यथः/ नङ्क्ष्यथः	नशिष्यथ/ नङ्क्ष्यथ
उत्तम पुरुष	नशिष्यामि/नङ्क्ष्ययामि	नशिष्यावः/ नङ्क्ष्यावः	नशिष्यामः/ नङ्क्ष्यामः

लोट् लकार (आज्ञार्थक)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	नश्यतु	नश्यताम्	नश्यन्तु
मध्यम पुरुष	नश्य	नश्यतम्	नश्यत
उत्तम पुरुष	नश्यानि	नश्याव	नश्याम

विधिलिङ (आज्ञा या चाहिए अर्थ)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	नश्येत्	नश्येताम्	नश्येयुः
मध्यम पुरुष	नश्येः	नश्येतम्	नश्येत
उत्तम पुरुष	नश्येयम्	नश्येव	नश्येम

(आप्-धातु) (पाना)

लट् लकार (वर्तमान काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	आप्नोति	आप्नुतः	आप्नुवन्ति
मध्यम पुरुष	आप्नोषि	आप्नुथः	आप्नुथ
उत्तम पुरुष	आप्नोमि	आप्नुवः	आप्नुमः

लङ् लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	आप्नोत्	आप्नुताम्	आप्नुवन्
मध्यम पुरुष	आप्नोः	आप्नुतम्	आप्नुत
उत्तम पुरुष	आप्नवम्	आप्नुव	आप्नुम

लृट् लकार (भविष्यकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	आप्स्यति	आप्स्यतः	आप्स्यन्ति
मध्यम पुरुष	आप्स्यसि	आप्स्यथः	आप्स्यथ
उत्तम पुरुष	आप्स्यामि	आप्स्यावः	आप्स्यामः

लोट् लकार (आज्ञार्थक)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	आप्नोतु	आप्नुताम्	आप्नुवन्तु
मध्यम पुरुष	आप्नुहि	आप्नुतम्	आप्नुत
उत्तम पुरुष	आप्नवानी	आप्नवाव	आप्नवाम

विधिलिङ (आज्ञा या चाहिए अर्थ)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	आप्नुयात्	आप्नुयाताम्	आप्नुयुः
मध्यम पुरुष	आप्नुयाः	आप्नुयातम्	आप्नुयात
उत्तम पुरुष	आप्नुयाम्	आप्नुयाव	आप्नुयाम

(शक्-धातु) (सकना)

लट् लकार (वर्तमान काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	शक्नोति	शक्नुतः	शक्नुवन्ति
मध्यम पुरुष	शक्नोषि	शक्नुथः	शक्नुथ
उत्तम पुरुष	शक्नोमि	शक्नुवः	शक्नुमः

लङ् लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अशक्नोत्	अशक्नुताम्	अशक्नुवन्
मध्यम पुरुष	अशक्नोः	अशक्नुतम्	अशक्नुत
उत्तम पुरुष	अशक्नवम्	अशक्नुव	अशक्नुम

लृट् लकार (भविष्यकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	शक्ष्यति	शक्ष्यतः	शक्ष्यन्ति
मध्यम पुरुष	शक्ष्यसि	शक्ष्यथः	शक्ष्यथ
उत्तम पुरुष	शक्ष्यामि	शक्ष्यावः	शक्ष्यामः

लोट् लकार (आज्ञार्थक)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	शक्नोतु	शक्नुताम्	शक्नुवन्तु
मध्यम पुरुष	शक्नुहि	शक्नुतम्	शक्नुत
उत्तम पुरुष	शक्नवानि	शक्नवाव	शक्नवाम

विधिलिङ् (आज्ञा या चाहिए अर्थ)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	शक्नुयात्	शक्नुयाताम्	शक्नुयुः
मध्यम पुरुष	शक्नुयाः	शक्नुयातम्	शक्नुयात
उत्तम पुरुष	शक्नुयाम्	शक्नुयाव	शक्नुयाम

(इष-धातु) (चाहना) परस्मैपद - तुदादिगण

लट् लकार (वर्तमान काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	इच्छति	इच्छतः	इच्छन्ति
मध्यम पुरुष	इच्छसि	इच्छथः	इच्छथ
उत्तम पुरुष	इच्छामि	इच्छावः	इच्छामः

लङ् लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	ऐच्छत्	ऐच्छताम्	ऐच्छन्
मध्यम पुरुष	ऐच्छः	ऐच्छतम्	ऐच्छत
उत्तम पुरुष	ऐच्छम्	ऐच्छाव	ऐच्छाम

लृट् लकार (भविष्यकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	एषिष्यति	एषिष्यतः	एषिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	एषिष्यसि	एषिष्यथः	एषिष्यथ
उत्तम पुरुष	एषिष्यामि	एषिष्यावः	एषिष्यामः

लोट् लकार (आज्ञार्थक)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	इच्छतु	इच्छताम्	इच्छन्तु
मध्यम पुरुष	इच्छ	इच्छतम्	इच्छत
उत्तम पुरुष	इच्छानि	इच्छाव	इच्छाम

विधिलिङ् (आज्ञा या चाहिए अर्थ)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	इच्छेत्	इच्छेताम्	इच्छेयुः
मध्यम पुरुष	इच्छेः	इच्छेतम्	इच्छेत
उत्तम पुरुष	इच्छेयम्	इच्छेव	इच्छेम

(प्रच्छ-धातु) (पूछना) परस्मैपद - तुदादिगण

लट् लकार (वर्तमान काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पृच्छति	पृच्छतः	पृच्छन्ति
मध्यम पुरुष	पृच्छसि	पृच्छथः	पृच्छथ
उत्तम पुरुष	पृच्छामि	पृच्छावः	पृच्छामः

लङ् लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अपृच्छत्	अपृच्छताम्	अपृच्छन्
मध्यम पुरुष	अपृच्छः	अपृच्छतम्	अपृच्छत
उत्तम पुरुष	अपृच्छम्	अपृच्छाव	अपृच्छाम

लृट् लकार (भविष्यकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	प्रक्ष्यति	प्रक्ष्यतः	प्रक्ष्यन्ति
मध्यम पुरुष	प्रक्ष्यसि	प्रक्ष्यथः	प्रक्ष्यथ
उत्तम पुरुष	प्रक्ष्यामि	प्रक्ष्यावः	प्रक्ष्यामः

लोट् लकार (आज्ञार्थक)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पृच्छतु	पृच्छताम्	पृच्छन्तु
मध्यम पुरुष	पृच्छ	पृच्छतम्	पृच्छत
उत्तम पुरुष	पृच्छानि	पृच्छाव	पृच्छाम

विधिलिङ (आज्ञा या चाहिए अर्थ)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पृच्छेत्	पृच्छेताम्	पृच्छेयुः
मध्यम पुरुष	पृच्छेः	पृच्छेतम्	पृच्छेत
उत्तम पुरुष	पृच्छेयम्	पृच्छेव	पृच्छेम

(कृ-धातु) (करना) परस्मैपद - तुदादिगण

लट् लकार (वर्तमान काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	करोति	कुरुतः	कुर्वन्ति
मध्यम पुरुष	करोषि	कुरूथः	कुरूथ
उत्तम पुरुष	करोमि	कुर्वः	कुर्मः

लङ् लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अकरोत्	अकुरुताम्	अकुर्वन्
मध्यम पुरुष	अकरोः	अकुरुतम्	अकुरुत
उत्तम पुरुष	अकरवम्	अकुर्व	अकुर्म

लृट् लकार (भविष्यकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	करिष्यति	करिष्यतः	करिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	करिष्यसि	करिष्यथः	करिष्यथ
उत्तम पुरुष	करिष्यामि	करिष्यावः	करिष्यामः

लोट् लकार (आज्ञार्थक)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	करोतु	कुरुताम्	कुर्वन्तु
मध्यम पुरुष	कुरु	कुरुतम्	कुरुत
उत्तम पुरुष	करवाणि	करवाव	करवाम

विधिलिङ (आज्ञा या चाहिए अर्थ)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	कुर्यात्	कुर्याताम्	कुर्युः
मध्यम पुरुष	कुर्याः	कुर्यातम्	कुर्यात
उत्तम पुरुष	कुर्याम्	कुर्याव	कुर्याम

(ज्ञा-धातु) (जानना) परस्मैपद - क्रयादिगण

लट् लकार (वर्तमान काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	जानाति	जानीतः	जानन्ति
मध्यम पुरुष	जानासि	जानीथः	जानीथ
उत्तम पुरुष	जानामि	जानीवः	जानीमः

लङ् लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अजानात्	अजानीताम्	अजानन्
मध्यम पुरुष	अजानाः	अजानीताम्	अजानीत
उत्तम पुरुष	अजानाम्	अजानीव	अजानीम

लृट् लकार (भविष्यकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	ज्ञास्यति	ज्ञास्यतः	ज्ञास्यन्ति
मध्यम पुरुष	ज्ञास्यसि	ज्ञास्यथः	ज्ञास्यथ
उत्तम पुरुष	ज्ञास्यामि	ज्ञास्यावः	ज्ञास्यामः

लोट् लकार (आज्ञार्थक)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	जानातु	जानीताम्	जानन्तु
मध्यम पुरुष	जानीहि	जानीताम्	जानीत
उत्तम पुरुष	जानानि	जानाव	जानाम

विधिलिङ (आज्ञा या चाहिए अर्थ)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	जानीयात्	जानीयाताम्	जानीयुः
मध्यम पुरुष	जानीयाः	जानीयाताम्	जानीयात
उत्तम पुरुष	जानीयाम्	जानीयाव	जानीयाम

(ज्ञा-धातु) (जानना) आत्मनेपद - क्रयादिगण

लट् लकार (वर्तमान काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	जानीते	जानाते	जानते
मध्यम पुरुष	जानीषे	जानाथे	जानीध्वे
उत्तम पुरुष	जाने	जानीवहे	जानीमहे

लङ् लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अजानीत	अजानाताम्	अजानत
मध्यम पुरुष	अजानीथाः	अजानाथाम्	अजानीध्वम्
उत्तम पुरुष	अजानि	अजानीवहि	अजानीमहि

लृट् लकार (भविष्यकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	ज्ञास्यते	ज्ञास्येते	ज्ञास्यन्ते
मध्यम पुरुष	ज्ञास्यसे	ज्ञास्येथे	ज्ञास्यध्वे
उत्तम पुरुष	ज्ञास्ये	ज्ञास्यावहे	ज्ञास्यामहे

लोट् लकार (आज्ञार्थक)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	जानीताम्	जानाताम्	जानताम्
मध्यम पुरुष	जानीष्व	जानाथाम्	जानीध्वम्
उत्तम पुरुष	जानै	जानावहै	जानामहै

विधिलिङ (आज्ञा या चाहिए अर्थ)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	जानीत	जानीयाताम्	जानीरन्
मध्यम पुरुष	जानीथाः	जानीयाथाम्	जानीध्वम्
उत्तम पुरुष	जानीय	जानीवहि	जानीमहि

(भक्ष् -धातु) (खाना) परस्मैपद – चुरादिगण

लट् लकार (वर्तमान काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	भक्षयति	भक्षयतः	भक्षयन्ति
मध्यम पुरुष	भक्षयसि	भक्षयथः	भक्षयथ
उत्तम पुरुष	भक्षयामि	भक्षयावः	भक्षयामः

लङ् लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अभक्षयत्	अभक्षयताम्	अभक्षयन्
मध्यम पुरुष	अभक्षयः	अभक्षयतम्	अभक्षयत
उत्तम पुरुष	अभक्षयम्	अभक्षयाव	अभक्षयाम

लृट् लकार (भविष्यकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	भक्षयिष्यति	भक्षयिष्यतः	भक्षयिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	भक्षयिष्यसि	भक्षयिष्यथः	भक्षयिष्यथ
उत्तम पुरुष	भक्षयिष्यामि	भक्षयिष्यावः	भक्षयिष्यामः

लोट् लकार (आज्ञार्थक)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	भक्षयतु	भक्षयताम्	भक्षयन्तु
मध्यम पुरुष	भक्षय	भक्षयतम्	भक्षयत
उत्तम पुरुष	भक्षयाणि	भक्षयाव	भक्षयाम

विधिलिङ (आज्ञा या चाहिए अर्थ)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	भक्षयेत्	भक्षयेताम्	भक्षयेयुः
मध्यम पुरुष	भक्षयेः	भक्षयेतम्	भक्षयेत
उत्तम पुरुष	भक्षयेयम्	भक्षयेव	भक्षयेम

(भक्ष् -धातु) (खाना) आत्मनेपद – चुरादिगण

लट् लकार (वर्तमान काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	भक्षयते	भक्षयेते	भक्षयन्ते
मध्यम पुरुष	भक्षयसे	भक्षयेथे	भक्षयध्वे
उत्तम पुरुष	भक्षये	भक्षयावहे	भक्षयामहे

लङ् लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अभक्षयत	अभक्षयेताम्	अभक्षयन्त
मध्यम पुरुष	अभक्षयथाः	अभक्षयेथाम्	अभक्षयध्वम्
उत्तम पुरुष	अभक्षये	अभक्षयावहि	अभक्षयामहि

लृट् लकार (भविष्यकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	भक्षयिष्यते	भक्षयिष्येते	भक्षयिष्यन्ते
मध्यम पुरुष	भक्षयिष्यसे	भक्षयिष्यथे	भक्षयिष्यध्वे
उत्तम पुरुष	भक्षयिष्ये	भक्षयिष्यावहे	भक्षयिष्यामहे

लोट् लकार (आज्ञार्थक)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	भक्षयताम्	भक्षयेताम्	भक्षयन्ताम्
मध्यम पुरुष	भक्षयस्व	भक्षयेथाम्	भक्षयध्वम्
उत्तम पुरुष	भक्षयै	भक्षयावहै	भक्षयामहै

विधिलिङ (आज्ञा या चाहिए अर्थ)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	भक्षयेत	भक्षयेयाताम्	भक्षयेरन्
मध्यम पुरुष	भक्षयेथाः	भक्षयेयाथाम्	भक्षयेध्वम्
उत्तम पुरुष	भक्षयेय	भक्षयेवहि	भक्षयेमहि

(चिन्त् - धातु) (सोचना) परस्मैपद – चुरादिगण

लट् लकार (वर्तमान काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	चिन्तयति	चिन्तयतः	चिन्तयन्ति
मध्यम पुरुष	चिन्तयसि	चिन्तयथः	चिन्तयथ
उत्तम पुरुष	चिन्तयामि	चिन्तयावः	चिन्तयामः

लङ् लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अचिन्तयत्	अचिन्तयताम्	अचिन्तयन्
मध्यम पुरुष	अचिन्तयः	अचिन्तयतम्	अचिन्तयत
उत्तम पुरुष	अचिन्तयम्	अचिन्तयाव	अचिन्तयाम

लृट् लकार (भविष्यकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	चिन्तयिष्यति	चिन्तयिष्यतः	चिन्तयिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	चिन्तयिष्यसि	चिन्तयिष्यथः	चिन्तयिष्यथ
उत्तम पुरुष	चिन्तयिष्यामि	चिन्तयिष्यावः	चिन्तयिष्यामः

लोट् लकार (आज्ञार्थक)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	चिन्तयतु	चिन्तयताम्	चिन्तयन्तु
मध्यम पुरुष	चिन्तय	चिन्तयतम्	चिन्तयत
उत्तम पुरुष	चिन्तयानि	चिन्तयाव	चिन्तयाम

विधिलिङ् (आज्ञा या चाहिए अर्थ)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	चिन्तयेत्	चिन्तयेताम्	चिन्तयेयुः
मध्यम पुरुष	चिन्तयेः	चिन्तयेतम्	चिन्तयेत
उत्तम पुरुष	चिन्तयेयम्	चिन्तयेव	चिन्तयेम

(चिन्त -धातु) (सोचना) आत्मनेपद – चुरादिगण

लट् लकार (वर्तमान काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	चिन्तयते	चिन्तयेते	चिन्तयन्ते
मध्यम पुरुष	चिन्तयसे	चिन्तयेथे	चिन्तयध्वे
उत्तम पुरुष	चिन्तये	चिन्तयावहे	चिन्तयामहे

लङ् लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अचिन्तयत	अचिन्तयेताम्	अचिन्तयन्त
मध्यम पुरुष	अचिन्तयथाः	अचिन्तयेथाम्	अचिन्तयध्वम्
उत्तम पुरुष	अचिन्तये	अचिन्तयावहि	अचिन्तयामहि

लृट् लकार (भविष्यकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	चिन्तयिष्यते	चिन्तयिष्येते	चिन्तयिष्यन्ते
मध्यम पुरुष	चिन्तयिष्यसे	चिन्तयिष्येथे	चिन्तयिष्यध्वे
उत्तम पुरुष	चिन्तयिष्ये	चिन्तयिष्यावहे	चिन्तयिष्यामहे

लोट् लकार (आज्ञार्थक)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	चिन्तयताम्	चिन्तयेताम्	चिन्तयन्ताम्
मध्यम पुरुष	चिन्तयस्व	चिन्तयेथाम्	चिन्तयध्वम्
उत्तम पुरुष	चिन्तयै	चिन्तयावहै	चिन्तयामहै

विधिलिङ् (आज्ञा या चाहिए अर्थ)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	चिन्तयेत	चिन्तयेयाताम्	चिन्तयेरन्
मध्यम पुरुष	चिन्तयेथाः	चिन्तयेयाथाम्	चिन्तयेध्वम्
उत्तम पुरुष	चिन्तयेय	चिन्तयेवहि	चिन्तयेमहि

(नृत्-धातु) (नाचना) परस्मैपद – दिवादिगण

लट् लकार (वर्तमान काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	नृत्यति	नृत्यतः	नृत्यन्ति
मध्यम पुरुष	नृत्यसि	नृत्यथः	नृत्यथ
उत्तम पुरुष	नृत्यामि	नृत्यावः	नृत्यामः

लङ् लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अनृत्यत्	अनृत्यताम्	अनृत्यन्
मध्यम पुरुष	अनृत्यय:	अनृत्यतम्	अनृत्यत
उत्तम पुरुष	अनृत्यम्	अनृत्याव	अनृत्याम

लृट् लकार (भविष्यकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	नर्तिष्यति	नर्तिष्यतः	नर्तिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	नर्तिष्यसि	नर्तिष्यथ	नर्तिष्यथ
उत्तम पुरुष	नर्तिष्यामि	नर्तिष्यावः	नर्तिष्यामः

लोट् लकार (आज्ञार्थक)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	नृत्यतु	नृत्यताम्	नृत्यन्तु
मध्यम पुरुष	नृत्य	नृत्यतम्	नृत्यत
उत्तम पुरुष	नृत्यानि	नृत्याव	नृत्याम

विधिलिङ् (आज्ञा या चाहिए अर्थ)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	नृत्येत्	नृत्येताम्	नृत्येयुः
मध्यम पुरुष	नृत्येः	नृत्येतम्	नृत्येत
उत्तम पुरुष	नृत्येयम्	नृत्येव	नृत्येम

(कथ्-धातु) (कहना) परस्मैपद – चुरादिगण

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	कथयति	कथयतः	कथयन्ति
मध्यम पुरुष	कथयसि	कथयथः	कथयथ
उत्तम पुरुष	कथयामि	कथयावः	कथयामः

लङ् लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अकथयत्	अकथयताम्	अकथयन्
मध्यम पुरुष	अकथयः	अकथयतम्	अकथयत
उत्तम पुरुष	अकथयम्	अकथयाव	अकथयाम

लृट् लकार (भविष्यकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	कथयिष्यति	कथयिष्यतः	कथयिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	कथयिष्यसि	कथयिष्यथः	कथयिष्यथ
उत्तम पुरुष	कथयिष्यामि	कथयिष्यावः	कथयिष्यामः

लोट् लकार (आज्ञार्थक)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	कथयतु	कथयताम्	कथयन्तु
मध्यम पुरुष	कथय	कथयतम्	कथयत
उत्तम पुरुष	कथयानि	कथयाव	कथयाम

विधिलिङ् (आज्ञा या चाहिए अर्थ)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	कथयेत्	कथयेताम्	कथयेयुः
मध्यम पुरुष	कथयेः	कथयेतम्	कथयेत
उत्तम पुरुष	कथयेयम्	कथयेव	कथयेम

(कथ्-धातु) (कहना) आत्मनेपद – चुरादिगण

लट् लकार (वर्तमान काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	कथयते	कथयेते	कथयन्ते
मध्यम पुरुष	कथयसे	कथयेथे	कथयध्वे
उत्तम पुरुष	कथये	कथयावहे	कथयामहे

लङ् लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अकथयत	अकथयेताम्	अकथयन्त
मध्यम पुरुष	अकथयथाः	अकथयेथाम्	अकथयध्वम्
उत्तम पुरुष	अकथये	अकथयावहि	अकथयामहि

लृट् लकार (भविष्यकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	कथयिष्यते	कथयिष्येते	कथयिष्यन्ते
मध्यम पुरुष	कथयिष्यसे	कथयिष्यथे	कथयिष्यध्वे
उत्तम पुरुष	कथयिष्ये	कथयिष्यावहे	कथयिष्यामहे

लोट् लकार (आज्ञार्थक)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	कथयताम्	कथयेताम्	कथयन्ताम्
मध्यम पुरुष	कथयस्व	कथयेथाम्	कथयध्वम्
उत्तम पुरुष	कथयै	कथयावहै	कथयामहै

विधिलिङ (आज्ञा या चाहिए अर्थ)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	कथयेत्	कथयेयाताम्	कथयेरन्
मध्यम पुरुष	कथयेथाः	कथयेयाथाम्	कथयेध्वम्
उत्तम पुरुष	कथयेय	कथयेवहि	कथयेमहि

(नी-धातु) (ले जाना) परस्मैपद–भ्वादिगण

लट् लकार (वर्तमान काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	नयति	नयतः	नयन्ति
मध्यम पुरुष	नयसि	नयथः	नयथ
उत्तम पुरुष	नयामि	नयावः	नयामः

लङ् लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अनयत्	अनयताम्	अनयन्
मध्यम पुरुष	अनयः	अनयतम्	अनयत
उत्तम पुरुष	अनयम्	अनयाव	अनयाम

लृट् लकार (भविष्यकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	नेष्यति	नेष्यतः	नेष्यन्ति
मध्यम पुरुष	नेष्यसि	नेष्यथः	नेष्यथ
उत्तम पुरुष	नेष्यामि	नेष्यावः	नेष्यामः

लोट् लकार (आज्ञार्थक)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	नयतु	नयताम्	नयन्तु
मध्यम पुरुष	नय	नयतम्	नयत
उत्तम पुरुष	नयानि	नयाव	नयाम

विधिलिङ (आज्ञा या चाहिए अर्थ)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	नयेत्	नयेताम्	नयेयुः
मध्यम पुरुष	नयेः	नयेतम्	नयेत
उत्तम पुरुष	नयेयम्	नयेव	नयेम

(नी-धातु) (ले जाना) आत्मनेपद—भ्वादिगण

लट् लकार (वर्तमान काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	नयते	नयेते	नयन्ते
मध्यम पुरुष	नयसे	नयेथे	नयध्वे
उत्तम पुरुष	नये	नयावहे	नयामहे

लङ् लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अनयत्	अनयेताम्	अनयन्त
मध्यम पुरुष	अनयथाः	अनयेथाम्	अनयध्वम्
उत्तम पुरुष	अनये	अनयावहि	अनयामहि

लृट् लकार (भविष्यकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	नेष्यते	नेष्येते	नेष्यन्ते
मध्यम पुरुष	नेष्यसे	नेष्येथे	नेष्यध्वे
उत्तम पुरुष	नेष्ये	नेष्यावहे	नेष्यामहे

लोट् लकार (आज्ञार्थक)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	नयताम्	नयेताम्	नयन्ताम्
मध्यम पुरुष	नयस्व	नयेथाम्	नयध्वम्
उत्तम पुरुष	नयै	नयावहै	नयामहै

विधिलिङ (आज्ञा या चाहिए अर्थ)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	नयेत्	नयेयाताम्	नयेरन्
मध्यम पुरुष	नयेथाः	नयेयाथाम्	नयेध्वम्
उत्तम पुरुष	नयेय	नयेवहि	नयेमहि

(पच्-धातु) (पकाना) परस्मैपद —भ्वादिगण

लट् लकार (वर्तमान काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पचति	पचतः	पचन्ति
मध्यम पुरुष	पचसि	पचथः	पचथ
उत्तम पुरुष	पचामि	पचावः	पचामः

लङ् लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अपचत्	अपचताम्	अपचन्
मध्यम पुरुष	अपचः	अपचतम्	अपचत
उत्तम पुरुष	अपचम्	अपचाव	अपचाम

लृट् लकार (भविष्यकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पक्ष्यति	पक्ष्यतः	पक्ष्यन्ति
मध्यम पुरुष	पक्ष्यसि	पक्ष्यथः	पक्ष्यथ
उत्तम पुरुष	पक्ष्यामि	पक्ष्यावः	पक्ष्यामः

लोट् लकार (आज्ञार्थक)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पचतु	पचताम्	पचन्तु
मध्यम पुरुष	पच	पचतम्	पचत
उत्तम पुरुष	पचानि	पचाव	पचाम

विधिलिङ (आज्ञा या चाहिए अर्थ)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पचेत्	पचेताम्	पचेयुः
मध्यम पुरुष	पचेः	पचेतम्	पचेत
उत्तम पुरुष	पचेयम्	पचेव	पचेम

लभ्=पाना (आत्मनेपदी)

लट् लकार (वर्तमान काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	लभते	लभेते	लभन्ते
मध्यम पुरुष	लभसे	लभेथे	लभध्वे
उत्तम पुरुष	लभे	लभावहे	लभामहे

लङ् लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अलभत्	अलभेताम्	अलभन्त
मध्यम पुरुष	अलभथाः	अलभेथाम्	अलभध्वम्
उत्तम पुरुष	अलभे	अलभावहि	अलभामहि

लृट् लकार (भविष्यकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	लप्स्यते	लप्स्येते	लप्स्येन्ते
मध्यम पुरुष	लप्स्यसे	लप्स्येथे	लप्स्यध्वे
उत्तम पुरुष	लप्स्ये	लप्स्यावहे	लप्स्यामहे

लोट् लकार (आज्ञार्थक)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	लभताम्	लभेताम्	लभन्ताम्
मध्यम पुरुष	लभस्व	लभेथाम्	लभध्वम्
उत्तम पुरुष	लभै	लभावहै	लभामहै

विधिलिङ् (आज्ञा या चाहिए अर्थ)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	लभेत्	लभेयाताम्	लभेरन्
मध्यम पुरुष	लभेथाः	लभेयाथाम्	लभेध्वम्
उत्तम पुरुष	लभेय	लभेवहि	लभेमहि

सेव्=सेवा करना (आत्मनेपदी)

लट् लकार (वर्तमान काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	सेवते	सेवेते	सेवन्ते
मध्यम पुरुष	सेवसे	सेवथे	सेवध्वे
उत्तम पुरुष	सेवे	सेवावहे	सेवामहे

लङ् लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	असेवत्	असेवेताम्	असेवन्त
मध्यम पुरुष	असेवथाः	असेवेथाम्	असेवध्वम्
उत्तम पुरुष	असेवे	असेवावहि	असेवामहि

लृट् लकार (भविष्यकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	सेविष्यते	सेविष्येते	सेविष्यन्ते
मध्यम पुरुष	सेविष्यसे	सेविष्येथे	सेविष्यध्वे
उत्तम पुरुष	सेविष्ये	सेविष्यावहे	सेविष्यामहे

लोट् लकार (आज्ञार्थक)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	सेवताम्	सेवेताम्	सेवन्ताम्
मध्यम पुरुष	सेवस्व	सेवेथाम्	सेवध्वम्
उत्तम पुरुष	सेवै	सेवावहै	सेवामहै

विधिलिङ् (आज्ञा या चाहिए अर्थ)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	सेवेत	सेवेयाताम्	सेवेरन्
मध्यम पुरुष	सेवेथाः	सेवेयाथाम्	सेवेध्वम्
उत्तम पुरुष	सेवेय	सेवेवहि	सेवेमहि

वन्द्=नमस्कार करना (आत्मनेपदी)

लट् लकार (वर्तमान काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	वन्दते	वन्देते	वन्दन्ते
मध्यम पुरुष	वन्दसे	वन्देथे	वन्दध्वे
उत्तम पुरुष	वन्दे	वन्दावहे	वन्दामहे

लङ् लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अवन्दत	अवन्देताम्	अवन्दन्त
मध्यम पुरुष	अवन्दथाः	अवन्देथाम्	अवन्दध्वम्
उत्तम पुरुष	अवन्दे	अवन्दावहि	अवन्दामहि

लृट् लकार (भविष्यकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	वन्दिष्यते	वन्दिष्येते	वन्दिष्यन्ते
मध्यम पुरुष	वन्दिष्यसे	वन्दिष्येथे	वन्दिष्यध्वे
उत्तम पुरुष	वन्दिष्ये	वन्दिष्यावहे	वन्दिष्यामहे

लोट् लकार (आज्ञार्थक)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	वन्दताम्	वन्देताम्	वन्दन्ताम्
मध्यम पुरुष	वन्दस्व	वन्देथाम्	वन्दध्वम्
उत्तम पुरुष	वन्दै	वन्दावहै	वन्दामहै

विधिलिङ (आज्ञा या चाहिए अर्थ)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	वन्देत	वन्देयाताम्	वन्देरन्
मध्यम पुरुष	वन्देथाः	वन्देयाथाम्	वन्देध्वम्
उत्तम पुरुष	वन्देय	वन्देवहि	वन्देमहि

याच्=माँगना (आत्मनेपदी)

लट् लकार (वर्तमान काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	याचते	याचेते	याचन्ते
मध्यम पुरुष	याचसे	याचेथे	याचध्वे
उत्तम पुरुष	याचे	याचावहे	याचामहे

लङ् लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अयाचत	अयाचेताम्	अयाचन्त
मध्यम पुरुष	अयाचथाः	अयाचेथाम्	अयाचध्वम्
उत्तम पुरुष	अयाचे	अयाचावहि	अयाचामहि

लृट् लकार (भविष्यकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	याचिष्यते	याचिष्येते	याचिष्यन्ते
मध्यम पुरुष	याचिष्यसे	याचिष्येथे	याचिष्यध्वे
उत्तम पुरुष	याचिष्ये	याचिष्यावहे	याचिष्यामहे

लोट् लकार (आज्ञार्थक)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	याचताम्	याचेताम्	याचन्ताम्
मध्यम पुरुष	याचस्व	याचेथाम्	याचध्वम्
उत्तम पुरुष	याचै	याचावहै	याचामहै

विधिलिङ (आज्ञा या चाहिए अर्थ)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	याचेत	याचेयाताम्	याचेरन्
मध्यम पुरुष	याचेथाः	याचेयाथाम्	याचेध्वम्
उत्तम पुरुष	याचेय	याचेवहि	याचेमहि

। यूनिट-2 इति ।

यूनिट-3

सन्धयः सन्धिविच्छेदाः च

- **स्वरसन्धिः– दीर्घः गुणः, वृद्धिः, यण्, अयादिः, पूर्वरूपम्**
- **व्यञ्जनसन्धिः– श्चुत्वम्, ष्टुत्वम्, जश्त्वम्, अनुनासिकः, अनुस्वारः, परसवर्णः**
- **विसर्गसन्धिः– उत्वम्, रत्वम्, लोपः, विसर्गस्थाने स्, श्, ष्**

दीर्घ सन्धि

(सवर्णदीर्घविधायक विधिसूत्रम्)

सूत्र- अकः सवर्णे दीर्घः 6।1।101।।

वृत्ति- अकः सवर्णेऽचि परे पूर्वपरयोर्दीर्घ एकादेशः स्यात् ।

उदा0- दैत्यारिः । श्रीशः । विष्णूदयः । होतृकारः

व्याख्या- अक् से सवर्ण अच् के परे होने पर पूर्व और पर के स्थान पर दीर्घसंज्ञक एकादेश होता है।

(1) अ या आ + अ या आ=आ ।
(2) इ या ई + इ या ई=ई ।
(3) उ या ऊ + उ या ऊ=ऊ।
(4) ऋ+ऋ = ॠ ।

अक् प्रत्याहार से सवर्ण **अच्** अर्थात् समानजातीय अच् परे होना चाहिए। **एकः पूर्वपरयोः** का अधिकार होने से पूर्व और पर के स्थान पर यह अर्थ बना। स्थानी दो होंगे और आदेश दीर्घसंज्ञक एक ही होगा। अकार के सवर्णी अठारह भेद वाले अकार ही हैं। इसी प्रकार इकार के सवर्णों भी अठारह प्रकार के इकार ही लिये जाते हैं और उकार के सवर्णी उकार एवं ऋकार के सवर्णी भी अठारह प्रकार के ऋकार और बारह प्रकार के लृकार को लेकर तीस प्रकार के हैं। अतः अकार से अकार के परे रहने पर, इकार से इकार के परे रहने पर, उकार से उकार के परे रहने पर ऋकार से ऋकार और लृकार के परे रहने यह सूत्र पूर्व और पर के स्थान पर दीर्घ एकादेश करता है। जैसे- अ+अ-आ, इ-इ-ई, उ उ ऊ, ऋ ऋ ॠ आदि।

जब इस सूत्र से दीर्घसंज्ञक एकादेश की प्राप्ति होती है तो सभी दीर्घ आ, ऊ,

ॠ, ए, ऐ, ओ, औ ये सभी प्राप्त होते हैं और स्थानेऽन्तरतमः की सहायता से स्थान से साम्य सवर्णदीर्घ ही हो, ऐसा नियम प्राप्त होता है।

दैत्यारिः=(दैत्यों के शत्रु- भगवान् विष्णु) **संधिविच्छेद - दैत्य+अरिः**

इस स्थिति में आद्गुणः से गुण की प्राप्ति थी, उसे बाधकर सूत्र लगा- अकः सवर्णे दीर्घः । अक् है 'दैत्य' में यकारोत्तरवर्ती अकार और सवर्ण अच् परे है- अरिः का अकार। पूर्व और पर दोनों अकार के स्थान पर अकार का ही दीर्घ वर्ण आकार आदेश के रूप में हुआ दैत्य+आ+रिः बना, वर्ण सम्मेलन हुआ दैत्यारिः रूप सिद्ध हुआ।

श्रीशः = (लक्ष्मी के पति) **संधिविच्छेद -श्री+ईशः**

श्री ईशः में इको यणचि से यण् प्राप्त था, उसे बाधकर के स्थानेऽन्तरतमः की सहायता से अकः सवर्णे दीर्घः से सवर्णदीर्घ एकादेश होकर श्री+ईशः बना।

वर्णसम्मेलन होकर श्रीशः सिद्ध हुआ ।

विष्णूदयः = (विष्णु का उदयः) **संधिविच्छेद – विष्णु+उदयः**

विष्णु उदय में अक् है 'विष्णु' का उकार और सवर्ण अच् परे है 'उदय' का उकार दोनों के स्थान पर दीर्घ एक ही आदेश ऊकार हुआ। विष्ण्+ऊ+दयः बना। वर्णसम्मेलन में (विष्ण्+ऊ=ष्णू) विष्णूदयः सिद्ध हुआ ।

होतृकारः=(होता का ऋकार) **संधिविच्छेद-होतृ+ऋकारः**

होतृ+ऋकारः में अक् है होतृ में ऋकार और सवर्ण अच् परे है- ऋकारः का ऋ। दोनों ऋकारों के स्थान पर दीर्घ रूप ॠकार एकादेश हुआ। होत्+ॠ+कारः बना, वर्णसम्मेलन होने पर होतॄकारः सिद्ध हुआ। लृकार इसका दीर्घ वर्ण नहीं ।

अन्य उदाहरण

निम्नलिखित प्रयोगों की सन्धि कीजिए-

देव+आलयः । विद्या+अर्थी । गिरि + ईशः। भानु+उदयः । परम + अर्थः । विद्या+आनन्दः । कर अग्रम्। वेद+अभ्यासः । राम+आदिः। तरु+उपेतः । तुल्य+आस्यम्। पितृ ऋणम्।

निम् निम्नलिखित प्रयोगों की सन्धिविच्छेद पूर्वक् सिद्धि करें-
भूमीशः । हरीशः । यदासीत्। प्रतीक्षते । फलानीमानी । कमलाकरः । महीन्द्रः। अल्पापराधः । कवीश्वरः । रोगातुरः । मुनीन्द्रः । अस्तीदम्। रसास्वादः । गुरूत्तमः ।

गुण सन्धि

(गुणसंज्ञा विधायक संज्ञासूत्रम्)

सूत्र- **अदेङ् गुणः** (1-1-2)

वृत्ति- अत् एङ् च गुणसंज्ञः स्यात् ।

अर्थ- ह्रस्वअकार (अ) 'ए' और 'ओ' ये गुणसंज्ञक होते हैं।

(गुणविधायकं विधिसूत्रम्)

सूत्र- आद्गुणः 6।1187।।

वृत्ति- अवर्णादचि परे पूर्वपरयोरेको गुण आदेशः स्यात्।

उदा0- उपेन्द्रः गङ्गोदकम्।

अवर्ण से अच् परे होने पर पूर्व और पर के स्थान पर गुणसंज्ञक एक आदेश होता है।

1. अ या आ के बाद इ या ई होगा तो दोनों को 'ए' होगा।
2. अ या आ के बाद उ या ऊ होगा तो दोनों को 'ओ' होगा।
3. अ या आ के बाद ऋ या ॠ होगा तो दोनों को 'अर्' होगा।
4. अ या आ के बाद लृ होगा तो दोनों को 'अल्' होगा।

अवर्ण से अच् प्रत्याहार के वर्ण परे हों तो पूर्व और पर के दोनों वर्ण (पूर्व का अन्त वर्ण और पर का आदि वर्ण) के स्थान पर गुण अर्थात् 'अ, ए, ओ' इन तीन वर्णों में से एक वर्ण आदेश के रूप में हो जाय। इस सूत्र में आत् (आद्) यह तपरग्रहण नहीं है किन्तु आत् यह रूप अ शब्द के पञ्चमी का एकवचन है। जैसे रामात् रामाद् । अतः 'आत्' से केवल 'आ' का ही बोध नहीं होगा, अपितु अ के सारे अठारहों भेद के साथ अवर्ण उपस्थित होगा। पूर्व में अ, आ और पर में अच्प्रत्याहार एवं उसके सारे भेद वाले वर्ण हों तो इन दोनों वर्णों के स्थान पर (इनको हटाकर) 'अ, ए, ओ' में से एक वर्ण आदेश के रूप में प्राप्त होगा।

*** उपेन्द्रः**=(वामनरूप धारण करने वाले भगवान् विष्णु) **सन्धिविच्छद = 'उप+इन्द्रः'**

'उप+इन्द्रः' में 'आद्गुणः' लगा। अवर्ण है उप में प् के बाद वाला अ और अच् परे है इन्द्रः में आदि इवर्ण। पूर्व में अ है और पर में इ है। इन दोनों के स्थान पर गुण शब्द के द्वारा गृहीत होने वाले **अ, ए, ओ** ये तीनों वर्ण उपस्थित हो गये। अ और इ इन दोनों के स्थान पर सूत्र के अनुसार एक ही आदेश अ, ए, ओ में से किसी एक ही वर्ण हो जाना चाहिए, किन्तु तीनों में से कौन सा वर्ण आदेश के रूप में हो? यह निश्चित नहीं हो पाया। दो के स्थान पर तीन-तीन वर्णों की प्राप्ति होना अनियम हुआ तो नियम करने के लिए सूत्र लगा **स्थानेऽन्तरतमः** । प्रसङ्ग रहने पर स्थान, अर्थ, गुण, प्रमाण से तुल्यतम आदेश होता है। प्रसंग है दो वर्णों के स्थान पर तीन वर्णों की प्राप्ति और तीन में से एक आदेश होना है। स्थान से तुल्यता मिलाने पर अ का कण्ठस्थान और इ का तालुस्थान, दोनों का मिलाकर कण्ठतालु स्थान हुआ अर्थात् स्थानी कण्ठतालु स्थान वाले हैं। अब खोजा जाय कि 'अ, ए, ओ' इन आदेशों में कण्ठतालु स्थान वाला वर्ण कौन है? 'एदैतोः कण्ठतालु' ए. और ऐ का कण्ठतालु स्थान है अतः 'अ, ए, ओ' में 'ए' वर्ण कण्ठतालु स्थान वाला है और आदेश में कण्ठतालु स्थान वाला 'ए' है। फलतः कण्ठतालु स्थान वाले स्थानी अ एवं इ इनके स्थान पर कण्ठतालु स्थान वाला हो ए आदेश हो गया। उप + इन्द्रः था। उप के अकार एवं इन्द्रः के इकार के स्थान पर ए हो गया। इस तरह उप्+ए+न्द्रः बना। वर्ण सम्मेलन होने पर प जाकर ए से मिला उपेन्द्रः सिद्ध हुआ।

*** गङ्गोदकम्** (गंगा का जल) **संधिविच्छेद = गङ्गा+उदकम्**

गङ्गा+उदकम् यह स्थिति है। गङ्गा में अवर्ण है आ और अच् परे है उदकम् का उकार यहाँ पर पूर्व में है आ और पर में है उ । इस तरह आ एवं उ इन दोनों वर्णों के स्थानपर गुणसंज्ञक अ, ए ओ ये तीनों प्राप्त हुए तो स्थानेऽन्तरतमः इस सूत्र के सहयोग से ओकारएक आदेश हुआ क्योंकि स्थान से तुल्यता मिलाने पर आकार का कण्ठस्थान और उकार का ओष्ठस्थान है अर्थात् स्थानी का स्थान है- कण्ठ ओष्ठ। आदेश में कण्ठ ओष्ठ स्थान वाला गुणसंज्ञकवर्ण है ओ। अतः कण्ठ-ओष्ठ स्थान वाले अकार एवं उकार के स्थान पर कण्ठ ओष्ठ स्थान वाला गुणसंज्ञक वर्ण ओकार ही एक आदेश के रूप में हो गया- गङ्गा+ओ+दकम् बना। वर्णसम्मेलन होने पर क्रमशः ङ्ग जाकर ओकार में मिले तो गङ्गोदकम् बना।

इसी तरह देव इन्द्रः- देवेन्द्रः, महा+ईशः- महेशः

अन्य उदाहरण

निम्नलिखित प्रयोगों की सन्धि करें-

महा+उत्सवः। हित+उपदेशः । सूर्य +उदयः । गण+उत्तमः। तथा+इति । यथा+इच्छम्। यज्ञ+उपवीतम्। दया+उदयः । उमा+ईशः । गज+इन्द्रः । महा + ऊर्मिः ।

निम्नलिखित प्रयोगों में सन्धिविच्छेद पूर्वक सूत्र लगाकर सन्धि करें:-

भारतेतिहासः। स्वच्छोदकम्। उमेशः। तवोत्साहः। निम्नोर्ध्वम्। नोपलब्धिः। महेन्द्रः। उष्णोदकम्। तवेह। गणेशः। परमेश्वरः। गुणोपेतम्। रामेति। चेति।

वृद्धि सन्धि

(वृद्धिसंज्ञाविधायकं संज्ञासूत्रम्)

सूत्र- वृद्धिरादैच् (1-1-1)

वृत्ति- आदैच्च वृद्धिसंज्ञः स्यात् ।

अर्थ- आ, ऐ और औ को वृद्धि कहते हैं।

(वृद्धिविधायकं विधिसूत्रम्)

सूत्र- वृद्धिरेचि (6-1-88)

वृत्ति- आदेचि परे वृद्धिरेकादेशः स्यात् ।

उदा0- गुणापवादः कृष्णैकत्वम्। गङ्गौघः।
देवैश्वर्यम्।कृष्णौत्कण्ठ्यम्।

अवर्ण से एच् परे होने पर पूर्व और पर के स्थान पर वृद्धिसंज्ञक एक आदेश होता है।

(1) अ या आ के बाद ए या ऐ होगा तो दोनों के स्थान पर 'ऐ' होगा।

(2) या आ के बाद ओ या औ होगा तो दोनों के स्थान पर 'औ' होगा।

कृष्णैकत्वम् = (कृष्ण का ऐक्य) **सन्धिविच्छेद = कृष्ण+एकत्वम्**

कृष्ण+एकत्वम् में संहितासंज्ञा हो जाने के बाद अवर्ण से अच् परे होने के कारण आद्गुणः से गुण की प्राप्ति हुई तो उसे बाधकर वृद्धिरेचि यह सूत्र लगा क्योंकि यहाँ एच् परे भी है। अवर्ण से एच् परे रहने पर पूर्व और पर के स्थान पर वृद्धिसंज्ञक

एक आदेश होता है, यह सूत्रार्थ है। अवर्ण है कृष्ण में ण् के बाद वाला अ तथा एच् परे है एकत्वम् का आदिवर्ण एकार। पूर्व में है अ और पर में है ए। इन दोनों वर्णों के स्थान पर वृद्धिसंज्ञक आदेश वाले वर्ण आ, ऐ, औ ये तीनों प्राप्त हुए। दो वर्णों के स्थान पर एक आदेश होना है और प्राप्ति हुई तीनों वर्णों की। अतः के अनियम हुआ। इसलिए नियमार्थ सूत्र लगा स्थानेऽन्तरतमः । स्थान मिलाने पर कृष्ण अकार का कण्ठस्थान और एकत्वम् के एकार का कण्ठतालु स्थान है। दोनों का स्थान मिलाकर कण्ठ-कण्ठतालु स्थान, अर्थात् कण्ठतालु स्थान है। स्थानियों का स्थान कण्ठतालु है तो अब आदेश में भी कण्ठतालु स्थान वाला कौन सा वर्ण है? खोजा तो ऐ का कण्ठतालु स्थान है। अतः ऐ आदेश हुआ। कृष्ण के अकार और एकत्वम् के एकार को हटाया। ध्यान रहे कि आदेश स्थानी को हटाकर के ही बैठता है। यहाँ पर दोनों वर्णो के स्थान पर ऐ आदेश बैठ गया- कृष्ण+ ऐ +कत्वम् बना। वर्णसम्मेलन होने पर ष्ण् जाकर ऐ से मिला तो कृष्णैकत्वम् सिद्ध हुआ।

गङ्गौघः=(गंगा का प्रवाह गङ्गा ओघ यह स्थिति है) **सन्धिविच्छेद =** गङ्गा+ओघः

गङ्गा+ओघः पूर्व में आकार और पर में ओकार है। दोनों का स्थान हुआ कण्ठ ओष्ठ यहाँ पर भी गुण की प्राप्ति थी, उसे बाधकर वृद्धिरेचि लगाकर स्थानेऽन्तरतमः की सहायता से आ और ओ के स्थान पर कण्ठ - ओष्ठ स्थानवाला औ यह वर्ण आदेश हुआ + औ+घः बना। वर्ण सम्मेलन हुआ गङ्गौघः।

देवैश्वर्यम् = (देवों का ऐश्वर्य) **सन्धिविच्छेद=देव+ऐश्वर्यम्**

देव ऐश्वर्यम् में पूर्व में अकार और पर में ऐकार है। दोनों का स्थान हुआ कण्ठ तालु। यहाँ पर भी गुण की प्राप्ति थी, उसे बाधकर वृद्धिरेचि लगाकर स्थानेऽन्तरतमः की सहायता से अ और ऐ के स्थान पर कण्ठ- तालु स्थानवाला ऐ यह वर्ण आदेश हुआ तो देव्+ऐ+श्वर्यम् वर्ण सम्मेलन हुआ देवैश्वर्यम् सिद्ध हुआ ।

कृष्णौत्कण्ठ्यम्=(कृष्ण के विषय में उत्कण्ठा) **सन्धिविच्छेद्द कृष्ण+ औत्कण्ठ्यम्**

कृष्ण औत्कण्ठ्यम् में पूर्व में अकार और पर में औकार है। दोनों का स्थान हुआ कण्ठ ओष्ठ । यहाँ पर भी गुण की प्राप्ति थी, उसे बाधकर वृद्धिरेचि लगाकर स्थानेऽन्तरतमः की सहायता से अ और औ के स्थान पर कण्ठ-ओष्ठ स्थानवाला औ

यह वर्ण आदेश हुआ तो कृष्ण+औ+त्कण्ठ्यम् बना। वर्णसम्मेलन होकर कृष्णौत्कण्ठ्यम् सिद्ध हुआ।

यह गुण का अपवाद सूत्र है।

(क) कृष्णैकत्वम्– (कृष्ण की एकता) - कृष्ण + एकत्वम् । अ और ए को ऐ वृद्धि एकादेश
(ख) गङ्गौघः– (गंगा का प्रवाह) - गङ्गा + ओघः । आ और ओ को औ वृद्धि एकादेश
(ग) देवैश्वर्यम्– (देवों का ऐश्वर्य) - देव + ऐश्वर्यम्। अ और ऐ को ऐ वृद्धि एकादेश ।
(घ) कृष्णौत्कण्ठ्यम्– (कृष्ण के प्रति उत्कण्ठा) - कृष्ण + औत्कण्ठ्यम्। अ और औ को औ वृद्धि एकादेश।

अन्य वृद्धि सूत्र

(वृद्धिविधायकं विधिसूत्रम्)

सूत्र- एत्येधत्यूठ्सु 6।1।89।।

वृत्ति- अवर्णादिजाद्योरेत्येधत्योरूठि च परे वृद्धिरेकादेशः स्यात्। उपैति । उपैधते। प्रष्ठौहः।एजाद्योः किम्? उपेतः। मा भवान् प्रेदिधत्। वार्तिकम् - अक्षादूहिन्यामुपसङ्ख्यानम्। अक्षौहिणी सेना । वार्तिकम्– प्रादूहोढोढ्येषैष्येषु । प्रौहः । प्रौढः । प्रौढिः । प्रैषः । प्रैष्यः । वार्तिकम् ऋते च तृतीयासमासे । सुखेन ऋतः, सुखार्तः । तृतीयेति किम्? परमर्तः। वार्तिकम्- प्रवत्सतरकम्बलवसनार्णदशानामृणे। प्रार्णम्, वत्सतरार्णम् इत्यादि।

अर्थ- अवर्ण से एच् आदि में हो ऐसे इण् धातु या एध् धातु अथवा ऊठ् के परे रहने पर पूर्व और पर के स्थान पर वृद्धिसंज्ञक एक आदेश होता है।

उपैति = (पास जाता है) **सन्धिविच्छेद =उप + एति**

उप + एति में आद्गुणः से गुण प्राप्त हुआ, उसे बाधकर वृद्धिरेचि से वृद्धि प्राप्त हुई, उसे भी बाधकर एङि पररूपम् से पररूप प्राप्त हुआ, उसे भी बाधकर सूत्र लगा- एत्येधत्यूठ्सु । अवर्ण है उप में पकारोत्तरवर्ती अकार, उससे एजादि इण् धातु पर में है एति। पूर्व में हैं उप का अकार और पर में है एति का एकार। इस तरह अकार और एकार के स्थान पर वृद्धिसंज्ञक एक आदेश होना है। वृद्धिसंज्ञक वर्ण

आ, ऐ, औ ये तीन हैं और स्थानी अ और ए दो ही हैं। दो के स्थान पर एक आदेश होना है किन्तु तीन आदेशों की प्राप्ति हो रही है। अतः अनियम हुआ। स्थाने उन्तरतमः के बल पर स्थान मिलाने पर कण्ठतालु स्थान वाले अ और ए के स्थान पर कण्ठतालुस्थान बाला ही ऐ यह आदेश हुआ। आदेश हमेशा स्थानी को हटाकर के बैठता है। अतः उप के अकार और एति के एकार को हटाकर के बैठा तो उप+ऐ+ति बना। वर्णसम्मेलन होकर उपैति सिद्ध हुआ।

1. उपैधते -उप +एधते
2. प्रष्ठौहः - प्रष्ठ+उहः
3. प्रौहः - प्र+उहः
4. प्रौढः - प्र+ उढः
5. प्रौढिः - प्र+ उढिः
6. प्रैष्यः - प्र+एष्यः
7. प्रार्णम् - प्र+ऋणम्
8. वत्सारार्णम् - वत्स+ऋणम्

अन्य उदाहरण
निम्नलिखित प्रयोगों में सन्धि करें-
एक एकम्। तथा+एव। तदा एव । तव एव । तव ओकः । तण्डुल + ओदनः।
शर्करा+ओदनः। प्राचीन ऐतिह्यम् । नृप+ऐश्वर्यम्। सर्व ऐश्वर्यम्। तथा+एव।
निम्नलिखित प्रयोगों की सन्धिविच्छेद कर पुनः सूत्र लगाकर सन्धि करें-
पञ्चैते। महौषधिः। वालैषा। जनैकता। महौदार्यम्। रामैश्वर्यम् । तदैव। एकैकम्। सर्वदैक्यम्। तवौदार्यम्। दिव्यौषधम्। द्वितीयैकवचनम्।

यण् सन्धि

(यणसन्धिविधायकं विधिसूत्रम्)

सूत्र- इको यणचि 6।1।77।।

वृत्ति- इकः स्थाने यण् स्यादचि संहितायां विषये।

उदा0- सुधी+उपास्य इति स्थिते।

इक् के स्थान पर यण् होता है, अच् परे होने पर, संहिता के विषय में।

1. इ को य आदेश
2. उ को व् आदेश
3. ऋ को र् आदेश
4. लृ को ल् आदेश

यह सूत्र यणसन्धि अर्थात् यण् आदेश का विधान करता है। अतः यह यण् आदेश- विधायक विधिसूत्र है। सारे सूत्र सभी जगहों पर नहीं लगते। उनकी कुछ शर्तें होती हैं। जो उनकी शर्तों को पूरा करता है, वहीं पर सूत्र प्रवृत्त होते हैं अर्थात् सूत्र लगते हैं। जैसे यण आदेश करने के लिए इको यणचि इस सूत्र ने शर्त रखी कि जहाँ पूर्व में इक् प्रत्याहार का वर्ण हो और पर में अच् प्रत्याहार का वर्ण हो, वहाँ इक् प्रत्याहार वाले वर्णों के स्थान पर मैं यण आदेश करूँगा । इक् प्रत्याहार में इ, उ, ऋ, लृ ये वर्ण आते हैं और अच् प्रत्याहार में अ, इ, उ, ऋ, लृ, ए, ओ, ऐ, औ ये वर्ण आते हैं। जिस जगह पूर्व में इक प्रत्याहार के इ, उ, ऋ, लृ में से कोई भी एक वर्ण हो और पर में अच् प्रत्याहार के अ, इ, उ, ऋ, लृ, ए, ओ, ऐ, औ में से कोई भी एक वर्ण हो तो इक् के स्थान पर यण् अर्थात् य्, व्, र्, ल् ये वर्ण आदेश के रूप में प्राप्त हो जाते हैं। जैसे- सुधी+उपास्यः में धी का ईकार इक है और उपास्यः वाला उकार अच् है और वह पर में विद्यमान है। अतः धी के ईकार के स्थान पर य्, व्, र्, लृ ये चारों यण् आदेश के रूप में प्राप्त हुए।

जो भी आदेश होता है, वह किसी वर्ण के स्थान पर ही होता है अर्थात् उसे हटाकर ही होता है। यहाँ ई के स्थान पर यण आदेश के रूप में ई को हटाकर बैठना चाहते हैं। यहाँ पर संहिता का विषय भी है, क्योंकि सुधी+उपास्यः में परः सन्निकर्षः संहिता से संहितासंज्ञा हो चुकी है। धी के ई और उपास्यः के उ की अत्यन्त समीपता अर्थातअत्यन्त सन्निधि है। अतः यह संहिता है।

सुद्ध्युपास्यः = (विद्वानों द्वारा उपास्य) **सन्धिविच्छेद =सुधी उपास्यः**

सुधी उपास्यः इतिस्थितौ परः सन्निकर्षः संहिता इत्यनेन सूत्रेण संहितासंज्ञायाम् तस्मिन्निति निर्दिष्टे पूर्वस्य, स्थानेऽन्तरतमः इतिसूत्रद्वयसहकारेण इको यणचि इतिसूत्रेण यणि सुध्य् उपास्यः इति जाते, अनचि च इतिसूत्रेण धकारस्य द्वित्वे, सुध्ध्य् उपास्यः इति जाते, झलां जश् झशि इतिसूत्रेण धकारस्य जश्त्वे सुद्ध्य् उपास्यः इति जाते, वर्णानां संयोगसंज्ञायाम् अलोऽन्त्यस्य इतिसूत्रसहकारेण संयोगान्तस्य लोपः इतिसूत्रेण

यकारस्य लोपे प्राप्ते यणः प्रतिषेधो वाच्यः इतिवार्तिकेन येथे वर्णसम्मेलने सुद्ध्युपास्यः इति रूप सिद्धम्। द्वित्वाभावे सुध्युपास्यः इति रूपं भवति ।

मद्ध्वरिः = (मधु नामक दैत्य के शत्रु भगवान विष्णु) **सन्धिविच्छेद = मधु+अरिः**

मधु+अरिः, मदध्वरिः मधु नामक दैत्य के शत्रु भगवान विष्णु। मधु+अरिः, इस स्थिति में परः सन्निकर्षः सहिता से सहितासंज्ञा होने के बाद तस्मिन्निति निर्दिष्टे पूर्वस्य इस सूत्र को सहायता से सप्तमीनिर्दिष्ट अच् से अव्यवहित पूर्व मधु के उकार के स्थान पर इको यणचि से यण प्राप्त। इक् है मधु का उकार और अच् परे है अरिः का अकार। अतः मधु के उकार के स्थान पर य. व. र. ल इन चारों की प्राप्ति हुई, अनियम हुआ। नियमार्थ सूत्रआया स्थानेऽन्तरतमः। स्थान की तुल्यता मिलाने पर मधु के उकार का ओष्ठ स्थान है।आदेशों में व् का दन्त-ओष्ठ स्थान। इसमें केवल ओष्ठ स्थान की तुल्यता ले कर के मधुके उकार के स्थान पर व् आदेश हुआ, मध्व अरिः बना। अनचि च से धकार को द्वित्वऔर झलां जश् झशि से जश्त्व हो कर के मध्य अरिः बना। दध्य की संयोगसंज्ञा के बाद अलोऽन्त्यस्य के सहयोग से संयोगान्तस्य लोपः से व का लोप प्राप्त यणः प्रतिषेधोवाच्यः इसके द्वारा लोप का निषेध हुआ। वर्णसम्मेलन होकर मद्ध्वरिः सिद्ध हुआ। द्वित्वन होने के पक्ष में मध्वरि बनता है।

धात्त्रंश = (ब्रह्मा का भाग) **सन्धि विच्छेद = धातृ+अंशः**

धातृ+अंशः की परः सन्निकर्षः संहिता से संहितासंज्ञा हुई और तस्मिन्निति निर्दिष्टे पूर्वस्य इस सूत्र की सहायता से सप्तमीनिर्दिष्ट अच् से अव्यवहित पूर्व धातृ के ऋकार के स्थान पर इको यणचि से यण् प्राप्त होता है। यहाँ पर इक् है धातृ का ऋकार और अच् परे है अंशः का अकार। अतः उक्त सूत्र से धातृ के ऋकार के स्थान पर य्, व्, र्, ल् चारों की प्राप्ति हुई। एक के स्थान पर चार वर्णों की प्राप्ति होता अनियम हुआ। अतः नियमार्थ सूत्र आया स्थानेऽन्तरतमः स्थान की तुल्यता मिलाने पर धातु में ऋकार का मूर्धास्थान है, अतः मूर्धास्थान से साम्यता हुई और धातृ के ऋकार के स्थान पर र् आदेश हुआ, धात् र् +अंशः अनचि च से तकार का द्वित्व हुआ, धात्त् + अंशः बना। यहाँ पर झलां जश् झशि नहीं लगेगा। क्योंकि झश् परे नहीं है।। तृ की संयोग संज्ञा, अलोऽन्त्यस्य के सहयोग से संयोगान्तस्य लोपः से र का लोप प्राप्त। यणः प्रतिषेधो वाच्यः इस वार्तिक के द्वारा लोप का निषेध हुआ। धात्र अंश बना हुआ है। इसमें वर्णसम्मेलन होकर धात्रशः सिद्ध हुआ। द्वित्व न होने के पक्ष में धात्रंशः बनता है।

लाकृतिः= (लृ के समान टेढ़ी आकृति है जिसकी ऐसे भगवान् श्रीकृष्ण) सन्धि विच्छेद लृ-आकृतिः लृ-आकृतिः इस स्थिति में संहितासंज्ञा करने के बाद अच् से अव्यवहित इक् लृ के स्थान पर इको यणचि से यण प्राप्त होता है। यहाँ पर इक् है लृ और अच् परे है आकृति का आकार । अनियम हुआ। नियमार्थ अतः लृ के स्थान पर य्, व्, र्, ल् चारों की प्राप्ति, सूत्र आया स्थानेऽन्तरतमः । स्थान की तुल्यता मिलाने पर लृ का दन्त स्थान, आदेशों में भी ला दन्त-स्थान है। दन्त-स्थान की तुल्यता से लृ के स्थान पर ल् आदेश हुआ, ल् आकृति बना। वर्णसम्मेलन हुआ लाकृतिः यहाँ पर यर से पहले अच् न होने के कारण अनचिच नहीं लगा। झल् परे न होने के कारण झलां जश् झशि से जश्त्व नहीं हुआ। एक ही हल होने के कारण संयोगसंज्ञा नहीं हुई। संयोगसंज्ञा के अभाव में अलोऽन्त्यस्य और संयोगान्तस्य लोप नहीं लगे। जब लोप ही नहीं प्राप्त हुआ तो लोप निषेध के लिये वार्तिक की भी आवश्यकता नहीं हुई। इस तरह से लू-आकृति में केवल यण होकर वर्णसम्मेलन करने पर लाकृतिः सिद्ध हुआ।

अन्य उदाहरण

निम्नलिखित प्रयोगों की सन्धिविच्छेद करें-

1. नद्यत्र। 2. यद्यपि। 3. प्रत्येकम् । 4. करोम्यहम्। 5. कौमुद्यायाति । 6. अस्त्यात्मा। 7. वद्धवागमनम्। 8. इत्याचरति । 9. गुर्वाज्ञा । 10. दद्ध्यत्र । 11. वंश्यायाति । 12. ह्ययम्। 13. अस्त्यनुरागः । 14. पित्राज्ञा । 15. खल्वत्र । 16. अत्युत्तमः। 17. लाकारः । 18. इत्यपि । 19. पित्रधीनम् । 20. पत्यादेशः ।

निम्नलिखित प्रयोगों की सन्धि करें-

1. जननी+आह। 2. धातृ + आदेशः । 3. मधु + आनय । 4. शिशु + अङ्गः । 5. भर्तृ+आदेशः । 6. तनु + अङ्गः । 7. मनु+आदिः । 8. वधू + अलङ्कारः। 9. अभि+उदयः । 10 कामिनी + उदयः । 19. पितृ + आज्ञा । 12. जननी+आगच्छति । 13. हरी+आगच्छतः । 14. नदी+आवहति । 15. कान्ति + आभा। 16. भानु+आभा। 17. गुरु + आस्था । 18. भ्रातृ+आशा । 19. दुहितृ+ ईशः । 20. गृहेषु+आसक्तः। 21. लृ+आकारः।

अयादि सन्धि

(अयाद्यादेशविधायकं विधिसूत्रम्)

सूत्र- एचोऽयवायावः 6।1।78।।

वृत्ति- एचः क्रमादय् अय् आव् आय् एते स्युरचि

एच् के स्थान पर अय्, अव्, आय्, आव् ये आदेश होते हैं अच् के परे होने पर।

यह अयादि आदेश विधान करने वाला विधिसूत्र है। अच् के परे रहने पर एच्. के स्थान पर अर्थात् पूर्व में एच् अर्थात् ए, ओ, ऐ, औ में से कोई एक वर्ण हो और पर मं अच् अर्थात् अ, इ, उ, ऋ, लृ, ए, ओ, ऐ, औ में से कोई एक वर्ण हो तो यह सूत्र लगता है। इसकी शर्त है- पूर्व में एच् और पर में अच् प्रत्याहार के वर्ण हों। इसका कार्य है अय्, अव्. आय्, आव् ये आदेश करना। किसके स्थान पर? एच् के स्थान पर, एच् क्या है? प्रत्याहार और किसके परे होने पर ? अच् के परे होने पर अच् क्या है? यह भी प्रत्याहार ही है।

'ए' के स्थान पर 'अय्' आदेश होगा - हरे+= हरये
'ओ' के स्थान पर 'अव्' आदेश होगा - विष्णो+आ= विष्णवे
'ऐ' के स्थान पर 'आय्' आदेश होगा - नै+अकः=नायकः
'औ' के स्थान पर 'आव्' आदेश होगा - पौ+अकः=पावकः

हरये= (हरि के लिए) **सन्धिविच्छेद=हरे+ए**

विष्णवे=(विष्णु के लिए) **सन्धिविच्छेद=विष्णो+ए**

विष्णो+ए में पहले सहितासंज्ञा हो गई और सूत्र लगा आव् ये आदेश एचोऽयवायावः।

सूत्र का अर्थ है- एच् के स्थान पर अय्, अव्, आय्, हों अच् परे रहने पर। एच् है विष्णो का ओकार और अच् परे है ओ, तो विष्णो के ओकार के स्थान पर अय्, अव्, आय्, आव् ये चारों आदेश प्राप्त हो गये। एक के स्थान पर चार-चार प्राप्त हुए तो अनियम हुआ और नियमार्थ परिभाषासूत्र लगा- 'यथासंख्यमनुदेशः समानाम्' सम संख्या की विधि क्रम से होती है। यहाँ पर समसंख्या है स्थानियों में ए, ओ, ऐ, औ ये चार और आदेशों में अय्, अव्, आय्, आव् ये चार हैं। जब क्रम से होंगे तो स्थानियों में पहले के स्थान पर पहला आदेश, दूसरे के स्थान पर दूसरा आदेश, तृतीय के स्थान पर तृतीय आदेश और चतुर्थ के स्थान पर चतुर्थ आदेश होंगे। यहाँ पर स्थानी में द्वितीय विष्णो के ओकार के स्थान पर आदेश में द्वितीय अव् आदेश हुआ। इस प्रकार विष्णु+अव+ओ बना और वर्णसम्मेलन हुआ तो विष्णवे सिद्ध हुआ ।

नायकः=(नायक, नेता) **सन्धिविच्छेद=नै+अकः**

नै+अकः इस स्थिति में पूर्व में एच् है नै का ऐकार और पर में अच् है अकः का अकार। अतः एचोऽयवायावः से अय्, अव्, आय्, आव्, ये चारों आदेश प्राप्त हुए तो यथासंख्यमनुदेशः समानाम् के नियम से स्थानों में तीसरे ने के ऐकार के स्थान पर आदेश में तीसरा आय् आदेश हुआ- न्+आय् + अकः बना। वर्णसम्मेलन होकर नायकः सिद्ध हुआ।

पावकः=(पवित्र करने वाला, अग्नि) **सन्धिविच्छेद=पौ+अकः**

पौ+अकः इस स्थिति में पूर्व में एच् है पौ का औकार और पर में अच् है अकः का अकार। अतः एचोऽयवायावः से अय्, अव्, आय् , आव् , ये चारों आदेश प्राप्त हुए तो यथासंख्यमनुदेशः समानाम् के नियम से स्थानी में चौथे पौ के औकार के स्थान पर आदेश में चौथा आव् आदेश हुआ- प्+आव्+अकः बना। वर्णसम्मेलन पावकः रूप सिद्ध हुआ।

अन्य उदाहरण

निम्नलिखित शब्दों में सन्धि कीजिए-

करौ एतौ । नरौ+उदारौ। गै+अति मनो+ए। रै+अकः । वागर्थौ+इव। नौ+इकः। भो+अति । शे+अयनम् । पो+अनः। कवे+ए। गोपालौ आयातः। प्रजापतये+इदम्। बालौ+अत्र । चोरे+अति । इन्दौ+उदिते। तौ+एकदा।

निम्नलिखित शब्दों की सन्धिविच्छेद कर पुनः सूत्र लगाकर सन्धि कीजिए-

गुरवे । विष्णवे । चायकः । अग्वाविह। चयः । जयः । नाविकः । प्रस्तावकः। कवये। पूजार्हावरिसूदनः । बालावोजस्विनौ । तस्मायेतत् ।

पूर्व-रूप सन्धि

(पूर्वरूपविधायकं विधिसूत्रम्)

सूत्र- एङः पदान्तादति 6।1।109।।

वृत्ति- पदान्तादेङोऽति परे पूर्वरूपमेकादेशः स्यात् ।

उदा0- हरेऽव। विष्णोऽव।

पदान्त एङ् से ह्रस्व अकार के परे होने पर पूर्व और पर के स्थान पर पूर्वरूप एक आदेश होता है।

एङः पदान्तादति यह सूत्र पूर्वरूप करता है। पररूप में पूर्व और पर के स्थान पर परवर्णसदृश वर्ण हो जाता है और इसके विपरीत पूर्वरूप में पूर्व और परवर्ण के स्थान पर पूर्ववर्णसदृश वर्ण होता है। दोनों में पूर्व और पर के स्थान पर एकादेश ही होता है।

यह सूत्र पदान्त एङ से केवल ह्रस्व अकार के परे रहने पर पूर्व और पर के स्थान पर पूर्वरूप एकादेश करता है। जैसे- ए+अ में पूर्व में ए है और पर में अ। जब पूर्वरूप हो जायेगा तो ए और अ दोनों के स्थान पर पूर्व का जैसा वर्ण केवल ए ही होता है। सूत्र के अनुसार पूर्व में पद के अन्त में विद्यमान एड हो और पर में केवल ह्रस्व अकार हो तो वहाँ पूर्वरूप का विधान होना चाहिए। इसके द्वारा पूर्वरूप होने पर अकार के स्थान पर 'ऽ' इस चिह्न को लगाने की परम्परा रही है जिसे अवग्रह या खण्डाकार कहते हैं। यद्यपि अवग्रह चिह्न (खण्डाकार) का विधान कोई सूत्र नहीं करता फिर भी वह पूर्व अकार का संकेत देता हुआ यह चिह्न संस्कृत भाषा में बहुत प्रचलित है। इस चिह्न का प्रयोग करें या न करें, इसमें आप स्वतन्त्र हैं अर्थात् कोई अनिवार्यता नहीं है।

हरेऽव=(हे हरे। रक्षा करें) **सन्धिविच्छेद=हरे+अव**

हरे+अव इस स्थिति में संहितासंज्ञा के बाद एचोऽयवायावः सूत्र से अब आदेश की प्राप्ति हुई और उसे बाधकर सूत्र लगा- एङः पदान्तादति । पदान्त एह से ह्रस्व अकार के परे रहने पर पूर्व-पर के स्थान पर पूर्वरूप एकादेश होता है। पदान्त एक है हरे का एकार और ह्रस्व अकार परे है अव का अकार। पूर्व में है हरे का एकार और पर में है अब का अकार। एकार और अकार के स्थान पर जब पूर्वरूप एकादेश हुआ तो एकार ही हुआ हरेव बना। परम्परा के अनुसार अकार की जगह 'ऽ' यह चिह्न लगाया गया- हरेऽव

विष्णोऽव = (हे विष्णो! रक्षा करें) **सन्धिविच्छेद = विष्णो+अव**

विष्णो+अव इस स्थिति में संहितासंज्ञा के बाद एचोऽयवायावः इस सूत्र से अव् आदेश की प्राप्ति और उसे बाधकर सूत्र लगा- एङः पदान्तादति। पदान्त एङ् से ह्रस्व अकार के परे रहने पर पूर्व और पर के स्थान पर पूर्वरूप एकादेश होता है। पदान्त एङ् है विष्णो का ओकार और ह्रस्व अकार परे है अब का अकार। पूर्व में है विष्णो का ओकार और पर में है अव का अकार। इस तरह ओकार और अकार के स्थान पर जब पूर्वरूप एकादेश हुआ तो ओकार ही हुआ- विष्णोव बना। परम्परा के अनुसार अकार की जगह 'ऽ' यह चिह्न लगाया गया- विष्णोऽव ।

अन्य उदाहरण

निम्नलिखित प्रयोगों में सन्धिविच्छेद करके सिद्धि करें-

सुन्दरेऽम्बरे। तेऽत्र। संसारेऽधुना। आधारोऽधिकरणम्। नमोऽस्तु कोऽसि। दासोऽहम्। स्थानेऽन्तरतमः। वनेऽस्मिन्। विशेषेऽनुरक्तः।

निम्नलिखित प्रयोगों की सिद्धि करें-

नमो-अस्तु। एचो+अयवायावः। को+अपि। संसारे+अत्र। गुरवे+अदाम्। वायो+अत्र। ब्रह्मणे+अस्मै। ततो+अन्यत्र। वने+अस्मिन्

श्चुत्व सन्धि

(श्चुत्वविधायकं विधिसूत्रम्)

सूत्र- स्तोः श्चुना श्चुः

वृत्ति - सकारतवर्गयोः शकारचवर्गाभ्यां योगे शकारचवर्गो स्तः।

उदा0- रामश्शेते। रामश्चिनोति। सच्चित्। शार्ङ्गिञ्जय॥

स्थानी	आदेश
स् अथवा श्	= श्
त्	= च्
थ्	= छ्
द्	= ज्
ध्	= झ्
न्	= ञ्

सकार और तवर्ग के स्थान पर शकार और चवर्ग का योग होने पर शकार और चवर्ग आदेश होते है।

यह सूत्र श्चुत्व करता है। सकार और तवर्ग ये स्थानी एवं शकार और चवर्ग ये आदेश हैं। शकार या चवर्ग का योग हो अर्थात् जिस वर्ण के स्थान पर श्चुत्व करना है उसके पूर्व या पर में या तो तालव्य शकार हो या तो चवर्ग (च्, छ, ज, झ, ञ् में से कोई एक वर्ण) हो तो उस दन्त्य सकार के स्थान पर तालव्य शकार और तवर्ग (त्,थ्,द्,ध और न) के स्थान पर चवर्ग आदेश होता है। दन्त्य सकार

के स्थान पर तालव्य शकार और तवर्ग के स्थान पर चवर्ग होगा। दन्त्य सकार स्थानी के रूप में अकेला ही है और आदेश भी तालव्य शकार अकेला ही है। एक स्थानी के स्थान पर एक ही आदेश प्राप्त होने पर कोई अनियम नहीं होता किन्तु तवर्ग का कोई एक अक्षर स्थानी होगा और आदेश में चवर्ग के सभी वर्ण प्राप्त होंगे। अतः एक के स्थान पर पाँच वर्णों की प्राप्ति होना अनियम है। अतः यथासंख्यमनुदेशः समानाम् इस परिभाषा सूत्र के नियमानुसार स्थानीतवर्ग में प्रथम तकार के स्थान पर चवर्ग में प्रथम चकार आदेश, तवर्ग में द्वितीय थकार के स्थान पर चवर्ग में द्वितीय छकार आदेश तवर्ग में तृतीय दकार के स्थान पर चवर्ग में तृतीय जकार आदेश, तवर्ग में चतुर्थ धकार के स्थान पर आदेश में चतुर्थ झकार आदेश, और तवर्ग में पञ्चम नकार के स्थान पर आदेश में पञ्चम ञकार आदेश होंगे। शकार और चवर्ग का योग पूर्व में हो और सकार एवं तवर्ग पर में हो तो भी श्चुत्व होगा और सकार और तवर्ग पूर्व में हो और शकार और चवर्ग का योग पर में हो तो भी श्चुत्व होगा। इस सूत्र से किये गये कार्य को श्चुत्व कहते हैं।

रामश्शेते= (राम सोता है) **सन्धिविच्छेद=रामस्+शेते**

ऐसी स्थिति में तालव्य शकार का योग है- शेते के शकार और पूर्व में है रामस् का दन्त्य सकार।

अतः रामस् के दन्त्य सकार के स्थान पर तालव्य शकार हो गया रामश्-शेते बना। वर्णसम्मेलन हुआ- रामश्शेते।

रामश्चिनोति= (राम चुनता है) **सन्धिविच्छेद = रामस्+चिनोति**

रामस्+चिनोति में भी स्तोः श्चुनाश्चुः से श्चुत्व हुआ।यहाँ पर चिनोति के चकार का योग है। इसलिए रामस् के दन्त्य सकार के स्थानपर तालव्य शकार आदेश हो गया- रामश्चिनोति।

सच्चित् = (सत् और चित्) **सन्धिविच्छेद=सत्+चित्**

सत्+चित् ऐसी स्थिति में स्तोः श्चुना श्चुः से श्चुत्व हुआ। यहाँ पर चित् के चकार का योग है और स्थानी तवर्ग के प्रथम अक्षर सत् के तकार के स्थान पर यथासंख्यमनुदेशः समानाम् के नियम से आदेश में प्रथम चकार आदेश हुआ सच्+चित् बना, वर्णसम्मेलन हुआसच्चित् रूप सिद्ध हुआ।

शार्ङ्गिञ्जय=(हे शार्ङ्गधारो विष्णु) **सन्धिविच्छेद=शार्ङ्गिन्+जय**

शार्ङ्गिन्-जय में स्तोः श्चुना श्चुःश्चुत्व हुआ। यहाँ पर शार्ङ्गिन् के नकार के स्थान पर चवर्ग में पञ्चम ञकार आदेश हुआ यहाँ पर जय का जकार चवर्ग है। इस तरह शार्ङ्गिञ्जय बना वर्णसम्मेलन हुआ शार्ङ्गिञ्जय सिद्ध हुआ।

चुत्वनिषेध

(चुत्वनिषेधकं विधिसूत्रम्)

सूत्र- शात् 8।4।44।।

वृत्ति- शात्परस्य तवर्गस्य चुत्वं न स्यात् ।

उदा0- विश्नः । प्रश्नः ।।

तालव्य शकार से परे तवर्ग को चुत्व नहीं होता है।

यह सूत्र स्तोः श्चुना श्चुः इस सूत्र का निषेधक सूत्र है, जो तालव्य शकार से परे तवर्ग के चुत्व का निषेध करता है। इस तरह शकार से परे तवर्ग का श्चुत्व नहीं होता है किन्तु चवर्ग से परे तवर्ग का चुत्व हो जाता है।

विश्नः (गमन) **सन्धिविच्छेद=विश्+नः**

विश्+नः इस स्थिति में शकार से परे नकार के स्थान पर स्तोः श्चुना श्चुः से श्चुत्व प्राप्त था तो शात् ने शकार से परे होने के कारण निषेध कर दिया, विश्नः ही रह गया। यदि चुत्व हो जाता तो विश्ञः ऐसा अनिष्ट रूप बन जाता।

प्रश्नः (सवाल) **सन्धिविच्छेद=प्रश्+नः**

प्रश्+नः इस स्थिति में शकार से परे नकार के स्थान पर स्तोः श्चुना श्चुः से श्चुत्व प्राप्त था तो शात् ने शकार से परे होने के कारण निषेध कर दिया, प्रश्नः ही रह गया। यदि चुत्व हो जाता तो प्रश्ञः ऐसा अनिष्ट रूप बन जाता।

ष्टुत्व सन्धि

(ष्टुत्वविधायकं विधिसूत्रम्)

सूत्र- ष्टुना ष्टुः

वृत्ति- स्तोः ष्टुना योगे ष्टुः स्यात् ।

उदा- रामष्षष्ठः। रामष्टीकते । पेष्टा । तट्टीका। चक्रिण्डौकसे ।।

दन्त्य सकार और तवर्ग के स्थान पर मूर्धन्य षकार और टवर्ग का योग होने पर मूर्धन्य षकार और टवर्ग आदेश होते हैं।

स्थानी	आदेश	उदाहरण
स् अथवा ष्	= ष्	रामस् +षष्ठः=रामष्षष्ठः
त=ट्		रामस् + टीकते=रामष्टीकते
थ्=ठ्	-	-
द्=ड	उद्+डीनः	=उड्डीनः
ध्=ढ्	-	-
न=ण्	-	चक्रिन्+ढौकसे=चक्रिण्ढौकसे

- **रामष्षष्ठः** (राम छठा है) **सन्धिविच्छेद=रामस्+षष्ठः**

रामस्+षष्ठः में सूत्र लगा ष्टुना ष्टुः । सूत्रार्थ घटाने पर दन्त्य सकार है रामस् वाला सकार और मूर्धन्य षकार का योगहै षष्ठ वाले षकार का। अतः रामस् के सकार के स्थान पर मूर्धन्य षकार आदेश हुआ- रामष् षष्ठः बना।वर्णसम्मेलन हुआ- रामष्षष्ठः सिद्ध हुआ।

- **रामष्टीकते** (राम जाता है) **सन्धिविच्छेद=रामस्+टीकते**

रामस्+टीकते में ष्टुना ष्टुः से टीकते के टवर्ग वाले टकार के योग में रामस् के सकार के स्थान पर मूर्धन्य षकार आदेश हुआ- रामष् टीकते बना वर्णसम्मेलन हुआ रामष्टीकते सिद्ध हुआ।

- **पेष्टा** (पीसने वाला) **सन्धिविच्छेद=पेष्+ता**

पेष्+ता में ष्टुना ष्टुः से ष्टुत्व हो कर ता के तकार के स्थान पर टवर्ग वाला टकार आदेश हुआ पेष्टा बना। वर्णसम्मेलन हुआ- पेष्टा सिद्ध हुआ।

- **तट्टीका** (वह टीका) **सन्धिविच्छेद=तत्-टीका**

तत्-टीका में भी ष्टुना ष्टुः से ष्टुत्व होकर तकार के स्थान पर टकार आदेश तथा वर्णसम्मेलन होकर तट्टीका सिद्ध हुआ ।

- **चक्रिण्ढौकसे** (हे चक्रधारी! तुम जाते हो) **सन्धिविच्छेद = चक्रिन्+ढौकसे**

चक्रिन् ढौकसे में टवर्ग ढकार के योग में स्थानी में पञ्चम चक्रिन् के नकार के स्थान पर आदेश में पञ्चम णकार हुआ- चक्रिण ढौकसे बना। वर्णसम्मेलन होकर चक्रिण्डौकसे सिद्ध हुआ।

निम्नलिखित प्रयोगों की सिद्धि करें-

हरिष्षडाचार्यः। दृष्+तः । इण्न। पेष्टुम् । सर्पिष्+तमम् । ग्रामात्+चलितः । उद्+ज्वलम्। तज्जलम्। सत्+छात्रः । उत्+छेदः । बालकस्+चपलः ।

ष्टुत्वनिषेधक

(ष्टुत्वनिषेधकं) विधिसूत्रम्

सूत्र- न पदान्ताट्टोरनाम् 8। 4। 42।।

वृत्ति- पदान्ताट्टवर्गात् परस्यानामः स्तोः ष्टुर्न स्यात्।

उदा0- षट् सन्तः। षट् ते।

पदान्त टवर्ग से परे नाम के नकार को छोड़कर अन्य तवर्ग एवं सकार को ष्टुत्व नहीं होता है।

- **षट् सन्तः** (छः सज्जन) **सन्धिविच्छेद=**षट्+सन्तः

षट्+सन्तः में ष्टुना ष्टुः से षट् के टकार से परे सन्त के सकार को ष्टुत्व अर्थात् षकारादेश प्राप्त था, उसका न पदान्ताट्टोरनाम् से पदान्त टवर्ग से परे होने के कारण निषेध हो गया क्योंकि षष् शब्द से प्रथमा के बहुवचन में षट् बनता है। उसकी सुप्तिङन्तं पदम् से पदसंज्ञा होती है। अतः षट् सन्तः ही रह गया।

- **षट्** ते (छः जने वे) **सन्धिविच्छेद=षट्+ते**

षट्+ते में ष्टुना ष्टुः से षट् के टकार से परे ते के तकार को टुत्व अर्थात् टकारादेश प्राप्त था, उसका न पदान्ताट्टोरनाम् से पदान्त टवर्ग से परे होने के कारण निषेध हो गया। षट् ते ही रह गया।

सूत्र- तोः षि 8।4।43

वृत्ति- न ष्टुत्वम्।

उदा0- सन्षष्ठः।

षकार के परे होने पर तवर्ग को ष्टुत्व न हो।

- **सन्षष्ठः** (छठा श्रेष्ठ) **सन्धिविच्छेद्व सन्=षष्ठः**

सन्+षष्ठः में षष्ठः के षकार के योग में सन् के स्थान पर ष्टुना ष्टुः से टुत्व प्राप्त था तो तोः षि ने निषेध कर दिया, सन्षष्ठः ही रह गया।

जश्त्व सन्धि

(जश्त्वविधायकं विधिसूत्रम्)

सूत्र- झलां जशोऽन्ते 8।2।39।।

वृत्ति-पदान्ते झलां जशः स्युः।

उदा0- वागीशः ।

पद के अन्त में विद्यमान झल् के स्थान पर जश् आदेश होता है।

झल् के बाद कोई भी वर्ण हो या न हो। अच् हो तो भी जश्त्व करेगा और हल् हो तो भी करेगा। हाँ, इसको बाधकर अन्य कोई सूत्र लगे तो अलग बात है। झल् प्रत्याहार में वर्ग के पंचम अक्षरों को छोड़कर प्रथम, द्वितीय, तृतीय चतुर्थ अक्षर तथा श्, ष्, स्, ही वर्ण आते हैं। जश् प्रत्याहार में केवल वर्ग के तीसरे अक्षर ज्, ब्, ग्, ड, द् ये ही आते हैं। स्थानेऽन्तरतमः की सहायता से स्थानी और आदेश में स्थान से तुल्यता होने पर आदेश होगा। क्, ख्, ग्, घ्, ह् के स्थान पर कण्ठस्थान की तुल्यता से 'ग्' आदेश होगा। च्, छ, ज, झ, श् के स्थान पर तालुस्थान की तुल्यता से 'ज्' आदेश होगा। ट्, ठ्, ड्, ढ्, ष् के स्थान पर मूर्धास्थान की तुल्यता से 'ड' आदेश होगा। त्, थ, द, ध्, स् के स्थान पर दन्तस्थान की तुल्यता से 'द्' आदेश होगा। इसी तरह प्, फ् ब् भ् के स्थान पर ओष्ठस्थान की तुल्यता से 'ब्' आदेश होगा।

- **वागीशः** (वाणी के स्वामी) **सन्धिविच्छेद-वाक्+ईशः**

वाक्+ईशः में वाक् शब्द का ईशः शब्द के साथ समास हुआ है। वाक् एक पद है। पद के अन्त में क् है। इसलिये पदान्त झल् है वाक् का ककार। इसके स्थान पर जश् अर्थात् ज्, ब्, ग्, ड, द् ये पाँचों प्राप्त हुए । यहाँ भी नियम से कण्ठस्थान वाले स्थानी ककार के स्थान पर कण्ठस्थान वाला ही ग् आदेश एक के स्थान पर पाँच वर्णों की प्राप्ति हुई, इसलिये अनियम हुआ तो स्थानेऽन्तरतमः हुआ। वाग्+ईशः बना। वर्णसम्मेलन होकर वागीशः सिद्ध हुआ।

अन्य उदाहरण

सुप् + अन्तः=सुबन्तः चित् + आनन्द=चिदानन्दः

अच् + अन्तः=अजन्तः   दिक् + अम्बरः=दिगम्बरः
जगत् + ईशः=जगदीशः   षट् + आननः=षडानन
उत् + देश्यम्=उद्देश्यम्   दिक् + गजः=दिग्गजः

अभ्यासः

निम्नलिखित प्रयोगों की सिद्धि करें-

अजन्तः। वागत्र। जगदीशः। षष्+अत्र। अप्+जम्। तिबन्तः। सुबन्तः। कृद समिध्+आदानम्। रामाद्+गृह्णाति।

अनुनासिकसन्धि

(अनुनासिकादेशविधायकं विधिसूत्रम्)

सूत्र- यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा 8।4।45।।

वृत्ति- यरः पदान्तस्यानुनासिके परेऽनुनासिको वा स्यात्।

उदा०- एतन्मुरारिः, एतद् मुरारिः।

अनुनासिक के पर में रहते पदान्त यर के स्थान पर विकल्प से अनुनासिक आदेश होता है।

यदि पर में कोई अनुनासिक वर्ण हो और पूर्व में पद के अन्त में विद्यमान यर् प्रत्याहार के वर्ण हों तो यर के स्थान पर अनुनासिक आदेश होगा विकल्प से। अनुनासिक भी दो प्रकार के होते हैं- अच् अनुनासिक और हल् अनुनासिक। जिनका उच्चारण नाक और मुख से हो वे अच वर्ण और हल् वर्ण अनुनासिक कहलाते हैं- मुखनासिकावचनोऽ नोऽनुनासिकः। ङ, ञ्, ण्, न्, म् ये नाक और मुख से उच्चारण होने वाले हलवर्ण अनुनासिक हैं। यहाँ पर अनुनासिक से ङ, ञ्, ण्, न्, म् ही ग्रहण किये गये हैं। इस सूत्र के लगने के बाद भी स्थानेऽन्तरतमः की आवश्यकता होगी क्योंकि स्थानी कोई एक वर्ण होगा और आदेश में उक्त पाँचों प्राप्त होंगे।

• एतन्मुरारिः   सन्धिविच्छेद- एतत्+मुरारिः

एतत्+मुरारिः इस स्थिति में झलां जशोऽन्ते सूत्र से तकार के स्थान पर जश्त्व होकर एतद् मुरारि बना है। अब 'यरोऽनुनासिकेऽनासिको वा' की उपस्थिति हुई। अनुनासिक परे है मुरारिः का मकार और पदान्त यर है- एतद् का दकार। अब एतद् के दकार के स्थान पर अनुनासिक अर्थात् ङ, ञ्, ण्, न्, म् ये सभी प्राप्त हुए। एक

के स्थान पर पाँच अनुनासिकों की प्राप्ति होना भी अनियम हुआ तो स्थानेऽन्तरतमः के नियम से स्थान मिलाने से दन्तस्थान वाले दकार के स्थान पर दन्तस्थान वाला ही नकार आदेश हुआ। अतः द् को हटाकर न् आदेश हुआ- एतन्+मुरारिः बना। वर्णसम्मेलन हुआ- न्+मु-न्मु, एतन्मुरारिः बना।

अनुनासिक न होने के पक्ष में एतद् मुरारिः ही रह गया।

वार्तिकम्–

प्रत्यये भाषायां नित्यम्। तन्मात्रम्। चिन्मयम्।

अनुनासिक वर्ण आदि में हो ऐसे प्रत्यय के परे होने पर लौकिक प्रयोगों में पदान्त यर के स्थान पर नित्य से अनुनासिक होता है।

नोट– पूर्व सूत्र विकल्प से अनुनासिक कर रहा था किन्तु नित्य से करने के लिए वार्तिक का अवतरण हुआ।

• तन्मात्रम् (उतना ही)   **सन्धिविच्छेद=तत्+मात्रम्**

तत्+मात्रम् में तत् के तकार को झलां जशोऽन्ते से जश्त्व होकर दकार आदेश हुआ, तद् बना। मात्रच् प्रत्यय है, उसके परे होने पर तद् के दकार के स्थान पर 'प्रत्यये भाषायां नित्यम्' से स्थानेऽन्तरतमः की सहायता से नित्य से अनुनासिक नकार आदेश हुआ, तन्+मात्रम् बना। वर्णसम्मेलन होकर तन्मात्रम् सिद्ध हुआ।

• चिन्मयम् (चेतन स्वरूप)   **सन्धिविच्छेद**=चित्+मयम्

चित्+मयम् में चित् के तकार को झलां जशोऽन्ते से जश्त्व होकर दकार आदेश हुआ, चिद् बना। मयट् प्रत्यय है, उसके परे होने पर चिद् के दकार के स्थान पर 'प्रत्यये भाषायां नित्यम्' से स्थानेऽन्तरतमः की सहायता से नित्य से अनुनासिक नकार आदेश हुआ, चिन्मयम् बना।

वर्णसम्मेलन होकर चिन्मयम् सिद्ध हुआ।

अभ्यासः

निम्नलिखित प्रयोगों की सिद्धि करें-

जगन्नाथः। मन्माता। षण्मासाः। वाङ्मयम्। किञ्चिन्मात्रम्। वाक्+मलम्। सत्-मार्गः। त्वत्-मनः। इट् निषेधः तत्-न। चिन्मात्रम्। तन्मयम्।

अनुस्वार सन्धि

(अनुस्वारविधायकं विधिसूत्रम्)

सूत्र- मोऽनुस्वारः 8।3।23।।

वृत्ति- मान्तस्य पदस्यानुस्वारो हलि

उदा0- हरिं वन्दे ।

किसी पद के अंत में 'म्' हो तो उस मकार को अनुस्वार (ऊपर बिन्दी) होता है हल् (व्यंजन) के परे (बाद में) होने पर।

पद के अन्त में यदि मकार है और आगे हल् अर्थात् व्यंजन परे है तो मकार के स्थान पर अनुस्वार आदेश हो जाता है। हल् परे होना इसलिए जरूरी है कि अच् परे रहने पर अनुस्वार न हो।

नोट– सरलता के लिए यह समझ लीजिएगा की हल् से व्यंजन तथा अच् से स्वर् समझेंगे ।

• **हरिं वन्दे** (हरि को प्रणाम करता हूँ) **सन्धिविच्छेद-हरिम्+वन्दे**

हरिम्+वन्दे में हरिम् द्वितीया विभक्ति के एकवचन का रूप है। सुबन्त होने के कारण पदसंज्ञा हुई है और पद के अन्त में विद्यमान है हरिम् का मकार। हल् परे है- वन्दे का वकार । अतः मकार के स्थान पर अनुस्वार (ऊपर बिन्दी) होकर हरिं वन्दे सिद्ध हुआ।

सूत्र- नश्चापदान्तस्य झलि 8।3।24।।

वृत्ति- नस्य मस्य चापदान्तस्य झल्यनुस्वारः ।

उदा0- यशांसि। आक्रंस्यते। झलि किम्? मन्यते।

अपदान्त नकार, मकार के स्थान पर अनुस्वार आदेश होता है, झल् के परे होने पर

• **यशांसि** (बहुत यश) **सन्धिविच्छेद=यशान् सि**

यशान् सि ऐसी स्थिति है। यशांसि यह पूरा पद है, केवलयशान् पद नहीं है। अपदान्त नकार है यशान् का नकार और झल् परे है सि का सकार। अतः नश्चापदान्तस्य झलि सूत्र से यशान् के नकार के स्थान पर अनुस्वार हो गया- यशांसि।

• **आक्रंस्यते** (आक्रमण करेगा, ऊपर चढ़ेगा) **सन्धिविच्छेद=आक्रम्+स्यते**

आक्रम्+स्यते ऐसी स्थिति है। अपदान्त मकार है आक्रम् का मकार और झल् परे है स्यते का सकार। अतः आक्रम् के मकार के स्थान पर अनुस्वार हो गया- आक्रंस्यते।

नोट– नश्चापदान्तस्य झलि-मोऽनुस्वारः में अंतर- मोऽनुस्वारः सूत्र पद के अंत में मकार को अनुस्वार करता है किन्तु नश्चापदान्तस्य झलि यह सूत्र अपदांत अर्थात् बीच में ही मकार को अनुस्वार कर देगा। दोनों सूत्र के उदाहरण ऊपर बताए गए है, आराम से पढ़ कर समझिए मुझे विश्वास है निश्चित ही दोनों में अंतर कर पायेंगे।

अभ्यासः

निम्नलिखित प्रयोगों की सिद्धि करें-

शत्रुम्+जयति। पुस्तकम् पठति । भारतम् + वन्दे । गुरुम्+नमति। शिवम्+वन्दे। नम् स्यति। मनान् सि। पयान्+सि। श्रेयांसि। हाँस

पर-सवर्ण सन्धि

सूत्र- अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः 8।4।58

उदा0- शान्तः

यय् प्रत्याहार के परे होने पर अनुस्वार के स्थान पर परसवर्ण होता है।

परसवर्ण का अर्थ है पर (बाद) में जो वर्ण है उसके सवर्णियों (साथी) में से ही आदेश होगा ।

जैसे- अंतिम में क होगा तो ङ, च होगा तो ञ्, ट होगा तो ण्, त होगा तो न् आदेश होगा यय् प्रत्याहार में समस्त हलों में से केवल स, श, ष, स को छोड़ कर सभी व्यंजन आयेगा।

(यय् प्रत्याहार- य, व, र, ल, ञ, म, ङ, ण, न, झ, भ, घ, ट, ध, ज, ब, ग, ड, द, ख फ, छ, ठ, थ, च्, ट, त, क, प,)

• **शान्तः- सन्धिविच्छेद -शाम्+तः**

शाम्+तः में पहले नश्चापदान्तस्य झलि से शाम् के मकार के स्थान पर अनुस्वार हुआ- शां+तः बना। उसके बाद सूत्र लगा- अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः।

यय् प्रत्याहार है तः का तकार और शां में अनुस्वार है ही। उसके स्थान पर परवर्ण के सवर्णी प्राप्त हुए। अनुस्वार से परे है तः का तकार और तकार के सवर्णी हैं- त्, थ, द, ध, न् अनुस्वार के स्थान पर ये पाँचों प्राप्त हुए। अतः अनियम हुआ और नियमार्थ स्थानेऽन्तरतमः की प्रवृत्ति हुई और स्थान से मिलाने पर स्थानी अनुस्वार का नासिका स्थान है और आदेश त्, थ, द, ध, न् में से नासिकास्थान वाला वर्ण केवल न् है। अतः अनुस्वार के स्थान पर नकार आदेश हो गया। शान्+तः बना, वर्णसम्मेलन होकर शान्तः सिद्ध हुआ ।

अन्य उदाहरण

अं + क=अङ्कः।
अं + चितः=अञ्चितः।
शां + तः=शान्तः।
शं + का=शङ्का ।
सं मानः=सम्मानः।
कं + तः=कण्ठः।

(वैकल्पिकपरसवर्णविधायक विधिसूत्रम्)

सूत्र- वा पदान्तस्य 8।4।58।

उदा०-त्वङ्करोषि त्वं करोषि ।

पदान्त अनुस्वार के स्थान पर यय् के परे रहते परसवर्ण होता है।

यह सूत्र अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः का बाधक सूत्र है क्योंकि वह पदान्त एवंअपदान्त दोनों में परसवर्ण नित्य से करता है और यह सूत्र केवल पदान्त में ही परसवर्ण करता है विकल्प से।

• **त्वङ्करोषि त्वं करोषि** (तुम करते हो) **सन्धिविच्छेद् त्वम्+करोषि**

त्वम् करोषि में पहले मोऽनुस्वारः से मकार के स्थान पर अनुस्वार होगा। उसके बाद अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः से नित्य से परसवर्ण प्राप्त था, उसे बाधकर सूत्र लगा- वा पदान्तस्य पदान्त अनुस्वार है त्वं का अनुस्वार और यय् प्रत्याहार परे है करोषि का ककार। अतः अनुस्वार के स्थान पर परवर्ण ककार के सवर्णी क्, ख्, ग् घ् ङ् ये सभी प्राप्त हुए। स्थानेऽन्तरतमः के नियम से स्थान की तुल्यता मिलाने पर नासिका स्थानिक अनुस्वार के स्थान पर नासिकास्थान वाला ही ङकार आदेश हुआ- त्वङ्+करोषि बना। वर्णसम्मेलन हुआ त्वङ्करोषि ।

जब विकल्प से होने के कारण परसवर्ण नहीं हुआ तो अनुस्वार वाला ही रूप रह गया- त्वं करोषि ।

उत्व-रुत्व सन्धि

(रुत्वविधायकं विधिसूत्रम्)

सूत्र- स-सजुषो रुः 8।2।66।।

वृत्ति- पदान्तस्य सस्य सजुषश्च रुः स्यात् ।

पद के अन्तिम सकार को रु (र्) होता है तथा सजुष् शब्द के षकार के स्थान पर रु आदेश होता है।

अलोऽन्त्यस्य के बल पर पद के अन्त्य में विद्यमान दन्त्य सकार के स्थान पर और सजुष् शब्द में जो मूर्धन्य षकार है उसके स्थान पर रु आदेश का विधान करता है।

सजुष् शब्द में दन्त्य सकार न होने से रुत्व प्राप्त नहीं हो रहा था, इसलिये इस सूत्र में सजुष शब्द का अलग से कथन करना पड़ा। इस सूत्र के द्वारा किये गये कार्य को रुत्व कहा जाता है। रु (र्+उ=रु) में उकार की उपदेशेऽजनुनासिक इत् से इत्संज्ञा और तस्य लोपः से लोप होकर केवल र बचता है।

विसर्ग से सम्बन्धित चार सूत्रों का बड़ा महत्त्व है। जैसे- ससजुषो रुः से सकार के स्थान पर रुत्व कर दिए जाने के बाद विरामोऽवसानम् से अवसानसंज्ञा होकर खरवसानयोर्विसर्जनीयः से विसर्ग हो जाता है। उसके बाद विसर्जनीयस्य सः से विसर्ग के स्थान पर सकारादेश होता है। सकारादेश होने के पहले विसर्ग होना जरूरी है और विसर्ग होने के पहले सकार के स्थान पर रुत्व होना जरूरी है।

(उत्वविधायकं विधिसूत्रम्)

सूत्र- अतो रोरप्लुतादप्लुते 6।1।113।।

वृत्ति- अप्लुतादतः परस्य रोरुः स्यादप्लुतेऽति ।

उदा०-शिवोऽर्च्यः

प्लुत-भिन्न ह्रस्व अकार से परे रु सम्बन्धी रेफ को उकार आदेश होता है प्लुत-भिन्न ह्रस्व अकार के परे रहते।

सूत्र का कार्य रु में से शेष बचे रेफ के स्थान पर उ आदेश करना है किन्तु

उ रेफ से पूर्व भी अप्लुत ह्रस्व अकार हो और परे भी अप्लुत ह्रस्व अकार हो तो। दोन तरफ अप्लुत ह्रस्व अकार और बीच में रु का रेफ हो तो उस के स्थान पर उकार आदेश हो जायेगा।

नोट– अप्लुत अकार से परेशान होने की जरूरत नहीं है, अप्लुत अर्थात् जो प्लुत नहीं हो।

अप्लुत अकार- अ सामान्य वाला, प्लुत अकार अ3 को कहेंगे।

• **शिवोऽर्च्यः** (शिव पूज्य हैं) **सन्धिविच्छेद् शिवस्+अर्च्यः**

शिवस्+अर्च्यः इस स्थिति में अन्त्य दन्त्य स के स्थान पर ससजुषो रुः से रु आदेश होने पर शिवरु+र्च्यः बना । रु के उकार व उपदेशेऽजनुनासिक इत् से इत्संज्ञा और तस्य लोपः से लोप हुआ- शिव र अर्च्यः बना अब अतो रोरप्लुतादप्लुते इस सूत्र से उस रेफ के स्थान उकार आदेश हुआ क्योंकि हर अकार है शिव में वकारोत्तरवर्ती अकार और उससे परे रेफ है रु से बचा र तथा रेफ भी ह्रस्व अकार परे है अर्च्यः वाला अकार। इस तरह इस सूत्र से उत्व होने प शिव+उ+अर्च्यः बना। शिव +उ में आद्गुणः से गुण होकर शिवो+अर्च्यः बना। शिव+उ में आदगुणः से गुण होकर शिवो+अर्च्यः बना। शिवो+अर्च्यः में एचोऽयवायावः से अव् आदेश प्राप्त था, उसे बाधकर एङः पदान्तादति से पूर्वरूप तो ओकार और अकार मिलकर पूर्वरूप ओ ही बन गये। शिवो+र्च्यः बना। अकार हुआ के स्थान पर संकेताक्षर ए (खण्डकार) यह चिह्न आकर के बैठ जाने पर शिवोऽर्च्यः रूप बन गया।

(उत्वविधायक' विधिसूत्रम्)

सूत्र- हशि च 6।1।114।।

उदा0- तथा। शिवो वन्द्यः ।

अप्लुत ह्रस्व अकार से परे रु वाले र् के स्थान पर उकारादेश होता है हश् प्रत्याहार परे हो तो।

'अतो रोरप्लुतादप्लुते'-'हशि च' में अन्तर-

इस सूत्र का काम भी उत्व करना ही है किन्तु अतो रोरप्लुतादप्लुते सूत्र ह्रस्व अकार के परे रहने पर लगता है और हशि च यह सूत्र हश् प्रत्याहार के परे रहने पर लगता है। इन दोनों सूत्रों में इतना ही अन्तर है, बाँकी सब में समानता है। अतः ये दोनों सूत्र समानान्तर सूत्र हैं।

• **शिवो वन्द्यः** (शिव वन्दनीय हैं) **सन्धिविच्छेद=शिवस+ वन्द्यः**

शिवस+वन्द्यः में सकार के स्थान पर रुत्व हो जाने पर शिवर+वन्द्यः बना। वन्द्यः में जो वकार है, वह हल् वर्ण है। अतः ह्रस्व अकार परे न होने के कारण अतो रोरप्लुतादप्लुते से उत्व नहीं हो सका तो हशि च की जरूरत पड़ी। इस सूत्र ने वकार रूपी हश् के परे रहने पर रेफ के स्थान पर उकार आदेश कर दिए जाने के कारण शिव+उ+वन्द्यः बना। शिव +उ में आद्गुणः से गुण होने पर रूप सिद्ध हुआ- शिवो वन्द्यः।

अन्य उदाहरण	
रामः+अस्ति=रामोऽस्ति।	**कः+अपि=कोऽपि।**
सः+अपि= सोऽपि।	**रामः+अवदत्=रामोऽवदत्।**
नृपः+अगच्छत्=नृपोऽगच्छत्।	**देवः+अधुना=देवोऽधुना**
कः+अयम्=कोऽयम्।	**सः+अपठत्=सोऽपठत्।**

लोप सन्धि

(सुलोपविधायकं विधिसूत्रम्)

सूत्र- एतत्तदोः सुलोपो कोरनञ्समासे हलि 6।1।132।।

वृत्ति- अककारयोरेतत्तदोर्यः सुस्तस्य लोपो हलि, न तु नञ्समासे ।

उदा0- एष विष्णुः। स शम्भुः ।

एषः और सः के विसर्ग या स् का लोप हो जाता है, बाद में कोई हल् (व्यंजन) हो तो। नञ् समास में और इन शब्दों में क होने पर लोप नहीं होगा।

• **एष विष्णुः** (ये विष्णु हैं) **सन्धिविच्छेद- एष+सु+विष्णुः**

एष+सु+विष्णुः में सु यह प्रथमा विभक्ति के एक वचन वाला प्रत्यय है। सु उसमें उकार की उपदेशेऽजनुनासिक इत् से इत्संज्ञा हुई और तस्य लोपः से उकार का लोप हुआ तो उसमें केवल स् बचा। उस सकार का एतत्तदोः सुलोपोऽकोरञ्समासे हलि से लोप हुआ, क्योंकि यहाँ स् से परे हल् भी है तथा नञ् समास भी नहीं है और क भी नहीं है। फलतः सु के सकार के लोप होने के बाद एष बचा। इस तरह एष विष्णुः बन गया।

• **स शम्भुः** (वे शम्भु हैं) **सन्धिविच्छेद-स+सु+शम्भुः**

स+सु+शम्भुः में सु यह प्रथमा विभक्ति के एक वचन वाला प्रत्यय है। सु उसमें

उकार की उपदेशेऽजनुनासिक इत् से इत्संज्ञा हुई और तस्य लोपः से उकार का लोप हुआ तो उसमें केवल स् बचा। उस सकार का एतत्तदोः सुलोपो ऽकोरञ्समासे हलि से लोप हुआ, क्योंकि यहाँ स् से परे हल् भी है तथा क भी नहीं हैं। सु के सकार के लोप होने के बाद स बचा। इस तरह स शम्भुः बन गया।

अन्य उदाहरण

सः+पठति=स पठति	**सः+अयम्=सोऽयम्।**
सः+लिखति=स लिखति	**एषः+वदति=एष वदति।**
सः+इच्छति=स इच्छति।	**एषः+गच्छति=एष गच्छति**
एषः+अपि=एषोऽपि।	**सः+आगत=स आगतः।**

विसर्गस्थाने स्,श्,ष्

(सकारादेशविधायकं विधिसूत्रम्)

सूत्र- विसर्जनीयस्य सः 8।3।34।।

वृत्ति- खरि।

उदा0 विष्णुस्त्राता।

खर् के परे होने पर विसर्जनीय विसर्ग के स्थान पर सकार आदेश होता है।

खर् प्रत्याहार में वर्ग के प्रथम और द्वितीय अक्षर तथा श्, ष, स, ये वर्ण हैं। इनके परे होने पर विसर्ग के स्थान पर सकार आदेश हो जाता है। इनमें भी क ख के परे होने पर वैकल्पिक जिह्वामूलीय तथा प और फ के परे होने पर वैकल्पिक उपध्मानीय होता है। च और छ के परे होने पर इसके द्वारा किये गये सकार को स्तोः श्चुना श्चुः से शकार आदेश हो जाता है तथा ट और ठ के परे होने पर ष्टुना ष्टुः षकार होता है। त और थ के परे होने पर सकार ही रहता है।

● **विष्णुस्त्राता** (विष्णु रक्षक हैं) **सन्धिविच्छेद- विष्णुः+त्राता**

विष्णुः+त्राता में त्राता के तकार को खर् मानकर विसर्ग के स्थान पर सकार आदेश हो गया विष्णुस्त्राता सिद्ध हुआ।

(वैकल्पिक विसर्गादेशविधायकं विधिसूत्रम्)

सूत्र- वा शरि 8।3।36।।

वृत्ति- शरि विसर्गस्य विसर्गो वा

उदा0- हरिः शेते, हरिश्शेते।

शर् प्रत्याहार के परे होने पर विसर्ग से स्थान पर विकल्प से विसर्ग आदेश होता है।

शर् प्रत्याहार खर् प्रत्याहार के अन्तर्गत आता है। शर के परे होने पर विसर्जनीयस्य सः से नित्य से सकार आदेश प्राप्त था। एक पक्ष में विसर्ग और एक पक्ष सकार करने के लिए अपवाद के रूप में इस वैकल्पिक सूत्र का आरम्भ है। तात्पर्य यह हुआ कि घर में से श, ष, स के परे होने पर एक पक्ष में विसर्ग और एक पक्ष में सकार तथा शेष खर् के परे होने पर नित्य से विसर्ग के स्थान पर सकार हो रहता है।

● **हरिः शेते**, हरिश्शेते (हरि शयन करते हैं) **सन्धिविच्छेद-हरिः शेते**

हरिः शेते में विसर्ग के स्थान पर विसर्जनीयस्य सः से नित्य से सकार आदेश प्राप्त था। शेते का शकार शर् है, उसके परे होने पर उक्त सूत्र को बाधकर के वा शरि से एक पक्ष में विसर्ग ही आदेश हुआ, हरिः शेते ही रहा। यह वैकल्पिक है, अतः न होने के पक्ष में विसर्जनीयस्य सः से सकार आदेश हुआ- हरिस्-शेते बना। शकार के योग में सकार के स्थान पर स्तोः श्चुना श्चुः से शकार आदेश होकर वर्णसम्मेलन होने पर हरिश्शेते सिद्ध हुआ। इस तरह दो रूप बने।

अन्य उदाहरण

न् हरिः + त्रायते=हरिस्त्रायते।	न् रामः + तिष्ठति=रामस्तिष्ठति
न् जनाः + तिष्ठन्ति=जनास्तिष्ठन्ति।	न् रामः + च=रामश्च।
न् बालः + चलति=बालश्चलति	न् रामः + शेते=रामश्शेते
न् कः + चित्=कश्चित्।	न् निः + चल=निश्चलः।

।ः यूनिट-3 इति ः।

यूनिट-4

समासाः विग्रहाः च

- **अव्ययीभावः**
  यथा, प्रति, उप, अनु, निर्, सह, अधि ।
- **द्वन्द्वः**
  इतरेतरद्वन्द्वः, समाहारः, एकशेषः ।
- **तत्पुरुषः**
  विभक्तितत्पुरुषः, कर्मधारयः, द्विगुः, उपपदतत्पुरुषः ।
- **बहुव्रीहिः**

समास का सामान्य परिचय

- समास का शाब्दिक अर्थ है-समसनं समासः संक्षेप
- अनेकपदानामेकपदीभवन समासः-अनेक पद मिलकर एकपद होना ही समास है। जैसे-गङ्गायाः जलम् गङ्गाजलम्
- विग्रह- वृत्त्यर्थावबोधकं वाक्यं विग्रहः अर्थात् समास के अर्थ को बताने वाले वाक्य को विग्रह कहते है।
- विग्रह के 2 भेद- 1. लौकिक (लोक में प्रयोग योग्य)
  2. अलौकिक (लोक में अप्रयोग)
- **समासः पञ्चधा- समास के पाँच भेद है-**

1. केवल समास (विशेष संज्ञा नहीं दिया गया है)
2. अव्ययीभाव समास (पूर्व-पद प्रधान होता है)
3. तत्पुरुष समास (उत्तर-पद प्रधान होता है)
   (तत्पुरुष का भेद कर्मधारय, कर्मधारय का भेद द्विगु समास है)
4. बहुव्रीहि समास (अन्य-पद प्रधान होता है)
5. द्वन्द्व समास (उभय-पद प्रधान होता है)

केवल समास

केवल समास के 2 उदारण है-

- **भूतपूर्वः**- पूर्वं भूतः
- **वागर्थाविव**- वागर्थौ इव

अव्ययीभाव समास

- प्रायः करके इस समास में एक पद अव्ययसंज्ञक होता है और एक पद अनव्यय।
- अव्यय के साथ समास होने पर पुनः उस समस्त शब्द की भी अव्ययीभावश्च से अव्ययसंज्ञा होती है अर्थात् अव्ययीभाव समास होने के बाद शब्द अव्यय बन जाता है।
- इस समास में पूर्वपद के अर्थ की प्रधानता होती है।
- अव्ययीभाव समास नित्य नपुंसक लिङ्ग में होता है।

अव्ययीभाव समास का मुख्य सूत्र-

अव्ययं विभक्ति-समीप-समृद्धि व्यृद्ध्यर्थाभावात्ययासम्प्रति-शब्दप्रादुर्भाव- पश्चाद्यथानुपूर्व्य-यौगपद्य-सादृश्य-सम्पत्ति-साकल्यान्तवचनेषु।

इन 16 अर्थो में अव्ययीभाव समास होता है-

1. विभक्ति (प्रथमा आदि)
2. समीप
3. समृद्धि (ऋद्धि का आधिक्य)
4. व्यृद्धि (समृद्धि का अभाव)
5. अर्थाभाव (वस्तु का अभाव)
6. अत्यय (नष्ट होना)
7. असम्प्रति (अनुचित)
8. शब्दप्रादुर्भावश्च (शब्द की अभिव्यक्ति)
9. पश्चात् (पीछे)
10. यथा
11. आनुपूर्व्य (क्रमशः)
12. यौगपद्य (एक साथ होना)
13. सादृश्य (समानता)
14. सम्पत्ति
15. साकल्य (संपूर्णता)
16. अन्त (समाप्ति)

नोट– इन विभिन्न अर्थों में से हमारे पाठ्यक्रम में यथा, प्रति, उप, अनु, निर्, सह, अधि ही लगा है अतः सम्पूर्ण का अध्ययन नहीं करेंगे।

यथा

यथा के चार अर्थ माने गए है-

योग्यतावीप्सापदार्थानतिवृत्तिसादृश्यानि यथार्थाः।

1. योग्यता - योग्य अथवा उचित होना
2. वीप्सा - बारम्बार होना
3. पदार्थानतिवृत्ति - पदार्थ की सीमा का अतिक्रमण न करना
4. सादृश्य - एक जैसा होना

योग्यता का उदाहरण-

अनुरूपम् (रूप के योग्य) **लौकिक विग्रह- रूपस्य योग्यम्**

रूप ङस्+अनु यह अलौकिक विग्रह में यथा के योग्यता अर्थ में विद्यमान अनु के साथ रूप ङस् का अव्ययं विभक्ति-समीप-समृद्धि-व्यू द्धयर्थाभावात्ययासम्प्रति-शब्दप्रादुर्भाव- पश्चाद्यथानुपूर्व्य- यौगपद्य-सादृश्य-सम्पत्ति-साकल्यान्तवचनेषु से समास हो गया। समास करने के बाद रूप+ङस्+अनु इस समुदाय की कृत्तद्धितसमासाश्च से प्रातिपदिकसंज्ञा हो गई। ङस् का सुपो धातुप्रातिपदिकयोः से लुक् हुआ। रूप+अनु बना। प्रथमानिर्दिष्ट अनु की प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम् से उपसर्जनसंज्ञा हो गई तो उपसर्जनं पूर्वम् से उपसर्जनसंज्ञक अनु का पूर्वप्रयोग हुआ अर्थात् पर में था पूर्व में आ गया- अनुरूप बना। अव्ययीभावश्च से अव्ययसंज्ञा, एकदेशविकृतमनन्यवत् इस न्याय के बल पर अनुरूप को प्रातिपदिक मानकर सु विभक्ति आई और उसका अव्ययादाप्सुपः से लुक् प्राप्त हुआ तो नाव्ययीभावादतोऽस्त्वपञ्चम्याः से विभक्ति के लुक् का निषेध तो हो ही गया साथ ही सु के स्थान पर अम् आदेश भी हुआ अनुरूप+अम् बना। अमि पूर्वः से पूर्वरूप हुआ- अनुरूपम्।

इसी तरह गुणानां योग्यम् - अनुगुणम्, लेखस्य योग्यम्- अनुलेखम्, विद्यालयस्य योग्यम्- अनुविद्यालयम् आदि उदाहरण है।

वीप्सा का उदाहरण

प्रत्यर्थम् (प्रत्येक अर्थ के प्रति) **लौकिक विग्रह - अर्थमर्थं प्रति**

अर्थ+अम्+प्रति इस अलौकिक विग्रह में अव्ययं विभक्ति-समीप-समृद्धि - व्यृद्धयर्थाभावात्ययासम्प्रति- शब्दप्रादुर्भाव-पश्चाद्यथानुपूर्व्य-यौगपद्य-सादृश्य-सम्पत्ति-

साकल्यान्तवचनेषु से यथा के वीप्सा अर्थ में विद्यमान प्रति के साथ रूप+ङस् का समास हो गया। समास करने के बाद अर्थ-अम्+प्रति इस समुदाय की कृत्तद्धितसमासाश्च से प्रातिपदिकसंज्ञा हो गई। अम् का सुपो धातुप्रातिपदिकयोः से लुक् हुआ। अर्थ+प्रति बना। प्रथमानिर्दिष्ट प्रति की प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम् से उपसर्जनसंज्ञा हो गई तो उपसर्जनं पूर्वम् से उपसर्जनसंज्ञक प्रति का पूर्वप्रयोग हुआ अर्थात् पर में था पूर्व में आ गया-प्रति+अर्थ बना। इको यणचि से यण् होकर प्रत्यर्थ बना। अव्ययीभावश्च से अव्ययसंज्ञा, एकदेशविकृतमनन्यवत् इस न्याय के बल पर प्रत्यर्थ को प्रातिपदिक मानकर सु विभक्ति आई और उसका अव्ययादाप्सुपः से लुक् प्राप्त हुआ तो नाव्ययीभावादतो ऽम्त्वपञ्चम्याः से विभक्ति के लुक् का निषेध तो हो ही गया साथ ही सु के स्थान पर अम् आदेश भी हुआ प्रत्यर्थ+अम् बना। अमि पूर्वः से पूर्वरूप हुआ- प्रत्यर्थम्।

इसी तरह छात्र छात्रं प्रति प्रतिछात्रम्, जनं जनं प्रति प्रतिजनम्, गृहं गृहं प्रति- प्रतिगृहम् आदि।

पदार्थानतिवृत्ति का उदाहरण

यथाशक्ति (शक्ति के अनुसार अर्थात् शक्ति के उल्लंघन के विना)

लौकिक विग्रह- शक्तिम्अनतिक्रम्य

शक्ति अम् यथा अलौकिक विग्रह में यथा के पदार्थानतिवृत्ति अर्थात् पद के अर्थ का उल्लंघन न करना इस अर्थ में विद्यमान यथा के साथ शक्ति+अम् का अव्ययंविभक्ति-समीप-समृद्धि व्यृद्धयर्थाभावात्ययासम्प्रति-शब्दप्रादुर्भाव-पश्चाद्यथानुपूर्व्य-यौगपद्य-सादृश्य-सम्पत्ति साकल्यान्तवचनेषु से समास हो गया। समास करने के बाद शक्ति + अम् +यथा इस समुदाय की कृत्तद्धितसमासाश्च से प्रातिपदिकसंज्ञा हो गई। अम् का सुपो धातुप्रातिपदिकयोः से लुक् हुआ। शक्ति यथा बना । प्रथमानिर्दिष्ट यथा की प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम् से उपसर्जनसंज्ञा हो गई तो उपसर्जनं पूर्वम् से उपसर्जनसंज्ञक यथा का पूर्वप्रयोग हुआ अर्थात् पर में था पूर्व में आ गया- यथाशक्ति बना। अव्ययीभावश्च से अव्ययसंज्ञा, एकदेशविकृतमनन्यवत् इस न्याय के बल पर यथाशक्ति को प्रातिपदिक मानकर सु विभक्ति आई और उसका अव्ययादाप्सुपः से लुक् हुआ यथाशक्ति।

प्रकारेण बुद्धिम् अनतिक्रम्य यथाबुद्धि, ज्ञानम् अनतिक्रम्य यथाज्ञानम् आदि जगहों पर समास करना चाहिए।

अव्ययीभावे चाकाले- कालवाचक शब्द उत्तरपद में न हो, तो सह के स्थान परस आदेश होता है।

सादृश्य का उदाहरण

सहरि (हरि के सदृश) **लौकिक विग्रह- हरेः सादृश्यम्**

हरि+ङस+सह यह अलौकिक विग्रह है। यथा के सदृश अर्थ में विद्यमान सह के साथ हरि+ङस् का अव्ययं विभक्ति-समीप-समृद्धि-व्यृद्धयर्थाभावात्ययासम्प्रति-शब्दप्रादुर्भाव- पश्चाद्यथानुपूर्व्य-यौगपद्य-सादृश्य-सम्पत्ति-साकल्यान्तवचनेषु से समास हो गया। समास करने के बाद हरि+ङस्+सह इस समुदाय की कृत्तद्धितसमासाश्च से प्रातिपदिकसंज्ञा हो गई। ङस् का सुपो धातुप्रातिपदिकयोः से लुक् हुआ। हरि+सह बना । प्रथमानिर्दिष्ट सह की प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम् से उपसर्जनसंज्ञा हो गई तो उपसर्जनं पूर्वम् से उपसर्जनसंज्ञक सह का पूर्वप्रयोग हुआ अर्थात् पर में था पूर्व में आ गया सह+हरि बना । अव्ययीभावे चाकाले से सह के स्थान पर स आदेश हुआ- सहरि बना । अव्ययीभावश्च से अव्ययसंज्ञा, एकदेशविकृतमनन्यवत् इस न्याय के बल पर सहरि को प्रातिपदिक मानकर सु विभक्ति आई और उसका अव्ययादाप्सुपः से लुक् हुआ- सहरि।

उप के अर्थ में

उप समीप अर्थ में प्रयोग हुआ है।

उपकृष्णम् (कृष्ण के समीप) **लौकिक विग्रह- कृष्णस्य समीपं**

कृष्ण ङस् उप अलौकिक विग्रह है। समीप अर्थ में विद्यमान उप के साथ कृष्ण ङस् उप का अव्ययं विभक्ति-समीप-समृद्धि व्यृद्धयर्थाभावात्ययासम्प्रति-शब्दप्रादुर्भाव- पश्चाद्यथानुपूर्व्य-यौगपद्य-सादृश्य-सम्पत्ति-साकल्यान्तवचनेषु से समास हो गया। समास करने के बाद कृष्ण ङस् उप इस समुदाय की कृत्तद्धितसमासाश्च से प्रातिपदिकसंज्ञा हो गई। ङस् का सुपो धातुप्रातिपदिकयोः से लुक् हुआ। कृष्ण उप बना। प्रथमानिर्दिष्ट उप की प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम् से उपसर्जनसंज्ञा हो गई तो उपसर्जनं पूर्वम् से उपसर्जनसंज्ञक उप का पूर्वप्रयोग हुआ अर्थात् पर में था पूर्व में आ गया- उपकृष्ण बना। एकदेशविकृतमनन्यवत् इस न्याय के बल पर उपकृष्ण

को प्रातिपदिक मानकर सुविभक्ति आई और अव्ययप्रकरण के अव्ययीभावश्च से अव्ययसंज्ञक होने के कारण सु विभक्ति का अव्ययादाप्सुपः से लुक् प्राप्त हुआ तो नाव्ययीभावादतो ऽत्वपञ्चम्याः से विभक्ति के लुक् का निषेध तो हो ही गया साथ ही सु के स्थान पर अम् आदेश भी हुआ- उपकृष्णद्दअम् बना। अमि पूर्वः से पूर्वरूप हुआ- उपकृष्णम्।

अनु के अर्थ में

अव्ययीभाव समास में अनुआनुपूर्व्य और पश्चात् अर्थ में प्रयोग हुआ है।

पश्चात् का उदाहरण

अनुविष्णु (विष्णु के पीछे) लौकिक विग्रह- विष्णोः पश्चात्

विष्णु+ङस+अनु यह अलौकिक विग्रह है। पश्चात् अर्थात् पीछे इस अर्थ में अनु के विष्णुद्दङस् का अव्ययं विभक्ति - समीप-समृद्धि - व्यृद्धयर्थाभावात्ययासम्प्रति-शब्दप्रादुर्भाव- पश्चाद्यथानुपूर्व्य-यौगपद्य-सादृश्य-सम्पत्ति-साकल्यान्तवचनेषु से समास हो गया। समास करने के बाद विष्णु+ङस्+अनु इस समुदाय की कृत्तद्धितसमासाश्च से प्रातिपदिक संज्ञा हो गई। ङस् का सुपो धातुप्रातिपदिकयोः से लुक् हुआ। विष्णुद्दअनु बना। प्रथमानिर्दिष्ट अनु की प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम् से उपसर्जनसंज्ञा हो गई तो उपसर्जनं पूर्वम् से उपसर्जनसंज्ञक अनु का पूर्वप्रयोग हुआ अर्थात् पर में था पूर्व में आ गया- अनुविष्णु बना। अव्ययीभावश्च से अव्ययसंज्ञा, एकदेशविकृतमनन्यवत् इस न्याय के बल पर अनुविष्णु को प्रातिपदिक मानकर सु विभक्ति आई और उसका अव्ययादाप्सुपः से लुक् हुआ अनुविष्णु ।

इसी तरह अनुरथम्, अनुशिष्यम्, अनुगोपालम् आदि प्रयोग बनेगें।

आनुपूर्व्य का उदाहरण-

अनुज्येष्ठम् (ज्येष्ठ के क्रम से) **लौकिक विग्रह- ज्येष्ठस्य आनुपूर्व्येण**

ज्येष्ठ+ङस्+अनु अलौकिक विग्रह में आनूपूर्व्य अर्थ में विद्यमान अनु के साथ ज्येष्ठ ङस् का अव्ययं विभक्तिसमीप-समृद्धि-व्यृद्धयर्थाभावात्ययासम्प्रति-शब्दप्रादुर्भाव- पश्चाद्यथानुपूर्व्य-यौगपद्य-सादृश्य-सम्पत्ति-साकल्यान्तवचनेषु से समास हो गया। समास करने के बाद ज्येष्ठ+ङस्+अनु इस समुदाय की कृत्तद्धितसमासाश्च से

प्रातिपदिकसंज्ञा हो गई। ङस् का सुपो धातुप्रातिपदिकयोः से लुक् हुआ। ज्येष्ठ अनु बना। प्रथमानिर्दिष्ट अनु की प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम् से उपसर्जनसंज्ञा हो गई तो उपसर्जनं पूर्वम् से उपसर्जनसंज्ञक अनु का पूर्वप्रयोग हुआ अर्थात् पर में था पूर्व में आ गया- अनुज्येष्ठ बना। अव्ययीभावश्च से अव्ययसंज्ञा, एकदेशविकृतमनन्यवत् इस न्याय के बल पर अनुज्येष्ठ को प्रातिपदिक मानकर सु विभक्ति आई और उसका अव्ययादाप्सुपः से लुक् प्राप्त हुआ तो नाव्ययीभावादतोऽम्त्वपञ्चम्याः से विभक्ति के लुक् का निषेध तो हो ही गया साथ ही सु के स्थान पर अम् आदेश भी हुआ अनुज्येष्ठ बना। अमि पूर्वः से पूर्वरूप हुआ- अनुज्येष्ठम्।

इसी तरह वृद्धस्य आनुपूर्व्येण- अनुवृद्धम् आदि और भी प्रयोग बनेगें।

निर् के अर्थ में

अव्ययीभाव समास में निर् उपसर्ग अभाव अर्थ में प्रयोग हुआ है।

निर्मक्षिकम् (मक्खियों का अभाव) **लौकिक विग्रह- मक्षिकाणाम् अभावः**

मक्षिका+आम्+निर् अलौकिक विग्रह है। वस्तु के अभाव अर्थ में निर् के साथ मक्षिका+आम् का अव्ययं विभक्ति-समीप-समृद्धि-व्यृद्ध्यर्थाभावात्ययासम्प्रति- शब्दप्रादुर्भाव-पश्चाद्यथानुपूर्व्य-यौगपद्य-सादृश्य-सम्पत्ति-साकल्यान्तवचनेषु से समास हो गया। समास करने के बाद मक्षिका+आम्+निर् इस समुदाय की कृत्तद्धितसमासाश्च से प्रातिपदिकसंज्ञा हो गई। आम् का सुपो धातुप्रातिपदिकयोः से लुक् हुआ। मक्षिका+निर् बना। प्रथमानिर्दिष्ट निर् की प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम् से उपसर्जनसंज्ञा हो गई तो उपसर्जनं पूर्वम् से उपसर्जनसंज्ञक निर् का पूर्वप्रयोग हुआ अर्थात् पर में था पूर्व में आ गया- निर्+मक्षिका बना। रेफ का ऊर्ध्वगमन हुआ- निर्मक्षिका बना । एकदेशविकृतमनन्यवत् इस न्याय के बल पर निर्मक्षिका को प्रातिपदिक मान कर सु विभक्ति आई और अव्ययीभावश्च से नपुंसकलिङ्ग हुआ और ह्रस्वो नपुंसके प्रातिपदिकस्य से का में आकार को ह्रस्व होकर निर्मक्षिक बना। अव्ययसंज्ञक होने के कारण सु विभक्ति का अव्ययादाप्सुपः से लुक् प्राप्त हुआ तो नाव्ययीभावादतोऽस्त्वपञ्चम्याः से विभक्ति के लुक् का निषेध तो हो ही गया साथ ही सु के स्थान पर अम् आदेश भी हुआ- निर्मक्षिक+अम् बना। अमि पूर्वः से पूर्वरूप हुआ- निर्मक्षिकम्।

इसी तरह मशकानाम् अभावः- निर्मशकम्, विघ्नानाम् अभावः- निर्विघ्नम् आदि भी बनाने की चेष्टा करें।

सह के अर्थ में

(सादेशविधायकं विधिसूत्रम्)

सूत्र- अव्ययीभावे चाकाले 6।3।81।।

वृत्ति- सहस्य सः स्यादव्ययीभावे न तु काले।

उदा0- हरेः सादृश्यं सहरि। जेष्ठस्यानुपूर्व्येणेति अनुजेष्ठम्। चक्रेण युगपत् सचक्रम्। सदृशः सख्या ससखि । क्षत्राणां सम्पत्तिः सक्षत्रम्। तृणमप्यपरित्यज्य सतृणमत्ति। अग्निग्रन्थपर्यन्तमधीते साग्नि

यह सूत्र सह को स आदेश करता है, अव्ययीभाव समास में। परंतु काल अर्थ में सह को स आदेश नहीं करेगा।

सचक्रम् (चक्र के साथ एक ही काल में) **लौकिक विग्रह चक्रेण युगपत्**

चक्र टा सह अलौकिक विग्रह में यौगपद्य अर्थात् एक साथ एक ही काल में इस अर्थ को लेकर अव्ययं विभक्ति- समीप-समृद्धि युद्धयर्थाभावात्ययासम्प्रति-शब्दप्रादुर्भाव- पश्चाद्यथानुपूर्व्य-यौगपद्य-सादृश्य-सम्पत्ति साकल्यान्तवचनेषु से चक्र-टा-सह में समास हो गया। समास करने के बाद चक्र-टा-सह इस समुदाय की कृत्तद्धितसमासाश्च से प्रातिपदिकसंज्ञा हो गई। टा का सुपो धातुप्रातिपदिकयोः से लुक् हुआ। चक्र-सह बना। प्रथमानिर्दिष्ट सह की प्रथमानिर्दिष्ट समास उपसर्जनम् से उपसर्जनसंज्ञा हो गई तो उपसर्जन पूर्वम् से उपसर्जनसंज्ञक सह का पूर्वप्रयोग हुआ अर्थात् पर में था पूर्व में आ गया- सह+चक्र बना। अव्ययीभावे चाकाले से सह के स्थान पर स आदेश हुआ सचक्र बना। एकदेशविकृतमनन्यवत् से प्रातिपदिक मानकर सु विभक्ति, अव्ययसंज्ञक होने के कारण अव्ययादाप्सुपः से सु का लुक् प्राप्त हुआ तो नाव्ययीभावादतोऽपत्यपञ्चम्याः से विभक्ति के लुक का निषेध तो हो ही गया साथ ही सु के स्थान पर अम् आदेश भी हुआ- सचक्र+अम् बना। अमि पूर्वः से पूर्वरूप हुआ- सचक्रम्।

सह के अन्य उदाहरण-

- सदृशः सख्या ससखि ।
- क्षत्राणां सम्पत्तिः सक्षत्रम्।
- तृणमप्यपरित्यज्य सतृणमत्ति।

- अग्निग्रन्थपर्यन्तमधीते साग्नि

नोट—पूर्व की तरह ये सभी प्रयोग बनेगें।

अधि के अर्थ में

अव्ययीभाव समास में अधि उपसर्ग विभक्ति अर्थ में प्रयोग हुआ है, जिसके 2 उदाहरण है।

1. अधिहरि - (हरि में) लौकिक विग्रह- हरौ इति

हरि ङि अधि यह अलौकिक विग्रह है। सूत्र अलौकिक विग्रह में ही लगते हैं। हरि ङि अधि इस अलौकिक विग्रह में समास करने के लिए सूत्र लगा- अव्ययं विभक्ति-समीप- समृद्धि-व्यृद्ध्यर्थाभावात्ययासम्प्रति-शब्दप्रादुर्भाव-पश्चाद्यथानुपूर्व्य-यौगपद्य-सादृश्य- सम्पत्ति-साकल्यान्तवचनेषु।

अव्यय का विभक्ति आदि अर्थों में समर्थ सुबन्त के साथ समास होता है। यह अव्यय है- अधि, इसके साथ सामर्थ्य रखने वाला समर्थ सुबन्त है- हरि ङि। इस सूत्र से हरि ङि अधि का समास हो गया अर्थात् यह पूरा समुदाय समाससंज्ञा को प्राप्त हो गया। समास करने के बाद हरि ङि अधि इस समुदाय की कृत्तद्धितसमासाश्च से प्रातिपदिकसंज्ञा हो गई, हरि ङि अधि यह पूरा समुदाय प्रातिपदिक कहलाया। इसलिए इसमें लगा ङि-प्रत्यय प्रातिपदिक का अवयव बन गया। ङिका सुपो धातुप्रातिपदिकयोः से लुक हुआ। हरि अधि बना। अव्ययं विभक्ति-समीप-समृद्धि-व्यृद्ध्यर्थाभावात्ययासम्प्रति-शब्दप्रादुर्भाव-पश्चाद्यथानुपूर्व्य-यौगपद्य-सादृश्य-सम्पत्ति-साकल्यान्तवचनेषु इस समासविधायक सूत्र में प्रथमान्तपद है-अव्ययम्, इस पद से निर्दिष्ट है- अधि, अतः अधि की प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम् से उपसर्जनसंज्ञा हो गई तो उपसर्जनं पूर्वम् से उपसर्जनसंज्ञक अधि का पूर्वप्रयोग हुआ अर्थात् पर में था पूर्व में आ गया- अधिहरि बना। पहले हरि ङि अधि की प्रातिपदिकसंज्ञा की गई थी किन्तु वह सब बदल गया, अधिहरि बना, फिर भी वह प्रातिपदिक बना हुआ है। एकदेशविकृतमनन्यवत् के बल से विकृति होने पर भी वह प्रातिपदिक बना रहता है। अतः अधिहरि को प्रातिपदिक मानकर सु विभक्ति आई और अव्ययप्रकरण के अव्ययीभावश्च से अव्ययसंज्ञक होने के कारण अधिहरि इस प्रातिपदिक से आई विभक्ति का अव्ययादाप्सुपः से लुक् हुआ अधिहरि सिद्ध हुआ।

2. अधिगोपम् लौकिकविग्रहः-गाः पातीति गोपाः, तस्मिन् गोपि इति, अधिगोपम्।

गोपि इति गोपाङि अधि इति अलौकिकविग्रहः। गोपाङि अधि यह विभक्ति अर्थ में समास का उदाहरण है। इस प्रयोग में अधि शब्द सप्तमीविभक्ति के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है। गोपा ङि अधि इस अलौकिक विग्रह में समास करने के लिए सूत्र लगा- अव्ययं विभक्ति-समीप-समृद्धि- व्यृद्ध्यर्थाभावात्ययासम्प्रति-शब्दप्रादुर्भाव पश्चाद्यथानुपूर्व्य- यौगपद्य-सादृश्य-सम्पत्ति- साकल्यान्तवचनेषु।

अव्यय का विभक्ति आदि अर्थों में समर्थ सुबन्त के साथ समास होता है। अव्यय है- अधि, इसके साथ सामर्थ्य रखने वाला समर्थ सुबन्त हैं- गोपा ङि। इस सूत्र से गोपा ङि अधि का समास हो गया अर्थात् यह पूरा समुदाय समाससंज्ञा को प्राप्त हो गया। समास करने के बाद गोपा ङि अधि इस समुदाय की कृत्तद्धितसमासाश्च से प्रातिपदिकसंज्ञा हो गई, गोपा ङि अधि यह पूरा समुदाय प्रातिपदिक कहलाया। इसलिए इसमें लगा ङि-प्रत्यय प्रातिपदिक का अवयव बन गया। ङि का सुपो धातुप्रातिपदिकयोः से लुक् हुआ। गोपा अधि बना। अव्ययं विभक्ति-समीप-समृद्धि-व्यृद्ध्यर्थाभावात्ययासम्प्रति-शब्दप्रादुर्भाव-पश्चाद्यथानुपूर्व्य- यौगपद्य-सादृश्य-सम्पत्ति साकल्यान्त-वचनेषु इस समासविधायक सूत्र में प्रथमान्त पदहै- अव्ययम्, इस पद से निर्दिष्ट है- अधि, अतः अधि की उपसर्जनसंज्ञा हो गई तो उपसर्जनं पूर्वम् से उपसर्जनसंज्ञक अधि का पूर्वप्रयोग हुआ अर्थात् पर में था पूर्व में आ गया- अधिगोपा बना। अव्ययीभावश्च से नपुंसक हुआ और ह्रस्वो नपुंसके प्रातिपदिकस्य से अधिगोपा में पा के आकार को ह्रस्व होकर अधिगोप बना।

एकदेशविकृतमनन्यवत् के बल से विकृति होने पर भी वह प्रातिपदिक बना रहता है। अतः अधिगोप को प्रातिपदिक मानकर सु विभक्ति आई और अव्ययप्रकरण के अव्ययसंज्ञक होने के कारण अव्ययादाप्सुपः से सु का लुक् प्राप्त हुआ तो नाव्ययीभावादतोऽपत्यपञ्चम्याः से विभक्ति के लुक का निषेध तो हो ही गया साथ ही सु के स्थान पर अम् आदेश भी हुआ- अधिगोप+अम् बना।

अमि पूर्वः से पूर्वरूप हुआ- अधिगोपम् सिद्ध हुआ।

अव्ययीभाव समास के अतिमहत्वपूर्ण उदाहरण एक नजर में

सामासिक पद	लौकिक विग्रह
• अधिगोपम	• गाः पातीति गोपास्तस्मिन्
• उपकृष्णम्	• कृष्णस्य समीपम्
• सुमद्रम्	• मद्राणां समृद्धिः
• दुर्यवनम्	• यवनानां व्यृद्धिः
• निर्मक्षिकम्	• मक्षिकाणामभावो
• अतिहिमम्	• हिमस्यात्ययो
• अतिनिद्रम्	• निद्रासंप्रति न युज्यत इति
• इतिहरि	• हरिशब्दस्य प्रकाश
• अनुविष्णु	• विष्णोः पश्चात्
• अनुरूपम्	• रूपस्य योग्यम्
• प्रत्यर्थम्	• अर्थमर्थं प्रति
• यथाशक्ति	• शक्तिमनतिक्रम्य
• सहरि	• हरेः सादृश्यं
• अनुज्येष्ठम्	• ज्येष्ठस्यानुपूर्व्येण इति
• सचक्रम्	• चक्रेणयुगपत्
• ससखि	• सदृशः सख्या
• सक्षत्रम्	• क्षत्राणां संपत्तिः
• सतृणम्	• तृणमप्यपरित्यज्य
• साग्नि	• अग्निग्रन्थपर्यन्तमधीते
• पञ्चगङ्गम्	• पञ्चानां गङ्गानां समाहारः
• द्विमुनम्	• द्वयोर्मुनयोः समाहारः
• उपशरदम्	• शरदः समीपम्
• प्रतिविपाशम्	• विपाशं विपाशं प्रति
• उपजरसम्	• जरायाः समीपम्
• उपराजम्	• राज्ञः समीपम्
• अध्यात्मम्	• आत्मनि
• उपचर्मम्/उपचर्म	• चर्मणः
• उपसमिधम्/उपसमित्	• समीपम्
• द्विमुनि	• समिधः समीपम्
• त्रिमुनि	• द्वौ मुनि वंश्यौ
• एकविशतिः भारद्वाजः	• त्रि मुनि वंश्यौ

तत्पुरुष समास

- तत्पुरुष समास में उत्तरपद के अर्थ की प्रधानता होती है।
- तत्पुरुष समास के मुख्यतः 2 भेद होते है
  1. समानाधिकरण तत्पुरुष समास 2. व्यधिकरण तत्पुरुष समास
- व्यधिकरण तत्पुरुष समास के छः भेद है।
  1. द्वितीया तत्पुरुष समास-कर्म
  2. तृतीया तत्पुरुष समास -करण
  3. चतुर्थी तत्पुरुष समास- सम्प्रदान
  4. पञ्चमी तत्पुरुष समास- अपादान
  5. षष्ठी तत्पुरुष समास- सम्बन्ध
  6. सप्तमी तत्पुरुष समास- अधिकरण

विभक्ति तत्पुरुष समास

द्वितीया तत्पुरुष समास-

सूत्र- द्वितीया श्रितातीतपतितगतात्यस्तप्राप्तापन्नैः 2। 1। 24।।

वृत्ति- द्वितीयान्तं श्रितादिप्रकृतिकैः सुबन्तैः सह वा समस्यते स च तत्पुरुषः।

उदा0- कृष्णं श्रितः कृष्णश्रित इत्यादि ।।

द्वितीयान्त पद का–			
	श्रित,	कृष्णं श्रितः	कृष्णश्रितः
	अतीत,	अरण्यम् अतीतः	अरण्यातीतः
	पतित,	कूपं पतितः	कूपपतितः
	गत,	ग्रामं गतः	ग्रामगतः
	अत्यस्त,	-	-
	प्राप्त,	सुखं प्राप्तः	सुखप्राप्तः
	आपन्न,	दुःखं आपन्नः	दुःखापन्नः

शब्दों के सुबन्त रूपों के साथ विकल्प से समास होता है और उसे तत्पुरुष कहते हैं।

तृतीया तत्पुरुष समास

(तृतीयातत्पुरुष समासविधायकं विधिसूत्रम्)

सूत्र- तृतीया तत्कृतार्थेन गुणवचनेन 2।1।30।।

वृत्ति- तृतीयान्तं तृतीयान्तार्थकृतगुणवचनेनार्थेन च सह वा प्राग्वत्।

उदा0- शङ्कुलया खण्डः शण्कुलाखण्डः । धान्येनार्थो धान्यार्थः । तत्कृतेति किम्? अक्ष्णा काणः।

तृतीयान्त का तृतीयान्त अर्थ से किए गए गुण वाचक शब्दों के साथ और अर्थ शब्द के साथ विकल्प से समास होता है और वह तत्पुरुष समास कहलाता है।

- **शङ्कुलाखण्डः** (सरौते से किया हुआ टुकड़ा) **लौकिक विग्रह-** शङ्कुलया खण्डः

  शङ्कुला टा+खण्ड सु इस अलौकिक विग्रह तृतीया तत्कृतार्थेन गुणवचनेन से समास होकर और पूर्व बतायें गयें विभिन्न प्रक्रिया के बाद शङ्कुलाखण्डः रूप बनता है।

- **धान्यार्थः** (धान्य से प्रयोजन) **लौकिक विग्रह-** धान्येन अर्थः

  धान्य टा+अर्थ अलौकिक विग्रह में तृतीया तत्कृतार्थेन गुणवचनेन से समास हुआ। यहाँ पर तृतीयान्त पद है धान्य टा और समर्थ सुबन्त अर्थशब्द है अर्थ+सु। समास होकर और पूर्व बतायें गयें विभिन्न प्रक्रिया के बाद धान्यार्थः रूप सिद्ध होता है।

- **अक्ष्णा काणः** (आँख से काना) - कानापन आँख ने नहीं किया है, अतः समास नहीं हुआ।

इसी प्रकार विद्यार्थः, पुण्यार्थः, धनार्थः आदि भी सिद्ध होंगे।

(तृतीयातत्पुरुषसमासविधायकं विधिसूत्रम्)

सूत्र- कर्तृकरणे कृता बहुलम् 2।1।32।।

वृत्ति- कर्तरि करणे च तृतीया कृदन्तेन बहुलं प्राग्वत् ।

उदा0- हरिणा त्रातो हरित्रातः । नखैर्भिन्नो नखभिन्नः ।

परिभाषा- कृद्-ग्रहणे गतिकारकपूर्वस्यापि ग्रहणम्। नखनिर्भिन्नः ।

कर्ता और करण अर्थ में हुए तृतीया से युक्त पद कृदन्त के समास होता है।

- **हरित्रातः** (हरि के द्वारा रक्षित) **लौकिक विग्रह- हरिणा त्रातः**

हरि टा+त्रात सु अलौकिक विग्रह में कर्तृकरणे कृता बहुलम् से समास हुआ। यहाँ परकर्ता अर्थ में हुई तृतीया-विभक्तियुक्त पद है हरि+टा और समर्थ सुबन्त शब्द है त्रात+सु । समास के बाद हरि टा+त्रात सु की प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और सुपो धातुप्रातिपदिकयोः से टा और सु इन दो सुप्-प्रत्ययों का लुक् हुआ- हरि+त्रात बना। सूत्रार्थ करते समय प्रथमान्त पद वृत्ति में तृतीया यह है, उससे निर्दिष्ट हरि की उपसर्जनसंज्ञा और पूर्वप्रयोग करके हरित्रात बना है। सु विभक्ति और उसको रुत्व और विसर्ग करके हरित्रातः सिद्ध हुआ।

- **नखैर्भिन्नो नखभिन्नः** (नाखूनों से चीरा गया) **लौकिक विग्रह-नखैः भिन्नः**

नख भिस्+भिन्न सु अलौकिक विग्रह में कर्तृकरणे कृता बहुलम् से समास हुआ। यहाँ पर करण अर्थ में हुई तृतीया विभक्तियुक्त पद है नख+भिस् और समर्थ सुबन्त शब्द है. भिन्न+सु। समास के बाद नख भिस्+भिन्न सु की प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और सुपो धातुप्रातिपदिकयोः से भिस् और सु इन दो सुप्-प्रत्ययों का लुक हुआ नख-भिन्न बना। प्रथमानिर्दिष्ट नखभिन्न की उपसर्जनसंज्ञा और पूर्वप्रयोग करके नखभिन्न बना है। सु विभक्ति और उसको रुत्व और विसर्ग करके नखभिन्नः सिद्ध हुआ ।

- कृद्-ग्रहणे गतिकारकपूर्वस्यापि ग्रहणम्- कृत् के ग्रहण में गति-पूर्वक और कारकपूर्वक् कृदन्त का भी ग्रहण होता है, अतः गति (प्र, परा आदि उपसर्ग) और कर्म आदि कारक पहले होने पर भी इससे समास होगा।

- **नखनिर्भिन्नः** (नाखूनों से फाड़ा हुआ) **लौकिक विग्रह-नखैः निर्भिन्नः**

इस परिभाषा के कारण यहाँ पर भी इस सूत्र से समास होता है। समास होकर और पूर्व बतायें गयें विभिन्न प्रक्रिया के बाद यह रूप सिद्ध होता है।

चतुर्थी तत्पुरुष समास -

(चतुर्थीतत्पुरुषसमासविधायकं विधिसूत्रम्)

सूत्र- चतुर्थी तदर्थार्थबलिहितसुखरक्षितैः 2।1।36।।

वृत्ति- चतुर्थ्यन्तार्थाय यत्तद्वाचिना अर्थादिभिश्च चतुर्थ्यन्तं वा प्राग्वद् ।

उदा0- यूपाय दारु यूपदारु ।भूतबलिः । गोहितम् । गोसुखम्। गोरक्षितम्?

चतुर्थी अन्तवाले शब्द के अर्थ के लिए जो वस्तु हो, उसके वाचक शब्द के साथ तथा अर्थ, बलि, हित, सुख और रक्षित, इन शब्दों के साथ चतुर्थ्यन्त का विकल्प से समास होता है।

- **यूपदारु** (यज्ञ-स्तम्भ के लिए लकड़ी) **लौकिक विग्रह-यूपाय दारु।**

यूपाय दारु। खम्भे के लिए लकड़ी। यूपाय दारु लौकिक विग्रह और यूप ङे+दारु सु अलौकिक विग्रह में चतुर्थी तदर्थार्थबलिहितसुखरक्षितैः से समास हुआ। यहाँ पर चतुर्थ्यन्त पद है यूप+ और समर्थ चतुर्थ्यन्तार्थ शब्द है दारु सु। समास के बाद यूप ङे दारु सु को प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और सुपो धातुप्रातिपदिकयोः से ङे और सु इन दो सुप्-प्रत्ययों का लुक् हुआ यूप+दारु बना। प्रथमानिर्दिष्ट यूप की उपसर्जनसंज्ञा और पूर्वप्रयोग कर के यूपदारु बना है। सु विभक्ति आई और दारुशब्द के नपुंसक होने के कारण उसका स्वमोर्नपुंसकात् से लुक् होकर यूपदारु सिद्ध हुआ। इसके रूप मधु-शब्द की तरह बनते हैं।

इसी तरह आप गृहाय दारु- गृहदारु, कङ्कणाय सुवर्णम्- कङ्कणसुवर्णम् आदि

- बलि - भूतेभ्यो बलिः **भूतबलिः**
- हित, - गोभ्यो हितम् **गोहितम्**
- सुख, - गोभ्यः सुखम् **गोसुखम्**
- रक्षित, - गोभ्यः रक्षितम् **गोरक्षितम्**

वार्तिकम्- अर्थेन नित्यसमासो विशेष्यलिङ्गता चेति वक्तव्यम्- अर्थ शब्द के साथ नित्य समास होता है और विशेष्य के अनुसार विशेषण भी का लिङ्ग होता है।

- **द्विजार्थः सूपः-** द्विजाय अयम् - विशेष्य सूपःपुल्लिङ्ग होने के कारण विशेषणश्अर्थ भी पुल्लिङ्ग
- **द्विजार्था यवागूः -** द्विजाय इयम् - विशेष्य यवागू स्त्रीलिङ्ग होने के कारण विशेषण अर्थ भी स्त्रीलिङ्ग

- **द्विजार्थं पयः** - द्विजाय इदम् - विशेष्य सूपः नपुंसकलिङ्ग होने के कारण विशेषण अर्थ भी नपुंसकलिङ्ग

पञ्चमी तत्पुरुष समास

सूत्र- पञ्चमी भयेन 2।1।37।।

उदा0- चोराद्भयं चोरभयम् ।।

पञ्चम्यन्त का भयवाचक सुबन्त के साथ विकल्प से समास होता है।

- **चोरभयम्** (चोर से डर) **लौकिक विग्रह- चोराद्भयं चोरभयम्**

चोर ङसि भय सु अलौकिक विग्रह पञ्चमी भयेन से समास होकर और पूर्व बतायें गयें विभिन्न प्रक्रिया के द्वारा यह रूप सिद्ध होता है।

वृकभीतः, सिंहभीतः, भयभीतः आदि उदाहरण बनेगें।

सूत्र- स्तोकान्तिकदूरार्थकृच्छ्राणि क्तेन 2।1।39।।

सूत्र- पञ्चम्याः स्तोकादिभ्यः 6।3।2।।

वृत्ति- अलुगुत्तरपदे।

उदा0- स्तोकान्मुक्तः । अन्तिकादागतः । अभ्याशादागतः। दूरादागतः। कृच्छ्रादागतः।।

स्तोक आदि पञ्चम्यन्त का क्त प्रत्ययान्त सुबन्त के साथ समास होता है, इन स्तोकादि के बाद पञ्चमी का लोप नहीं होता है।

- स्तोक (अल्प,कम) - स्तोकात् मुक्तः स्तोकान्मुक्तः
- अन्तिक (समीप) - अन्तिकात् गतः अन्तिकादागतः
- दूर - दूरात् आगतः दूरादागतः
- कृच्छ - कृच्छ्रात् आगतः कृच्छ्रादागतः

षष्ठी तत्पुरुष समास

(षष्ठीतत्पुरुष समासविधायकं विधिसूत्रम्)

सूत्र- षष्ठी 2।2।।8।।

वृत्ति- सुबन्तेन प्राग्वत्।

उदा0- राजपुरुषः।

षष्ठ्यन्त का समर्थ सुबन्त के साथ विकल्प से समास होता है।

• राजपुरुषः (राजा का आदमीसेवक) **लौकिक विग्रह- राज्ञः पुरुषः**

राजन् ङस् पुरुष सु अलौकिक विग्रह में 'षष्ठी' से समास हुआ। यहाँ पर षष्ठ्यन्त पद है राजन् इस और समर्थ सुबन्त है पुरुष सु समास के बाद राजन् ङस् पुरुष सु की प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और सुपो धातुप्रातिपदिकयोः से ङस् और सु इन दो सुप्-प्रत्ययों का लुक हुआ राजन् पुरुष बना राजन् ङस् में षष्ठी थी जिसका लोप हो गया था, प्रत्ययलक्षण से विभक्तित्व लाकर पदसंज्ञा करके राजन् को पद मान लिया जाता है। पद के अन्त में विद्यमान नकार का नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य से लोप करके राज-पुरुष बना। प्रथमानिर्दिष्ट राज की उपसर्जनसंज्ञा और पूर्वप्रयोग कर के राजपुरुष बना है। सु विभक्ति आई और रुत्वविसर्ग करके राजपुरुषः सिद्ध हुआ।

अन्य उदाहरण- आत्मज्ञानम्, मनोविकारः सत्सङ्गतिः आदि

सूत्र- पूर्वापराधरोत्तरमेकदेशिनैकाधिकरणे 2121।।

वृत्ति- अवयविना सह पूर्वादयः समस्यन्ते, एकत्वसङ्ख्याविशिष्टश्चेदवयवी। षष्ठीसमासापवादः।

उदा0- पूर्वं कायस्य पूर्वकायः । अपरकायः।

पूर्व (आगे का), अपर (पीछे का), अधर (नीचे का) और उत्तर (ऊपर का), इन अवयव वाचक शब्दों का अवयवी वाचक शब्दों के साथ समास होता है।

- पूर्वकायः - पूर्वं कायस्य
- अपरकायः - अपरं कायस्य

सप्तमी तत्पुरुष समास

सूत्र- सप्तमी शौण्डैः 2।1।40।।

वृत्ति- सप्तम्यन्तं शौण्डादिभिः प्राग्वत्।

उदा0- अक्षेषु शौण्डः, अक्षशौण्ड इत्यादि ।

सप्तम्यन्तशौण्ड आदि के साथ समास होता है।

अक्षशौण्डः (पासाओं से खेलने में चतुर)**लौकिक विग्रह-अक्षेषु शौण्डः**

अक्ष सुप् शौण्ड सु अलौकिक विग्रह में सप्तमी शौण्डैः से समास हुआ। यहाँ

पर सप्तम्यन्त पद है अक्ष सुप् और समर्थ शब्द है शौण्ड+सु। समास के बाद अक्ष सुप्-शौण्ड सु की प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और सुपो धातुप्रातिपदिकयोः से सुप् और सु इन दो सुप्-प्रत्ययों का लुक् हुआ अक्ष-शौण्ड बना। प्रथमानिर्दिष्ट अक्ष की उपसर्जनसंज्ञा और पूर्वप्रयोग कर के अक्षशौण्ड बना है। सु विभक्ति आई और उसको रुत्वविसर्ग हुआ- अक्षशौण्डः ।

सप्तमीसमास के अन्य उदाहरण- काव्यनिपुणः आदि।

कर्मधारय समास

- कर्मधारय समास, तत्पुरुष समास का ही एक भेद है किन्तु कुछ लोग इसको पृथक् समास मानते है।
- कर्मधारय समास में प्रथम पद विशेषण द्वितीय पद विशेष्य होता है।
- कर्मधारय समास में प्रथम पद उपमान द्वितीय पद उपमेय होता है।
- तत्पुरुष समानाधिकरणः कर्मधारयः- कर्मधारय समास में पूर्वपद, उत्तरपद एक ही विभक्ति के होते है।

सूत्र- विशेषणं विशेष्येण बहुलम् 2।1।57।।

वृत्ति- भेदकं भेद्येन समानाधिकरणेन बहुलं प्राग्वत्

उदा0- नीलमुत्पलं नीलोत्पलम्। बहुलग्रहणात्क्वचिन्नित्यम् । कृष्णसर्पः।

विशेषण का विशेष्य के साथ बहुल से समास होता है और वह कर्मधारय समास होता है।

नोट– विशेषण को भेदक और विशेष्य को भेद्य भी कहते हैं । विशेषणम् प्रथमान्त है, अतः विशेषण का पहले प्रयोग होगा।

नीलोत्पलम् (नील कमल) **लौकिक विग्रह- नीलम् उत्पलम् अथवा नीलं च तद् उत्पलम्** नील सु+उत्पल सु अलौकिक विग्रह में विशेषणं विशेष्येण बहुलम् से समास हुआ। यहाँ पर विशेषणपद है नील सु और विशेष्यपद है उत्पल सु। दोनों प्रथमान्त एकवचन हैं। इसलिए समानाधिकरण है। नील सु+उत्पल सु की प्रातिपदिकसंज्ञा करके सुपो धातुप्रातिपदिकयोः से दोनों सु का लुक्, नील+उत्पल बना। विशेषणम् इस प्रथमान्तपद से निर्दिष्ट शब्द नील है, उसकी उपसर्जनसंज्ञा और पूर्वप्रयोग हुआ। नील+उत्पल में गुण करके नीलोत्पल बना।

प्रथमा का एकवचन सु आया, नपुंसक होने के कारण अम् आदेश हुआ और पूर्वरूप करके नीलोत्पलम् सिद्ध हुआ।

(सोपमानकर्मधारयसमासविधायकं विधिसूत्रम्)

सूत्र- उपमानानि सामान्यवचनैः 2।1।55।।

उदा0- घन इव श्यामो घनश्यामः ।

उपमा तीन वस्तुओं से होती है- उपमान, उपमेय और समानता

- **उपमान-** जिनके द्वारा किसी अन्य वस्तु की तुल्यता या समानता दिखाई जाती है।
- **उपमेय-** जिनके लिए तुल्यता दिखाई जाती है ।
- **समानता-** उपमान और उपमेय में सादृश्य रूप में विद्यमान एक धर्म है।
- **उदाहरण-** चन्द्र इव मुखं यस्याः (चन्द्रमा की तरह सुन्दर मुख वाली) में चन्द्र उपमान है, मुख उपमेय है और दोनों में विद्यमान सुन्दरता सादृश्य अर्थात् समानता है। यही उपमा है।

घनश्यामः (बादल की तरह श्यामवर्ण वालाश्रीकृष्ण) **लौकिक विग्रह- घन इव श्यामः**

घन सुश्याम सु अलौकिक विग्रह में उपमानानि सामान्यवचनैः से समास हुआ। यहाँ पर उपमान है घन सु और समान श्याम गुण वाला सुबन्त है श्याम सु । दोनों पद प्रथमान्त एकवचन के हैं, अतः समानाधिकरण है। घन सु+श्याम सु की प्रातिपदिकसंज्ञा करके सुपो धातुप्रातिपदिकयोः से दोनों सु का लुक, घनश्याम में उपमानानि इस प्रथमान्तपद से निर्दिष्ट शब्द घन है, उसकी उपसर्जनसंज्ञा और पूर्वप्रयोग हुआ। घनश्याम से प्रथमा का एकवचन सु आया और रामः की तरह घनश्यामः बन गया।

अन्य उदाहरण

- कृष्ण चासौ सर्पः - कृष्णसर्पः
- निर्मलाश्च ते गुणाः - निर्मलगुणाः
- कृष्णा चासौ चतुर्दशी - कृष्णचतुर्दशी

- अखिलानि भूषणानि - अखिलभूषणानि
- कर्पूर इव गौरः - कर्पूरगौरः

द्विगु समास

- द्विगु समास, कर्मधारय समास का ही एक भेद है और साथ ही यह तत्पुरुष का भी भेद बना रहता है। किन्तु कुछ लोग पृथक् समास मानते है।
- **संख्यापूर्वो द्विगुः -** यदि संख्या पूर्व में तो द्विगु समास होता है।
- **द्विगुरेकवचनम् -** द्विगु समास का अर्थ समाहार (समूह) होने पर एकवचन होता है।
- **स नपुंसकम् -** समाहार (समूह) में द्विगु और द्वन्द्व समास नपुंसक होते है।

- **पञ्चगवम्** (पाँच गायों का समूह) **लौकिक विग्रह-पञ्चानां गवां समाहारः**

पञ्चन् आम्+गो आम् यह अलौकिक विग्रह है। समाहारवाच्य में तद्धितार्थोत्तरपदसमाहारे च से समास हुआ। समास के बाद प्रातिपदिकसंज्ञा, विभक्ति का लुक् करने पर पञ्चन् गो बना। लुप्त हुई विभक्ति को अन्तर्वर्तिनी विभक्ति मानकर पद और पद के अन्त नकार का न लोपः प्रातिपदिकान्तस्य से लोप होकर पञ्चगो बना। गोरतद्धितलुकि से पञ्चगो से टच् प्रत्यय होकर अनुबन्धलोप करने पर पञ्चगो+अ बना। एचोऽयवायावः से ओकार के स्थान पर अव् आदेश होकर पञ्चगव बना। पूर्व में संख्यावाचक शब्द होने के कारण संख्यापूर्वो द्विगुः से द्विगुसंज्ञा होने के बाद स नपुंसकम् से नपुंसकलिङ्ग का कथन हुआ। एकदेशविकृतन्यायेन प्रातिपदिक भी है। द्विगुरेकवचनम् से एकवचन का विधान हुआ। अतः उससे एकवचन सु विभक्ति लाकर उसके स्थान पर अम् आदेश और पूर्वरूप करने पर पञ्चगवम् बन गया।

कुछ महत्वपूर्ण बातें-

- संख्या पूर्व हो तो **संख्यापूर्वो द्विगुः** बल पर द्विगु समास होगा किन्तु वह पद अन्य पदार्थ का बोध कराता होगा तो वहाँ बहुव्रीहि समास हो जाएगा। पूर्व में संख्या हो उससे कोई तात्पर्य नहीं है। जैसे- त्रिनेत्र (यहाँ तीन नेत्र का बोध न होकर अन्य पदार्थ शिव का बोध हो रहा है) पञ्चगवधनः, चतुर्मुखं (ब्रम्हा)

- विशेषण-विशेष्य में सामान्यतः कर्मधारय समास होता है, किन्तु वह पद अन्य पदार्थ का बोध कराता होगा तो वहाँ बहुव्रीहि समास हो जाएगा। जैसे- पीताम्बरः (यहां पीला वस्त्र बोध न होकर श्रीकृष्ण का बोध हो रहा है)

उपपदतत्पुरुषः

(उपपदसंज्ञाविधायकं विधिसूत्रम्)

सूत्र- उपपदमतिङ् 2।2।19।।

वृत्ति-उपपदं सुबन्तं समर्थेन नित्यं समस्यते।

उदा0-कुम्भं करोतीति कुम्भकारः ।

उपपदसंज्ञक सुबन्त का समर्थ सुबन्त के साथ नित्य से समास होता है।

कुम्भकारः (घड़े को बनाने वाला) **लौकिक विग्रह कुम्भं करोति**

कुम्भ अम् कृ इस अलौकिक विग्रह में कुम्भ की उपपदमतिङ् से उपपदसंज्ञा करके कर्मण्यण् इस कृत्प्रकरण के सूत्र से अण् प्रत्यय, अनुबन्ध का लोप, वृद्धि करके कार बन गया है। उसके बाद समास का लौकिक विग्रह कुम्भस्य कारः और अलौकिक विग्रह कुम्भ ङस्+कार में उपपदमतिङ् से समास, प्रातिपदिकसंज्ञा, सुप् का लुक् करके कुम्भकार बना। सु, रुत्वविसर्ग करके कुम्भकारः सिद्ध हुआ।

इसी तरह सूत्रं करोतीति सूत्रकारः भी बन जाता है।

बहुव्रीहि समास

- अन्यपदार्थ प्रधानो बहुव्रीहिः- अन्य पद की प्रधानता हो तो वह बहुव्रीहि समास होगा।
- बहुव्रीहि समास करने वाला मुख्य सूत्र- अनेकमन्यपदार्थे
- इसके 2 भेद है- (1) समानाधिकरण बहुव्रीहि (2) व्यधिकरण बहुव्रीहि ।
- समानाधिकरणबहुव्रीहि वह है, जिसके दोनों या सभी शब्दों का एक ही अधिकरण (विभक्ति) हो, अर्थात् वे प्रथमान्त हों, जैसे- पीताम्बरः
- व्यधिकरण बहुवीहि वह है, जिसके दोनों शब्द प्रथमान्त न केवल एक ही शब्द प्रथमान्त हो, दूसरा षष्ठी या सप्तमी में हो, जैसे- चन्द्रशेखरः चन्द्र शेखरे यस्य सः(शिवः)

चक्रपाणिः चक्रं पाणी यस्य सः,चन्द्रकान्तिः चन्द्रस्य कान्तिः इव कान्तिः यस्य सः

- समानाधिकरणबहुव्रीहि के छः मेद होते हैं-

1. द्वितीया समानाधिकरणबहुव्रीहि	प्राप्तम् उदकं यं (ग्रामं)	प्राप्तोदको ग्रामः
2. तृतीया समानाधिकरणबहुव्रीहि	ऊढ़ः रथः येन (हयेन)	ऊढ़रथो हयः
3. चतुर्थी समानाधिकरणबहुव्रीहि	उपहृतः पशुः यस्मै (रुद्राय)	उपहृतपशू रुद्रः
4. पञ्चमी समानाधिकरण बहुव्रीहि	उद्धृतः ओदनः यस्याः(स्थाली)	उद्धृतौदना स्थाली
5. षष्ठी समानाधिकरण बहुव्रीहि	पीतम् अम्बरं यस्य (विष्णोः)	पीताम्बरो हरिः
6. सप्तमी समानाधिकरणबहुव्रीहि	वीराः पुरुषाः सन्ति यस्मिन (ग्रामे)	वीरपुरुषो ग्रामः

सामासिक पद	लौकिक विग्रह
• कण्ठेकालः	• कण्ठे कालो यस्य
• प्रपर्णः	• प्रपतितःपर्णः
• अपुत्रः	• अविद्यमान पुत्रः
• चित्रगुः	• चित्रा गावः यस्य
• रूपवद्भार्यः	• रूपवती भार्या अस्ति यस्य
• दीर्घजङ्घः	• दीर्घ जङ्घे स्तः
• कल्याणीपञ्चमा रात्रयः	• कल्याणी पञ्चमी यासां रात्रीणाम्
• स्त्रीप्रमाणः	• स्त्री प्रमाणी यस्य सः
• दीर्घसक्थः	• दीर्घे सक्थिनी स्तः यस्य
• जलजाक्षी	• जलजे इव अक्षिणी
• द्विमूर्धः	• द्वौ मूर्धानौ यस्य सः
• त्रिमूर्धः	• त्रयो मूर्धानो यस्य सः
• अन्तर्लोमः	• अन्तर्लोमानि यस्य सः
• बर्हिलोमः	• बर्हिलोमानि यस्य सः
• व्याघ्रपात्	• व्याघ्रपादौ इव पादौ यस्य सः
• द्विपात	• द्वौ पादौ यस्य सः
• सुपात्	• द्वौ पादौ यस्य सः
• उत्काकुत्	• उद्गतं काकुदं यस्य सः
• विकाकुत	• विकृतं काकुदं यस्य सः

• पूर्णकाकुत्, पूर्णकाकुदः	• पूर्णं काकुदं यस्य सः
• सुहृदन्मित्रम्	• सु शोभनं हृदयं यस्य
• दुर्हृदमित्रः	• दुर् दुष्टं हृदयं यस्य
• व्यूढोरस्कः	• व्यूढम् उरो यस्य (पुरुषस्य)
• प्रियसर्पिष्कः	• प्रियम् सर्पिः यस्य
• युक्तयोगः	• युक्तो योगो यस्य
• महायशस्कः महायशाः	• महद् यशः यस्य

द्वन्द्व समास

- **उभयपदार्थ प्रधानो द्वन्द्वः-** उभय (दोनों) पद की प्रधानता हो तो वह द्वन्द्व समास होगा।
- **चार्थे द्वन्द्वः-** जब ऐसे दो या अधिक पद रखे जाते हैं, जो 'च'शब्द से जुड़े हुए होते है तब उस समास को द्वन्द्व समास कहते है। जैसे- रामश्च लक्ष्मणश्च- रामलक्ष्मणौ।
- **'च'** मतलब **'और'** होता है
- चार्थ के 4 अर्थ है- **समुच्चयान्वाचयेतरेतरयोगसमाहाराश्चार्थाः।**

1 समुच्चय 2.अन्वाचय 3. इतरेतर 4. समाहार

- द्वन्द्व समास तीन प्रकार का होता है-
- (1) इतरेतर द्वन्द्व। (2) समाहार द्वन्द्व। (3) एकशेष द्वन्द्व।
- **इतरेतर द्वन्द्व-** इसमें दो पद दोनों पद अपना प्रधानत्व व्यक्तित्व रखते है, तब उसे इतरेतरद्वन्द्व समास कहते है। **मुख्य पहचान-** इतरेतर द्वन्द्व समास के प्रयोग नित्य द्विवचन अथवा बहुवचन में होते है। जैसे- रामश्च लक्ष्मणश्च- रामलक्ष्मणौ।
- **समाहार द्वन्द्व-** जब दो या दो से अधिक पदार्थ पृथक्- पृथक् क्रिया में अन्वय न होकर समूहात्मक अर्थ में अन्वय होते है, तो समाहार द्वन्द्व कहलाता है।

मुख्य पहचान- समाहार सदैव नपुंसक लिङ्ग एकवचन में होता है। जैसे- संज्ञापरिभाषम्

- **एकशेष द्वन्द्व-** जब दो या दो से अधिक शब्दों में से केवल एक ही शेष रह जायें,तब उसको एकशेष द्वन्द्व समास कहते है। जैसे- माता च पिता च- पितरौ

घि संज्ञक द्वन्द्व समास-

- ह्रस्व इकार और उकार का घि संज्ञा होता है।

सूत्र- द्वन्द्वे घि 2।2।32।।

वृत्ति- द्वन्द्वे घिसंज्ञं पूर्वं स्यात् ।

उदाहरण- हरिश्च हरश्च हरिहरौ

- **हरिहरौ लौकिक विग्रह- हरिश्च हरश्च**

हरि सु हर सु अलौकिक विग्रह चार्थे द्वन्द्वः से समास होकर प्रातिपदिक संज्ञा इत्यादि होकर रूप बनता है। हरि में इकार की घि संज्ञा हुई है, अतः हरि पूर्व में प्रयोग हुआ।

अजादि द्वन्द्व समास

- अच् आदि हो तो वह पूर्व में प्रयोग होगा।

सूत्र- अजाद्यदन्तम् 2। 2। 33।।

वृत्ति- द्वन्द्वे पूर्वं स्यात् ।

उदाहरण- ईशकृष्णौ ।।

- **ईशकृष्णौ लौकिक विग्रह- ईशश्च कृष्णश्च**

ईश सु कृष्ण सु अलौकिक विग्रह चार्थे द्वन्द्वः से समास होकर प्रातिपदिक संज्ञा इत्यादि। होकर रूप बनता है। ईश में अच् आदि में है अतः पूर्व में प्रयोग हुआ ईशकृष्णौ सिद्धम्।

अल्पाच् द्वन्द्व समास

- जिस शब्द में कम अच् (स्वर्) हो तो वह पूर्व में प्रयोग होगा।

सूत्र- अल्पाच्तरम् 2।2। 34।।

उदाहरण- शिवकेशवौ ।।

•शिवकेशवौ **लौकिक विग्रह- शिवश्च केशवश्च**

शिव सु केशव सु अलौकिक विग्रह चार्थे द्वन्द्वः से समास होकर प्रातिपदिक संज्ञा इत्यादि होकर रूप बनता है। शिव में दो अच् और केशव में तीन अच् का प्रयोग हुआ है, अतः शिव में अल्प अच् प्रयोग होने के कारण पूर्व में प्रयोग हुआ शिवकेशवौ इति रूपं सिद्धम्।

• द्वन्द्व समास के कुछ अन्य उदाहरण

सामासिक पद	**लौकिक विग्रह**
• अर्थधर्मौ	•अर्थश्च धर्मश्च
• पितरौ	•माता च पिता च
• मातापितरौ	•समाहारः द्वन्द्वः च
• पाणिपादम्	•पाणी च पादौ च तेषां समाहारः द्वन्द्वः
• मार्दङ्गिकवैणविकम्	•मार्दङ्गिकाश्च वैणविकाश्चतेषां
• रथिकाश्वारोहम्	•रथिकाश्च अश्वारोहाश्च तेषां समाहारः द्वन्द्वः
• वाक्-त्वचम्	•वाक् च् त्वक् च तयोः समाहारः
• त्वक्स्रजम्	•त्वक् च स्त्रज् च तयोः समाहारः
• शमीदृषदम्	•शमी च दृषत् च तयोः समाहारः
• वाक्-त्विषम्	•वाक् च् त्विट् च तयोः समाहारः
• छत्रोपानहम्	•छत्रं उपानहौ च तेषां समाहारः
• राजदन्ताः (षष्ठी तत्पुरुष समास)	•दन्तानां राजानो

।ः यूनिट-4 इति ः।

यूनिट-5

प्रत्ययाः

- **कृत्-प्रत्ययाः–** क्त, क्तवतु, तव्य, अनीयर्, शतृ, शानच्, क्तिन् ।
- **तद्धित प्रत्ययाः–** मतुप्, इन्, ठक्, ठञ्, त्व, तल्
- **स्त्री-प्रत्ययौ–** टाप्, ङीप् ।

कृत्-प्रत्ययाः

- उपसर्ग का प्रयोग पूर्व में और प्रत्यय का प्रयोग सदैव अन्त में होता है।
- धातु में जिस प्रत्यय को जोड़कर संज्ञा, विशेषण, अव्यय बनता है, उसे कृत् प्रत्यय कहते है।
- इसके द्वारा जो शब्द सिद्ध होता है उसे कृदन्त कहते है।
- कृदन्त को 4 भाग बांटा गया है-1. कृत्य 2. पूर्वकृदन्त 3. उणादि 4.उत्तरकृदन्त ।
- कृत् प्रत्यय सदैव धातु में प्रयोग होते है।

क्त-क्तवतु प्रत्यय

- क्त और क्तवतु प्रत्यय भूतकाल में होते है।
- क्तववतु निष्ठा- क्त और क्तवतु का निष्ठासंज्ञा होता है।
- जहां जहां निष्ठा आयें वहाँ वहाँ क्त और क्तवतु का को ग्रहण किया जायेगा।
- क्त में त शेष रहता है। क्तवतु में 'तवत्' शेष रहता है।
- भावकर्मणो क्तः- क्तकर्मवाच्य या भाववाच्य में होता है।
- कर्तरि कृदिति कर्तरि क्तवतु- क्तवतु कर्तृवाच्य में होता है।
- धातु को गुण व वृद्धि न होकर संप्रसारण होता है।

क्त प्रत्यय करने वाले विभिन्न सूत्र0-

सूत्र- निष्ठा 3।2।102।।

उदा0- स्नातं मया ।स्तुतस्त्वया विष्णुः। विश्वं कृतवान् विष्णुः

- स्नातं- में क्त प्रत्यय हुआ।
- स्नुतः- में क्त प्रत्यय हुआ।
- कृतवान् में क्तवतु प्रत्यय है।

- **सूत्र- रदाभ्यां निष्ठातो नः पूर्वस्य च दः 8।2।42॥**

उदा0- शीर्णः। भिन्नः। छिन्नः।।

- **शीर्णः-** शृ हिंसायाम् धातु है, निष्ठा इस सूत्र के द्वारा क्त प्रत्यय, ककार का लोप शृ+क्त बना। दीर्घ, रपर आदि करकेरदाभ्यां निष्ठातो नः पूर्वस्य च दः से त को न आदेश होकर शीर्णः सिद्ध होता है।
- **भिन्नः-** भिदिर् विदारणे धातु। भिद्+क्त रदाभ्यां निष्ठातो नः पूर्वस्य च दः से त को न आदेश होकर भिन्नः सिद्ध होता है।
- **छिन्नः-** छिदिर् द्वैधीकरणे। छिद्+क्त

  रदाभ्यां निष्ठातो नः पूर्वस्य च दः से त को न आदेश होकर छिन्नः सिद्ध होता है।

सूत्र- संयोगादेरातो धातोर्यण्वतः 8।2।43।।

उदा0- द्राणः । ग्लानः ।।

- **द्राणः-** द्रा कुत्सायां गतौ। द्रा+क्त प्रत्यय (द्रा+त)

  संयोगादेरातो धातोर्यण्वतः से त को न आदेश होकर द्राणः सिद्ध होता है।
- **ग्लानः-** ग्लै हर्षक्षये। ग्लै+क्तः (ग्ला+त)

  संयोगादेरातो धातोर्यण्वतः से त को न आदेश होकर ग्लानः सिद्ध होता है।

सूत्र- ल्वादिभ्यः 8।2।44।।

उदा0- लूनः।।

- **लूनः-** लूञ् छेदने धातु। लूञ्+क्त (लू+त)

  ल्वादिभ्यः से त को न आदेश होकर लूनः सिद्ध होता है।

सूत्र- हलः 6।4।2।।

उदा0-जीनः?

- **जीनः-** ज्या वयोहानौ धातु। ज्या+क्त (ज्या+त)

  हलः से त को न आदेश होकर जीनः सिद्ध होता है।

सूत्र- ओदितश्च 8।2।45।।

उदा0-भुजो भुग्नः । टुओश्वि, उच्छूनः।।

- **भुग्नः-** भुजो कौटिल्ये धातु। भुज्+क्त (भुज्+त)

  ओदितश्च से त को न आदेश होकर भुग्नः सिद्ध होता है।
- **उच्छूनः-** टुओश्वि गतिवृद्धयोः धातु। उत् उपसर्ग श्वि धातु क्त प्रत्यय

  ओदितश्च से त को न आदेश होकर उच्छूनः सिद्ध होता है।

सूत्र- शुषः कः 8।2। 51।।

निष्ठातस्य कः ।।शुष्कः।।

यह सूत्र क्त प्रत्यय के तकार को ककार आदेश करता है।

- **शुष्कः-** शुष शोषणे धातु। शुष्+क्त (शुष्+त)

  शुषः कः से त को क आदेश होकर शुष्कःसिद्ध होता है।

सूत्र- पचो वः 8।2।52।।

उदा 0-पक्वः।।

- **पक्वः-** डुपचष् पाके धातु। पच्+क्त

  पचो वः से त को व आदेश हुआ तथा चोः कुः च को क आदेश करके पक्वः सिद्ध होता है।

सूत्र- क्षायो मः 8।2।53।।

उदा0- क्षामः

क्षै धातु परे त के स्थान म आदेश होता है।

- **क्षामः-** क्षै क्षये धातु। क्षै धातु क्त प्रत्यय (क्षा+त)

  क्षायो मः से त को म आदेश होकर क्षामः सिद्ध होता हितम् है।

सूत्र- दधातेर्हिः 7। 4। 42 ।।

उदा0- हितम् ।।

धा धातु के स्थान पर हि आदेश होता है।

- **हितम्-** डुधाञ् धारणपोषणयोः। धा धातु क्त प्रत्यय (धा+त)

दधातेर्हिः से धा धातु को हि आदेश होकर हितम् सिद्ध होता है।

ऐसे- विहितम्, अभिहितम्, निहितम् आदि बनेगा।

नोट– ध्यान देने योग्य बात है कि हितम् में जब धातु पूछा जाएगा तो धा धातु ही होगा।

सूत्र- दो दद् घोः 7।4।46

उदा0- दत्तः ।

दा धातु के स्थान पर दद् आदेश होता है।

- **दत्तः-** डुदाञ् दाने। दा धातु क्त (दा+त्)

दो दद् घोः दा के स्थान दद् आदेश होकर दत्तः बनता है।

क्त प्रत्यययान्त अभ्यास हेतु अन्य उदाहरण

धातु	क्त प्रत्यय	क्तवतु प्रत्यय	धातु	क्त प्रत्यय	क्तवतु प्रत्यय
• अर्च	अर्चितः	अर्चितवान्	• तुष्	तुष्टः	तुष्टवान्
• आप्	आप्तः	आप्तवान्	• त्रै	त्रातः	त्रातवान्
• इष्	इष्टः	इष्टवान्	• दा	दत्तः	दत्तवान्
• ईक्ष	ईक्षितः	ईक्षितवान्	• दुह्	दुग्धः	दुग्धवान्
• कथ्	कथित	कथितवान्	• ध्यै	ध्यातः	ध्यातवान्
• कुप्	कुपितः	कुपितवान्	• निन्द्	निन्दितः	निन्दितवान्
• कृ	कृतः	कृतवान्	• पा	पीतः	पीतवान्
• क्षिप्	क्षिप्तः	क्षिप्तवान्	• पिष्	पिष्ट	पिष्टवान्
• खाद्	खादितः	खादितवान्	• बन्ध्	बद्धः	बद्धवान्
• खिद्	खिन्नः	खिन्नवान्	• ब्रू	उक्तः	उक्तवान्
• क्री	क्रीतः	क्रीतबान्	• भी	भीतः	भीतवान्
• क्रुध्	क्रुद्धः	क्रुद्धवान्	• भूष्	भूषितः	भूषितवान्
• ख्या	ख्यातः	ख्यातवान्	• मण्ड्	मण्डितः	मण्डितवान्
• गद्	गदितः	गदितवान्	• मान्	मानितः	मानितवान्
• गम्	गतः	गतवान	• मुह	मुग्धः	मुग्धवान्
• गर्ज्	गर्जितः	गर्जितवान्	• या	यातः	यातवान्

• गै	गीतः	गीतवान्	• युध्	युद्धः	युद्धवान्
• ग्रस्	ग्रस्तः	ग्रस्तवान	• रम्	रतः	रतवान्
• ग्रह	गृहीतः	गृहीतवान्	• रुद्	रुदितः	रुदितवान्
• घुष्	घोषितः	घोषितवान्	• लभ्	लब्धः	लब्धवान्
• घ्रा	घ्रातः	घ्रातवान्	• वच्	उक्तः	उक्तवान्

तव्य, अनीयर् प्रत्ययः-

- **तव्यत्तव्यानीयरः-** धातु से तव्यत्, तव्य और अनीयर् प्रत्यय होते है।
- तव्यत् और अनीयर् प्रत्यय चाहिए के अर्थ में होता है।
- तव्यत् से तकार की इत्संज्ञा लोप होकर तव्य शेष बचता है।
- अनीयर् प्रत्यय का अनीय शेष बचता है।
- **तयोरेव कृत्यक्तखलर्थाः-** तव्यत्,तव्य,अनीयर् अकर्मक धातु से भाव-कर्म अर्थ में होता है।
- पुलिङ्ग में तव्यत् प्रत्यय रामवत् चलेंगे, स्त्रीलिङ्ग में रमावत् और नपुं0 में गृहवत्।
- **एधितव्यम्-** अकर्मक एध वृद्धौ धातु अनुबन्धलोप होकर एध् बचा है। उससे तव्यत्तव्यानीयरः से भाव अर्थ में तव्यत् या तव्य प्रत्यय हुए। तव्यत् होने के पक्ष में तकार की इत्संज्ञा होकर लोप हुआ, तव्य बचा। एध्+तव्य बना। आर्धधातुकसंज्ञा आदि होकर एधितव्यम् शब्द निष्पन्न हुआ।
- **एधनीयम्-** तव्यत्तव्यानीयरः से अनीयर् प्रत्यय हुआ। एध्+अनीयर् हुआ। रकार् का लोप करके एध्+अनीय बचा। आर्धधातुकसंज्ञा आदि होकर एधनीयम् शब्द निष्पन्न हुआ।

अन्य उदाहरण

चि + तव्यत्	-	चेतव्यम्
पठ् + तव्यत्	-	पठितव्यम
गम् + तव्यत्	-	गन्तव्यम्
हस् + तव्यत्	-	हसितव्यम्
श्रु + तव्यत्	-	श्रोतव्यः
गम् + अनीयर्	-	गमनीयः

चि + अनीयर् - चयनीयः
श्रु + अनीयर् - श्रवणीयः
कृ + अनीयर् - करणीयः

शतृ, शानच्प्रत्यय

- लटः शतृशानचावप्रथमासमानाधिकरणे- प्रथमा से भिन्न समानधिकरण होने पर लट् के स्थान पर शतृ और शानच् आदेश होते है।
- परस्मैपदी धातु से लट् के स्थान शतृ होता है।
- शतृ का अत् शेष रहता है। जैसे- कुर्वन्, पठन्, गच्छन्
- शतृ प्रत्यय-पुलिङ्ग- पठत्, स्त्रीलिङ्ग-नदी, नपुं-जगत् के तुल्य रूप चलेगा।
- आत्मनेपदी धातुओं लट् के स्थान पर शानच् होता है।
- उभयपदी धातुओं में लट् के स्थान पर शतृ व शानच् दोनों होता है।
- शानच् में आन शेष रहता है। जैसे- यजमानः
- शतृ प्रत्यय- पुलिङ्ग- पठत्, स्त्रीलिङ्ग-नदी, नपुं-जगत् के तुल्य रूप चलेगा।
- तौ सत्- शतृ और शानच् की सत् संज्ञा होती है।
- सत् का अर्थ है- विद्यमान, वर्तमान

पचन्तं चैत्रं पश्य (पकाते हुए चैत्र को देखो)

यहाँ पर चैत्रम् द्वितीयान्त होने से अप्रथमान्त है। चैत्रम् यह पद जिस अर्थ को कहता है, पच् धातु से वर्तमान काल में लाया गया लट् भी उसी अर्थ को कहता है। अतः अप्रथमान्त के साथ समान अधिकरण है। इस अवस्था में लट् के स्थान पर शतृ और शानच् हो सकते हैं। यहाँ पर शतृ का उदाहरण दिखा रहे हैं। पच्+लट् लट् के स्थान पर लटः शतृशानचावप्रथमासमानाधिकरणे से शतृ आदेश, अनुबन्धलोप, पच्+अत् बना, अत् की सार्वधातुकसंज्ञा करके कर्तरि शप् से शप्, अनुबन्धलोप, पच्+अ+ अत् बना। अ+अत् में अतो गुणे से पररूप पच्+अत्, वर्णसम्मेलन, पचत्, प्रातिपदिकसंज्ञा, अम् विभक्ति, पचत्+अम् बना। उगिदचां सर्वनामस्थाने धातोः से नुम्, मित होने के कारण अन्त्य अच् चकार के अकार के बाद बैठा, पचन्त्+अम् बना। वर्ण सम्मेलन होकर पचन्तम् सिद्ध हुआ।

पचमानं चैत्रं पश्य- पच् धातु उभयपदी है, अतः शतृ और शानच् दोनों होते हैं। पच् से शानच्, अनुबन्धलोपे, पच्+आन, सार्वधातुकसंज्ञा और शप्, अनुबन्धलोप, पच्+अ+आन बना। पच्+अृपच, पच+आन में आने मुक् से पच के अकार को मुक् आगम,अनुबन्ध लोप, पच+म्+आन, वर्णसम्मेलन हुआ, पचमान ऐसा अकारान्त शब्द बना। प्रातिपदिकसंज्ञा करके पुल्लिङ्ग में राम शब्द की तरह पचमानः और स्त्रीलिङ्ग में टाप् करके पचमाना शब्द बनाकर रमा शब्द की तरह रूप बनते हैं।

शतृ-शानच् प्रत्ययान्त अभ्यास हेतु अन्य उदाहरण

धातु	शतृ प्रत्यय	धातु	शानच् प्रत्यय
अद्	अदन्	ईक्ष्	ईक्षमाणः
अर्च	अर्चन्	कम्प्	कम्पमानः
आप्	आप्नुवन्	कुर्द्	कुर्दमानः
इष्	इच्छन्	गाह्	गाहमानः
कुप्	कुप्यन्	ग्रस	ग्रसमानः
कृष्	कर्षन्	जन्	जायमानः
क्रन्द	क्रन्दन्	त्रै	त्रायमाणः
क्रीड्	क्रीड्न्	दय्	दयमानः
क्रुध्	क्रुध्यन्	द्युत्	द्योतमानः
खाद्	खादन्	ध्वंस	ध्वंसमानः
गम्	गच्छन्	भास्	भासमानः
गर्ज	गर्जन्	भिक्ष्	भिक्षमाणः
गै	गायन्		
घ्रा	जिघ्रन्		
चर्	चरन्		
चल्	चलन्		
चि	चिन्वन्		
जि	जयन्		
दृश्	पश्यन्		
ध्यै	ध्यायन्		
पा	पिबन्		
श्रु	शृण्वन्		

उभयपदी धातु

धातु	शतृ	शानम्
कृ	कुर्वन्	कुर्वाणः
चि	चिन्वन्	चिन्वानः
ज्ञा	जानन्	जानानः
दा	ददत्	ददानः
धा	दधत्	दधानः
पच्	पचन्	पचमानः
ब्रू	ब्रुवन्	ब्रुवाणः
भुज्	भुञ्जन्	भुञ्जानः

स्तु	स्तुवन्	नी	नयन्	नयमानः
स्पृश्	स्पृशन्	यज्	यजन्	यजमानः
हु	जुह्वन्	रूध्	रुन्धन्	रुन्धानः
हन्	घ्नन्	ह्र	हरन्	हरमाणः
सिच्	सिञ्चन्	मुच्	मुञ्चन्	मुञ्चमानः
		कथ्	कथयन्	कथयमानः

क्तिन् प्रत्यय

- **सूत्र- स्त्रियां क्तिन-** स्त्रीत्वयुक्त भाव की विवक्षा में धातु से क्तिन् प्रत्यय होता है।
- क्तिन् में शेष ति ही रहता है।
- क्तिन् प्रत्यय स्त्रीत्व की विवक्षा पर और भाव अर्थ में होता है
- **कृतिः-** करणं कृतिः (करना)

कृ धातु से भाव अर्थ में स्त्रियां क्तिन् से क्तिन् प्रत्यय हुआ, अनुबन्धलोप होकर कृ+तृि कृति बना। स्त्रीत्व की विवक्षा में प्रत्यय हुआ है तो कृति शब्द स्त्रीलिङ्ग वाला बन गया। प्रातिपदिकसंज्ञा, सु करके कृतिः बनता है। इसके रूप मति शब्द की तरह चलते हैं।

स्तुतिः । स्तवनं स्तुतिः। ष्टुञ् स्तुतौ । पत्व आदि करके स्तु धातु बना है। इससे कित करके कृतिः की तरह स्तुतिः बन जाता है। इसके रूप भी कृति की तरह ही चलते

- **स्तुतिः-** स्तवनं स्तुतिः

स्टुञ् स्तुतौ धातु षत्व आदि करके कृतिः की तरह स्तुतिः भी सिद्ध होता है।

- **कीर्णिः-** कॄ विक्षेपे

कॄ धातु से क्तिन् करके कॄ+ति बना। ऋत इद्धातोः से स्वरसहित इत्व अर्थात् इर् आदेश करके किर् ति बना। हलि च से दीर्घ होकर कीर्+ति बना। ऋल्वादिभ्यः क्तिन्निष्ठावद्वाच्यः इस वार्तिक से निष्ठावद्भाव करके ति के तकार के स्थान पर ल्वादिभ्यः से नकार आदेश हुआ, कीर्+नि बना। रेफ से परे नकार को अकुप्वाङ्नुम्व्यवायेऽपि से णत्व हुआ, कीर्+णि बना, वर्णसम्मेलन हुआ, रेफ का ऊर्ध्वगमन हुआ, कीर्णि बना।

- **लूनिः-** लवनं लूनिः (काटना)

लूञ् छेदने लू धातु से क्तिन् करके लूति बना। निष्ठावद्भाव करके ल्वादिभ्यः से तकार के स्थान पर नत्व करके लूनि बनता है।

- **धूनिः-** धूञ् कम्पने (काँपना)

धू धातु से क्तिन् करके धूति बना। निष्ठावद्भाव करके ल्वादिभ्यः से नत्व करके धूनि बनता है ।

क्तिन् प्रत्यय के अन्य उदाहरण

धातु	क्तिन् प्रत्यय
• आप्	आप्तिः
• इष्	इष्टिः
• ऋध्	ऋद्धिः
• कम्	कान्तिः
• क्रम	क्रान्तिः
• क्षम्	क्षान्तिः
• तुष्	तुष्टिः
• तृप	तृप्तिः
• दृश	दृष्टः
• धृ	धृतिः
• नी	नीतिः
• पुष्	पुष्टिः
• प्री	प्रीतिः
• धृ	धृतिः
• बुध्	बुद्धिः
• भ्रम	भ्रान्तिः
• मुच्	मुक्तिः
• यज्	इष्टिः

• मन्	मतिः
• भज्	भक्तिः
• प्र+आप्	प्राप्तिः
• भी	भीतिः
• पच्	पक्तिः
• आ+हु	आहुतिः
• उप+लभ्	उपलब्धिः
• ब्रू (वच्)	उक्तिः
• युज्	युक्तिः
• वृध्	वृद्धिः
• शक्	शक्तिः
• शम्	शान्तिः
• श्रु	श्रुतिः

मतुप् प्रत्यय

- मतुप् प्रत्यय 'वह इसके पास है' अथवा वह इसमें है अर्थ में प्रयोग होता है।
- जिसके पास पुत्र है वह पुत्रवान्, जिसके पास बुद्धि है वह बुद्धिमान् आदि।
- मतुप् प्रत्यय छः अर्थों में होता है-

भूम-निन्दा-प्रशंसासु नित्ययोगेऽतिशायने ।
सम्बन्धेऽस्तिविवक्षायां भवन्ति मतुबादयः ।।

1. **भूमा-** बहुत्व अधिकता के अर्थ में - गोमान्
2. **निन्दा-** बुराई के अर्थ में - ककुदावर्तनी
3. **प्रशंसा-** अच्छाई के अर्थ में- - रूपवान्
4. **नित्ययोगे-** नित्य के अर्थ में - क्षीरिणो वृक्षाः
5. **अतिशायने-** अतिशय के अर्थ में - उदीरिणी कन्या
6. **संसर्ग-** सम्बन्ध के अर्थ में - दण्डी

(मतुप्-प्रत्ययविधायकं विधिसूत्रम्)

सूत्र- तदस्यास्त्यस्मिन्निति मतुप् 5।2।94।।

गावोऽस्यास्मिन् वा सन्तीति गोमान् ।

वह इसका है और वह इसमें इन दोनों अर्थों में मतुप् प्रत्यय होता है।

गोमान् (जिसके पास गौएं हो वह गोपाल)

गावः अस्य सन्ति अथवा गावः अस्मिन् सन्ति लौकिक विग्रह मतुप प्रत्यय आदि करके गोमान् सिद्ध होता है।

मतुप् प्रत्यय उदाहरण

- **गरुतौ अस्य स्तः - गरुत्मान्**
- **विद्वांसोऽस्य सन्ति - विदुष्मान्**
- **चूडा अस्याति - चूडावान्**
- **पिच्छिलमस्य अस्ति- पिच्छवान्**
- **यशः अस्मिन् अस्ति- यशस्वान्**
- **अहम् अस्यास्तीति अहङ्कारवान्**

इन् प्रत्यय-

सूत्र- आयनेयीनीयियः फढखछघां प्रत्ययादीनाम् 7।1।101

- फस्य-आयन्-फको आयन् आदेश होता है - गार्ग्यायणः, दाक्षायणः
- ढस्य-एय्-ढ को एय् आदेश होता है - वैनतेयः
- खस्य-ईन्-ख को ईन् आदेश होता है - अवारपारीणः
- छस्य-ईय्-छ को ईय् आदेश होता है - तदीयः, शालीयः
- घस्य-इय-घ को इय आदेश होता है - राष्ट्रियः, क्षत्रियः

सूत्र- अत इनिठनौ 5।2।115

ह्रस्व आकारान्त प्रथमान्त प्रातिपदिक से इनि, ठन् प्रत्यय प्रत्यय होते है। इनि में इन् शेष बचता है और ठन् में ठ ठस्येकः से ठ को इक् आदेश होता है।

- दण्डी, दण्डिकः (जिसका दण्ड हो अथवा जिसमें दण्डहो अर्थात् दण्ड वाला) दण्ड अस्य अस्ति इति दण्डी। दण्ड शब्द इनि प्रत्यय अनुबन्ध लोप होकर दण्डिन् बनता है।दण्ड से ठक् प्रत्यय हुआ ठ को इक आदेश होकर दण्डिकः बनता है।

- **व्रीह्यादिभ्यश्च** 5।2।116

व्रीही। व्रीहीकः

व्रीही। व्रीहिक– (जिसका छत्र हो अथवा जिसमें छत्र हो अर्थात् छत्र वाला)

व्रीह् अस्य अस्ति इति व्रीही। व्रीह्शब्द इनि प्रत्यय अनुबन्ध लोप होकर व्रीहिन् बनता है।व्रीह् से ठक् प्रत्यय हुआ ठ को इक आदेश होकर व्रीहिकः बनता है।

इनि प्रत्यय के कुछ अन्य उदाहरण

- छत्रम् अस्य अस्ति - छत्री
- योगः अस्य अस्ति - योगी

विनिः प्रत्यय- यशस्वी, मायावी, मेधावी, स्रग्वी

ग्मिनि प्रत्यय- वाग्मी

ठक्प्रत्यय

(ठक्-प्रत्ययविधायकं विधिसूत्रम्)

सूत्र- रेवत्यादिभ्यष्ठक् 4।1।146।।

रेवती आदि गणपठित शब्दों में ठक् प्रत्यय होता है।

(इकादेशविधायकं विधिसूत्रम्)

सूत्र- ठस्येकः 7।3।50।।

अङ्गात् परस्य ठस्येकादेशः स्यात्। रैवतिकः ।

अङ्ग से ठ् के स्थान पर इक आदेश होता है।

- **रैवतिकः** (रेवती अपत्यं पुमान्)
- रेवत्या अपत्यं पुमान् लौकिक विग्रह रेवत्यादिभ्यष्ठक् से ठक् प्रत्यय होकर इक आदेश होकर रेवती इक करके आदि वृद्धि इत्यादि करके रैवतिकः सिद्ध होता है।
- जहाँ जहाँ अन्तिम में इक् और आदि वृद्धि दिखें प्रायशः ठक् प्रत्यय समझना होता है।

ठक् प्रत्यय के अन्य उदाहरण

अक्ष ठक्	-	आक्षिकः
दाधि ठक्	-	दाधिकम्
मारीच ठक्	-	मारीचकम्
उडुप ठक्	-	औडुपिकः
हास्त् ठक्	-	हास्तिकः
दधि ठक्	-	दाधिकः
बदर ठक्	-	बादरिकः
समाज ठक्	-	सामाजिकः
शब्द ठक्	-	शाब्दिकः
दुर्दर ठक्	-	दार्दुरिकः
धर्म ठक्	-	धार्मिकः
मृदङ्ग ठक्	-	मार्दङ्गिकः
असि ठक्	-	आसिकः
भिक्ष् ठक्	-	भिक्षुकः
करुणा ठक्	-	कारुणिकः

ठञ्प्रत्यय

(ठञ् विधायकं विधिसूत्रम्)

सूत्र- कालाट्ठञ् 4।3।11।।

कालवाचिभ्यष्ठञ् स्यात् ।

कालिकम्। मासिकम् । सांवत्सरिकम् ।

कालवाचक सभी शब्दों से ठञ् ही होता है, शेष अर्थ में ।

- **कालिकम्** (काल अर्थात् समय पर होने वाला या उत्पन्न)

  काले जतं भवं वा लौकिक विग्रह कालाट्ठञ् से ठञ् प्रत्यय होकर इक आदेश होकर कालिकम् सिद्ध होता है।

- **मासिकम्** (महीने में होने वाला)

  मास जतं भवं वा लौकिक विग्रह कालाट्ठञ् से ठञ् प्रत्यय होकर इक आदेशहोकर मासिकम् सिद्ध होता है।

• प्रभुत्व	प्रभुता
• पटुत्व	पटुता

स्त्री-प्रत्ययौ

टाप् प्रत्यय -

(टाप्-प्रत्ययविधायकं विधिसूत्रम्)

सूत्र- अजाद्यतष्टाप् 4।1।4।

अजादीनामकारान्तस्य च वाच्य यत् स्त्रीत्वं तत्र द्यात्व टाप् स्यात्। अजा। एडका। अश्वा। चटका। मूषिका। बाला। वत्सा। होडा। मन्दा। विलाता इत्यादि। मेधा। गङ्गा। सर्वा।

- अज आदि गण अथवा ह्रस्व अकारान्त शब्दों से स्त्रीत्व की विवक्षा में टाप् प्रत्यय होता है।इसे नित्यस्त्रीलिङ्गशब्द कहा जाता है।
- जिस शब्द के अन्त में 'आ' आये प्रायशः वह टाप् वाला होता है। जैसे- रमा आदि
- **अजा** (बकरी)

  यह अज अजादिगणीय शब्द है। स्त्रीत्व के द्योतन करने में अजाद्यतष्टाप् से टाप् प्रत्यय, अनुबन्धलोप, अज+आ बना। सवर्णदीर्घ होकर अजा बना।
- **एडका** (मादा भेंड)

  यह एडक अजादिगणीय शब्द है। स्त्रीत्व के द्योतन करने में अजाद्यतष्टाप् से टाप् प्रत्यय अनुबन्धलोप, एडक आ बना। सवर्णदीर्घ होकर एडका बना।

भ्रमित करने वाले उदाहरण-

- **सूर्या-** सूर्या में चाप् प्रत्यय हुआ है। अन्य जगह अधिकांशतः आकारान्तशब्दों में टाप् प्रत्यय होता है।

टाप् प्रत्यय के अन्य उदाहरण

अश्वा। चटका। मूषिका। बाला।वत्सा। होडा। मन्दा।
विलाता। मेधा। गङ्गा। रमा। सीता। सर्वा। रोहिता। एता
गोपालिका। अश्वपालिका। सर्विका। कारिका। अर्या । क्षत्रिया। अतिकेशा। चंन्द्रमुखा।
शिखा। बालिका आदि।

ङीप् प्रत्यय

- ङीप् प्रत्यय में ई (ी) शेष बचता है।
- ङीप्, ङीष्, ङीन् तीनों में 'ई' शेष बचता है। इन प्रत्ययों के कुछ शब्द है जिनको याद करके उलझन से बचा जा सकता है। किन्तु हमारे पाठ्यक्रम में ङीप् लगा है अतः ङीप् को विस्तार से देखकर अन्य को संक्षेप में देखेंगे।
- जिस प्रयोग के अन्त में बड़ी ईकार की मात्रा हो प्रायशः वह ङीप्, ङीष्, ङीन्में से कोई एक प्रत्यय होगा

(ङीप्-प्रत्ययविधायकं विधिसूत्रम्)

सूत्र- उगितश्च 4।1।6।

वृत्ति- उगिदन्तात्प्रातिपदिकात् स्त्रियां ङीप् स्यात्।

उदा0- भवती। भवन्ती। पचन्ती । दीव्यन्ती।

जिसमें उक् (उ,ऋ, लृ) की इत्संज्ञा हुई है ऐसे शब्दों की ङीप् प्रत्यय होता है।

• भवती	-	भवत्+ ङीप् प्रत्यय
• भवन्ती	-	भू+ङीप् प्रत्यय
• पचन्ती	-	पच्+ङीप् प्रत्यय
• दीव्यन्ती।	-	दीव्+ङीप् प्रत्यय

(ङीप्-प्रत्ययविधायकं विधिसूत्रम्)

सूत्र- टिड्ढाणञ्द्वयसज्दघ्नञ्मात्रच्तयप्ठञ्कञ्क्वरपः 4।1।15।।

वृत्ति- अनुपसर्जनं यट्टिदादि तदन्तं यददन्तं प्रातिपदिकं ततः स्त्रियां ङीप्स्यात्।

उदा0-कुरुचरी । नदट् नदी । देवट् देवी। सौपर्णेयी। ऐन्द्री । औत्सी। ऊरुद्वयसी। ऊरुदघ्नी। ऊरुमात्री। पञ्चतयी। आक्षिकी। लावणिकी। यादृशी । इत्वरी।

अनुपसर्जन जो टित्, ढ, अण्, द्वयसच्, दघ्नच्, मात्रच् तयप्, ठक्, कञ और क्वरपः जो प्रत्यय ऐसे प्रत्यय अन्त में होने वाले अदन्त प्रातिपदिक, उनसे स्त्रीत्व की विवक्षा में ङीप् प्रत्यय होता है।

- टित् प्रत्ययान्त का उदाहरण - कुरुचरी, नदी
- ढ प्रत्ययान्त का उदाहरण - सौपर्णेयी
- अण् प्रत्ययान्तका उदाहरण - ऐन्द्री, औत्सी
- द्वयसच् प्रत्ययान्त का उदाहरण - ऊरुद्वयसी
- दघ्नच् प्रत्ययान्त का उदाहरण - ऊरुदघ्नी
- मात्रच् प्रत्ययान्त का उदाहरण - ऊरुमात्री
- तयप् प्रत्ययान्त का उदाहरण - पञ्चतयी
- ठक् प्रत्ययान्त का उदाहरण - आक्षिकी, लावणिकी
- कञ् प्रत्ययान्त का उदाहरण - यादृशी
- क्वरपः प्रत्ययान्त का उदाहरण - इत्वरी
- **वार्तिकम्-** नञ्स्नञीकक्ख्युँस्तरुणतलुनानामुपसङ्ख्यानम् ।

स्त्रैणी। पौंस्नी। शाक्तीकी। याष्टीकी। आढ्यङ्करणी। तरुणी । तलुनी ।

नञ्-प्रत्ययान्त, स्नञ्-प्रत्ययान्त, ईकक् प्रत्ययान्त और ख्युन्-प्रत्ययान्त प्रातिपदिकों से तथा तरुण, तलुन प्रातिपदिकों से स्त्रीत्व की विवक्षा में ङीप् प्रत्यय होता है।

- नञ्-प्रत्ययान्त का उदाहरण - स्त्रैणी
- स्नञ्-प्रत्ययान्त का उदाहरण - पौंस्नी
- ईकक् प्रत्ययान्त का उदाहरण - शाक्तीकी
- ख्युन्-प्रत्ययान्त का उदाहरण - याष्टीकी, आढ्यङ्करणी
- तरुणप्रत्ययान्त का उदाहरण - तरुणी
- तलुन प्रत्ययान्त का उदाहरण - तलुनी

ङीप् प्रत्ययान्त सूत्र उदाहरण

- यञश्च - गार्ग+ङीप् - गार्गी
- वयसि प्रथमे - कुमार्+ङीप् - कुमारी
- द्विगोः - त्रिलोक्+ङीप् - त्रिलोकी
- वर्णादनुदात्तात्तोपधात्तो नः - एन+ङीप् - एनी, रोहिणी

ङीष् प्रत्ययान्त सूत्र उदाहरण

- षिद्गौरादिभ्यश्च - नर्तकी, गौरी, अनडुही, अनड्वाही
- वोतो गुणवचनात् - मृद्वी
- बह्वादिभ्यश्च - रात्री, शकटी
- पुंयोगादाख्यायाम् - गोपस्य स्त्री गोपी, सूरी, कुन्ती
- क्रीतात्करणपूर्वात् - वस्त्रक्रीती
- स्वांङ्गाच्चोपसर्जनादसंयोगोपधात् - अतिकेशी, चन्द्रमुखी,
- जातेरस्त्रीविषयादयोपधात् - तटी, वृषली, कठी, हयी, गवयी, मुकयी, मनुषी, मत्सी
- इतो मनुष्यजातेः - दाक्षी
- **इन्द्र-वरुण-भव-शर्व-रुद्र-मृड-हिमारण्य-यव-यवन-मातुला-चार्याणामानुक् -**

इन्द्रस्य स्त्री इन्द्राणी। वरुणानी। भवानी। शर्वाणी। रुद्राणी । मृडानी ।

- वार्तिकम्- हिमारण्ययोर्महत्त्व - महद्धिमं हिमानी। महदरण्यम् अरण्यानी।
- वार्तिकम्- यवाद् दोषे - दुष्टो यवो यवानी।
- वार्तिकम्- यवनाल्लिप्याम् - यवनानां लिपिर्यवनानी।
- वार्तिकम्- मातुलोपाध्याययोरानुग् वा - मातुलानी, मातुली। उपाध्यायानी, उपाध्यायी।
- वार्तिकम् - आचार्यादणत्वं च - आचार्यस्य स्त्री आचार्यानी ।
- वार्तिकम्- अर्यक्षत्रियाभ्यां वा स्वार्थे - अर्याणी, क्षत्रियाणी

ङीन् प्रत्ययान्त सूत्र उदाहरण

- **शार्ङ्गवाद्यञो ङीन्** - शार्ङ्गरवी, वैदी, ब्राह्मणी, नारी
- युवतिः में ति प्रत्यय हुआ है।

: यूनिट-5 इति :।

यूनिट-6

उपपदविभक्तिप्रयोगाः

कारक

- जिन शब्दों का क्रिया के साथ साक्षात् संबंध होता है, उन्हें कारक कहते हैं।
- (क्रियान्वयित्वं कारकत्वम्)।
- क्रिया तथा द्रव्य का संयोग करने वाले शब्दों को कारक कहते हैं।
- जिन शब्दों का क्रिया से साक्षात् सम्बन्ध नहीं होता, वे कारक नहीं कहलाते,जैसे - सम्बन्ध।
- सम्बन्ध की गणना कारकों में नहीं होती, क्योंकि इसका क्रिया से सीधा सम्बन्ध नहीं होता।
- सम्बन्ध कारक में षष्ठी विभक्ति होती है और इसका चिह्न- का,के,की है।
- कारक के भेद - कारक के छः भेद होते हैं-

विभक्ति	कारक	चिह्न
प्रथमा	कर्ता	ने
द्वितीया	कर्म	को
तृतीया	करण	से, के द्वारा
चतुर्थी	सम्प्रदान	को, के लिये
पञ्चमी	अपादान	से (पृथक् होने पर)
सप्तमी	अधिकरण	में, पर

- कारक के अन्तर्गत उपपद विभक्ति आती है।
- **उपपद विभक्ति -** जो विभक्ति किसी पद विशेष (प्रायः अव्यय) के योग में आती है उसे उपपद विभक्ति कहते हैं। जैसे 'सह' के योग में तृतीया उपपद विभक्ति होती है।
- **कारक तथा उपपद विभक्ति -** यदि कहीं कारक तथा उपपद विभक्ति दोनों भिन्न-भिन्न हों,तो वहाँ कारक विभक्ति को ही बलवान् मानकर उसका प्रयोग किया जाता है। जैसे 'नमस्करोति' क्रिया के कर्म में द्वितीया कारक

विभक्ति का प्रयोग उचित है (नमस्करोति नमः+करोति) भले ही नमः के योग में चतुर्थी उपपद विभक्ति का नियम रहता है।

- उपपद विभक्ति का प्रयोग द्वितीया विभक्ति से प्रयोग हुआ है।

उपपद-द्वितीया विभक्ति

उभसर्वतसोः कार्या, धिगुपर्यादिषु त्रिषु।
द्वितीयाम्रेडितान्तेषु ततोऽन्यत्रापि दृश्यते ।।

इन शब्दों के योग में द्वितीया होती है-

- उभयतः - (दोनों तरफ)
- सर्वतः - (सभी तरफ)
- धिक - (धिक्कार)
- उपर्युपरि - (ऊपर ऊपर)
- अध्यधि - (अन्दर अन्दर)
- अधोऽधः - (नीचे-नीचे)
- **उभयतः कृष्णं गोपाः** (कृष्ण के दोनों ओर ग्वाले हैं)उभयतः के योग में कृष्णं में द्वितीया विभक्ति होकर उभयतः कृष्णं गोपाः बनता है।
- **सर्वतः कृष्णम्** (कृष्ण के चारों ओर ग्वाले हैं)।
- **धिक् कृष्णाभक्तम्** (कृष्ण के अभक्त को धिक्कार है)।
- **उपर्युपरि लोकं हरिः** (हरि संसार के ऊपर है)।
- **अध्यधि लोकम्** (हरि संसार के अन्दर हैं)।
- **अधोऽधो लोकम्** (हरि संसार के नीचे-नीचे हैं

अभितः परितः समयानिकषाहाप्रतियोगेऽपि वा0

इनके में द्वितीया होती है-

- **अभितः** (दोनों ओर) अभितः कृष्णम् (कृष्ण के दोनों ओर)
- **परितः** (चारों ओर) परितः कृष्णम् (कृष्ण के चारों ओर)
- **समया** (समीप) ग्रामं समया (गाँव के समीप)
- **निकषा** (समीप) निकषा लङ्काम् (लंका के समीप)

- **हा** (हाय) हा कृष्णाभक्तम् (कृष्ण के अभक के लिए खेद हैं)
- **प्रति** (ओर) बुभुक्षितं न प्रतिभाति किंचित् (भूखे को कुछ अच्छा नहीं लगता है)

सूत्र- अन्तरान्तरेणयुक्ते 2।3।4

अन्तरा (बीच में) और अन्तरेण (बिना, अतिरिक्त) के योग में द्वितीया होती है।

- **अन्तरा त्वां मां हरिः** (हरि तेरे और मेरे बीच में है)- अन्तरा के कारण त्वाम् माम् मेंद्वितीया।
- **अन्तरेण हरिं न सुखम्** (हरि के बिना सुख नहीं)- अन्तरेण के कारण हरिम् में द्वितीया है।

सूत्र- अनुर्लक्षणे (1।4।84)

अनु कर्मप्रवचनीय के योग में द्वितीया विभक्ति होती है।

- जपमनु प्रावर्षत् (जप के पश्चात् वर्षा हुई)

अनु कारण अर्थ में है, अतः जपम् में द्वितीयाजप के कारण वर्षा हुई।

सूत्र- तृतीयार्थे 1।4।85

अनु जब तृतीया का अर्थ बताता है, तब वह कर्मप्रवचनीय होता है।

- नदीम् अन्ववसिता सेना (सेना नदी के किनारे पड़ी हुई है)

नद्या सह सम्बद्धा इत्यर्थः, अनु तृतीया के अर्थ में है, अतः नदीम में द्वितीया हुई ।

सूत्र- हीने 1।4।86

हीन अर्थ में अनु की कर्मप्रवचनीय संज्ञा होती है अतः द्वितीया।

- अनु हरिं सुराः(देवता हरि से हीन हैं) अनु के कारण हरिं में द्वितीया विभक्ति हुई है ।

सूत्र- उपोऽधिके च 1।4।87

अधिक और हीन अर्थ में उप की कर्मप्रवचनीय संज्ञा होती है। अधिक अर्थ में सप्तमी का आगे वर्णन किया गया है।

- **उप हरिं सुराः** (देवता हरि से हीन हैं) - हीन अर्थ में उप है, अतः हरिं में द्वितीया विभक्ति हुई।

सूत्र- लक्षणेत्थंभूताख्यानभागवीप्सासु प्रतिपर्यनवः 1।4।90

- लक्षण (जापक, चिह्न), इत्थंभूताख्यान (ऐसा हुआ, इसका वर्णन करना), भाग (अंश, हिस्सा) और वीप्सा (द्विरुक्ति प्रत्येक वस्तु साथ सम्बन्ध करने की इच्छा) अर्थों में प्रति, परि और अनु की कर्मप्रवचनीय संज्ञा होती है। अतः इन अर्थों में द्वितीयाविभक्ति होती है।
- भाग में-लक्षण में वृक्षं प्रति परि अनु विद्योतते विद्युत् (वृक्ष की ओर बिजली चमक रही है)
- वृक्ष बिजली चमकने की दिशा का लक्षण (ज्ञापक) है, अतः प्रति आदि की कर्मप्रवचनीय संज्ञा और वृक्षम् में द्वितीया हुई
- इत्थंभूताख्यान में- भक्तो विष्णुं प्रति परि अनुवा (भक्त विष्णु की भक्ति से युक्त है) विष्णुम् में द्वितीया भक्त की भक्ति के स्वरूप का वर्णन है।
- भाग अर्थ में - लक्ष्मीर्हरिं प्रति परि अनु वा (लक्ष्मी हरि का भाग है, अर्थात् हरि लक्ष्मी के स्वामी हैं) भाग अर्थ में हरिम् में द्वितीया विभक्ति हुई।
- वीप्सा में- वृक्षं वृक्षं प्रति परि अनु वा सिञ्चति (प्रत्येक वृक्ष को सींचता है)वीप्सा (द्विरुक्ति) होने से दोनों वृक्षम् में द्वितीया विभक्ति हुई।

सूत्र– अभिरभागे 1।4।91

भाग अर्थ को छोड़कर शेष (लक्षण, इत्थंभूताख्यान, वीप्सा) अर्थों में अभि के रहने से द्वितीया विभक्ति होती है।

लक्षण में-	**हरिम् अभिवर्तते**	(हरि के अनुकूल है)।
इत्थंभूताख्यान में-	**भक्तो हरिम् अभि**	(भक्त हरि की भक्ति से युक्त है)।
वीप्सा में-	**देवं देवम् अभिसिञ्चति**	(प्रत्येक देव को स्नान कराता है)।

सूत्र- अधिपरी अनर्थकौ 1।4।93

अनर्थक अधि और परि की कर्मप्रवचनीय संज्ञा होती है और द्वितीया विभक्ति होती है।

- कुतोऽध्यागच्छति (कहाँ से आता है ?),
- कुतः पर्यागच्छति (कहाँ से आता है ?)

दोनों उदाहरणों में जो आगच्छति का अर्थ है, वही अध्यागच्छति (आता है)

और पर्यागच्छति (आता है) का है, अतः अधि और परि अनर्थक हैं। इनकी उपसर्गया गति संज्ञा नहीं रही।

सूत्र- सुः पूजायाम् 1।4।94

पूजा (सम्मान) अर्थ में सु की कर्मप्रवचनीय संज्ञा होती है और द्वितीया विभक्ति होती है। कर्मप्रवचनीय संज्ञा होने से सु उपसर्ग नहीं रहता।

- सुसिक्तम् (अच्छी तरह सींचा है)
- सुस्तुतम् (अच्छी तरह स्तुति की है)

सूत्र- अतिरतिक्रमणे च 1।4।95

अतिक्रमण (बढ़कर होना) और पूजा (आदर) अर्थ में अति की कर्मप्रवचनीय संज्ञा होती है।

अति देवान् कृष्णः (कृष्ण देवों से बढ़कर हैं, अथवा कृष्ण देवों के पूज्य हैं) अतिक्रमण और पूजा अर्थ होने से कर्मप्रवचनीय संज्ञा और देवान् में द्वितीया हुई।

सूत्र- अपिः पदार्थसंभावनाऽन्ववसर्गगर्हासमुच्चयेषु 1।4।96

अपि इन विभिन्न विभिन्न अर्थ में होता है—

पदार्थ (पद का अर्थ)संभावना (शक्ति उत्कर्ष को प्रकट करने केअत्युक्ति)अन्ववसर्ग (इच्छानुसार कार्य करने की अनुमति देना)गर्हा (निन्दा)समुच्चय (संग्रह) अर्थों में अपि की कर्मप्रवचनीय संज्ञा द्वितीया विभक्ति होती है।

- पदार्थ के अर्थ में अपि- सर्पिषोऽपि स्यात् (घी की बूँद भी तो हो)
- संभावना अर्थ में अपि- अपि स्तुयाद् विष्णुम् (क्या विष्णु की स्तुति कर सकेगा)
- अन्ववसर्ग अर्थ में अपि- अपि स्तुहि (स्तुति करो या न करो तुम्हारी इच्छा)
- गर्हा (निन्दा) अर्थ में - धिक् देवदत्तम्, अपि स्तुयाद् वृषलम् (देवदत्त को धिक्कार है शूद्र कीचापलूसी करता है)

सूत्र- कालाध्वनोरत्यन्तसंयोगे 2।3।6

अत्यन्त संयोग (निरन्तरता) में समयवाचक और अध्व (मार्ग या दूरी) के बोधकशब्दों से द्वितीया होती है।

- मास कल्याणी (पूरा महीना शुभ हैं),
- मासम् अधीते (पूरे महीना पड़ता है),
- मासं गुडधानाः (महीनेभर गुडधान अर्थात् गुड़ मिश्रित धान्य पाता है या खाता है)।
- कोशं कुटिला नदी (नदी कोसमर टेढ़ी हैं),
- क्रोशम् अधीते (कोसभर निरन्तर रहता है),
- क्रोश गिरिः (पूरे कोर पहाड़ है)।

उपर्युक्त उदाहरणों में मासम् और क्रोशम् में द्वितीया।

नीचे दिये गये उदाहरण में 'लगातार होना' अर्थ नहीं है, अतः द्वितीया नहीं हुई-मासस्य द्विरधीते (महीने में केवल दो बार पढ़ता है)

क्रोशस्य एकदेश पर्वत (कोस के एक हिस्से में पहाड़ है)

।। द्वितीया विभक्ति समाप्त।।

उपपद-तृतीया विभक्ति

सूत्र- सहयुक्तेऽप्रधाने 2।3।19

सह (साथ) अर्थवाले शब्दों के योग में अप्रधान में तृतीया विभक्ति होती है।

- **पुत्रेण सहागतः पिता** (पिता पुत्र सहित आया)- पिता प्रधान (मुख्य) है और पुत्र अप्रधान (गौण)अतः पुत्र में तृतीया विभक्ति हुई।
- **साकंसार्धंसमंयोगेऽपि तृतीया**

  साकम्, सार्धम्, समम् के योग में तृतीया विभक्ति होती है।

सूत्र- येनाङ्गविकारः2।3।20

जिस अंग में विकार से अंगी (व्यक्ति) विकृत दिखाई पड़ता है, उस अंग में तृतीया होती है।

- **अक्ष्णा काणः** (वह आँख से काना है, अर्थात् आँख-सम्बन्धी काणत्व से युक्त हैं)

सूत्र- इत्थंभूतलक्षणे 2।3।21

जिस चिह्न या लक्षण के द्वारा किसी विशेष अवस्था का बोध कराया जाता है, उस चिह्न में तृतीया होती है।

- **जटाभिस्तापसः** (जटाओं से तपस्वी ज्ञात होता है)

  जटा चिह्न है तपस्वी को पहचाननें में अतः जटा में तृतीया विभक्ति हुई।
- **संज्ञोऽन्यतरस्यां कर्मणि 2।3।22)**

  सम् + ज्ञा के कर्म में विकल्प से तृतीया होती है। एक पक्ष में द्वितीया होगी।
- पित्रा पितरं वा संजानीते (पिता को अच्छी तरह जानता है)

  पित्रा और पितरम् में तृतीया तथा द्वितीया दोनों विभक्ति होती है।

सूत्र- हेतौ 2। 3। 23

हेतु (कारण) अर्थ होने पर तृतीया विभक्ति होती है।

- **दण्डेन घटः** (दण्ड से घड़ा, दण्ड घड़े का हेतु है)

  घड़े बनाने में दण्ड कारण है अतः दण्ड में तृतीया विभक्ति हुई।
- **पुण्येन दृष्टो हरिः** (पुण्य से हरि को देखता है)

  दर्शन में पुण्य कारण है अतः पुण्य में तृतीया विभक्ति हुई।

।। तृतीया विभक्ति समाप्त।।

उपपद-चतुर्थी विभक्ति

- **रुच्यर्थानां प्रीयमाणः 1। 4। 33**

रुच् (अच्छा लगना) अर्थवाली धातुओं के योग में प्रीयमाण (प्रसन्न होनेवाला) व्यक्ति संप्रदान कहलाता है।

- **हरये रोचते भक्तिः** (हरि को भक्ति अच्छी लगती है)हरि में चतुर्थी अन्यकर्तृकोऽभिलाषो रुचिः । हरिनिष्ठप्रीतेर्भक्तिः कर्त्री । अन्य के द्वारा उत्पन्न की हुई अभिलाषा रुचि है। हरि में विद्यमान प्रसन्नता को उत्पन्न करनेवाली भक्ति है । भक्ति से हरि प्रसन्न होते हैं अतः हरि में चतुर्थी विभक्ति हुई।
- **श्लाघह्नुङ्स्थाशपां ज्ञीप्स्यमानः 1। 4। 34**

श्लाघ् (प्रशंसा करना), हनुङ् (छिपाना),
स्था (रुकना) शप् (उलाहना देना)

धातुओं के प्रयोग में कर्ता जिसको अपना भाव प्रकट करना चाहता है, उसकीसंप्रदान संज्ञा होती है। जिसकी संप्रदान संज्ञा उसकी चतुर्थी विभक्ति होती है।

- **गोपी स्मरात् कृष्णाय श्लाघते, हनुते, तिष्ठते, शपते वा**

गोपी कामभाव के कारण-

(1) कृष्ण की प्रशंसा करती है।

(2) कृष्ण के लिए अपने-आपको छिपाती है कि वह कृष्ण से अलग मिल सके।

(3) कृष्ण के लिए रुकती है अर्थात् कृष्ण की प्रतीक्षा करती है।

(4) कृष्ण को उलाहना देती है।

इन सभी अर्थ होने के कारण कृष्ण में चतुर्थी विभक्ति हुई।

सूत्र-धारेरुत्तमर्णः 1।4।35

उत्तमर्ण- ऋण देने वाला। अधमर्ण- ऋण लेने वाला।

धारयति (धृ+धातु) के प्रयोग में उत्तमर्ण (ऋणदाता, महाजन) कीसंप्रदान संज्ञा होती है।

- **भक्ताय धारयति मोक्षं हरिः** (हरि भक्त के लिए मोक्ष धारण करते हैं, अर्थात् भक्त को मोक्ष देने के लिए ऋणी हैं) उत्तमर्ण हुआ भक्त और अधमर्ण हुए हरि अतः उत्तमर्णभक्त में चतुर्थी विभक्ति होती है।

सूत्र- स्पृहेरीप्सितः 1।4।36

स्पृह् (चाहना) धातु के योग में ईप्सित (इष्ट) पदार्थ की संप्रदान संज्ञा होती है।

- **पुष्पेभ्यः स्पृहयति** (फूलों को चाहता है)

  पुष्प अतिप्रिय होने के कारण पुष्प में चतुर्थी विभक्ति होती है।

सूत्र- क्रुधद्रुहेर्ष्यासूयार्थानां यं प्रति कोपः 1।4।37

क्रुध् (क्रोध करना), द्रुह् (द्रोह करना),
ईर्ष्या (ईर्ष्या करना) असूया (गुणों में दोष निकालना)

इन अर्थोंवाली अन्य धातुओं के प्रयोग में जिस पर क्रोध आदि किया जाए, उसकी संप्रदान संज्ञा होकर चतुर्थी विभक्ति होती है।

- **हरये क्रुध्यति** (वह हरि पर क्रोध करता है)
- **हरये द्रुह्यति** (वह हरि पर द्रोह करता है)
- **हरये ईर्ष्यति** (वह हरि पर ईर्ष्या करता है)
- **हरये असूयति** (वह हरि में दोष निकालता है)

यं प्रति कोपः (जिस पर क्रोध किया जाय)

दैत्य द्वारा क्रोध हरि पर किया जा रहा है, अतः हरि चतुर्थी विभक्ति हुई।

सूत्र-क्रुधद्रुहोरुपसृष्टयोः कर्म 1।4।38

उपसर्ग- युक्त क्रुध् और द्रुह् धातु के योग में जिस पर क्रोध किया जाता है, उसकी कर्मसंज्ञा होती है।

- **क्रूरम् अभिक्रुध्यति** क्रूर पर क्रोध करता है)
- **क्रूरम्अभिद्रुह्यति** (क्रूर से द्रोह करता है)

सूत्र- नमः स्वस्तिस्वाहास्वधालंवषड्योगाच्च 2।3।16

नमः के योग में, स्वस्ति के योग में, स्वाहा के योग में, स्वधा के योग में, अलम् (पर्याप्त)और वषट् शब्दों के योग में चतुर्थी विभक्ति होती है।

- **हरये नमः** (हरि को नमस्कार)

  नमः के कारण हरि में चतुर्थी विभक्ति होती है।
- **प्रजाभ्यः स्वस्ति** (प्रजाओं का कल्याण हो)

  स्वस्ति के कारण प्रजा में चतुर्थी विभक्ति हुई है।
- **अग्नये स्वाहा** (अग्नि के लिए स्वाहा)

  स्वाहा के कारण अग्नि में चतुर्थी विभक्ति हुई है।
- **पितृभ्यः स्वधा** (पितरों के लिए अन्नादि द्रव्य)

  स्वधा के कारण पितृ शब्द में चतुर्थी विभक्ति हुई है।
- **अलमिति पर्याप्त्यर्थग्रहणम्-** इस सूत्र में अलम् शब्द से पर्याप्त (समर्थ)अर्थवाले अलम् प्रभुः, समर्थः, शक्तः आदि शब्दों का भी ग्रहण होगा। इनमे चतुर्थी विभक्ति भी होगी।

- **दैत्येभ्यो हरिः अलं-प्रभुः-समर्थः-शक्त इत्यादि** (दैत्यों को मारने के लिए हरि समर्थ हैं)प्रस्तुत उदाहरण में अलम् का योग के पर्याप्त अर्थ के साथ जुड़ा है। दैत्यों के लिए हरि पर्याप्त है अतः दैत्य में चतुर्थी विभक्ति हुई।

नमः के योग होने पर चतुर्थी नहीं होगी-

उपपदविभक्तेः कारकविभक्तिर्बलीयसी- उपपद-विभक्ति से कारक विभक्ति बलवान् होती है।

- किसी पद (नमः आदि) को मानकर होनेवाली विभक्ति उपपदविभक्ति है और क्रिया को लेकर होनेवाली विभक्ति कारक-विभक्ति हैं।
- उपपद-विभक्ति को रोककर कारक-विभक्ति होती है।
- **नमस्करोति देवान्** (देवों को नमस्कार करता है)

  यहाँ पर नमः के कारण चतुर्थी प्राप्त है और नमस्करोति क्रिया के कारण देवान् में द्वितीया प्राप्त है। कारक-विभक्ति होने से द्वितीया हुई।

।। चतुर्थी विभक्ति समाप्त।।

उपपद-पञ्चमी विभक्ति

- **जुगुप्साविरामप्रमादार्थानामुपसंख्यानम् वा0**

जुगुप्सा (घृणा), विराम (रुकना,हटना) और प्रमाद (असावधानी करना) अर्थवाली धातुओं के योग में जुगुप्सा आदि के विषय में पञ्चमी होती है।

- **पापात् जुगुप्सते** (पाप से घृणा करता है)
- **पापात् विरमति** (पाप करने से रुकता है)
- **धर्मात् प्रमाद्यति** (धर्म से प्रमाद करता है)

सूत्र- भीत्रार्थानां भयहेतुः 1।4।25

भी (डरना) और त्रै (बचाना, रक्षा करना) इन अर्थोंवाली धातुओं में पञ्चमी विभक्ति होती है।

- **चौराद् बिभेति** (चोर से डरता है)
- **चोरात् त्रायते** (चोर से बचाता है)

प्रस्तुत दोनों उदाहरणोंभय के कारण चोर है अतः चोर में पञ्चमी विभक्ति हुई।

अरण्ये बिभेति त्रायते वा (जंगल में डरता है या जंगल में बचाता है)

अरण्य भय का कारण नहीं है, अतः उसमें पञ्चमी नहीं हुई।

सूत्र-पराजेरसोढः 1।4।26

परा उपसर्ग पूर्वक् जि(हार मानना) धातु के योग में असह्य वस्तु (जिससे हार माने या ऊब जाए)। की अपादान संज्ञा व पञ्चमी विभक्ति होती है।

- **अध्ययनात् पराजयते** (पढ़ाई से हार मानता है)

  असह्य अध्ययन में पञ्चमी ।

सूत्र- वारणार्थानामीप्सितः 1।4।27

वारण (रोकना, हटाना) अर्थवाली धातुओं के प्रयोग में इष्ट वस्तु (जिससे किसीको हटाया) में पञ्चमी होती है।

- **यवेभ्यो गां वारयति** (जौ से गाय को हटाता है)

  इष्ट वस्तु यव में पञ्चमी हुई।

सूत्र- अन्तर्धौ येनादर्शनमिच्छति 1।4।28

अन्तर्धि (छिपना, ओट में होना) जिससे अपने आपको छिपाना चाहता है उसमे पञ्चमी होती है।

- मातुर्निलीयते कृष्णः(कृष्ण माता से छिपता है)

  माता से छिपना चाहता है अतः माता में पञ्चमी हुई है।

सूत्र- आख्यातपयोगे 1।4।29

नियमपूर्वक् विद्या ग्रहण करने में शिक्षक में पञ्चमी होती है।

- **उपाध्यायाद् अधीते** (उपाध्याय से पढ़ता है)

  नियमपूर्वक् विद्या ग्रहण करने के कारण शिक्षक में पञ्चमी विभक्ति हुई।
- **नटस्य गाथां श्रृणोति** (नट की गाथा सुनता है)

  यहाँ पर नियमपूर्वक विद्या- ग्रहण नहीं है, अतः पञ्चमी न होने से षष्ठी हुई।

सूत्र- जनिकर्तुः प्रकृतिः 1।4।30

- उत्पन्न होनेवाली वस्तु के कारण में पञ्चमी होती है।
- जनि का अर्थ है- जन्म, उत्पत्ति ।
- प्रकृति का अर्थ है- आदि कारण, मूल कारण या कारण।

- ब्रह्मणः प्रजाः प्रजायन्ते (ब्रह्मा से प्रजा उत्पन्न होती है)

  जन्म में कारण ब्रह्मा है अतः ब्रह्मा में पञ्चमी विभक्ति हुई ।

सूत्र-भुवः प्रभवः 1।4।31

- भू धातु (होना, उत्पन्न होना) के उत्पत्ति स्थान में पञ्चमी होती है।
- भू का अर्थ है- प्रकट होना, उत्पन्न होना।
- प्रभव का अर्थ है-उत्पत्ति स्थान या उद्गम स्थान।

हिमवतो गङ्गा प्रभवति (हिमालय से गङ्गा निकलती है)

उद्गम स्थान हिमालय है अतः हिमवत् में पञ्चमी विभक्ति हुई ।

सूत्र- अन्यारादितरर्तेदिक्शब्दाञ्चूत्तरपदाजाहियुक्ते 2।3।29

अन्य, आरात्, इतर, ऋते, दिशावाचक शब्द, जिसके उत्तर पद में अञ्च् धातु है, आच् (आ) और आहि-प्रत्ययान्त शब्दों के योग में पञ्चमी होती है।

- **अन्यः कृष्णात्** (कृष्ण से अन्य)– अन्य के कारण कृष्ण में पञ्चमी विभक्ति हुई।
- **भिन्नः कृष्णात्** (कृष्ण से भिन्न)– भिन्न के कारण कृष्ण में पञ्चमी विभक्ति हुई।
- **इतरः कृष्णात्** (कृष्ण से इतर)– इतर के कारण कृष्ण में पञ्चमी विभक्ति हुई।
- **आराद् वनात्** (वन से दूर या समीप)– आरात् के कारण पञ्चमी विभक्ति हुई।
- **ऋते कृष्णात्** (कृष्ण के बिना)– ऋते के कारण कृष्ण में पञ्चमी विभक्ति हुई।
- **पूर्वो ग्रामात्** (गाँव से पूर्व की ओर)– दिशावाचक पूर्व के कारण ग्राम में पञ्चमी विभक्ति हुई।
- **दक्षिणा ग्रामात्** (गाँव से दक्षिण की ओर)– दक्षिण+आच् (आ) दक्षिणा आच्-प्रत्ययान्त है, अतः ग्रामात् में पञ्चमी।
- **दक्षिणाहि ग्रामात्** (गाँव से दूर दक्षिण की ओर)– दक्षिण आहि, दूर

अर्थ में आहि। आहि प्रत्ययान्त होने से दक्षिणाहि के योग में ग्रामात् में पञ्चमी ।

सूत्र- प्रतिनिधिप्रतिदाने च यस्मात् 2।3।11

जिसका कोई प्रतिनिधि होता है या जिससे कोई वस्तु बदली जायें इन दोनों अर्थों में विद्यमान प्रति के योग में पञ्चमी विभक्ति होती है।

- **प्रद्युम्नः कृष्णात् प्रति** (प्रद्युम्न कृष्ण के प्रतिनिधि है)
  प्रतिनिधि अर्थ होने के कारण प्रति के साथ कृष्ण पञ्चमी विभक्ति हुई।
- **तिलेभ्यः प्रतियच्छति माषान्** (तिलों से उड़द को बदलता है)
  प्रतिदान अर्थ के कारण तिलेभ्यः में पञ्चमी विभक्ति हुई।

सूत्र- अकर्तर्यृणे पञ्चमी 2।3।24

ऋणवाचक शब्द जब स्वयं कर्ता न होकर किसी कार्य का कारण होता है, तब उससे पञ्चमीविभक्ति होती है।

- **शताद् बद्धः** (सौ रुपए ऋण के कारण बँधा है)
  बंधन में कारण सौ रुपया है अतः शत में पञ्चमी विभक्ति हुई।

सूत्र- विभाषा गुणेऽस्त्रियाम्2।3।25

जो गुणवाचक शब्द हेतु (कारण) भी हो और स्त्रीलिंग में न हो तो उससे विकल्प से पञ्चमी विभक्ति होती है और दूसरें पक्ष में तृतीया विभक्ति होती है।

- **जाड्यात् जाडयेन वा बद्धः** (मूर्खता के कारण बँध गया)
  जाड्य शब्द बन्धन का कारण है और स्त्रीलिंग में नहीं है, अतः पञ्चमी और तृतीया विभक्ति दोनों हुई।
- **धनेन कुलम्** (धन के कारण कुल)धन शब्द गुणवाचक नहीं है,अतः पञ्चमी नहीं हुई।
- **बुद्ध्या मुक्तः** (बुद्धि से मुक्त हुआ)बुद्धि शब्द स्त्रीलिंग में है, अतः पञ्चमी नहीं हुई।

पृथग्विनानानाभिस्तृतीयाऽन्यतरस्याम् 2।3।32

- पृथक्, विना और नाना के योग में द्वितीया, तृतीया और पञ्चमी विभक्ति होती है।

- सूत्र में अन्यतरस्याम् शब्द पञ्चमी और द्वितीया के समावेश के लिए है।
  पृथग् रामेण रामात् रामं वा
  विना रामेण रामात् रामं वा
  नाना रामेण रामात् रामं वा
- **करणे च स्तोकाल्पकृच्छ्रकतिपयस्यासत्त्ववचनस्य 2।3।33**
  स्तोक (थोड़ा)
  अल्प (कम)
  कृच्छ्र (कठिनाई)
  कतिपय (कुछ)

ये चारों शब्द जब द्रव्यवाचक न हों और करण (साधन) के रूप में प्रयुक्त हों तो, इनके योग में तृतीया और पञ्चमी विभक्ति होती हैं।

- **स्तोकेन स्तोकाद् वा मुक्तः**- (थोड़े से प्रयास से ही छूट गया)
  स्तोक अर्थ में होने से यहाँ तृतीया व पञ्चमी विभक्ति हुई। इसी प्रकार अन्य में भी समझना चाहिए।
- **स्तोकेन विषेण हतः** (थोड़े से विष से मर गया)
  स्तोक द्रव्यवाची विष का विशेषण है, अतः केवल तृतीया विभक्ति हुई ।

सूत्र- दूरान्तिकार्थेभ्यो द्वितीया च 2।3।35

दूर और समीप के वाचक शब्दों में द्वितीया, तृतीया व पञ्चमी विभक्ति होती है।

- **ग्रामस्य दूरं दूरात् दूरेण वा** (गाँव से दूर) दूर शब्द के प्रयोग में द्वितीया, तृतीयापञ्चमी विभक्ति हुई।
- **ग्रामात् अन्तिकम् अन्तिकात् अन्तिकेन वा** (गाँव के समीप)

अन्तिक शब्द के प्रयोग में द्वितीया, तृतीयापञ्चमी विभक्ति हुई।

।। पञ्चमी विभक्ति समाप्त।।

उपपद षष्ठी विभक्ति

सूत्र- षष्ठी हेतुप्रयोगे 2।3।26

हेतु शब्द का प्रयोग होने पर और कारण अर्थ होने पर कारणवाचक शब्द और हेतु शब्द दोनों में षष्ठी होती है। अन्नस्य हेतोर्वसति (अन्न के लिए रहता है) - इससे

अन्न और हेतु शब्द दोनों में षष्ठी हुई।

सूत्र- सर्वनाम्नस्तृतीया च 2।3।27

सर्वनाम के साथ हेतु शब्द का प्रयोग होने पर यदि वे हेतु अर्थ प्रकट करते हों तो सर्वनाम और हेतु दोनों में तृतीया और षष्ठी होती है।

- केन हेतुना वसति- (किस कारण से रहता है ?) तृतीया।
- कस्य हेतोः वसति- षष्ठी
- **निमित्तपर्यायप्रयोगे सर्वासां प्रायदर्शनम्, वा0-**

निमित्त के पर्यायवाची (निमित्त, कारण, प्रयोजन, हेतु आदि) शब्दों का प्रयोग होने पर प्रायः सभी विभक्तियाँ देखी जाती हैं।

किं निमित्तं वसति
केन निमित्तेन वसति
कस्मै निमित्ताय वसति

सूत्र- षष्ठ्यतसर्थप्रत्ययेन 2।3।30

अतसुच् (अतस्) प्रत्यय तथा अतसुच् के अर्थवाले प्रत्ययों से बने हुए शब्दों के योग में षष्ठी होती है।

ग्रामस्य दक्षिणतः पुरः पुरस्तात् उपरि उपरिष्टात् (गांव के दक्षिण की ओर, सामने या ऊपर) दक्षिणतः आदि में अतसुच् या इस अर्थवाले प्रत्यय हैं, अतः ग्रामस्य में षष्ठी हुई।

सूत्र- कर्तृकर्मणोः कृति 2।3।65

कृत्-प्रत्ययान्त शब्दों के योग में उनके कर्ता और कर्म में षष्ठी विभक्ति होती है।

- **जगतः कर्ता कृष्णः** (जगत का कर्ता कृष्ण, कृष्ण ने संसार को बनाया है)

कर्ता (कृ+तृच्) के कर्म जगत् में षष्ठी (गुणकर्मणि वेष्यते, वा0) कृत्-प्रत्ययान्त द्विकर्मक धातुओं के योग में गौण कर्म में विकल्प से षष्ठी होती है।

सूत्र- उभयप्राप्तौ कर्मणि 2।3।66

कृत् प्रत्ययान्त के योग में जहाँ कर्ता और कर्म दोनों में षष्ठी प्राप्त होती है, वहाँ पर केवल कर्म में ही षष्ठी होती है, कर्ता में नहीं।

आश्चर्यो गवां दोहोऽगोपेन (जो ग्वाला नहीं है, उसके द्वारा गायों का दुहा जाना आश्चर्य की बात है) दोहः (दुह+ घञ्) कृदन्त के योग में कर्ता अगोप और कर्म गो दोनों में षष्ठी प्राप्त थी, इस नियम से कर्म गो में षष्ठी हुई और कर्ता अगोप में अनुक्त कर्ता में तृतीया विभक्ति हुई।

सूत्र- कृत्यानां कर्तरि 2।3।71

कृत्य प्रत्ययों योग कर्ता विकल्प षष्ठी होती है द्वितीय पक्ष में तृतीया होगी।

- मम वा सेव्यो हरिः (हरि मेरा सेव्य है)

शब्द सेव्+ण्यत्, कृत्य प्रत्यय ण्यत् से है, अतः इसके योग मम और मया षष्ठी और तृतीया विभक्ति हुई।

सूत्र- तुल्यार्थैरतुलोपमाभ्यां तृतीयाऽन्यतरस्याम् 1।3।72

तुला और उपमा दो शब्दों को छोड़कर शेष तुल्य अर्थवाले साथ विकल्प तृतीया और षष्ठी होती है।

- तुल्यः सदृशः समो कृष्णस्य कृष्णेन वा (कृष्ण के तुल्य, सदृश)

तुल्य व सदृश के योग कृष्ण में तृतीया व षष्ठी दोनों विभक्ति हुई है।

।। षष्ठी विभक्ति समाप्त।।

उपपद सप्तमी विभक्ति

- आधारोऽधिकरणम्- कर्ता और कर्म द्वारा उनमें क्रिया का जो आधार हो, उसकी अधिकरण संज्ञा होती है।
- सप्तम्यधिकरणे च- अधिकरण में सप्तमी होता है ।
- आधार तीन प्रकार के होते है-

1. औपश्लेषिक - स्थाल्यां पचति
2. वैषयिक - मोक्षे इच्छास्ति
3. अभिव्यापक - सर्वस्मिन आत्मा अस्ति।

- दूर और अन्तिक में द्वितीया, तृतीया, पञ्चमी, व सप्तमी विभक्ति होती है।
- **क्तस्येन्विषयस्यकर्मण्युपसंख्यानम्-** क्त प्रत्ययान्त शब्दों में कर्म में सप्तमी होती है।

- **साध्वसाधुप्रयोगे च वा-** साधु-असाधु शब्द के साथ सप्तमी होती है-
साधु कृष्णो मातरि, असाधु कृष्णो मातुले (कृष्ण माता के लिए भले है, मामा के लिए बुरे)
- निमित्तात् कर्मयोगे वा- जबकिसी निमित्त को मानकर कार्य किया जाये तो सप्तमी होती है।
- निमित्त का अर्थ यहाँ फल प्राप्ति है आगे उदाहरण में दिखाएंगे कैसे-

चर्मणि द्वीपिनं हन्ति, दन्तयोर्हन्ति कुञ्जरम् ।
केशेषु चमरीं हन्ति, सीम्नि पुष्कलको हतः ।।

- चर्मणि द्वीपिनं हन्ति - चमड़े के लिए बाघ को मारता है।
- दन्तयोर्हन्ति कुञ्जरम् - दातों केलिए हाथी को मारता है।
- केशेषु चमरीं हन्ति - बालों के लिए चमरी गाय को मारता है।
- सीम्नि पुष्कलको हतः - कस्तूरी के लिए मृग को मारता है।

यहाँ सभी उदाहरणों में निमित्त के लिए कार्य किया जा रहा है अतः सभी में सप्तमी हुई।

- **सूत्र- यस्य च भावेन भावलक्षणम् 2।3।37**

एक क्रिया से दूसरी क्रिया के होना सूचित होता है, उस क्रिया के कर्ता व कर्म में सप्तमी विभक्ति होती है।

- **गोषु दुह्यमानासु गतः-** जब गायें दुही जा रही थी, तब वह गया गायरूपी कर्म में रहनेवाली दोहन-क्रिया से गमनरूपी क्रिया लक्षित होती है,अतः दुह्यमानासु और गोषु में सप्तमी हुई।
- **सूत्र- षष्ठी चानादरे 2।3।41**

अनादर की अधिकता प्रकट करने में जिसकी क्रिया से दूसरी क्रिया सूचित होती है, उसमें षष्ठी और सप्तमी दोनों विभक्तियाँ होती हैं।

- **रुदति रुदतो वा प्राव्राजीत्-** रोते हुए पुत्र आदि को छोड़कर उसने संन्यास ले लिया

यहाँ पर रोदन क्रिया से प्रव्रजन (संन्यास) क्रिया लक्षित होती है, अतः रुदति (पुत्रे) और रुदतः (पुत्रस्य) में सप्तमी और षष्ठी विभक्ति हुई।

- **स्वामीश्वराधिपतिदायादसाक्षिप्रतिभूप्रसूतैश्च 2।3।39**

स्वामी, ईश्वर, अधिपति, दायाद, साक्षी, प्रतिभू प्रसूत
इन सात शब्दों के योग में षष्ठी और सप्तमी दोनों विभक्तियाँ होती हैं।

- **गवां गोषु वा स्वामी- गायों का स्वामी**

स्वामी के कारण गो शब्द से षष्ठी और सप्तमी विभक्ति हुई।

- **गवां गोषु वा प्रसूतः-** गायों का ही उपयोग करने के लिए उत्पन्न हुआ है।

पूर्ववत् षष्ठी और सप्तमी विभक्ति हुई।

इस प्रकार अन्य के साथ भी षष्ठी और सप्तमी विभक्ति समझना चाहिए।

- **सूत्र- आयुक्तकुशलाभ्यां चासेवायाम् 2।3।40**

आयुक्त और कुशल शब्दों के साथ षष्ठी और सप्तमी दोनों विभक्तियाँ होती हैं।

आयुक्त का अर्थ है-नियुक्त, लगाया हुआ।

- **आयुक्तः कुशलो वा हरिपूजने हरिपूजनस्य वा** (हरिपूजन में संलग्न या निपुण)

हरिपूजन में कुशल के साथ षष्ठी और सप्तमी विभक्ति हुई।

- **सूत्र- यतश्च निर्धारणम् 2।3।41**

जाति, गुण ,क्रिया, संज्ञा के विशेषता के आधार पर किसी एक को अपने समुदाय से पृथक् करने को निर्धारण (छाँटना) कहते हैं।

- जाति- नृणां नृषु वा ब्राह्मणः श्रेष्ठः - मनुष्यों में ब्राह्मण श्रेष्ठ है।
- गुण- गवां गोषु वा कृष्णा बहुक्षीरा - गायों में काली गाय अधिक दूध देती है।
- क्रिया- गच्छतां गच्छत्सु वा धावन् शीघ्रः - चलनेवालों में दौड़नेवाला शीघ्र जाता है।
- संज्ञा- छात्राणां छात्रेषु वा मैत्रः पटुः - छात्रों में मैत्र नामक छात्र चतुर है।

- **सूत्र- साधुनिपुणाभ्यामर्चायां सप्तम्यप्रतेः 2।3।43**

साधु और निपुण शब्द जब पूजा (आदर) अर्थ में हों तो इनके साथ सप्तमी होती है।यदि इनके साथ प्रति का प्रयोग होगा तो सप्तमी नहीं होगी।

- **मातरि साधुर्निपुणो वा-** माता के प्रति सज्जन या माता की सेवा में निपुण साधु और निपुण अर्थ होने के कारण मातरि में सप्तमी विभक्ति हुई।
- साधुर्निपुणो वा मातरं प्रति परि,अनु वा- प्रति परि अनु के योग होने के कारण सप्तमी न होकर मातरम् में द्वितीया विभक्ति हुई।
- **सूत्र- प्रसितोत्सुकाभ्यां तृतीया च 2।3।44**

प्रसित (तत्पर) और उत्सुक शब्दों के योग में तृतीया और सप्तमी विभक्ति होती है।

- प्रसित उत्सुको वा हरिणा हरौ वा- हरि में तल्लीन या हरि में तत्पर इस सूत्र से हरि में तृतीया और सप्तमी विभक्ति हुई।
- **सूत्र- नक्षत्रे च लुपि 2।3।45**

नक्षत्रवाचक शब्द से अण् प्रत्यय का लोप होने पर जब प्रत्यय का अर्थ विद्यमान रहता हैं, तब उस (नक्षत्रवाचक शब्द) से अधिकरण में तृतीया और सप्तमी होती है।

मूलेनावाहयेद् देवीं श्रवणेन विसर्जयेत् - मूल नक्षत्र से युक्त काल में देवी का आवाहन करे और श्रवण नक्षत्र से युक्त काल में देवी का विसर्जन करें। यहाँ पर मूल और श्रवण शब्दों से 'नक्षत्रेण युक्तः कालः' सूत्र से युक्त काल अर्थ में अण् प्रत्यय हुआ और लुबविशेषे से उसका लोप हुआ है। लोप होने के कारण इस सूत्र से तृतीया व सप्तमी विभक्ति हुई।

।। सप्तमी विभक्ति समाप्त।।

नोट– हमारे पाठ्यक्रम केवल उपपद विभक्ति ही लगी हुई किन्तु कुछ प्रमुख प्रमुख सूत्रों को भी दे दिया गया है, क्योंकी संभवतः इनसे भी कभी कभी प्रश्न आ जाते है।

- एक नजर में सभी उपपद विभक्तियाँ

किन पदों के योग में द्वितीया विभक्ति होगी' ?

उपपद-द्वितीया विभक्तिः-

(क) उभयतः	(ख) सर्वतः	(ग) धिक्
(घ) उपरि, उपरि	(ङ) अध्यधि	(च) अधोऽधो
(छ) अभितः	(झ) समया	(ञ) निकषा
(ट) हाँ	(ठ) प्रति	(ढ़) अन्तरा, अन्तरेण
(ण) पृथक्	(त) विना	(थ) नाना

किन कर्मप्रवचनीय के योग में द्वितीया होती है ?

(क) अनु	(ख) उप	(ग) प्रति
(घ) परि	(ड़) अभि	(च) अधि
(छ) सु	(झ) अति	(ञ) अपि

उपपदतृतीया विभक्ति किन पदों के योग में तृतीया विभक्ति होगी ?

(क) सह, साकम्, सार्धम्, समम्, सवा।

(ख) फल प्राप्ति होने पर कालवाचक, मार्गवाचक, अह्न, कोश, आदि पदों में तृतीया।

(ग) प्रकृति आदि गण के शब्दों से तृतीया।

जैसे- प्रकृति, प्राय, गोत्र, सम, विषम, द्विद्रोण, सुखम् दुःखम्-

(घ) पृथक्, विना, नाना

(ङ) स्तोक, अल्प, कृच्छ्र, कतिपय

उपपद-चतुर्थी विभक्तिः किन पदों के योग में चतुर्थी विभक्ति होती है ?

(क) नमः	(ख) स्वस्ति	(ग) स्वाहा
(घ) स्वधा	(ङ) अलम्	(च) वषट्

उपपद-पञ्चमी विभक्तिः किन पदों के योग में पञ्चमी विभक्ति होती है ?

(क) अन्य	(ख) आरात्	(ग) इतर
(घ) ऋते	(ड़) दिक् शब्द	(च) प्राक

(छ) प्रत्यक् (ज) पृथक् (झ) दक्षिणा
(ञ) दक्षिणाहि (ट) प्रभृति (ठ) आरभ्य
(ड) पूर्वम् (ढ) पृथक् (ण) विना
(त) विना (थ नाना (द) स्तोक्
(ध) अल्प (न) पूर्वम् (प) कतिपय
(फ) दूर एव अन्तिक (समीप) अर्थ वाले शब्दों से

उपपद षष्ठी विभक्तिः-

दक्षिणतः, पुरः,
पुरस्तात्, उपरि,
उपरिष्टात्, दक्षिणेन

दूर और अन्तिक (निकट) अर्थ वाले शब्दों के योग में षष्ठीविभक्ति होती है।तुल्यार्थक शब्द तुल्य, सदृश, सम आदि के योग में षष्ठीविभक्ति होती है।

- उपपद - सप्तमी विभक्तिः

साधु, निपुण शब्द में सप्तमी विभक्ति होती है।

।: यूनिट-6 इति :।

यूनिट-7

भाषिककार्यम्

- विशेषण- विशेष्यपदचयनम्
- कर्तृक्रिया-पदचयनम्
- पर्याय/विलोमपदचयनम्

विशेषण- विशेष्यपदचयनम्

- **विशेषण किसे कहते है-** जो पद किसी दूसरे पद की विशेषता बतलाता है, वह विशेषण कहलाता है। जैसे- कृष्णः मृगः (काला मृग) यहाँ मृग का विशेषण ।

  कृष्णः पद है और नीलकण्ठः में नील पद विशेषण है।
- **विशेष्य किसे कहते है-** विशेषण जिस पद की विशेषता बतलाता है, उसे विशेष्य पद कहते है। जैसे- कृष्णः मृगः (काला मृग) यहाँ कृष्णः मृग पद का विशेषण बतला रहा है अतः मृग पद विशेष्य है और नीलकण्ठः में कण्ठ पद विशेष्य है।
- **विशेषण और विशेष्य के कुछ नियम-**
- विशेष्य प्रधान होता है और विशेषण अप्रधान होता है ।
- विशेष्य सदा सामन्य रूप में ही ज्ञात होता है।
- विशेषण से निश्चित गुण, रूप,आकार आदि का ज्ञान होता है ।

  जैसे- नील कमल, इस उदाहरण में जब तक सिर्फ कमल शब्द बोला जाएगा तब तक हमें पता नहीं चलेगा कि कमल किस रंग का है, परन्तु नील कमल बोलते ही हमें पता चल जाता कि कमल का रंग नीला है ।
- सामान्यतः जो लिंग, जो वचन और जो विभक्ति विशेष्य की होती है वही लिंग, वचन और विभक्ति विशेषण की भी होती है-

यल्लिङ्गं यद्वचनं या च विभक्तिर्विशेष्यस्य ।
तल्लिङ्गं तद्वचनं सैव विभक्तिर्विशेषणस्यापि ।।

- पुल्लिंग - एकः बालकः
- स्त्रीलिङ्ग - एका बालिका

- नपुंसक लिङ्ग - एकम् पुस्तकं

विशेषण के प्रकार

- विशेषण के चार प्रकार के होते हैं-

1. गुणवाचक विशेषण
2. संख्यावाचक विशेषण
3. परिमाणवाचक विशेषण
4. सार्वनामिक विशेषण

- **गुणवाचक विशेषण**

जिस शब्द से संज्ञा या सर्वनाम के गुण का बोध होता है, उसे गुणवाचक विशेषण कहते हैं गुण का तात्पर्य सिर्फ अच्छी विशेषताओं से नहीं है, अपितु यहाँ गुण का तात्पर्य है किसी भी वस्तु या व्यक्ति की विशेष स्थिति, विशेष दया, विशेष दिशा, रंग, गंध, काल, स्थान,आकार,रूप, स्वाद, बुराई, अच्छाई, आदि ।

अतः जो विशेषण किसी संज्ञा या सर्वनाम की उपर्युक्त विशेषताओं का बोध कराए, उसे गुणवाचक विशेषण कहते हैं ।

जैसे–

(क) रमेश अच्छा लड़का है। (गुण)

(ख) आम पीला है। (रंग)

(ग) बिस्किट मीठा है। (स्वाद)

(घ) मन्दिर ऊँचा है। (आकार)

इन वाक्यों में 'रमेश' का विशेषण 'अच्छा', 'आम' का विशेषण 'पीला', 'बिस्किट' का विशेषण 'मीठा' और 'मन्दिर' का विशेषण 'ऊँचा' है ।

- **गुण-दोष-** दयालुः, क्रूरः, शोभनः, दुष्टः, सरलः, परिश्रमी, सत्यनिष्ठः, सुन्दरः,मनोहरः, साधुः आदि।
- **रंग-** श्वेतः, कृष्णः, रक्तः, पीतः, हरितः, नीलः आदि ।
- **आकार-** उन्नतः, विशालः, ज्येष्ठः, कनिष्ठः, दीर्घः, लघुः, स्थूलः, कृषः आदि ।

- **स्वाद-** मधुरः, अम्लः, कटुः, तिक्तः, लावणः, कषायः, आदि ।
- **कालबोधक-** प्राचीनः, नवीनः, पुरातनः, नूतनः, क्षणिकः, दीर्घकालिकः आदि ।
- **स्थान बोधक-** भारतीयः, पाश्चात्यः, वैदेशिकः, पर्वतीयः आदि ।
- **अवस्था बोधक-** आर्द्रः, शुष्कः, ज्वलितः, पक्वः आदि ।
- **दशा बोधक-** स्वस्थः, अस्वस्थः, रुग्णः, दुःखितः, सुखी आदि ।
- **स्पर्श-बोधक-** कठोरः, कोमलः आदि ।

गुणवाचक विशेषण के प्रमुख शब्द तीनों लिंगों में

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	नपुंसकलिंग	अर्थ
श्वेतः	श्वेता	श्वेतम्	सफेद
कृष्णः	कृष्णा	कृष्णम्	काला
रक्तः	रक्ता	रक्ताम्	लाल
पीतः	पीता	पीतम्	पीला
हरितः	हरिता	हरितम्	हरा
नीलः	नीला	नीलम्	नीला
मधुरः	मधुरा	मधुरम्	मीठा
अम्लः	अम्ला	अम्लम्	खट्टा
कटुः	कट्वी	कटु	कड़वा
तिक्तः	तिक्ता	तिक्तम्	तीखा
शीतलः	शीतला	शीतलम्	ठंडा
उष्णः	उष्णा	उष्णम्	गर्म
लघुः	लघ्वी	लघु	छोटी
विशालः	विशाला	विशालम्	चौड़
उन्नतः	उन्नता	उन्नतम्	ऊँचा
उच्चः	उच्चा	उच्चम्	ऊँचा

स्थूलः	स्थूला	स्थूलम्	मोटा
कृषः	कृषा	कृषम्	पतला
मनोहरः	मनोहरा	मनोहरम्	सुन्दर
सुन्दरः	सुन्दरी	सुन्दरम्	सुन्दर
सरलः	सरला	सरलम्	सरल
दुष्टः	दुष्टा	दुष्टम्	दुष्ट
नूतनः	नूतना	नूतनम्	नया
पुरातनः	पुरातना	पुरातनम्	पुराना
साधुः	साध्वी	साधु	अच्छा
बुद्धिमान्	बुद्धिमती	बुद्धिमत्	बुद्धिमान
धनवान्	धनवती	धनवत्	धनवान्
पक्वः	पक्वा	पक्वम्	पका
दुःखितः	दुःखिता	दुःखितम्	दुःखा
स्वस्थः	स्वस्था	स्वस्थम्	स्वस्थ

संख्या वाचक विशेषण

जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम की संख्या सम्बन्धी विशेषता का बोध कराते हैं, उसे संख्यावाचक विशेषण कहते हैं ।संख्यावाचक विशेषण दो प्रकार के होते हैं-

1. **निश्चित संख्या वाचक-** जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम की निश्चित संख्या सम्बन्धी विशेषता का बोध कराते हैं, उसे निश्चित संख्यावाचक विशेषण कहते हैं । जैसे- एकः, चत्वारः, दश आदि ।

- **वाक्यों में प्रयोग-**

कक्षायां विंशतिः छात्राः सन्ति ।
उद्याने पंचविंशतिः वृक्षाः सन्ति ।
मम पार्श्वे शतं रुप्यकाणि सन्ति ।

ऊपर के उदाहरणों में **'विंशतिः, पञ्चविंशतिः, शतं'** ये निश्चित संख्यावाचक विशेषण हैं ।

- निश्चित संख्यावाचक विशेषण से सम्बन्धित महत्वपूर्ण जानकारियाँ-
- एक शब्द का अर्थ संख्यावाचक होने पर इसके रूप केवल एकवचन में ही चलेंगे व तीनों लिंगो के लिए भिन्न-भिन्न रूप चलेंगे ।
- द्वि शब्द के रूप केवल द्विवचन में ही चलेंगे व तीनों लिंगो के लिए भिन्न-भिन्न रूप चलेंगे ।
- त्रि और चतुर् शब्द के रुप केवल बहुवचन में ही चलेंगे व तीनों लिंगो के लिए भिन्न-भिन्न रूप चलेंगे
- पंच से अष्टादश तक (5-18) संख्याओं के शब्दरुप केवल बहुवचन में ही चलेंगे व तीनों लिंगों में शब्दरूप एकसमान चलेंगे ।
- एकोनविंशतिः (19) से आगे सारी संख्याओं के रुप हमेशा एकवचन में ही चलेंगे ।
- विंशतिः (20), षष्ठिः (60), सप्ततिः (70),अशीतिः (80), नवतिः (90) इत्यादि इकारान्त वाले सभी शब्दरूप नित्य स्त्रीलिंग में चलेंगे एकवचन में ही चलेंगे ।
- त्रिंशत् (30), चत्वारिंशत् (40), पंचाशत् (50) इत्यादि तकारान्त वाले सभी शब्दरूप नित्य स्त्रीलिंग में चलेंगे व एकवचन में ही चलेंगे।
- शतम् (सौ), सहस्रम् (हजार), अयुतम् (दस हजार), लक्षम् (लाख), नियुतम्/प्रयुतम् (दस लाख), अर्बुदम् (अरब), खर्वम् (खरब), नीलम् (नील), पद्मम् (पद्म), शंखम् (शंख), महाशंखम् (महाशंख) आदि शब्दरुप सदा नपुंसकलिंग व एकवचन में ही चलेंगे।
- कोटिः (करोड़) के शब्दरुप सदा स्त्रीलिंग व एकवचन में ही चलेंगे।
- ऊनविंशति (19) से नवनवति (99) तक सभी संख्याओं के शब्दरुप स्त्रीलिंग में चलते हैं ।

एक-शब्द के शब्दरूप तीनों लिंगों में

	एकवचन	द्विवचन	द्विवचन
विभक्ति	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	नपुंसकलिंग
प्रथमा	एकः	एका	एकम्
द्वितीया	एकम्	एकाम्	एकम्
तृतीया	एकेन	एकया	एकेन

चतुर्थी	एकस्मै	एकस्यै	एकस्मै
पञ्चमी	एकस्मात्	एकस्याः	एकस्मात्
षष्ठी	एकस्य	एकस्याः	एकस्य
सप्तमी	एकस्मिन्	एकस्याम्	एकस्मिन्

द्वि-शब्द के शब्दरूप तीनों लिंगों में

	द्विवचन	द्विवचन	द्विवचन
विभक्ति	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	नपुंसकलिंग
प्रथमा	द्वौ	द्वे	द्वे
द्वितीया	द्वौ	द्वे	द्वे
तृतीया	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्
चतुर्थी	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्
पञ्चमी	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्
षष्ठी	द्वयोः	द्वयोः	द्वयोः
सप्तमी	द्वयोः	द्वयोः	द्वयोः

त्रि-शब्द के शब्दरूप तीनों लिंगों में

	बहुवचन	बहुवचन	बहुवचन
विभक्ति	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	नपुंसकलिंग
प्रथमा	त्रयः	तिस्रः	त्रीणि
द्वितीया	त्रयः	तिस्रः	त्रीणि
तृतीया	त्रिभिः	तिसृभिः	त्रिभिः
चतुर्थी	त्रिभ्यः	तिसृभ्यः	त्रिभ्यः
पञ्चमी	त्रिभ्यः	तिसृभ्यः	त्रिभ्यः
षष्ठी	त्रयाणाम्	तिसृणाम्	त्रयाणाम्
सप्तमी	त्रिषु	तिसृषु	त्रिषु

चतुर् शब्द के शब्दरूप तीनों लिंगों में

	बहुवचन	बहुवचन	बहुवचन
विभक्ति	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	नपुंसकलिंग
प्रथमा	चत्वारः	चतस्रः	चत्वारि
द्वितीया	चतुरः	चतस्रः	चत्वारि
तृतीया	चतुर्भिः	चतसृभिः	चतुर्भिः
चतुर्थी	चतुर्भ्यः	चतसृभ्यः	चतुर्भ्यः
पञ्चमी	चतुर्भ्यः	चतसृभ्यः	चतुर्भ्यः
षष्ठी	चतुर्णाम्	चतसृणाम्	चतुर्णाम्
सप्तमी	चतुर्षु	चतसृषु	चतुर्षु

पञ्चन् शब्द के शब्दरूप तीनों लिंगों में

	बहुवचन	बहुवचन	बहुवचन
विभक्ति	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	नपुंसकलिंग
प्रथमा	पञ्च	पञ्च	पञ्च
द्वितीया	पञ्च	पञ्च	पञ्च
तृतीया	पञ्चभिः	पञ्चभिः	पञ्चभिः
चतुर्थी	पञ्चभ्यः	पञ्चभ्यः	पञ्चभ्यः
पञ्चमी	पञ्चभ्यः	पञ्चभ्यः	पञ्चभ्यः
षष्ठी	पञ्चानाम्	पञ्चानाम्	पञ्चानाम्
सप्तमी	पञ्चसु	पञ्चसु	पञ्चसु

षट् शब्द के शब्दरूप तीनों लिंगों में

	बहुवचन	बहुवचन	बहुवचन
विभक्ति	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	नपुंसकलिंग
प्रथमा	षट्	षट्	षट्
द्वितीया	षट्	षट्	षट्

तृतीया	षड्भिः	षड्भिः	षड्भिः
चतुर्थी	षड्भ्यः	षड्भ्यः	षड्भ्यः
पञ्चमी	षड्भ्यः	षड्भ्यः	षड्भ्यः
षष्ठी	षण्णाम्	षण्णाम्	षण्णाम्
सप्तमी	षट्सु	षट्सु	षट्सु

सप्तन्-शब्द के शब्दरूप तीनों लिंगों में

विभक्ति	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	नपुंसकलिंग
प्रथमा	सप्त	सप्त	सप्त
द्वितीया	सप्त	सप्त	सप्त
तृतीया	सप्तभिः	सप्तभिः	सप्तभिः
चतुर्थी	सप्तभ्यः	सप्तभ्यः	सप्तभ्यः
पञ्चमी	सप्तभ्यः	सप्तभ्यः	सप्तभ्यः
षष्ठी	सप्तानाम्	सप्तानाम्	सप्तानाम्
सप्तमी	सप्तसु	सप्तसु	सप्तसु

अष्टन् शब्द के शब्दरूप दो प्रकार से चलते हैं

	बहुवचन	बहुवचन	बहुवचन
विभक्ति	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	नपुंसकलिंग
प्रथमा	अष्टौ	अष्टौ	अष्टौ
द्वितीया	अष्टौ	अष्टौ	अष्टौ
तृतीया	अष्टाभिः	अष्टाभिः	अष्टाभिः
चतुर्थी	अष्टाभ्यः	अष्टाभ्यः	अष्टाभ्यः
पंचमी	अष्टाभ्यः	अष्टाभ्यः	अष्टाभ्यः
षष्ठी	अष्टानाम	अष्टानाम	अष्टानाम्
सप्तमी	अष्टासु	अष्टासु	अष्टासु

	बहुवचन	बहुवचन	बहुवचन
विभक्ति	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	नपुंसकलिंग
प्रथमा	अष्ट	अष्ट	अष्ट
द्वितीया	अष्ट	अष्ट	अष्ट
तृतीया	अष्टभिः	अष्टभिः	अष्टभिः
चतुर्थी	अष्टभ्यः	अष्टभ्यः	अष्टभ्यः
अष्टमी	अष्टभ्यः	अष्टभ्यः	अष्टभ्यः
षष्ठी	अष्टानाम्	अष्टानाम्	अष्टानाम्
सप्तमी	अष्टसु	अष्टसु	अष्टसु

नवन्-शब्द के शब्दरूप तीनों लिंगों में

	बहुवचन	बहुवचन	बहुवचन
विभक्ति	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	नपुंसकलिंग
प्रथमा	नव	नव	नव
द्वितीया	नव	नव	नव
तृतीया	नवभिः	नवभिः	नवभिः
चतुर्थी	नवभ्यः	नवभ्यः	नवभ्यः
अष्टमी	नवभ्यः	नवभ्यः	नवभ्यः
षष्ठी	नवनाम्	नवनाम्	नवनाम्
सप्तमी	नवसु	नवसु	नवसु

दशन्-शब्द के शब्दरूप तीनों लिंगों में

	बहुवचन	बहुवचन	बहुवचन
विभक्ति	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	नपुंसकलिंग
प्रथमा	दश	दश	दश
द्वितीया	दश	दश	दश

तृतीया	दशभिः	दशभिः	दशभिः
चतुर्थी	दशभ्यः	दशभ्यः	दशभ्यः
अष्टमी	दशभ्यः	दशभ्यः	दशभ्यः
षष्ठी	दशनाम्	दशनाम्	दशनाम्
सप्तमी	दशसु	दशसु	दशसु

अनिश्चित संख्या वाचक– जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम की अनिश्चित संख्या सम्बन्धी विशेषता का बोध कराते हैं, उसे अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण कहते हैं।

जैसे- केचन, कति, सर्वे, बहु, अनेक, कतिपय, आदि ।

(क) कक्षायां केचन छात्राः सन्ति ।

(ख) बहवः बालकाः क्रीडन्ति ।

(ग) मम ग्रामे कानिचन भवनानि सन्ति ।

ऊपर के उदाहरणों में **'केचन, बहवः, कानिचन'** ये अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण हैं ।

अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण के शब्दरूप

कति- शब्दरूप

विभक्ति	**बहुवचन**
प्रथमा	कति
द्वितीया	कति
तृतीया	कतिभिः
चतुर्थी	कतिभ्यः
पंचमी	कतिभ्यः
षष्ठी	कतीनाम्
सप्तमी	कतिषु

नोट– कति शब्द के रूप तीनों लिङ्गों के लिए एकसमान चलते हैं ।

- **परिमाणवाचक विशेषण-**

परिमाण का सामान्य अर्थ है नाप-तोल । जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम की नाप-तोल सम्बन्धी विशेषता को प्रकट करे, उसे परिमाणवाचक विशेषण कहते हैं । प्रा प्राचीन परिमाण की इकाई के शब्द निम्न हैं–

- **तोल के शब्द-**

(क) रक्तिका- रत्ती (घ) माषकः- माशा

(ख) तोलकः- तोला (ङ) षट्टङ्कः- छटांक

(ग) पादः- पाव

- **माप के शब्द-**

(क) अङ्गुलम्- अंगुल (ग) वितस्तिः- बालिश्त

(ख) पादः- फुट (घ) हस्तः- हाथ

- **मूल्यवाचक शब्द-**

(क) वराटकः/वराटिका- कौड़ी (छ) पादिका- पाई

(ख) पणः- पैसा (ज) आणः- आना

(ग) चतुराणी- चवन्नी (झ) अष्टाणी- अठन्नी

(च) रुप्यकम्- रुपया

विशेष- वर्तमान की नाप-तोल प्राणाली संस्कृत में नहीं मिलती है, अतः इसके लिये वर्तमान प्राणाली को ही स्वीकार किया जाता है । जैसे-

1. एकलीटरदुग्धम् - एक लीटर दूध ।
2. सप्तमीटरपरिमितं वस्त्रम् - सात मीटर कपड़ा ।
3. दशग्राम-स्वर्णम् - दस ग्राम सोना ।

4. सार्वनामिक विशेषण

जो सर्वनाम विशेषण के रूप में प्रयुक्त होते हैं, वे सार्वनामिक विशेषण कहलाते हैं । जैसे-

(क) सः बालकः गच्छति ।

(ख) तस्य छात्रस्य नाम उमेशः अस्ति ।

यहाँ पर संज्ञा शब्दों के साथ सर्वनाम शब्द 'सः, तस्य, सा' का प्रयोग हुआ है, अतः 'सः, तस्य, सा' ये सार्वनामिक विशेषण हैं ।

- **तुलना के आधार पर तीन विशेषण की अवस्थाएँ मानी जाती हैं-**

1. सामान्य विशेषण
2. तुलनात्मक विशेषण
3. अतिशयबोधक विशेषण

- **सामान्य विशेषण-**

इसमें किसी प्रकार की तुलना नहीं होती केवल विशेषण का सामान्य कथन होता है । जैसे-

- अयं बालकः धीरः ।
- इयं बालिका धीरा ।
- अयं नरः दुष्टः ।

- **तुलनात्मक विशेषण-**

इसमें दो व्यक्तियों या पदार्थों की तुलना करके एक दूसरे से अधिक या न्यून बताया जाता है। इसमें विशेषण के आगे 'तर', 'ईयस्' प्रत्यय लगाए जाते हैं । जैसे-

(क) रमेशः श्यामात् धीरतरः ।

(ख) उमा रमाया धीरतरा ।

(ग) आकारे रामायणात् महाभारतं वृहत्तरः ग्रंथः अस्ति ।

- **अतिशयबोधक विशेषण-**

इसमें दो या दो से अधिक व्यक्तियों की तुलना की जाती है तथा एक को सबसे बढ़कर या सबसे कम बताया जाता है । इसमें विशेषण के आगे 'तम', 'इष्ठ' प्रत्यय लगाए जाते है । जैसे-

(क) हिमालयः सर्वेषां पर्वतानां उन्नततमः।

(ख) महेशः सर्वेषां भ्राताणां कनिष्ठः।

(ग) रामायणस्य पात्रेषु श्रीरामस्य चरित्रं श्रेष्ठतमः अस्ति।

- **संख्यावाचक विशेषण व परिमाण वाचक विशेषण में अन्तर-**

संख्यावाचक विशेषण में संज्ञा या सर्वनाम के साथ निश्चित या अनिश्चित संख्या का प्रयोग होता है, जबकि परिमाण वाचक विशेषण में संख्या का प्रयोग नाप-तौल की प्रणाली के साथ होता है । जैसे- दुकान पर दस बोतलें हैं, दस बोतलों में बीस लीटर तेल है । इन उदाहरणों में बोतल पहला विशेष्य है और बोतल का विशेषण दस है, जो कि संख्यावाचक विशेषण है ।दूसरा विशेष्य तेल है, तेल के लिए नाप-तौल की प्रणाली बीस लीटर का प्रयोग हुआ है, अतः यह परिमाण वाचक विशेषण है।

कर्तृक्रिया-पदचयनम्

- कर्ता का निर्णय-संस्कृत लिखने में या संस्कृत में अनुवाद करने में हिन्दी के दिए हुए वाक्य में सबसे पहले कर्ता को पकड़ना चाहिए।
- कर्तृवाच्य में कर्ता में प्रथमा होगी, एक के लिए एकवचन, दो के लिए द्विवचन और दो से अधिक के लिए बहुवचन।
- कर्ता जिस लिङ्ग का होगा, उसी लिङ्ग में उसके रूप चलेंगे। जैसे- बालकः पठति, बालिका पठति, पत्राणि पतन्ति ।
- कर्मवाच्य में कर्ता में तृतीया होती है। जैसे- रामेण पुस्तकं पठ्यते।
- भाववाच्य में भी कर्ता में तृतीया होती है। जैसे-रामेण हस्यते ।
- क्रिया - कर्ता के बाद क्रिया पर ध्यान दें।
- कर्तृवाच्य में क्रिया कर्ता के अनुसार होती है। जैसे-सः पठति, त्वं पठसि वयं पठामः ।
- कर्ता में जो पुरुष और वचन है, वही पुरुष और वचन क्रिया में होता है।
- कर्मवाच्य में कर्म के अनुसार क्रिया होती है।
- कर्म के अनुसार ही पुरुष वचन और लिंग होते हैं।
- भाववाच्य में क्रिया में प्रथम पुरुष एकवचन होता है या नपुंसक0 एकवचन।
- कर्म-कर्ता और क्रिया के बाद कर्म पर ध्यान दें।
- कर्तृवाच्य में कर्म में द्वितीया और कर्मवाच्य में कर्म में प्रथमा होती है।

- भाववाच्य में कर्म होता ही नहीं है।
- विशेषण- विशेषण सदा विशेष्य के अनुसार होता है।
- विशेषण कर्ता या कर्म के ही होते हैं।
- कर्ता के विशेषण में कर्ता के लिंग, विभक्ति और वचन होते हैं तथा कर्म के विशेषण में कर्म के लिङ्ग, विभक्ति और वचन।

जैसे- एकस्मिन् विशाले वृक्षे एकः कृष्णः काकः अवसत्।

पर्याय/विलोमपदचयनम्

- पर्याय शब्द का अर्थ समानार्थक शब्द होता है।

जैसे- आकाश का पर्याय- गगन, अम्बर, नभ

- विलोम शब्द का अर्थ विपरीत होता है।

जैसे- आकाश का विलोम पाताल है।

पर्याय शब्द की परिभाषा

किसी शब्द-विशेष के लिए प्रयुक्त समानार्थक शब्दों को पर्यायवाची शब्द कहते हैं। यद्यपि पर्यायवाची शब्द समानार्थी होते हैं किन्तु भाव में ये एक-दूसरे से किंचित भिन्न होते हैं। सरल शब्दों में जिन शब्दों के अर्थ में समानता होती है, उन्हें समानार्थक, समानार्थी या पर्यायवाची शब्द कहते हैं।संस्कृत के प्राचीन पर्यायवाची हेतु कुछ कोश उपलब्ध है- विश्वप्रकाश कोश, मेदिनी कोश, नानार्थार्णवसंक्षेप कोश ऐसे नानार्थकोश है।

कुछ मुख्य पर्यायवाची शब्द

- **स्वर्गः** - नाकः, सुरलोकः, देवलोकः, त्रिशालयः
- **देवता** - अमरः, निर्जरः, देवः, तुरः आदित्यः
- **असुरः** - दैत्यः, दनुजः, दून्द्रारिः, दानवः, राजतः
- **ब्रह्मा** - आत्मभूः, सुरज्येष्ठः, पितामहः, हिरण्यगर्भः
- **विष्णु** - नारायणः, दामोदरः. गोविन्दः, गरुड़ध्वजः
- **कामदेव** - मदनः, मन्मयः, मारः, प्रद्युम्नः, कन्दर्प
- **लक्ष्मी** - पद्मालया, पद्मा, कमला, त्री, हरिप्रिया
- **गरुडः** - तार्क्ष्यः, वैनतेयः, खगेश्वरः, नागान्तकः

- **शिवः** - शम्भु, पशुपतिः, महेश्वरः, शंकरः, चन्द्रशेखरः
- **पार्वती** - उमा, कात्यायनी, गौरी, हैमवती. शिवा, भवानी
- **गणेशः** - विनायकः, गणाधिपः, एकदन्तः, तम्बोदरः, गजाननः
- **इन्द्रः** - मरुत्वान्, मघवा, पुरन्दरः, वासवः, सुरपतिः
- **नारदः** - तुम्बुरू, भरतः, देवलः, देवर्षिः
- **अमृत** - पीयूषम्, सुधा, अमिय
- **अग्नि** - वैश्वानरः, वह्निः, धनञ्जयः, जातवेदा, पावकः
- **यमराजः** - धर्मराजः, परेतराट्, कृतान्तः, शमनः, कालः
- **वायुः** - गन्धवाहः, अनिलः, समीरः, मारुतः, समीरण
- **कुबेरः** - यक्षराट, धनदः, किन्नरेशः, नरवाहनः श्रीदः
- **आकाश** - व्योम, पुस्कर, अम्बर, गगन, अनन्त
- **दिशा** - दिक्, ककुप, काष्ठा, आशा, हरित्
- **मेघः** - वारिवाहः, बलाहकः, धाराधरः, जलधरः. घनः
- **विद्युत्** - शम्पा, ऐरावती, क्षणप्रभा. तडित्. चञ्चला
- **चन्द्रमा** - हिमांशु, चन्द्रः, विधुः, सुधांशु. मृगाङ्कः, शशधरः
- **चाँदनी** - चन्द्रिका, ज्योत्स्ना, कौमुदी
- **नक्षत्र** - ऋक्षम्, भं, तारा, तारका, उडु
- **सूर्यः** - सूरः, आदित्यः, प्रभाकरः, भानु, सविता
- **किरण** - रश्मि, करः, उस, घृणि, मरीचि
- **काल** - समयः, दिष्टः, अनेहा
- **दिवसः** - घसः, दिनम्, अहन्. वासरः
- **रात** - शर्बरी, निशा, रात्रि, क्षणदा, विभावरी, रजनी
- **हर्ष** - प्रीति, प्रमदः, प्रमोदः, आमोदः, शातम्, सुखम्
- **भाग्य** - दैवमा, दिष्टम्, भागधेयम्, नियति, विधिम्
- **प्राणी** - चेतन, जन्मी, जन्तुः, जन्युः, शरीरी चित्त,
- **मन** - चेत, हृदय, स्वान्त, मानस, मनस्
- **बुद्धि** - मनीषा, धी, प्रज्ञा, मति, प्रेक्षा, चेतना

- **मोक्ष** - मुक्ति, कैवल्य, निर्वाण, अपवर्गः
- **सरस्वती** - वाणी, ब्राह्मी, भारती, भाषा, गी, वाक्
- **निन्दा** - अवर्ण, आक्षेप, निर्वाद, परीवाद, उपक्रोशः
- **शब्द** - निनादः ध्वनिः, ध्वानः, रवः, निर्घोषः
- **अपमान** - अनादरः, परिभव, रीठा, अवमानना, अवज्ञा, अवहेलन
- **लज्जा** - मन्दाक्ष, त्रपा, व्रीडा, ह्री
- **क्रोध** - कोपः, अमर्षः, रोषः, प्रतिधा
- **इच्छा** - काङ्क्षा, स्पृहा, ईहा, वाञ्छा, लिप्सा, मनोरथः
- **कपट** - व्याज, दम्भ, उपधि, कैतवम्, निकृति
- **निद्रा** - शयन, स्वाप, स्वप्न, संवेशः
- **नरक** - नारकः, निरयः, दुर्गति
- **समुद्र** - सिंधु, पारावारः, रत्नाकरः, सागरः
- **पानी** - वारि, सलिल, जलम्, पय, जीवन, उदक, तोय
- **मछली** - झष, मीन, मत्स्य, अंडज, वसिार, शकुली
- **नदी** - तटिनी, शैवालिनी, निम्नगा, आपगा, सरिता
- **गंगा** - विष्णुपदी, जह्नतनया, भागीरथी, त्रिपथगा
- **कमल** - राजीव, पुष्कर, सरसीरुह, अरविन्द, जलज
- **घोड़ा** - अश्व, घोटक, तुरंग, तुरग, वाजि, सैंधव, हय
- **हाथी** - मतंग, गज, हस्ती, कुम्भी, मदकल, कुंजर
- **पृथ्वी** - धरणी, वसुंधरा, अचला, धरा, रत्नगर्भा, मही, वसुधा

कुछ मुख्य विलोम शब्द

- अन्तर्भूत - बहिर्भूत
- अंधकारः - प्रकाशः
- अकर्मण्य - कर्मण्य
- अक्षम - सक्षम

- अग्र - पश्चात्
- अग्रजः - अनुजः
- अङ्गीकारः - अस्वीकारः
- अज्ञः - विज्ञः
- अतिवृष्टिः - अनावृष्टिः
- अत्यधिक - स्वल्प
- अधः - उपरि
- अधमर्णः - उत्तमर्णः
- अधिकतम - न्यूनतम
- अधिकांशः - अल्पांशः
- अधुनातन - पुरातन
- अध्यवसाय - अनध्यवसाय
- अनावरण - आवरण
- अनिवार्य - वैकल्पिक
- अनुग्रह - विग्रह
- अनुपस्थितः - उपस्थितः
- अनुरक्त - विरक्त
- अनुर्वरा - उर्वरा
- अनुलोम - प्रतिलोम
- अनृत - ऋत
- अपकर्ष - उत्कर्ष
- अपकारः - उपकारः
- अपकीर्तिः - कीर्तिः
- अपराह्न - पूर्वाह्न
- अपेक्षा - उपेक्षा

- अभीष्टः - अनभीष्टः
- अमावस्या - पूर्णिमा
- अमिष - निरामिष
- अर्पण - ग्रहण
  अर्पित - गृहीत
- अल्पज्ञ - बहुज्ञ
- अवनति - उन्नति
- अवनि - अम्बरः
- अश्रु - हास
- आकर्षण - विकर्षण
- आकीर्ण - विकीर्ण
- आकुंचन - प्रसारण
- आग्रह - दुराग्रह
- आचारः - अनाचारः
- आज्ञा - अवज्ञा
- आदत्त - प्रदत्त
- आकाश - पाताल
- पृथ्वी - गगन
- शत्रुता - मित्रता
- मानव - दानव
- समास - व्यास

।ः यूनिट-7 इति :।

यूनिट-8

छन्दसां सोदाहरणलक्षणपरिचयः श्लोकेषु छन्दोऽभिज्ञानम्

- **छन्दांसि-** अनुष्टुप, उपजातिः, वंशस्थम्, वसन्ततिलका, मालिनी, शिखरिणी, शार्दूलविक्रीडितम्, मन्दाक्रान्ता ।

छन्द का सामान्य परिचय

- **छन्द का अर्थ -** 'छन्दस्' शब्द के दो अर्थ हैं-

1. आच्छादन छन्दांसि छादनात्- इसके द्वारा भाव या रस को आच्छादित किया जाता है।
2. आह्लादन अर्थ वाली छद् धातु से भी छन्दस् शब्द बनता है।

- इसके द्वारा पाठकों का आह्लादन होता है।
- **छन्दः शास्त्र के प्रसिद्ध आचार्य और उनके ग्रन्थ-**

1. पिंगल (लगभग 600 ई.पू.) - छन्दः सूत्रम्
2. कालिदास (57 ई.पू.) - श्रुतबोध
3. क्षेमेन्द्र (1050 ई.) - सुवृत्ततिलक
4. हेमचन्द्र (1088-1172 ई.) - छन्दोऽनुशासन
5. केदारभट्ट, (12वीं शताब्दी) - वृत्तरत्नाकर
6. प्राकृतपैंगलम् (12वीं शताब्दी) - इसके लेखक का नाम अज्ञात है
7. जयदेव (14वीं शताब्दी) - छन्दोऽनुशासन
8. गंगादास (15वीं शताब्दी) - छन्दोमंजरी
9. दामोदर मिश्र (16वीं शताब्दी) - वाणीभूषण
10. दुःखभंजन (19वीं शताब्दी) - वाग्वल्लभ

- **छन्द के प्रकार** - छन्द दो प्रकार के होते हैं - 1. वृत्त, 2. जाति ।

1. वृत्त को वर्णवृत्त या वर्णिक छन्द कहते हैं। इसमें प्रत्येक पाद में गणों के अनुसार वर्णों की गणना की जाती है। जैसे- इन्द्रवज्रा, उपेन्द्रवज्रा आदि।
2. जाति को मात्रिक छन्द भी कहते हैं। इसमें प्रत्येक पाद में मात्रागणों के

अनुसार मात्राओं की गणना की जाती है। जैसे-आर्या प्रत्येक श्लोक में 4 पाद या चरण होते हैं। श्लोक के चर्तुर्थांश को पाद या चरण कहते हैं।

लघु-गुरु विचार

- गुरु- बड़ी की मात्रा(ऽ) लघु- छोटी की मात्रा।
- गुरु लघु की पहचान- गुरु-(ऽ) लघु- (।)
- ह्रस्व स्वर को लघु कहते हैं। लघु स्वर ये हैं-अ, इ, उ, ऋ,।
- दीर्घ स्वर को गुरु कहते हैं। गुरु स्वर ये हैं- आ, ई, ऊ, ॠ, ए, ऐ, ओ, औ ।
- लघु स्वर के बाद यदि अनुस्वार, विसर्ग या कोई संयुक्त व्यंजन होगा तो वह लघु स्वर को भी गुरु माना जाता है।
- पाद का अन्तिम लघु स्वर आवश्यकता के अनुसार गुरु भी माना जाता है।

सानुस्वारश्च दीर्घश्च, विसर्गी च गुरुर्भवेत् ।
वर्णः संयोगपूर्वश्च, तथा पादान्तगोऽपि वा ॥

- लक्षणों में ल का अर्थ है एक लघु, लौ 2 लघु। ग 1 गुरु, गौ 2 गुरु।

पाद का विचार

- प्रायशः कोई भी श्लोक 2 लाइन अथवा 4 लाइन का होता है,उसके प्रथम भाग को प्रथम पाद बोलते है।
- प्रायशः कोई भी श्लोक में 4 पाद होता है और छन्द के अनुसार पाद छोटा-बड़ा होता है।
- निम्नलिखित श्लोक 2 लाइन का है किन्तु 8-8 अक्षर के 4 पाद है-

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन ।
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि ॥

- निम्नलिखित श्लोक 4 लाइन का है किन्तु 11-11 अक्षर के 4 पाद है-

यस्यास्ति वित्तं स नरः कुलीनः, स पण्डितः स श्रुतवान् गुणज्ञः।
स एव वक्ता स च दर्शनीयः, सर्वे गुणाः काञ्चनमाश्रयन्ते॥

गणों का विचार

- एक 'गण' में तीन अक्षर होते हैं।

- लघु वर्ण के लिए सीधी लकीर चिह्न हैं और गुरु वर्ण के लिए 'ऽ' चिह्न है।
- गण 8 हैं इनके नाम और लक्षण निम्नलिखित श्लोक में दिए हैं।

मस्त्रिगुरुस्त्रिलघुश्च नकारो, भादिगुरुः पुनरादिलघुर्यः ।
जो गुरुमध्यगतो रत्नमध्यः, सोऽन्तगुरुः कथितोऽन्तलघुस्तः ॥

(कपिलस्य)

- गणों को जानने का एक प्रकार यह भी है-

यमाताराजभानसलगम् ।

इसमें 8 गणों और लघु गुरु का नाम है जो गण गिनना हो, उसके लिए उस गण के अ को लेकर आगे के दो वर्ण और ले लें वे जैसे वर्ण हैं, वैसा ही गण समझना चाहिए। जैसे मगण- मातारा, तीनों गुरु हैं। नगण में नसल, तीनों लघु हैं।

• यगण	-	।ऽऽ	-	प्रथम लघु, शेष दो गुरु
• नगण	-	।।।	-	तीनों लघु वर्ण
• भगण	-	ऽ।।	-	प्रथम गुरु, अन्य दो लघु
• मगण	-	ऽऽऽ	-	तीनों गुरु वर्ण
• तगण	-	ऽऽ।	-	दो गुरु वअन्तिम वर्ण लघु
• रगण	-	ऽ।ऽ	-	मध्यम वर्ण लघु, शेष दो गुरु
• सगण	-	।।ऽ	-	अन्तिम वर्ण गुरु
• जगण	-	।ऽ।	-	मध्यम वर्ण गुरु

निम्नलिखित श्लोक से भी इन गणों को समझ सकते हैं-

आदिमध्यावसानेषु य-र-ता यान्ति लाघवम् ।
भ-ज-सा गौरवं यान्ति, मनौ तु गुरुलाघवम् ।।

अर्थात्-यगण, रगण, तगण में क्रमशः प्रथम मध्यम और अन्तिम वर्ण लघु होते हैं। भगण जगण, सगण में क्रमशः प्रथम, मध्यम और अन्तिम वर्ण गुरु होते हैं। मगण में तीनों गुरु और नगण में तीनों लघु होते हैं।

यति विचार

श्लोक के एक पाद के पढ़ने में जितने अक्षरों के बाद अल्प-विराम होता है,उसे यति कहते है।

यति का अर्थ- विराम अथवा विश्राम है।

अनुष्टुप छन्द

श्लोके षष्ठं गुरु ज्ञेयं, सर्वत्र लघु पञ्चमम् ।
द्विचतुष्पादयोर्ह्रस्वं, सप्तमं दीर्घमन्ययोः ।।

- इसमें प्रत्येक पाद में 8 अक्षर होते हैं।
- इसमें षष्ठ अक्षर सदा गुरु होता है और पंचम अक्षर सदा लघु।
- द्वितीय और चतुर्थ पाद में सप्तम अक्षर लघु होता है।
- प्रथम तथा तृतीय पाद में सप्तम अक्षर गुरु होता है।
- शेष अक्षर लघु या गुरु हो सकते हैं।

जैसे- शाकुन्तल में-

अतः प री क्ष्य क र्त व्यं, विशेषात् संग तं र हः ।

।ऽऽ ।ऽऽ

अज्ञातहृदयेष्वेवं, वैरीभवति सौ हृ दम् ।। (शाकु0 5-24)

।ऽऽ ।ऽऽ

- **गीता में-**

धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः।

।ऽऽ ।ऽ।

मामकाः पाण्डवाश्चैव किमकुर्वत सञ्जय।। (गीता 1-1)

।ऽ।ऽ।

उपजाति छन्द

- उपजाति छन्द इन्द्रवज्रा और उपेन्द्रवज्रा के मिश्रण से बनता है।
- स्यादिन्द्रवज्रा यदि तौ जगौ गः- 2 तगण, 1 जगण, 2 गुरु इंद्रवज्रा में होता है।
- पेन्द्रवज्रा प्रथमे लघौ सा- उपेन्द्रवज्रा छंन्द प्रथम वर्ण लघु होता है।
- किसी पाद में इन्द्रवज्रा और किसी पाद उपेन्द्रवज्रा हो सकता है।

- इन्द्रवज्रा में 11 अक्षर होता है और प्रथम अक्षर गुरु होता है।
- उपेन्द्रवज्रा में भी 11 अक्षर होता है और प्रथम अक्षर लघु होता है।
- उपजातिः छन्द का लक्षण-

अनन्तरोदीरितलक्ष्मभाजी, पादौ यदीयावुपजातयस्ताः ।
इत्थं किलान्यास्वपि मिश्रितासु, स्मरन्ति जातिष्विदमेव नाम ।।

अर्थ– उपजाति के प्रत्येक पाद में 11 वर्ण होते हैं। यह इन्द्रवज्रा और उपेन्द्रवज्रा दोनों छन्दों के मिश्रण से बनता है। किसी चरण में इन्द्रवज्रा छन्द होता है और किसी में उपेन्द्रवज्रा ।

उदाहरण- शाकुन्तल-

तगण तगण जगण गग

ऽऽ।ऽऽ।।ऽ।ऽऽ

आज न्म नः शाठ्य मशि क्षि तो यः तस्याप्रमाणं वचनं जनस्य ।
परातिसन्धानमधीयते यै विद्येति ते सन्तु किलाप्तवाचः ।।

- यहाँ 1, 2, 4 पाद में इन्द्रवज्रा छन्द है, पाद 3 में उपेन्द्रवज्रा छन्द है।

* वंशस्थ छन्द *

लक्षण–

जतौ तु वंशस्थमुदीरितं जरौ ।

अर्थ–

- वंशस्थ के प्रत्येक पाद में 12 वर्ण होते हैं।
- क्रमशः 1 जगण, 1 तगण, 1 जगण, 1 रगण

उदा0-

जगण, तगण, जगण, रगण

।ऽ।ऽऽ।।ऽ।ऽ।ऽ

गजाननं भूत गणादि सेवितं, कपित्थ जम्बू फल चारू भक्षणम् ।
उमासुतं शोक विनाशकारकम्, नमामि विघ्नेश्वर पादपंकजम् ।।

* वसन्ततिलका *

लक्षण-

उक्ता वसन्ततिलका तभजा जगौ गः ।

अर्थ- वसन्ततिलका छन्द के प्रत्येक पाद में 14 वर्ण होते हैं।क्रमशः 1 तगण, 1 भगण, 2 जगण, 2 गुरु।

उदा0- (शाकु0 4-2)

तगण, भगण, जगण, जगण, 2 गुरु

ऽऽ। ऽ ।। ।ऽ ।। ऽ।ऽ

यात्येक तोऽस्तशि खरं पति रोषधी
नाम् आविष्कृतोऽरुणपुरः सर एकतोऽर्कः ।
तेजोद्वयस्य युगपद् व्यसनोदयाभ्यां
लोको नियम्यत इवात्मदशान्तरेषु ।।

* मालिनी *

लक्षण-

ननमयययुतेयं मालिनी भोगिलोकैः।

अर्थ-

- मालिनी छन्द के प्रत्येक पाद में 15 वर्ण होते हैं।
- क्रमशः 2 नगण, 1 मगम, 2 यगण।
- इसमें 8-7 पर यति होती है
- अर्थात् आठवें और 15वें वर्ण पर
- (भोगिलोकैः- भोगी-8, लोक-7)

उदा0- नलचम्पूमङ्गलाचरण-

।।। ।।।ऽऽ ऽ ।ऽ।ऽऽ

जयति गिरिसुतायाः कामसन्तापवाहि-
न्युरसि रसनिषेकश्चान्दनश्चन्द्रमौलिः ।
तदनु च विजयन्ते कीर्तिभाजां कवीना-
मसकृदमृतबिन्दु स्यन्दिनो वाग्विलासाः।।

शिखरिणी छन्द

लक्षण-

रसैः रुद्रैश्छिन्ना यमनसभला गः शिखरिणी ।

शिखरिणी छन्द के प्रत्येक पाद में 17 वर्ण होते हैं।क्रमशः 1 यगण, 1 मगण, 1 नगण, 1 सगण, 1 भगण, 1 लघु, 1 गुरु। इसमें 6-11 पर यति होती है, अर्थात् 6ठे और 17वें वर्ण पर।(रसैः रुद्रैः-रस-6, रुद्र-11) ।

उदा0-

।ऽऽ ऽऽ ऽ ।।।।।ऽ ऽऽ।ऽऽ

महिम्नः पारं ते परमविदुषो यद्यसदृशी
स्तुतिर्ब्रह्मादीनामपि तदवसन्नास्त्वयि गिरः ।
अथा वाच्यः सर्वः स्वमतिपरिणामावधि गृणन्
ममाप्येष स्तोत्रे हर निरपवादः परिकरः ।।

शार्दूलविक्रीडित छन्द

लक्षण-

सूर्याश्वैर्यदि मः सजौ सततगाः शार्दूलविक्रीडितम्।

अर्थ-

- शार्दूलविक्रीडित छन्द के प्रत्येक पाद में 19 वर्ण होते हैं।
- क्रमशः 1 मगण, 1 सगण, 1 जगण, 1 सगण, 2 तगण, 1 गुरु।
- इसमें 12-7 पर यति होती है, अर्थात् 12वें और 19वें पर ।
- (सूर्याश्वैः - सूर्य- 12, अश्व 7)।

उदा0-

या कुन्देन्दुतुषारहारधवला या शुभ्रवस्त्रावृता
या वीणावरदण्डमण्डितकरा या श्वेतपद्मासना ।
या ब्रह्माच्युत शंकरप्रभृतिभिर्देवैः सदा वन्दिता
सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेषजाड्यापहा

मन्दाक्रान्ता छन्द

लक्षण-

मन्दाक्रान्ता जलधिषडगैम्भौ नतौ ताद् गुरू चेत् ।

अर्थ-

- मन्दाक्रान्ता के प्रत्येक पाद में 17 वर्ण होते हैं।
- क्रमशः 1 मगण, 1 भगण, 1 नगण, तगण, 2 गुरु।
- इसमें 4-6-7 पर यति होती है।
- चौथे, 10वें और 17वें वर्ण पर यति।
- (जलधिषडगैः-जलधि4, षट् 6, अगृ7)।

उदा0- मेघदूतं मङ्गलाचरण-

कश्चित् कान्ता विरहगुरुणा स्वाधिकारात् प्रमत्तः
शापेनास्तङ्गमितमहिमा वर्षभोग्येण भर्तुः ।
यक्षश्चक्रे जनकतनयास्नानपुण्योदकेषु
स्निग्धच्छायातरुषु वसतिं रामगिर्याश्रमेषु ।।

।: यूनिट-8 इति :।

यूनिट-9

शब्दालङ्काराः अर्थालङ्काराः च

- **शब्दालङ्काराः** - अनुप्रासः, यमकः, श्लेषः ।
- **अर्थालङ्काराः** - उपमा, रूपकम्, उत्प्रेक्षा, अर्थान्तरन्यासः ।

अलङ्कार

- अलङ्कार की व्युत्पत्ति- अलङ्करोतिति इति अलङ्कारः।
- सभी आचार्यो ने शब्द-अर्थ को काव्य का शरीर माना है।
- शरीर को विभूषित करनेवाले अर्थ या तत्वका नाम अलङ्कार है।
- जिस प्रकार कटक, कुण्डल आदि शरीर को विभूषित करते है उसी प्रकार अनुप्रास, उपमा आदि अलङ्कार काव्य को विभूषित करते है।
- जो स्त्री या पुरुष अलङ्कारविहीन होते है, वह मनुष्य तो होते है किन्तु अलङ्कार युक्त मनुष्य उत्कृष्ट प्रतीत होते है। उसी प्रकार काव्य में अलंकार अनिवार्य तो नहीं,

  किन्तु काव्य में अलंकार प्रयोग होने के कारण काव्य उत्कर्षाधायक होते है।
- अलङ्कार काव्य का अस्थिर धर्म है और गुण स्थिर धर्म है।
- अलङ्कारवादियों के मत में अलङ्काररहित काव्य की कल्पना, उष्णतारहित अग्नि की कल्पना के समान उपहास योग्य है।
- **अलङ्कार का लक्षण-**

  उपकुर्वन्ति तं सन्तं येऽङ्गद्वारेण जातुचित् ।
  हारादिवदलङ्कारास्तेऽनुप्रासोपमादयः ।।

अर्थ-

1. जो काव्य में विद्यमान अङ्गी रस और शब्द व अर्थरूपी अङ्गों को नियमेन नहीं, अपितु कभी कभी उपकृत (उत्कर्ष) करते है वह हार कुंडल आदि केसमान अनुप्रास उपमा आदि अलङ्कार कहलाते है।
2. साधारण भाषा में कहे तो जैसे कोई स्त्री, पुरुष सोने, चान्दी व हीरे के जवाहारत पहन लेने से उसकी/उसका सुंदरता बढ़ जाती/जाता है, उसी

प्रकार काव्य में भी शब्द और अर्थरूपी शरीर पर अनुप्रास उपमा आदि अलङ्कार का प्रयोग कर देने से उस काव्य की शोभा, सुंदरता, उत्कृष्टता बढ़ जाती है।

- **अलङ्कार के 2 भेद है-**

  1. शब्दालङ्कार 2. अर्थालङ्कार
- जो शब्द परिवृत्तिको सहन नहीं करता वह शब्दालङ्कार होता है।
- जो शब्द परिवृत्तिको सहन करता है, वह अर्थालङ्कार होता है।
- आचार्य मम्मटकृत् काव्यप्रकाश के नवम उल्लास में शब्दालङ्कार दशम में अर्थालङ्कार का विवेचन किया गया है।
- आचार्य विश्वनाथ कृत् साहित्यदर्पण के दशम परिच्छेद में अलङ्कारों का विवेचनकिया गया है।
- आचार्य मम्मट 6 शब्दालङ्कार, 61 अर्थालङ्कार, 1 उभयालङ्कार कुल 68 अलङ्कार मानते है।
- **शब्दालङ्कार-** 1. वक्रोक्ति 2. अनुप्रास 3. यमक 4. श्लेष 5. चित्र 6. पुनरुक्तवदाभास
- **अर्थालङ्कार-** शब्दालङ्कार से शेष बचें 61 को अर्थालङ्कार समझना चाहिए।

अनुप्रास अलङ्कार

काव्यप्रकाशानुसार

- **वर्णसाम्यमनुप्रासः-** वर्णोंकी समानता अनुप्रास है।
- **अनुप्रास की व्युत्पत्ति-** रसाद्यनुगतः प्रकृष्टो न्यासोऽनुप्रासः अर्थात् रसादि के अनुकूल

  वर्णोंका प्रकृष्ट सन्निवेश ही अनुप्रास कहलाता है।
- अनुप्रास के 2 भेद है- 1. छेकानुप्रास 2. वृत्यानुप्रास
- **छेकानुप्रास-** छेका विदग्धाः अर्थात् छेक शब्द का अर्थ चतुर व्यक्ति है।
- **लक्षण-**

सोऽनेकस्य सकृत् पूर्वः- अनेक वर्णों का एक बार आवृत्ति छेकाप्रास।

अनेकस्य अर्थात् व्यञ्जनस्य सकृदेकवारं सादृश्यं छेकानुप्रासः।

अर्थात् अनेक व्यञ्जनों का सकृत् अर्थात् एक बार सादृश्य छेकानुप्रास कहलाता है।

उदाहरणम्

ततोऽरुणपरिस्पन्दमन्दीकृतवपुः शशी ।
दध्रे कामपरिक्षामकामिनीगण्डपाण्डुताम् ।।

प्रातःकाल के समय सूर्य के सारथि अरुणके गतिशील होने से मलिन स्वरुपवाला चन्द्रमा काम के उपभोग से दुर्बल कामिनीके कपोलस्थल के समान सफेद हो गया।

वृत्त्यनुप्रासः

एकस्याप्य सकृत् परः अर्थात् एक वर्ण का अनेक बार आवृत्ति वृत्त्यनुप्रास ।

एकस्य अपिशब्दादनेकस्य व्यञ्जनस्य द्विर्वहुकृत्वो वा सादृश्यं- अनेक व्यंजनों का एक बार या बहुत बार आवृत्ति वृत्त्यनुप्रास कहलाता है।

उदाहरणम्

अपसारय घनसारं कुरु हारं दूर एव किं कमलैः।
अलमलमालि मृणालैरिति वदति दिवानिशं बाला ।।

लाटानुप्रास

शाब्दस्तु लाटानुप्रासो भेदे तात्पर्यमात्रतः।
शब्दगतोऽनुप्रासः । शब्दार्थयोरभेदेऽप्यन्वयमात्र भेदात् ।
लाटजनवल्लभत्वाच्च लाटानुप्रासः । एष पदानुप्रास इत्यन्ये

अर्थ- इसमें वर्णोंकी नहीं अपितु पदोंकी आवृत्ति होनेपर लाटानुप्रास कहते है। इसमे वर्णों की नहीं अपितु पदों की आवृत्ति होती है अतः इसे पादानुप्रास भी कहते है। लाटानुप्रास के 5 भेद है।

उदाहरणम्-

यस्य न सविधे दयिता दवदहनस्तुहिनदीधितिस्तस्य ।
यस्य च सविधे दयिता दवदहनस्तुहिनदीधितिस्तस्य ।।

अर्थ- जिसके समीपमें उसकी प्रियतमा नहीं है, उसके लिए तुहिनदीधिति अर्थात् चन्द्रमा दावानल के समान सन्तापदायक है और जिसके समीपमें उसकी प्रियतमा विद्यमान है,उसके लिए दावानल भी चन्द्रमा के समान शीतल और आनन्ददायक हो जाता है। यहाँ अनेक पदोंकी प्रवृत्ति है । पूर्वार्द्धमें 'तुहिनदीधिति' में 'दवदहनत्व' विधेय है और उत्तरार्द्धमें 'दवदहन' में 'तुहिनदीधितित्व' विधेय है । इसलिए उद्देश्य - विधेयभावमें भेद होने से तात्पर्यमात्रका भेद हो जाता है । अतः यह लाटानुप्रासका उदाहरण है ।

लाटानुप्रास के अन्य उदाहरण-

वदनं वरवर्णिन्यास्तस्याः सत्यं सुधाकरः।
सुधाकरः क्व नु पुनः कलङ्कविकलो भवेत् ।।
सितकरकररुचिरविभा विभाकराकार, धरणिधर, कीर्तिः।
पौरषकमला कमला साऽपि तवैवास्ति नान्यस्य ।।

साहित्यदर्पणानुसार अनुप्रास लक्षण

अनुप्रासः शब्दसाम्य वैषम्येऽपि स्वरस्य यत्।

स्वरकी विषमता अर्थात् असमता न होनेपर भी व्यंजनकी सरूपता होनेको अनुप्रास कहते है ।

साहित्यदर्पण में आचार्य विश्वनाथ ने अनुप्रास के कुल 5 भेद किये है।

1.छेकानुप्रास 2.वृत्यनुप्रास 3.श्रुत्यनुप्रास 4.अन्त्यानुप्रास 5.लाटानुप्रास।

छेकानुप्रास

छेको व्यञ्जनसङ्घस्य सकृत्साम्यमनेकधा।

व्यञ्जन समूहका एक बार अनेक प्रकार से समानता छेकानुप्रास कहते है।

उदा०-

आदाय बकुलगन्धानन्धीकुर्वन् पदे-पदे भ्रमसमरान् ।
अयमेति मन्दंमन्दं कावेरीवारिपावनः पवनः ।।

वृत्यनुप्रास

अनैकस्यैकधा साम्यमसकृद्वाष्यनेकधा ।
एकधा सकृदप्येष वृत्यनुप्रास उच्यते ।।

एक बार स्वरुपसे ही न कि क्रमसे, अनेकधा - अनेक बार स्वरूप और क्रमसेबार-बार समता से वृत्योनुप्रास होता है।

उदा०-

उन्मीलन्मधुगन्धलुब्धमधुव्याधूतचूताङ्कुर-
क्रीडत्कोकिलकाकलीकलकलैरुद्गीर्णकर्णज्वराः।
नीयन्ते पथिकैः कथं कथमपि ध्यानावधानक्षण-
प्राप्तप्राणसमासमागमरसोल्लासैरमी वासराः।।

श्रुत्यनुप्रास

उच्चार्यत्वाद्यदेकत्र स्थाने तालुरदादिके।
सादृश्यं व्यञ्जनस्यैव श्रुत्यनुप्रास उच्यते ।।

तालु और दन्त आदि एक उच्चारण स्थान में उच्चारण किये जाने से व्यञ्जनका ही जो सादृश्य है, उसे श्रुत्यनुप्रास है।

उदा०-

दृशा दग्धं मनसिजं जीवयन्ति दशैव याः।
विरुपाक्षस्य जयिनीस्ताः स्तुमो, वामलोचनाः।।

अन्त्यानुप्रास

व्यञ्जनं चेद्यथावस्थं सहाद्येन स्वरेण तु।
आवर्त्यतेऽन्त्यायोज्यत्वादन्त्यानुप्रास एवं तत् ।।

प्रथम स्वरके साथ यथाऽऽवस्थ अर्थात् यथासंभवअनुस्वार, विसर्ग औरस्वरसे युक्त व्यञ्जन अन्तमेंयोजनीय होनेसेदुहरायाजाये तो उसे अन्यानुप्रासकहते है।

उदा०-

केशः काशस्तबकविकासः, कायः प्रकटित करभविलासः।
चतुर्दग्धवराटककल्पं, त्यजति न चेतः, काममनल्पम्।।

लाटानुप्रास

शब्दार्थयोः पौनरुक्त्यं भेदे तात्पर्यमात्रतः।

लाषानुप्रास इत्युक्तः

केवल तात्पर्य में भेद होकर शब्द और अर्थकी पुनसक्ति होनेपर लाटानुप्रासहोता है।

उदा0

स्मेरराजीवनयने नयने किं निमीलिते।
पश्य निर्जितकन्दर्पं कन्दर्पवशगं प्रियम्।।

यमक अलङ्कार

साहित्यदर्पणानुसार लक्षण

सत्यर्थे पृथगर्थायाः स्वरगञ्जनतसंहतेः।
क्रमेण तेनैवावृत्तिर्यमकं विनिगद्यते।।

काव्यप्रकाशानुसार लक्षण

अर्थे सत्यर्थभिन्नानां वर्णानां सा पुनः श्रुति यमकम्।

अर्थ0-

- वर्ण समान हो किन्तु अर्थभेद हो तो यमक अलङ्कार होता है।
- सामान्य शब्दों में कहा जायें तो शब्द का समान रहे किन्तु अर्थ भिन्न-भिन्न हो जायें तो यमक अलङ्कार होता है। जैसे-
  कनक (सोना) कनक (धतुरा) ते सौ गुनी,
  मादकता अधिकाय।
  वा खाए बौराय जग, या पाए बौराय।।
- प्रस्तुत दोहे में दो बार कनक शब्द प्रयोग हुआ है और दोनों अर्थ भिन्न-भिन्न है।

उदा0-

- सन्नारीभरणोमायमाराध्य विधुशेखरम्।।
  सनारी भरणोऽमायस्ततस्त्वं पृथिवीं जय।

- विनायमेनो नयताऽसुखादिना विना यमेनोनयता सुखादिना।
  महाजनोऽदीयत मानसादरं महाजनोदी यतमानसादरम्।।
- स त्वारम्भरतोऽवश्यमबलं विततारवम्।
  सर्वदा रणमानैषीदवानलसमस्थितः।।
- नवपलाश-पलाशवनं पुरः स्फुटपराग-परागत-पङ्कजम्।
  मृदुल-तान्त-लतान्तमलोकयत् स सुरभिं सुरभिं सुमनोभरैः।।

श्लेष अलङ्कार

- श्लेष अलङ्कार शब्दालङ्कार और अर्थालङ्कार के अन्तर्गत आता है।
- श्लेष शब्दालङ्कार के कुल 8 भेद होते है।
- 1. वर्ण श्लेष 2. पद श्लेष
  4. लिङ्ग श्लेष 3. भाषा श्लेष
  5. प्रकृति श्लेष 6. प्रत्यय श्लेष
  7. विभक्ति श्लेष 8.वचन श्लेष

श्लेष लक्षण काव्यप्रकाशानुसार -

- वाच्यभेदेन भिन्ना यद् युगपद्भाषणस्पृशः।
  श्लिष्यन्ति शब्दाः श्लेषोऽसावक्षरादिभिरष्टधा।।
  अर्थका भेद होनेसे भिन्न-भिन्न शब्द एक साथ उच्चारण के कारण जब मिल जाते है,तब वह श्लेष अलंकार कहलाता है।

साहित्यदर्पणानुसार लक्षण-

- श्लिष्टैः पदैरनेकार्थाभिधाने श्लेष इष्यते।
  वर्णप्रत्ययलिङ्गानां प्रकृत्योः पदयोरपि।।
  श्लिष्ट पदोंसे अनेक अर्थोंका अभिधान होनेपर श्लेष अलङ्कार होता है।

वर्णश्लेष का उदा0-

अलङ्कारः शङ्काकरनकपालं परिजनो,
विशीर्णाङ्गो भृङ्गी वसु च वृष एको बहुवयाः।
अवस्थेयं स्थाणोरपि भवति सर्वामरगुरो-
विंधौ वक्रे मूर्ध्नि स्थितवति वयं के पुनरमी।।

पद श्लेष का उदा0-

पृथुकार्त्तस्वरपात्रं भूषितनिःशेषपरिजनं देव।
विलसत्करेणुगहनं सम्प्रति सममावयोः सदनम्॥

लिङ्ग व वचन श्लेष का उदा0-

भक्तिप्रह्वविलोकनप्रणयिनी नीलोत्पलस्पर्धिनी।
ध्यानालम्बनतां समाधिनिरतैर्नीते हितप्राप्तये।
लावण्यस्य महानिधी रसिकतां लक्ष्मीदृशोस्तन्वती
युष्माकं कुरुतां भवार्ति शमनं नेत्रे तनुर्वा हरेः॥

भाषा श्लेष का उदा0-

महदे सुरसंधम्मे तमवसमासङ्गमागमाहरणे।
हरबहुसरणं तं चित्तमोहमवसरउमे सहसा॥

प्रकृति श्लेष का उदा0-

अयं सर्वाणि शास्त्राणि हृदि ज्ञेषु च वक्ष्यति।
सामर्थ्यकृदमित्राणां मित्राणां च नृपात्मजः॥

प्रत्यय श्लेष का उदा0-

रजनिरमणमौलेः पादपद्मावलोक-क्षण समयपराप्तापूर्वसम्पत्सहस्त्रम्।
प्रमथनिवहमध्ये जातुचित् त्वत्प्रसादा-दहमुचितरुचिः स्यान्नन्दिता सा तथा मे॥

विभक्ति श्लेष का उदा0-

सर्वस्वं हर सर्वस्य त्वं भवच्छेदतत्परः।
नयोपकारसाम्मुख्यमायासि तनुवर्तनम्॥

उपमा अलङ्कार

- उपमा अलङ्कार में-

1. उपमान
2. उपमेय
3. साधारण धर्म अथवा सादृश्य
4. उपमावाचक शब्द 4 उपयोग होता है।

- **1. उपमान-** जिससे तुलना या समानता की जाये। मुखं इव चन्द्रः यहाँ चन्द्रमा उपमान है।
- **2. उपमेय-** जिसकी तुलना की जाये। मुखं इव चन्द्रः यहाँ मुख उपमेय है।
- दो सदृश पदार्थोंमें प्रायः अधिक गुणवाला पदार्थ उपमान और न्यूनगुणवाला पदार्थ उपमेय।
- **साधारण धर्म-** दोनों में समानता। जैसे- मुख चन्द्रमा के समान सुन्दर है यहाँ सुन्दरता साधारण धर्म है। क्योंकि चन्द्र भी सुन्दर है और नायिका का मुख भी।
- **उपमावाचक शब्द-** इव, यथा, तुल्य आदि। **रामरावणयोर्युद्धं रामरावणयोरिव-** राम रावण का युध्द राम रावण के समान ही हुआ। यहाँ समानता दर्शाना हेतु 'इव' उपमावाचक शब्द का प्रयोग किया गया है।

काव्यप्रकाशानुसार उपमा का लक्षण-

साधर्म्यमुपमा भेदे।

उपमानोपमेययोरेव न तु कार्यकारणादिकयोः साधर्म्यं भवतीति तयोरेव समानेन धर्मेण सम्बन्ध उपमा।

अर्थ- उपमान और उपमेय का साधर्म्य (समानता) होता है, कार्य-कारण का नहीं (कार्य-घड़ा कारण-दण्ड) अतः समान रूप से सादृश्य होने से उपमा अलङ्कार कहलाता है।

साहित्यदर्पणानुसार उपमा का लक्षण-

साम्यं वाच्यमवैधर्म्यं वाक्यैक्य उपमा द्वयोः।

अर्थ- एक ही वाक्य में उपमान और उपमेय दों पदार्थोंका वैधर्म्यसे रहित वाच्य सादृश्यको उपमा कहते है।

- **पूर्णा लुप्ता च -** मुख्यतः उपमा अलङ्कार के दो भेद होते है 1.पूर्णा 2. लुप्ता
- **पूर्णोपमा-** उपमानोपमेयसाधारणधर्मोपमाप्रतिपादकानामुपादाने पूर्णा। 1. उपमान 2. उपमेय 3. साधारण धर्म 4. उपमा वाचक शब्द इन चारों का उपयोग होने पर पूर्णोपमा अलङ्कार होगा।

- **लुप्तोपमा-** एकस्य द्वयोस्त्रयाणां वा लोपे लुप्ता अर्थात् उपर्युक्त चारों में से एक अथवा दो अथवा तीन का लोप होने पर लुप्तोपमा अलङ्कार होगा।
- आचार्य मम्मट अपने ग्रन्थ काव्यप्रकाश में पूर्णोपमा के 6 भेद तथा लुप्तोपमा 19 भेद कुल उपमा के 25 भेद स्वीकार किये है।
- आचार्य विश्वनाथ अपने ग्रन्थ साहित्यदर्पण में उपमा के कुल 27 भेद माने है।

उदाहरण-

1. **स्वप्नेऽपि समरेषु त्वां विजयश्रीर्न मुञ्चति ।**
   प्रभावप्रभवं कान्तं स्वाधीनपतिका यथा ॥

   अर्थ- जो अपने पति के अधीन ऐसे स्वाधीनपतिका नायिका के समान विजयश्री प्रभाव के कारणआपको स्वप्नमें भी युद्धों में नहीं छोड़ती है। इस उदाहरण में 'स्वाधीनपतिका' उपमान है, 'विजयश्री' उपमेय है और 'न मुञ्चति' यह साधारण धर्म है, 'यथा' यह उपमावाचक शब्द है अतः उपमा के चारों घटक विद्यमान होने से यहाँ पुर्णोपमा का उदाहरण है।

2. **चकितहरिणलोललोचनायाः क्रुधि तरुणारुणतारहारिकान्ति ।**
   उप सरसिजमिदमाननं च तस्याः सममिति चेतसि सम्मदं विधत्ते।

   अर्थ- चकित भयभीत हरिणी के समान चंचल नेत्रवाली उस नायिका के क्रोधमें प्रातःकालीन अरुण के समान अत्यन्त सुन्दर कान्तिवाला क्रोध से आरक्त मुख और यह हाथ में लिया हुआ कमल दोनों एक समान लग रहे है इसलिए क्रोध से आरक्तनायिका का मुख नायक के हृदय में आनन्द उत्पन्न कर रहे है।

- सरसिज उपमान है, आनन (मुख) उपमेय है अरुण के समान कान्ति यह साधारण धर्म है, समम् उपमावाचक शब्द है।

3. **वागर्थाविव संपृक्तौ वागर्थप्रतिपत्तये।**
   जगतः पितरौ वन्दे पार्वतीपरमेश्वरौ॥

   अर्थ- मैं वाणी और अर्थ की सिद्धि के निमित्त वाणी और अर्थ के समान मिले हुए जगत के माता पिता पार्वती शिव को प्रणाम करता हूँ।

- उपमेय पार्वतीपरमेश्वरौ, उपमान वाणी और अर्थ, सधारण धर्म संपृक्तौ आपस में जुड़े हुए, उपमावाचक शब्द इव उपमा के चारों घटक है अतः

यह भी पूर्णोपमा का उदाहरण है।

उपमा के अन्य उदाहरण

- **अत्यायतैर्नियमकारिभिरुद्धतानां**
  दिव्यैः प्रभाभिरनपायमयैरुपायैः।
  शौरिर्भुजैरिव चतुर्भिरदः सदा यो
  लक्ष्मीविलासभवनैर्भुवनं बभार ॥
- **अवितथमनोरथपथप्रथनेषु प्रगुणगरिमगीतश्रीः**
  सुरतरुसदृशः स भवानभिलषणीयः क्षितीश्वर, न कस्य॥
- **मुखमिन्दुर्यथा पाणिः पल्लवेन समः प्रिये!।**
  वाचः सुधा इवोष्ठस्ते बिम्बतुल्यो मनो ऽश्मवत्॥

रूपक अलङ्कार

- रूपक अलङ्कार में भी उपमान उपमेय का प्रयोग होता है।
- जब उपमान और उपमेय का अभेद सम्बन्ध हो जाये तो रूपकालङ्कार होता है।
- उपमा में- 'मुखं इव चन्द्रः' अर्थात् चन्द्रमा के समान मुख है किन्तु रूपक में-'मुखं चन्द्रः' अर्थात् मुख ही चन्द्रमा है। यहाँ मुख को चन्द्र के समान न बतला-कर मुख में चन्द्रमा को आरोप कर दिया है अतः अभेद सम्बन्ध होनेसे रूपक है।

काव्याप्रकाशानुसार लक्षण-

तद् रूपकमभेदो य उपमानोपमेययोः।

अर्थ- अत्यन्त सादृश्य के कारण उपमान-उपमेय का अभेद सम्बन्ध होता, तो रूपक अलङ्कार होता है।

उदा०-

ज्योत्स्नाभस्मच्छुरणधवला बिभ्रती तारकास्थी-
न्यन्तर्द्धानव्यसनरसिका रात्रिकापालिकीयम्।
द्वीपाद् द्वीपं भ्रमति दधती चन्द्रमुद्राकपाले
न्यस्तं सिद्धाञ्जनपरिमलं लाञ्छनस्य च्छलेन

चाँदनीरूप भस्मसे व्याप्त होनेके कारण धवलवर्ण, तारिकारूप अस्थियों को धारण किये हुए और अन्तर्धान सब वस्तुओंको छिपा लेने के व्यसनकी रसिका, यह रात्रिरूप कापालिको चन्द्रकलारूप कपालमें कलङ्कके बहानेसे सिद्धाञ्जनचूर्णको रखे हुए द्वीप-द्वीपान्तरोंमें घूमती फिरती है।

इस उदाहरण में रात्रिके ऊपर कपालकीका आरोप किया गया है। ज्योत्सना पर भस्म का, तारकोंपर अस्थिका, चन्द्रकला पर कपाल का और लाञ्छनपर सिध्दाञ्जनपरिमलका आरोप किया है।

यस्य रणान्तःपुरे करे कुर्वतो मण्डलाग्रलताम्।
रससम्मुख्यापि सहसा पराङ्सुखी भवति रिपुसेना।।

आचार्य विश्वनाथ रूपक के कुल 8 भेद माने है।

उत्प्रेक्षा अलङ्कार

- उत्प्रेक्षा में हमेशा संभावना में किया जाता है।
- **मन्येशंङ्केध्रुवंप्रायोनूनमित्येवमादयः**:- उत्प्रेक्षा अलङ्कार में मन्ये, शंङ्केध्रुवं, प्रायः, नूनं ये उत्प्रेक्षावाचक शब्द का प्रयोग होता है।
- उपमा का प्राण सादृश्य और उत्प्रेक्षा का संभावना है।
- इव का प्रयोग उपमा और उत्प्रेक्षा दोनों में होता किन्तु उत्प्रेक्षा में क्रिया के साथ इव का प्रयोग होता है।
- जब उत्प्रेक्षा का प्रयोग क्रिया के साथ न हुआ हो तो संभावना देखना चाहिए।
- आचार्य विश्वनाथ ने उत्प्रेक्षा के कुल 32 भेद माने है।

काव्याप्रकाशानुसार लक्षण

सम्भावनमथोत्प्रेक्षा प्रकृतस्य समेन यत्।

अर्थ - प्रकृत (उपमान) का अप्रकृत (उपमेय) से संभावना प्रकट किया जाये तो उत्प्रेक्षा अलङ्कार होता है।

उदाहरण-

उन्मेषं यो मम न सहते जातिवैरी निशाया-
मिन्दोरिन्दीवरदला तस्य सौन्दर्यदर्पः।
नीतः शान्ति प्रसभमनया वक्त्रकान्त्येति हर्षा-

लग्ना मन्ये ललिततनु, ते पादयोः पद्मलक्ष्मीः।।

अर्थ- जो मुझ कमलश्रीका जन्मका बैरी चन्द्रमा रात्रिमें भी मेरे विकासको सहन नहीं करता है, इस कमलनयनीने उस चन्द्र का सौन्दर्याभिमान अपने मुखको कान्तिसे हठात् नष्ट कर दिया है इस कारणसे ऐसा मानकर हे सुन्दर शरीरवाली प्रियतमे ! प्रसन्नता के कारण कमलकी लक्ष्मी मानो तुम्हारे चरणोंमें चिपट गयी है। साधारण भाषा में कमल और चन्द्रमा जन्म से शत्रु है क्योंकीं रात होते ही कमल मुरझा जाता है। कोई नायिका अपनी सुन्दरता से चन्द्रमा के सुन्दरता के अभिमान को नष्ट कर दिया तो कमल प्रसन्न कमल मानो नायिका के चरणों में लिपट गई हो।

लिम्पतीव तमोऽङ्गानि वर्षतीवाञ्जनं नभः।
असत्पुरुषसेवेव दृष्टिविफलतां गता।।

अर्थ- वर्षाकालकी रात्रि के समय अन्धकार मानों अङ्गोंको लीप-सा रहा है, और मानों आकाश काजल की वर्षा सा कर रहा है जैसे दुष्ट पुरुष की सेवा के समान दृष्टि विफल-सी हो गयी है। प्रस्तुत उदाहरणों में लेपनादि रूप का सम्भावना किया गया है।

अर्थान्तरन्यास अलङ्कार

काव्याप्रकाशानुसार लक्षण

सामान्यं वा विशेषो वा तदन्येन समर्थ्यते।
यत्तु सोऽर्थान्तरन्यासः साधर्म्येणेतरेण वा।।

अर्थ- सामान्य का विशेष से समर्थन अथवा विशेष का सामान्य से समर्थन किया जायेतो वह अर्थान्तरन्यास अलङ्कार कहलाता है। वह साधर्म्य व वैधर्म्य के भेद से 2 प्रकार का होता है।

उदाहरण

निजदोषावृतमनसामतिसुन्दरमेव भाति विपरीतम्।
पश्यति पित्तोपहतः शशिशुभ्रं शङ्खमपि पीतम्।।

अर्थ- अपने ही दोषसे जिनका मन व्याप्त हो रहा है उनको अत्यन्त सुन्दर वस्तु भी विपरीत बुरी जान पड़ती है। पित्तसे पीड़ित पाण्डु या कमला रोगसे ग्रस्त पुरुष को चन्द्रमाके समान शुभ्र शङ्ख भी पीला दिखलायी देता है। यहाँ 'अपने मनमें दोष

होनेपर अच्छी बात भी बुरी मालूम होती है' इस सामान्य सिद्धान्तका समर्थन 'पीलिया रोग के रोगीको शङ्ख भी पीला दिखलायी देता है' इस विशेष उदाहरणके द्वारा किया गया है । इसलिए यह साधके द्वारा विशेषसे सामान्यके समर्थनका उदाहरण है।

बृहत्सहायः कार्यान्तं क्षोदीयानपि गच्छति ।
सम्भूयाम्भोधिमभ्येति महानद्या नगापगा।।

अर्थ- बड़ेकी सहायता पाकर क्षुद्रतरभी काम समाप्त कर लेता है। बड़ी नदीके साथ मिलकर पहाड़की छोटी नदी समुद्रके पास पहुँच जाती है। इसमें उत्तरार्द्धगत विशेषरूप अर्थसे पूर्वार्द्धगत सामान्य अर्थ युक्तियुक्त किया गया है।

अर्थान्तरन्यास के अन्य उदाहरण

सुसितवसनालङ्कारायां कदाचन कौमुदी-
महसि सुदृशिस्वैरं यान्त्यांगतोऽस्तमभूद्विधुः।
तदनु भवतः कीर्तिः केनाप्यगीयत येन सा
प्रियगृहमगान्मुक्ताशङ्का क्व नासि शुभप्रदः ॥
गुणानामेव दौरात्म्याद् धुरि धुर्यो नियुज्यते।
असञ्जातकिणस्कन्धः सुखं स्वपिति गौर्गलिः ॥
अहो हि मे बह्वपराद्धमायुषा यदप्रियं वाच्यमिदं मयेदृशम्।
त एव धन्याः सुहृदः पराभवं जगत्यदृष्ट्वैव हि ये क्षयं गताः ॥

।ः यूनिट-9 इति ः।

यूनिट-10

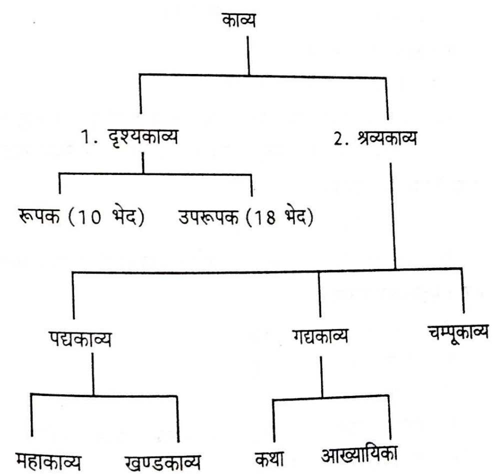
संस्कृतसाहित्यस्य सामान्यपरिचयः

- काव्य के दो भेद है 1. दृश्य काव्य 2. श्रव्य काव्य।
- दृश्य काव्य के दो भेद 1. रूपक 2. उपरूपक
- रूपक के 10 भेद है-

नाटकं सप्रकरणं भाणः प्रहसनं डिमः।
व्यायोगसमवकारौ वीथ्यङ्केहामृगा इति॥

- उपरूपक के कुल 18 भेद होते है।
- श्रव्य काव्य के 4 भेद है-

1. मुक्तक काव्य
2. गद्य काव्य- 1. कथा 2. आख्यायिका
3. पद्य काव्य- 1. महाकाव्य 2.खण्डकाव्य
4. चम्पू काव्य



नाटक

- श्रव्य काव्य उसे कहते है जिसे हम सुन सकते है, देख नहीं सकते है।
- दृश्य काव्य जिसे हम मञ्च आदि पर देख और सुन दोनों सकते है।
- दृश्य काव्य के अंतर्गत नाटक आता है।
- **काव्येषु नाटकं रम्यं**- काव्यों में नाटक रमणीय है।
- नाटक की उत्पत्ति नाट्यशास्त्र में-

जग्राह पाठ्यमृग्वेदात् सामभ्यो गीतमेव च।
यजुर्वेदादभिनयान् रसानाथर्वणादपि॥

नाटक में ऋग्वेद से पाठ्य और सामवेद से गीत व यजुर्वेद से अभिनय तथा अथर्ववेद से रस लिया गया।

नाटक में अङ्क का प्रयोग होता है, अधिकतम 10 अङ्क न्यूनतम 5 अङ्क का प्रयोग होना चाहिए। 5 अङ्क का नाटक निम्नकोटि का व 10 अङ्कों का श्रेष्ठ होता है।

1. भास (300-200 ई0पू0)

- नाटक की बात करें तो सर्वप्रथम भास का ही नाम प्राप्त होता है।
- भास के कुल 13 नाटक प्राप्त होते है।

(क) उदयनकथामूलक-

(क) प्रतिज्ञायौगन्धरायण - 4 अङ्क

(ख) स्वप्नवासदत्तम्- यह अति प्रसिद्ध ग्रन्थ है इसमें कुल 6 अङ्क है। इसका नायक उदयन व नायिका वासवदत्ता है। शृंगार रस प्रधान नाटक है।

(ख) रामायणमूलक-

(क) प्रतिमानाटक - 7 अङ्क

(ख) अभिषेक नाटक - 6 अङ्क (किष्किन्धाकाण्ड से रामराज्य अभिषेकतक)

(ग) महाभारतमूलक-

(क) पञ्चरात्रम् - 3 अङ्क

(ख) बालचरितम्- 5 अङ्क

(ग) कर्णभारम्- 1 अङ्क

(घ) मध्यमव्यायोग 1 अङ्क - एकांकी नाटक का ट्रिक-

(ङ) ऊरुभङ्गम् - 1 अङ्क कमउदूदू

(च) दूतवाक्यम् - 1 अङ्क

(छ) दूतघटोत्कचम् 1 अङ्क

(घ) लोककथामूलक-

(क) अविमारकम् - 6 अङ्क

(ख) चारुदत्तम् - 4 अङ्क

2. शूद्रक (प्रथम शताब्दी ई0पू0)

- शूद्रक का एकमात्र रचना प्राप्त होती है- मृच्छकटिकम्
- मृच्छकटिकम् का अर्थ- 'मिट्टी की गाड़ी' (षष्ठ अङ्क में प्रसंग प्राप्त होता है)
- मृच्छकटिकम् एक प्रकरण ग्रन्थ है, जिसमें कुल 10 अङ्क है।
- मृच्छकटिकम् में शृंगार रस व कैशिकी वृत्ति प्रधान है।
- मृच्छकटिकम् में नायक चारुदत्त व नायिका वासवदत्ता है जो की एक गणिका नायिका है।
- नायक चारुदत्त धीरप्रशान्त कोटि का नायक है।
- मृच्छकटिकम् के विदूषक का नाम 'मैत्रेय' है।
- **मृच्छकटिकं के 10 अङ्को के नाम व श्लोक संख्या-**

1.	अलङ्कारन्यास	-	प्रथम अङ्क	-	58 श्लोक
2.	द्यूतकर संवाहक	-	द्वितीय अङ्क	-	20 श्लोक
3.	सन्धिच्छेद	-	तृतीय अङ्क	-	30 श्लोक
4.	मदनिका शर्विलक	-	चतुर्थ अङ्क	-	33 श्लोक
5.	दुर्दिन	-	पञ्चम अङ्क	-	52 श्लोक
6.	यान परिवर्तन	-	षष्ठ अङ्क	-	27 श्लोक
7.	आर्य अपहरण	-	सप्तम अङ्क	-	9 श्लोक
8.	वसन्तसेना मर्दन	-	अष्टम अङ्क	-	47 श्लोक
9.	व्यवहार न्यायालय	-	नवम अङ्क	-	43 श्लोक
10.	उपसंहार	-	दशम अङ्क	-	61 श्लोक

मङ्गलाचरण

पर्यङ्कग्रन्थिबन्धद्विगुणित भुजगाश्लेष संवीतजानो-
रन्तः प्राणावरोधव्युपरतसकलज्ञानरुद्धेन्द्रियस्य ।
आत्मन्यात्मानमेव व्यपगतकरणं पश्यतस्तत्त्वदृष्ट्या
शम्भोर्वः पातु शून्येक्षणघटितलयब्रह्मलग्नः समाधिः।।

पातु वो नीलकण्ठस्य कण्ठः श्यामाम्बुदोपमः।
गौरी भुजलता यत्र विद्युल्लेखेव राजते।।

- मङ्गलाचरण भगवान शिव-पार्वती का किया गया है।
- स्त्रग्धरा छन्द है और संसृष्टि अलङ्कार है।
- द्वितीय श्लोक में उपमा अलङ्कार है।
- नान्दी का अर्थ मङ्गलाचरण- इस मङ्गलाचरण में अष्टपदात्मिका पत्रावली नान्दी है।

प्रमुख सूक्तियाँ

- **शून्यमपुत्रस्य गृहं, चिरशून्यं नास्ति यस्य सन्मित्रम्।**
  मूर्खस्य दिशः शून्याः, सर्वं शून्यं दरिद्रस्य।। चारुदत्त
  पुत्रहीन का घर सूना होता है, जिसके अच्छे मित्र नहीं होते उसका समय शून्यरहता है, मूर्ख की दिशायें शून्य रहती हैं और दरिद्र का सब कुछ सूना रहता है।
- **सुखातु यो याति नरो दरिद्रतां धृतः शरीरेण मृतः स जीवति-** चारुदत्त
  सुख के बाद जो मनुष्य दुःख को प्राप्त करता है वह शरीर धारण किए हुए मृत्यु के समान जीता है।
- **अल्पक्लेशं मरणं दारिद्रयमनन्तकं दुःखम्** - चारुदत्त
  मृत्यु कम दुखदायी है किन्तु दरिद्रता अनन्त दुःख देने वाला है।
- **हृदये गृह्यते नारी यदिदं नास्ति गम्यताम्** - विट
  यदि नारी को हृदय से ग्रहण करेंगे तो वह कही नहीं जायेगी।
- **सुजनः खलु भृत्यानुकम्पकः स्वामी निर्धनको शोभते** - चेट

सज्जन, नौकरों पर अनुकम्पा करने वाला, निर्धन भी मालिक का शोभा को प्राप्त करता है।

- **स्वैदोषैर्भवति हि शङ्कितो मनुष्यः** - शर्विलक
  अपने ही दोष से मनुष्य शङ्कित रहता है।
- **शङ्कनीया हि लोकेऽस्मिन्निष्प्रतापा दरिद्रता**- चारूदत्त
  इस संसार में सभी लोग दरिद्र पर ही शङ्का करने लग जाते है।
- **चारित्र्येण विहीनः आढ्योपि च दुर्गतो भवति** - विदूषक
  धनी भी चरित्र से विहीन होनेपर निर्धन ही होता है।
- **छिद्रेष्वनर्था बहुली भवन्ति** - चारुदत्त
  मनुष्य की विपत्ति के समय छोटे दोषों में भी बड़े-बड़े अनिष्ट हो जाते है।
- **अहो निर्धनता सर्वपदामास्पदम्** - चारुदत्त
  ओह ! निर्धनता सभी आपदाओं का जड़ है।
- **भाग्यक्रमेण हि धनानि भवन्ति यान्ति च** - चारुदत्त
  भाग्य से ही धन आता है और जाता है।
- **दुर्लभा गुणा विभवाश्च अपेयेषु तडागेषु बहुतरमुदकं भवति**- वसन्तसेना
  सद्गुण और धन एक ही व्यक्ति में मिलना कठिन है, जिनका पानी पीने योग्य नहीं होता उन्हीं तालाबों में खूब पानी होता है।
- **बहुदोषा हि शर्वरी** - चारुदत्त
  रात बहुत दोष वाली होती है क्योंकि सारे गलत कार्य रात में ही होते है।

3. कालिदास (ई0पू0 प्रथम शताब्दी)

- कालिदास उज्जैन के निवासी थे।
- इनकी पत्नी का नाम विद्योतमा था।
- यह विक्रमादित्य के नवरत्नों में से एक थे।
- कालिदास प्रिय छन्द उपमा है-

उपमा कालिदासस्य भारवेरर्थ गौरवम्।
दण्डिनः पदलालित्यं माघे सन्ति त्रयो गुणाः।।

- कालिदास को दीपशिखा, कविताकामिनी, रघुकार आदि उपाधियों से विभूषित थे।
- कालिदास ने 3 नाटक, 2 महाकाव्य, 2 गीतिकाव्यकीरचना किया।

- **नाटक**
  1. अभिज्ञानशाकुन्तलम् - 7 अङ्क
  2. विक्रमोर्वशीयम् - इसको त्रोटक भी कहते है। 5 अङ्क है।
  3. मालविकाग्निमित्रम् - 5 अङ्क
- **महाकाव्य**
  1. रघुवंशम् - 19 सर्ग
  2. कुमारसंम्भवम् - 17 सर्ग
- **गीतिकाव्य**
  1. मेघदूतम्
  2. ऋतुसंहारम् - कालिदास का सर्वप्रथम रचना। इसमें 6 ऋतुओं का वर्णन प्राप्त होता है।

- **मालविकाग्निमित्रम्-** इसमें कुल 5 अङ्क है, मालविका तथा अग्निमित्र के प्रणय विवाह का वर्णन है। यह कालिदास की प्रथम कृति है। शृंगार रस प्रधान ग्रन्थ है, नायक धीरलालित कोटि का है।
- **विक्रमोर्वशीयम् -** यह कालिदास का द्वितीय नाटक है। 5 अङ्को का त्रोटक है। पुरुवा और उर्वशी के कथा का वर्णन है। विदूषक माणवक है।

अभिज्ञानशाकुन्तलम्

- शाकुन्तलम् नाटक में कुल 7 अङ्क है।
- शाकुन्तलम् शृंगार रस व वैदर्भी रीति प्रधान ग्रन्थ है।
- उपजीव्य महाभारत के आदिपर्व 69-74 अध्याय से गृहीत है।
- पद्मपुराण के स्वर्गखण्ड में कथा प्राप्त होती है।
- अभिज्ञान- पहचान
- शाकुन्तलम् में दुष्यन्त धीरोदात्त नायक व शाकुन्तला मुग्धा नायिका है।

	अङ्क नाम		अङ्क		श्लोक सं0
1.	आश्रम प्रवेश	-	प्रथम अङ्क	-	34
2.	आश्रम निवेश	-	द्वितीय अङ्क	-	18 (छोटा अङ्क)
3.	मिलन	-	तृतीय अङ्क	-	24
4.	विदाई	-	चतुर्थ अङ्क	-	22
5.	प्रत्याख्यान	-	पञ्चम अङ्क	-	31
6.	पश्चाताप	-	षष्ठ अङ्क	-	32
7.	पुनर्मिलन	-	सप्तम अङ्क	-	35 (बड़ा अङ्क)

- **शाकुन्तलम् के लिए प्रसिद्ध पद्य-**

काव्येषु नाटकं रम्यं तत्र रम्या शकुन्तला।
तत्रापि च चतुर्थोऽङ्कस्तत्र श्लोकचतुष्टयम्॥

अर्थ- काव्य के जितने भी कोटि हैं उनमें नाटक रमणीय होता है। नाटकों मे भी काव्य-सौन्दर्य की दृष्टि से अभिज्ञानशाकुन्तलं रमणीय है। अभिज्ञानशाकुन्तल मेंभी उसका चतुर्थ अंक अत्यन्त रमणीय है, और चतुर्थ अंक में भी चार श्लोक ते बहुत ही रमणीय है।

पुरुष-पात्र परिचय

1. दुष्यन्त - नायक
2. सूत - दुष्यन्त का सारथि
3. रैवतक (भद्रसेन - सेनापति
4. माढ्व्य - विदूषक
5. कण्व (काश्यप) - शकुन्तला के दत्तक पिता
6. मारीच (कश्यप) -
7. सर्वदमन (भरत) - दुष्यन्त व शकुन्तला का पुत्र
8. सोमरात - पुरोहित
9. मातलि - इन्द्र का सारथि
10. वातायन - कञ्चुकी
11. शार्ङ्गरव, शारद्वत, वैखानस, गौतम- शिष्य

स्त्री-पात्र परिचय

1. शकुन्तला - नायिका
2. अनुसूया, प्रियंवदा - शकुन्तला की सखी
3. गौतमी - आश्रम की अध्यक्षा
4. अदिति(दाक्षायणी) - मारीच की पत्नी
5. सानुमती - मेनका की सखी

- शकुन्तला विश्वामित्र (कौशिक) और मेनका की पुत्री थी।

कथानक

- **प्रथम अङ्क**—दुष्यन्त द्वारा शिकार करना, कण्व के आश्रम में प्रवेश और शकुन्तला पर आसक्त होना।
- **द्वितीय अङ्क**—राजा का आश्रम से छावनी आना और सम्पूर्ण सेना को राजधानी भेजना।
- **तृतीय अङ्क**—शकुन्तला का कामावस्था, राजा द्वारा विवाह का प्रस्ताव तथा विघ्न दूर हेतु राजा का आश्रम में प्रस्थान
- **चतुर्थ अङ्क**—गान्धर्व विवाह की सूचना, दुर्वासा द्वारा शकुन्तला को श्राप, कण्व द्वारा शकुन्तलाकी विदाई (शुद्ध विष्कम्भक का प्रयोग)
- **पञ्चम अङ्क**—शकुन्तला का राजदरबार में उपस्थिति श्राप के कारण राजा के द्वारा त्याग, पुनः राजा का खिन्न हृदय व चिन्तामग्न।
- **षष्ठ अङ्क**—शकुन्तला को दी हुई अंगूठी राजा को प्राप्ति, राजा शोक में मूर्च्छित, इन्द्र का सारथि मातलि का आगमन, राजा का स्वर्ग प्रथान। (प्रवेशक का प्रयोग)
- **सप्तम अङ्क**—राजा का दानवों पर विजय, मारीच के आश्रम हेमकूट पर्वत पर राजा को अपने पुत्र व पत्नी शकुन्तला से पुनर्मिलन।
- कथा ग्रीष्म ऋतु से प्रारम्भ होती है और वसन्त ऋतु में समाप्त होती है।
- कण्व का आश्रम मालिनी तट पर था।
- मारीच का आश्रम हेमकूट पर्वत पर था।
- महर्षि कण्व सोमतीर्थ गए थे और शकुन्तला की अंगूठी शचीतीर्थ में गिरी थी

- विलियम जोन्स ने the last thing में कालिदास को शेक्सपियर कहा है।
- शाकुन्तलम् का सर्वप्रथम अंग्रेजी अनुवाद विलियम जोन्स ने किया
- महाकवि गेटे फाडस्ट ने शकुन्तला की प्रशंसा किया है।

मङ्गलाचरण

या सृष्टिः स्त्रष्टुराद्या वहति विधिहुतं या हविर्या च होत्री,
ये द्वे कालं विधत्तः, श्रुतिविषयगुणा या स्थिता व्याप्य विश्वम्।
यामाहुः सर्वबीजप्रकृतिरिति यया प्राणिनः प्राणवन्तः,
प्रत्यक्षाभिः प्रपन्नस्तनुभिरवतु वस्ताभिरष्टाभिरीशः ॥

जल, अग्नि, यजमान, सूर्य, चंद्रमा, आकाश, पृथ्वी तथा वायु रूपी अष्टमूर्तियों से युक्तशिवकी स्तुति किया गया है।

- प्रस्तुत मङ्गलाचरण में स्त्रग्धरा छन्द है।
- प्रस्तुत मङ्गलाचरण मेंआशीर्वादात्मक मंगलाचरण हैं।
- अष्टपदात्मिका पत्रावली नान्दी प्रयोग किया है।

प्रमुख सूक्तियाँ

- **आ परितोषाद् विदुषां न साधु मन्ये प्रयोगविज्ञानम्**-सूत्रधार
  जबतक विद्वान सन्तुष्ट न हो जाएँ, तब तक मैं अपने अभनिय कौशलको सफल नहीं समझता
- **मृगानुसारिणं साक्षात् पश्यामिव पिनाकिनम्**-सारथि
  मृग का पीछा करते हुए साक्षात् शिव को मानो देख रहा है।
- **भवितव्यानां द्वाराणि भवन्ति सर्वत्र**-दुष्यन्त
  भविष्य में होनेवाली घटनाओं के सर्वत्र द्वार (मार्ग) है।
- **इदं किलव्याजमनोहरं वपुस्तपः क्षमं साधयितुं य इच्छति**-दुष्यन्त
  ऋषि कण्व स्वभाव से ही सुन्दर इस शकुन्तला के शरीर को,खेद है, तपस्या योग्य बनाना चाहते है।
- **किमिव हि मधुराणां मण्डनं नाकृतीनाम्** - दुष्यन्त
  सुन्दर आकृतियों के लिए अलङ्कार की आवश्यकता नहीं होती है।
- **सतां हि सन्देहपदेषु वस्तुषु प्रमाणमन्तःकरणप्रवृत्तयः** - दुष्यन्त

संदेहास्पद विषयों सज्जनों के अन्तःकरण की प्रवृत्तियाँ ही प्रमाण होती है।

- **आशङ्कसे यदग्निं तदिदं स्पर्शक्षमं रत्नम्**-दुष्यन्त

  शकुन्तला को देख राजा कहता है- जिसको अग्नि समझ रहा था, वह स्पर्श करने योग्य रत्न है अर्थात् ब्राह्मण कन्या नहीं क्षत्रिय कन्या है,

- **कामं प्रिया न सुलभा मनस्तु तद्?भादर्शनाश्वासि**-दुष्यन्त

  भले ही प्रिया शकुन्तला सुलभ न हो किन्तु मेरा मन उसके प्रेमयुक्त भावों को देखकर सन्तुष्ट है।

- **कामी स्वतां पश्यति**-दुष्यन्त

  कामी व्यक्ति सर्वत्र अपनी ही बात देखता है।

- **अनाघ्रातं पुष्पं किसलयमलूनं कररुहै-**
  रनाविद्धं रत्न मधु नवमनास्वादितरसम्।
  अखण्डं पुण्यानां फलमिव च तद्रूपमनघं
  न जाने भोक्तारं कमिह समुपस्थास्यति विधिः।।

शकुन्तला के सौन्दर्य वर्णन करते हुए राजा कहता है- उसका निष्कलंक सौन्दर्य जो किसी द्वारा अभीतक सूंघा नहीं गया फूल है,वह नाखूनों से न कटा हुआ अक्षत कोंपल है, जो न बिंधा हुआ रत्न है, ऐसा मधु है जिसके रस का आस्वादन ही नहीं किया गया। पुण्यों का अखंडित फल सा है। पता नहीं परमात्मा किसको उसका उपभोक्ता बनाएगा।

- **न तादृशा आकृति विशेषा गुणविरोधिनो भवन्ति** - प्रियंवदा

  प्रियंवदा दुष्यन्त के बारे में कहती है सुन्दर आकृतियाँ गुणों से रहित नहीं होती है।

- **गुणवते कन्यका प्रतिपादनीयेत्ययं तावत् प्रथमः संकल्पः**-अनुसूया

  गुणवान व्यक्ति को ही कन्या देनी चाहिए।

- **इष्टप्रवासजनितान्यबलाजनस्य दुःखानि नूनमतिमात्रसुदुःसहानि** शिष्य

  स्त्रियों को अपने इष्ट व्यक्ति के प्रवास से उत्पन्न दुःख अत्यन्त असह्य होता है।

- **संकल्पितं प्रथममेव मया तवार्थे भर्तारमात्मसदृशं सुकृतैर्गता वयम्** काश्यप

कण्व कहते है मैं तेरे लिए पहले ही संकल्प किया था, और पुण्यों सेतूने अपने सदृशपति कोप्राप्त कर लिया।

- **गुर्वपि विरहदुःखमाशाबन्धःसाहयति** - अनूसूया

  आशा का बन्धन विरह कठोर दुःख को भी सहन करा देता है।

- **न खलु धीमतां कश्चिदविषयो नाम** - शार्ङ्गरव

  विद्वानों के लिए वस्तुतः कोई चीज अज्ञात नहीं होती है।

- **यान्त्येवं गृहिणीपदं युवतयो वामाः कुलस्याधयः** - काश्यप

  स्त्रियाँ गृह लक्ष्मी को प्राप्त होती है, विपरीत चलने वाली कुल के लिए अभिशाप है।

- **अतिस्नेहः पापशङ्की** - दौ सख्यौ

  अत्यधिक प्रेम पाप की आशंका कराता है।

- **अर्थो हि कन्या परकीय एव** - काश्यप

  कन्या वस्तुतः पराई संपत्ति होती है।

- **अनिवर्णनीयं परकलत्रम्** - दुष्यन्त

  पर स्त्री की और ध्यान से देखना उचित नहीं है।

- **उपपन्ना हि दारेषु प्रभुता सर्वतोमुखी** - शारद्वत

  पत्नी पर पति की सभी प्रकार की प्रभुता स्वीकार की गई है।

- **अनार्यः परदारव्यवहारः** - दुष्यन्त

  परस्त्री के बारे में बातें करना अशिष्टता है।

4. विशाखादत्त (400 ई0 के आस पास)

- **मुद्राराक्षसम्**- इसके लेखक विशाखादत्त है। यह 7 अङ्को का राजनीति-विषयक नाटक है। इसमें मुद्रा (अंगूठी) द्वारा राक्षस को वश में करने का वर्णन है अतः इसका नाम मुद्राराक्षस पड़ा। यह एकमात्र ऐसा नाटक है जिसमें नायिका नहीं है, अतः इसको नायिकाविहीन नाटक भी कहते है। वीर रस प्रधान नाटक इसमें नायक चाणक्य व प्रतिनायक राक्षस है।
- विशाखादत्त की द्वितीय कृति देवीचन्द्रगुप्तं है। विशाखादत्त को प्रगतिकार नाटककार कहा जाता है।

5. हर्ष (हर्षदेव, हर्षवर्धन 606-648 ई0)

- **रत्नावली-** रचयिताइसकेहर्ष है। यह 4 अङ्को की नाटिका है। इसमें नायक राजा उदयन वसिंहल देश की राजकुमारी रत्नावली (सागरिका) जो कि नायिका है इस नाटिका की दोनों के प्रणय परिणय का का वर्णन है। शृंगार रस प्रधान नाटिका है।
- **प्रियदर्शिका-** इसकेभी रचयिताहर्षवर्धन है। यह 4 अङ्को की नाटिका है जिसमें उदयन और प्रियदर्शिका के प्रणय का विवेचन किया गया है।
- **नागानन्द-** यह भी हर्षवर्धन प्रणीत है। यह 5 अङ्कों का नाटक है जिसमें जीमूतवाहन और मलयवती शंखचूड़ सर्प को गरुड़ से बचाने की कथा का वर्णन है।

नोट—हर्ष-हर्षवर्धन-हर्षदेव एक ही कवि है किन्तु श्रीहर्ष अलग कवि है जो कि 11वीं शताब्दी में हुए। उनकी एकमात्र रचना नैषधीयचरितम् है।

6. भट्टनारायण (650-675 ई0)

भट्टनारायण को कवीन्द्र, कविमृगेन्द्र, भी कहाँ जाता है।

वेणीसंहारम्- यहभट्टनारायण एकमात्र रचना है। भट्टनारायण गौडी रीति के कवि है।6 अङ्को का यह नाटक वीर रस में निबद्ध है। नायक इसमे भीम है तथा नायिका द्रौपदी है। इसमें भीम के द्वारा वेणी को सवाँरने या बाँधने का वर्णन है, अतः इसका नाम वेणीसंहार पड़ा

7. भवभूति (680-750 ई0)

- भवभूति के पितामह भट्टगोपाल और पिता का नाम नीलकण्ठ था।
- माता का नाम जतुकर्णी था अतः जतुकर्णी पुत्र ऐसा प्रश्न परीक्षाओं आता है।
- **उपाधियाँ-** श्रीकण्ठ पद लाञ्छनः, पदवाक्यप्रमाणज्ञः

  पद- व्याकरण, वाक्य- मीमांसा प्रमाण- न्याय
- एकमात्र कवि भवभूति जिसका प्रिय रस **करुण** है।
- महाकवि भवभूति की 3 रचनायें प्राप्त होती है-

  1. मालतीमाधवं (प्रकरण)
  2. महावीरचरितं (नाटक)

  3. उत्तररामचरितं (नाटक)

- **मालतीमाधवं-** यह काव्यकी कोटि में प्रकरण कोटि अन्तर्गन्त आता है, जिसमें कुल10 अङ्क है। इसमें मालती और माधव तथा मकरन्द और मदयन्तिका के प्रणय और परिणय का वर्णन है। यह भवभूति का प्रथम नाटक है। मालतीमाधवं में विदूषक का अभाव है।
- **महावीरचरितं-** इसमें 7 अङ्को में राम के विवाह से लेकर राम-राज्याभिषेक तक रामायण कथा वर्णित है। इसमें वीर रस प्रधान है। इसमें महावीर पद से भगवान श्रीराम को सम्बोधन किया गया जो की इस नाटक के नायक है।

उत्तररामचरित

- इसके लेखक भवभूति है, काव्य की विधा में 7 अङ्को का नाटक है।
- यह करुण रस प्रधान नाटक व विदूषक रहित नाटक है।
- **उपजीव्य-** वाल्मिकी-रामायण में उत्तरकाण्ड के 42 से 97 अध्याय तक,पद्मपुराण पातालखण्ड 1 से 68 तक वर्णन प्राप्त है।
- राम के राज्याभिषेक से लेकर सीता के पृथ्वी में अंतर्ध्यान होने तक वर्णन।
- वाल्मीकि रामायण में यह कथा दुःखान्त है किन्तु इसमें सुखान्त है।

अङ्क नाम	अङ्क	श्लोक सं0
• चित्रदर्शन	प्रथम अङ्क	51 श्लोक
• पञ्चवटीप्रवेश	द्वितीय अङ्क	30 श्लोक
• छाया अङ्क	तृतीय अङ्क	48 श्लोक
• कौशल्या-जनक मिलन	चतुर्थ अङ्क	21 श्लोक
• कुमार विक्रम	पञ्चम अङ्क	35 श्लोक
• कुमार प्रत्यभिज्ञान	षष्ठ अङ्क	42 श्लोक
• सम्मेलन (गर्भाङ्क)	सप्तम अङ्क	21 श्लोक

- **प्रमुख पात्र-** राम (नायक), सीता (नायिका), गोदावरी, भागीरथी, तमसा, मुरला,वासन्ती (वनदेवता), पृथ्वी, आत्रेयी, वशिष्ठ, कौशल्या,

मुनिबालक सौधातिक, गुप्तचरदुर्मुख, लव, कुश, चन्द्रकेतु, वाल्मीकि, लक्ष्मणभरत, शत्रुघ्न, अष्टावक्र, दण्डायन, सुमन्त्र, अरुन्धती, जनक, कञ्चुकी।

मङ्गलाचरण

इदं कविभ्यः पूर्वेभ्यो नमोवाकं प्रशास्महे।
वन्देमहि च तां वाणीममृतामात्मनः कलाम्।।

- प्रस्तुत मङ्गलाचरण नमस्करात्मक मङ्गलाचरण है।
- प्राचीन कवियों का व वाणी के देवी मङ्गलाचरण किया गया है।

प्रमुख-सूक्तियाँ

• स्त्रीणां तथा वाचां साधुत्वे दुर्जनो जनाः	
• ऋषीणां पुनराद्यानां वाचमर्थोऽनुधावति	राम
• तीर्थोदकं च वह्निश्च नान्यतः शुद्धिमर्हतः	
• रपिग्रावा रोदित्यपि दलति व्रजस्य ह्रदय	लक्ष्मण
• किमस्या न प्रेयो यदि परमसह्यस्तु विरहः	राम
• अद्वैतं सुखदुःखयोरनुगतं सर्वास्वस्थासु यत् विश्रामो ह्रदयस्य यत्र जरसा यस्मिन्नहार्यो रसः	राम
• सतां केनापि कार्येण लोकस्याराधनं परम	राम
• रहस्यं साधूनामनुपधि विशुद्धं विजयते	तापसी (आत्रेयी)
• वितरति गुरु प्राज्ञे विद्यां यथैव तथा जडे	आत्रेयी
• वज्रादपि कठोराणि मृदूनि कुसुमादपि	वासन्ती
• न किंचिदपि कुर्वाणः सौख्यैर्दुःखान्यपोहति	राम
• पुटपाकप्रतीकाशो रामस्य करुणो रसः	मुरला
• प्रियस्पर्शो हि पाणिस्ते तत्रैष निरतो जनः	तमसा
• प्रिया शोको जीवं कुसुमिवघर्मो ग्लपयति	तमसा
• गुणाः पूजास्थानं गुणिषु न च लिङ्ग न च वयः	अरुन्धती
• वीराणां समयो हि दारुणरसः स्नेहक्रमं बाध्यते	कुमारौ
• सा योनि सर्ववैराणां सा हि लोकस्य निष्कृति	लव

• महार्घस्तीर्थानामिव हि महतां कोऽप्यतिशयः	लव
• प्रियानाशे कृत्स्नं किल जगदरण्यं हि भवति	कुश
• हृदयं त्वेव जानाति प्रीतियोगं परस्परम्	कुश

8. अश्वघोष

अश्वघोष प्रथम बौद्ध नाटककार है। इनका समय प्रथम शताब्दी है। इनका ग्रन्थ है 'शारिपुत्रप्रकरण' 9 अङ्को का नाटक है।

9. मुरारि (800ई0)

अनर्घराघव यह सात अङ्को का नाटक है।

10. राजशेखर (10वीं शताब्दी)

- **बालरामायण-** राजशेखर प्रणीत 10 अङ्को का महानाटक है।
- **बालभारत या प्रचण्डपाण्डव-** 2 अङ्क का नाटक, द्रौपदी की चीरहरणकी घटना।
- **विद्धशालभञ्जिका-** यहराजशेखर प्रणीत 4 अङ्को का नाटक है।
- **कर्पूरमंजरी-** यह 4 अङ्को का सट्टक है जिसकी भाषा प्राकृत है।

11. दिङ्नाग

6 अङ्को कुन्दमाला ग्रन्थ का रचना किये जो की उत्तररामचरितं के समान है।

12. कृष्णमिश्र

इनके द्वारा प्रबोधचन्द्रोदय रचा गया जिसमें 6 अङ्क है।

13. जयदेव

प्रसन्नराघव 7 अङ्को में रामायण की कथा का वर्णन है। सीता स्वयंवर से रावणवध तक कथा प्राप्त होती है।

यहाँ तक हमने रुपक के अन्तर्गत प्रमुख प्रमुख नाटककार के नाटक को पढ़ा अब हम पद्य के अन्तर्गत महाकाव्य को देखेंगे।

महाकाव्य

- महाकाव्य श्रव्यकाव्य के अन्तर्गत पद्यकाव्य का भेद है।
- महाकाव्यों में सर्ग होता है, जो कि 8 से अधिक होता है।

- इसमें प्रधान रस श्रृंगार, वीर और शान्त में से कोई एक होता है।
- महाकाव्य में नायक देवता अथवा कुलीन क्षत्रिय वंश का होता है।
- इसमे चतुर्वग- धर्म,अर्थ,काम,मोक्ष किसी एक फल की प्राप्ति का वर्णन होता है।
- ग्रन्थों का नाम कवि या कथानक या प्रतिनायक के नाम पर होना चाहिए।
- प्रत्येक सर्ग में एक छन्द वाले पद्य रहते है, अन्त पद्य में छन्द परिवर्तन हो जाता है।
- सर्ग के अन्त में भावी कथा का संकेत होता है।
- सर्गों का नाम वर्णित कथा के आधार पर रखना चाहिए।
- इसका कथानक ऐतिहासिक होता है या किसी सज्जन व्यक्ति से संबद्ध।
- महाकाव्य में संध्या, सूर्य, चंद्रमा, रात्रि, प्रदोष, अंधकार, गोधूलि, मृगया ऋतु, वन सागर, युद्ध, प्रस्थान, विवाह, मन्त्र, आदि वर्णन होता है।
- महाकाव्य की बात करें तो रामायण और महाभारत का प्रथम नाम आता है।

रामायण

सामान्य परिचय

- रामायण की रचना महाकवि वाल्मीकि के द्वारा किया गया।
- रामायण को आदिकाव्य तथा महर्षि वाल्मीकि को आदिकवि कहा गया है।
- रामायण का काल लगभग 500 ई0पू0 है।
- रामायण करुण रस प्रधान महाकाव्य है।
- रस परिपाक होने के कारण वाल्मीकि को रस-सिद्ध कविश्वर (रससिद्धाः कविश्वराः) कहा जाता है।
- रामायण में अधिकांशतः श्लोक अनुष्टुप छन्द में ही है।
- रामायण में 24000 श्लोक होने के कारण इसका अपर नाम चतुर्विंशतिसाहस्त्री संहिता भी है।
- रामायण काण्डों में विभक्त है अतः इसमे कुल 7 काण्ड है- बाल-अयोध्या-अरण्य-किष्किन्धा-सुन्दर-युद्ध-उत्तरकाण्ड।

काण्ड के कथानक

1. **बालकाण्ड-** (77 सर्ग) दशरथ के पुत्रेष्टि से राम विवाहोपरान्त अयोध्या आगमनतक कथा का वर्णन।
2. **अयोध्याकाण्ड -** (119 सर्ग) राजप्रसाद की घटनाएं तथा राम के राज्याभिषेक से चित्रकूट में भरत द्वारा पादुका लाने तक। कुछ प्रमुख घटनायें-राम का दैव प्रबलता दिखाना और लक्ष्मण का पुरुषकार को बलवान बताना, कौसल्या का स्वस्तिवाचन, जाबालि के नास्तिक मत का खण्डन,अनसूया द्वारा पातिव्रत्य धर्म का उपदेश, चित्रकूट से दण्डकारण्य में प्रवेश । राजा रहित राज्य की दुर्गति का वसिष्ठ द्वारा वर्णन ।
3. **अरण्यकाण्ड -** (75 सर्ग) राक्षसों का वध, सूर्पणखा वृतान्त, सीता हरण जटायु मरण, राम का कबन्ध से भेंट, सुग्रीव से मैत्रेय का परामर्श, शस्त्र धारण की अनिवार्यता पर राम सीता का संवाद, अगस्त्य महिमा, हेमन्त ऋतु का वर्णन, राम का विलाप व क्रोध, पम्पासरोवर का दर्शन।
4. **किष्किन्धाकाण्ड -** (67 सर्ग) वसन्त ऋतु का वर्णन, सुग्रीव मैत्री से सागर लङ्घन तक वर्णन । राम का प्रस्त्रवण गिरि चतुर्मास यापन, वर्षा ऋतु का वर्णन, शरद ऋतु का वर्णन, लक्ष्मण का कोप, सम्पाति कथा
5. **सुन्दरकाण्ड -** (68) सर्ग) हनुमान द्वारा लङ्का पहुचना और वहाँ से वापस आने तक का वर्णन।
6. **युद्धकाण्ड -** (128 सर्ग) - राम रावण के बीच युद्ध तथा अयोध्या आगमन तककथा का वर्णन।
7. **उत्तरकाण्ड -** (111 सर्ग) अगस्त्य ऋषि द्वारा रावण वंश की कथा, नृग वशिष्ठ उर्वशी ययाति का आख्यान, लवणासुर का शत्रुघ्न द्वारा वध, शम्बूक वध, वृत्रासुत्रइला- पुरुरवा के आख्यान और राम का महाप्रस्थान तक कथा का वर्णन।

सबसे बड़ा युद्धकाण्ड व सबसे छोटा काण्ड किष्किन्धाकाण्ड है।

- **रामायण में प्रमुख आख्यान**

  क्रौञ्चवध आख्यानम् (बालकाण्ड - प्रथम सर्ग)

  ऋषिश्रृङ्ग आख्यानम् (बालकाण्ड 10-15 सर्ग)

  गङ्गावतरणाख्यान (बालकाण्ड 35-45 सर्ग)

मरुतानामुत्सख्ख्यानम् (बालकाण्ड 46 - पत्र सर्ज)

अहिल्योद्धारख्यानाम् (बालकाण्ड 49वें सर्ग)

शुनःशेपाख्यानां हरिश्चन्द्रोपाख्यान (62 तमे सर्गे)

नृग- उर्वशी- वसिष्ठ - ययाति आख्यान (उत्तरकाण्ड)

कार्तिकेय-उपाख्यानम्, मैत्रावरुणाख्यानम्,अष्टावक्राख्यानम् , त्रिंशक्वाख्यानम्, मेनकाख्यानम्, पुरुरवाख्यानम् आदि प्रमुख आख्यान वर्णित है।

- **रामायण के टीका-टीकाकार**
- डा0 आफ्रेक्ट रामायण टीका की संख्या 30 मानते है।

टीका	टीकाकार
1.रामानुजीय	- रामानुज कोण्डाडै (सबसे प्राचीन टीका)
2.सर्वार्थसार	- वेंकट कृष्णाध्वरी
3.रामायण- दीपिका	- वैद्यनाथ दीक्षित
4.बृहद् विवरण व लघुविवरण	- ईश्वर दीक्षित
5.तीर्थीय या रामायण तत्वदीपिका	- महेश्वर तीर्थ
6.रामायण भूषण	- गोविन्द राज
7.वाल्मीकि हृदय	- अहोबल
8.अमृत कतक	- माधवयोगी
10.रामायणशिरोमणि	- वंशीधर तथा शिवसहाय
11.रामायण तिलक	- राज़ा राम वर्मा
12.मनोहरा	- लोकनाथ चक्रवर्ती
13.धर्माकूतम्	- त्र्यंबक मखी (आलोचनात्मक व्याख्या)

महर्षि वाल्मीकि द्वारा सर्वप्रथम प्रयोग किया अनुष्टुप छन्द में पद्य जिसकी वजह से उन्हें आदिकवि कहाँ गया-

मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वतीः समाः ।
यत्क्रौञ्चमिथुनादेकमवधीः काममोहितम् ।।

अर्थ- हे निषाद ! तुमको अनंत काल तक (प्रतिष्ठा) शांति न मिले, क्योकि

तुमने प्रेम, प्रणय-क्रिया में लीन असावधान क्रौंच पक्षी के जोड़े में से एक की हत्या कर दी।

रामयाण के कुछ प्रमुख पद्य

सुलभा पुरुषा राजन् सततं प्रियवादिनः।
अप्रियस्य च पथ्यस्य वक्ता श्रोता च दुर्लभः।।

प्रिय वचन बोलने वाले पुरुष सर्वत्र सुलभ होते हैं, परन्तु जो अप्रिय होने पर भी हितकर हो, ऐसी बात कहने वाले और सुनने वाले दोनों ही दुर्लभ हैं।

अकुर्वतोऽपि पापानि शुचयः पापसंश्रयात् ।
परपापैविनस्यन्ति मतस्या नागहृदे यथा।।

जो लोग आचार विचार से शुद्ध हैं तथा पाप या अपराध नहीं करते हैं, वे भी यदि पापियों के संपर्क में चले जाएँ तो दूसरों के पापों से नष्ट हो जाते हैं, जैसे सांप वाले सरोवर में निवास करने वाली मछलियां उस सर्प के साथ ही मारी जाती हैं।

धर्मादर्थः प्रभवति धर्मात् प्रभवते सुखम् ।
धर्मेण लभते सर्वं धर्मसारमिदं जगत् ।।

धर्म से अर्थ प्राप्त होता है, धर्म से सुख का उदय होता है, धर्म से ही मनुष्य सब कुछ प्राप्त कर लेता है, अतः इस संसार में धर्म ही सार है।

ममसनेहाच्च सौहार्ददिदं मुक्तं त्वया वचः।

जो अपना प्रिय ना हो, उसे कोई हितकर सन्देश नहीं देता।

क्रूरेरनार्यै परिहास कथंचन ।

क्रूर कर्म करने वाले अनार्यों से किसी प्रकार का परिहास भी नहीं करना चाहिए।

अनागतविधानं तु कर्तव्यं शुभमिच्छता ।
आपदं शङ्कमानेन पुरुषेण विपश्चिता ।।

अपना कल्याण चाहने वाले विद्वान पुरुष को उचित है की आपत्ति की आशंका होने पर पहले से उससे बचने का उपाय कर ले।

लोभात् पापानि कुर्वाणः कामाद्वा यो न बुध्यते।
भ्रष्टःपश्यति तस्यान्तं ब्राह्मणी कारकादिव ।।

जो वस्तु प्राप्त नहीं हुई है, उसकी इच्छा को 'काम' कहते हैं और प्राप्त हुई वस्तु को अधिक से अधिक संख्या में पाने की इच्छा ही 'लोभ' है। जो काम अथवा लोभ से प्रेरित होकर कर्म करता है और उसके परिणाम को नहीं समझता, उलटे उस पाप में हर्ष का अनुभव करता है, वह उसी प्रकार अपना विनाशरूप परिणाम देखता है जैसे वर्षा के साथ गिरे हुए ओले को खा कर ब्राह्मणी नामवाली कीड़ी (चींटी) अपना विनाश देखती है।

उपकारेण वीरो हि प्रतिकारेण युज्यते ।
अकृतज्ञो प्रतिकृतो हन्ति सत्ववंता मनः।।

जो वीर पुरुष किसी के उपकार से उपकृत होता है, वह प्रत्युपकार करके उसका बदला अवश्य चुकाता है; किन्तु यदि कोई उपकार को न मानकर या भूलकर प्रत्युपकार से मुँह मोड़ लेता है, वह श्रेष्ठ पुरुषों के मन को ठेस पहुंचाता है।

महाभारत

सामान्य परिचय

- महाभारत की रचना महर्षि कृष्णद्वैपायन वेदव्यास के द्वारा किया गया।
- इसमें 1 लाख श्लोक होने से इसको शत-साहस्त्री संहिता भी कहते है।
- इसमें धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष चतुर्वर्ग का वर्णन प्रतिपादित है।
- महाभारत में प्रधान रस 'शान्त' है।
- महाभारत सम्पूर्ण विश्व का सबसे बड़ा इतिहासकाव्य है, इसमें सबकुछ प्राप्त है-

धर्मे चार्थे च कामे च मोक्षे च भरतर्षभ ।
यदिहास्ति तदन्यत्र, यन्नेहास्ति न तत् क्वचित।।

(महा0 आदि0)

- महाभारत की रचना रामायण के बाद हुई।
- महाभारत में 18 पर्व है। 18 पर्वों के नाम कुछ इस प्रकार है-

1. आदिपर्व	2. सभापर्व	3. वनपर्व
4. विराट् पर्व	5. उद्योगपर्व	6. भीष्मपर्व
7. द्रोणपर्व	8. कर्णपर्व	9. शल्यपर्व
10. सौप्तिकपर्व	11.स्त्रीपर्व	12. शान्तिपर्व
13. अनुशासनपर्व	14. आश्वमेधिकपर्व	15. आश्रमवासिक
16. मौसलपर्व	17. महाप्रस्थानिकपर्व	18. स्वर्गारोहणपर्व

महाभारत का विकास का क्रम-

- महाभारत का विकास 3 क्रम में हुआ।
- सर्वप्रथम महाभारत मूलरूप 'जय-काव्य' था इसमें 8800 श्लोक थे।
- दूसरे चरण 'भारत' हुआ जिसमें 24000 श्लोक थे।
- तीसरे चरण में 'महाभारत' हुआ जिसमें 1 लाख श्लोक था।

ग्रन्थ का नाम	कर्ता	श्लोक संख्या	वक्ता-श्रोता
जय	व्यास	8800	वैशम्पायन
भारत	वैशम्पायन	24 सहस्र	वैशम्पायन-जनमेजय
महाभारत	सौति	1 लाख	सौति-शौनकादि

जय- यह महाभारत का मूलरूप था, जो की महर्षि व्यास द्वारा रचा गया। इसमें कुल 8800 श्लोक थे। जय को ही इतिहास कहा गया है। व्यास ने वैशम्पायन को सुनाया। इसमें व्यास जी मङ्गलाचरण किया गया-

नारायणं नमस्कृत्य नरं चैव नरोत्तमम् ।
देवीं सरस्वतीं व्यासं ततो जय मुदीरयेत् ।।

भारत- इसको वैशम्पायन ने जन्मेजय को नागयज्ञ के समय सुनाया। जनमेजय के प्रश्नोंका उत्तर वैशम्पायन जी ने विभिन्न आख्यानों के माध्यम से दिया अतः इसकी श्लोक संख्या बढ़कर 24000 हो गई। जो कि यह महाभारत का द्वितीय अवस्था थीं।

महाभारत- इसको नैमिषारण्य में सौतिऋषि द्वारा शौनकादि ऋषियों को सुनाया और उनकेप्रश्नों का उत्तर विभिन्न उपाख्यानों के माध्यम से दिया, अतः श्लोक संख्या हो गई 1 लाख जो कि आज वर्तमान स्वरूप हैं।

महाभारत की संक्षिप्त कथा-

1. **आदिपर्व -** चन्द्रवंश का इतिहास और कौरव पाण्डवों की उत्पत्ति, शकुन्तला आख्यानजन्मेजय के सर्प यज्ञ की पृष्ठभूमि।
2. **सभापर्व -** द्यूतक्रीडा, जरासन्ध वध, शिशुपाल वध, पाण्डवों का 12

वर्ष का वनवास व1 वर्ष का अज्ञातवास, द्रौपदी का चीरहरण

3. **वनपर्व-** राम आख्यान, इन्द्र का कर्ण से कवच कुण्डल लेना।
4. **विराट् पर्व -** पाण्डवों का अज्ञातवास में रहना, कीचक का भीम द्वारा वध विराट् की पुत्री उत्तरा-अभिमन्यु के साथ विवाह।
5. **उद्योगपर्व -** श्रीकृष्ण द्वारा सन्धि का प्रयत्न, युद्ध की पूर्वपीठिका, अम्बोपाख्यान, दुर्योधन को नारायणी सेना प्राप्त।
6. **भीष्मपर्व -** युद्ध का प्रारम्भ, भीष्म का 10 दिन सेनापति, अर्जुन को गीता काउपदेश,भीष्मका आहत होकर शरशय्या पर पड़ना उत्तरायण की प्रतीक्षा।
7. **द्रोणपर्व -** द्रोणाचार्य का सेनापति 5 दिनों तक युद्ध, संशप्तको का अभिमन्यु, जयद्रथ और द्रोणचार्य का वध, अश्वत्थामा द्वारा नारायणास्त्र प्रयोग, कर्ण शल्य का वाणी युद्ध।
8. **कर्णपर्व -** कर्ण का सेनापति 2 दिन तक युद्ध 16-17वें दिन वध, शल्य का सारथि सेनापति बना।
9. **शल्यपर्व -** शल्य का युद्ध में वध, दुर्योधन का उरुभङ्ग, युद्ध का समापन।
10. **सौप्तिकपर्व -** सोते हुए पाण्डवों के पुत्रों का अश्वत्थामा द्वारा वध।
11. **स्त्रीपर्व -** शोकाकुल स्त्रियों का विलाप,
12. **शान्तिपर्व -** युधिष्ठिर के राजधर्म और मोक्ष-सम्बन्धी सैकड़ों प्रश्नों का द्वारा उत्तर,
13. **अनु-शासनपर्व -** धर्म और नीति की कथाएँ, भीष्म का स्वर्गारोहण,
14. **आश्वमेधिक पर्व -** युधिष्ठिर का अश्वमेध-अनुष्ठान
15. **आश्रमवासिक पर्व -** धृतराष्ट्र आदि का वानप्रस्थ आश्रम में प्रवेश
16. **मौसलपर्व -** यादवों का पारस्परिक संघर्ष से नाश।
17. **महाप्रस्थानिक पर्व -** पाण्डवों की हिमालय-यात्रा
18. **स्वर्गारोहण पर्व -** पाण्डवों का स्वर्गारोहण ।

महाभारत में प्रमुख आख्यान

(क) शकुन्तलोपाख्यान	-	आदिपर्व
(ख) मत्स्योपाख्यान	-	वनपर्व
(ग) शिविपाख्यानन	-	वनपर्व
(घ) सावित्री उपाख्यान	-	वनपर्व
(ङ) नलोपाख्यान	-	वनपर्व
(च) अम्बोपाख्यान	-	उद्योगपर्व

महाभारत में खिल-पर्व हरिवंश पुराण को कहते है जिसमें 3 पर्व है-

1. हरिवंश पर्व
2. विष्णु पर्व (सबसे बड़ा भाग)
3. भविष्य पर्व

} कुल 16374 श्लोक

महाभारत की टीका-टीकाकार

टीका		टीकाकार
• देवबोध	-	ज्ञानदीपिका (प्राचीन टीका)
• वैशम्पायन	-	मोक्षधाम
• विमलबोध	-	विषमश्लोकी (18 पर्वो पर उपलब्ध)
• नारायण सर्वज्ञ	-	भारतार्थप्रकाश
• चतुर्भुज मिश्र	-	भारतोपाय-प्रकाश
• आनन्दपूर्ण	-	जयकौमुदी
• अर्जुन मिश्र	-	भारतसंग्रह दीपिका (हरिवंश पुराण पर भी)
• वादिराज	-	लक्षाभरण
• नीलकण्ठ चतुर्धर	-	भारत भावदीप
• नारायण	-	निगूढार्थ पदबोधिनी

प्रमुख सूक्तियाँ

- अहिंसा परमो धर्मः।
- अशान्तस्य कुतः सुखम्।
- अश्रद्धा परमं पापम्।
- असन्तोष श्रियो मूलम्।
- आशा बलवती राजन्नैराश्यं परमं सुखम्।

महाकाव्य का क्रमगत विकास

1. **पाणिनी (450ई0पू0) -** 'जाम्बवन्ती विजय या पाताल विजय' यह सर्वप्रथम महाकाव्य प्राप्त होता है। इसमें 18 सर्गों श्रीकृष्ण का पाताल में जाकर जाम्बवन्ती के विजय और परिणय की कथा वर्णित है।
2. **वररुचि (350ई0पू0) -** इनको कात्यायन भी कहते है। इन्होंने 'स्वर्गारोहण' नामक काव्य का रचना किया जिसको पतञ्जलि ने 'वाररुचं काव्यम्' कहकर सम्बोधित किया।
3. **पतञ्जलि (150ई0पू0) -** इस क्रम शृंखला में महाभाष्यकार पतञ्जलि जी ने भी एक महाकाव्य का रचना किया जिसका नाम 'महानन्द काव्य' है।
4. **कालिदास (ई0पू0 प्रथम सदी) -** पूर्व में हम पढ़ चुके इनके द्वारा 2 महाकाव्य लिखे गए 1. कुमारसम्भवम् 2. रघुवंशम् इनसे परीक्षा में प्रश्न आते है,तो इसको विस्तृत से देखेंगे।

कुमारसम्भवम्

- इसमें कुल 17 सर्ग है तथा शृंगार रस थधान महाकाव्य है।
- कुमारसम्भवं में कुमार पद का अर्थ- 'कार्तिकेय' है।
- इस महाकाव्य में हिमालय की पुत्री पार्वती द्वारा घोर तपस्या के फलस्वरूप वर रूप में शिव को प्राप्त करने तथा उनसे कार्तिकेय (स्कन्द कुमार) की उत्पत्ति का वर्णन है।
- कुमारसम्भव पर आचार्य मल्लिनाथ कृत् संजीवनी टीका 7 सर्गो तक थाप्त है।
- महाकवि कालिदास की पत्नी विद्योतमा द्वारा का गया पद- 'अस्ति कश्चित वाक् विशेषः' अस्ति पद से प्रथम महाकाव्य कुमारसम्भवं की रचना किया-

मङ्गलाचरण

अस्त्युत्तरस्यां दिशि देवतात्मा हिमालयो नाम नगाधिराजः।
पूर्वापरौ तोयनिधी वगाह्य स्थितः पृथिव्यां इव मानदण्डः ॥

अर्थ- भारतवर्ष के उत्तर दिशा में देवताओं की आत्मा वाला पर्वतों का राजा हिमालय है, जो पूर्व और पश्चिम दोनों समुद्रों का अवगाहन करके पृथ्वी के मापने के दण्ड के समान स्थित है। तात्पर्य यह है कि हिमालय का विस्तार ऐसा है कि वह पूर्व और पश्चिम दोनों दिशाओं के समुद्रों को छू रहा है।

कुमारसम्भव के प्रमुख श्लोक -

- अशोच्या हि पितु कन्या सद्भर्त्रे प्रतिपादिता। 6-79
- उपप्लवाय लोकानां धूमकेतुरिवोत्थित। 2-32
- एको हि दोषो गुणसन्निपाते निमज्जतीन्दोः किरणेष्विवांक। 1-3
- क्रियाणां खलु धर्म्याणां दाम्पत्यं मूलसाधनम्। 6-13
- प्रायेण गृहिणीनेत्राः कन्यार्थेषु कुटुम्बिनः। 6-85
- प्रियेषु सौभाग्यफला हि चारुता। 5-1
- महीतले मानभूतो महान्तः। 12-37
- शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनं 5-33

रघुवंश

- रघुवंश में कुल 19 सर्ग है तथा वीर रस प्रधान है।
- रघुवंश में नायक श्रीराम व नायिका सीता है।
- रघुवंश का उपजीव्य रामायण है।
- रघुवंश का कथानक इतिहास थसिद्ध है।
- आचार्य मल्लिनाथ द्वारा रघुवंश पर सञ्जीवनी टीका लिखा गया।
- इसमें मनु से लेकर सूर्यवंशी 31 राजाओं के जीवन का वर्णन है।
- इनमें दिलीप, रघु, अज, दशरथ, राम के जीवन का विशद वर्णन है।

कथानक

- **सर्ग 1 -** राजा दिलीप की सन्तानहीनता और सन्तान प्राप्त्यर्थ कुलगुरु वसिष्ठ के आदेशानुसार कामधेनु की पुत्री नन्दिनी की सेवा का व्रत लेना।
- **सर्ग 2 -** नन्दिनी की सेवा, राजा की परीक्षा, प्रसन्न नन्दिनी द्वारा सन्तान लाभ कावरदान।
- **सर्ग 3 -** रघु का जन्म, विद्याध्ययन, इन्द्र से युद्ध में विजय प्राप्ति तथा रघु का राज्याभिषेक।
- **सर्ग 4 -** रघु के दिग्विजय का वर्णन।

- **सर्ग 5** - ब्रह्मचारी कौत्स द्वारा गुरुदक्षिणार्थ 14 करोड़ रुपए की याचना, तदर्थ रघु का कुबेर पर आक्रमण, धन-वृष्टि, प्रसन्न कौत्स द्वारा रघु को पुत्र लाभ का आशीर्वाद, फलस्वरूप पुत्र अज का जन्म, इन्दुमती स्वयंवर के लिए अज का प्रस्थान।
- **सर्ग 6** - इन्दुमती - स्वयंवर का वर्णन।
- **सर्ग 7** - अज इन्दुमती परिणय, प्रतिस्पर्धी राजाओं से युद्ध और अज की विजय।
- **सर्ग 8** - अज का राज्याभिषेक, दशरथ-जन्म, इन्दुमती- वियोग और अज का विलाप।
- **सर्ग 9**- दशरथ का मृगया-वर्णन, श्रवणकुमार की हत्या और दशरथ को शाप-प्राप्ति।
- **सर्ग 10** - पुत्रेष्टियज्ञ, राम आदि 4 पुत्रों का जन्म।
- **सर्ग 11** - सीता स्वयंवर और राम आदि का विवाह।
- **सर्ग 12** - राम वनवास, सीता हरण, युद्ध, रावण- वध।
- **सर्ग 13** - राम का पुष्पक विमान से अयोध्या प्रत्यागमन तथा मार्गस्थ स्थलों का विशद वर्णन।
- **सर्ग 14** - राम-राज्याभिषेक, सीता परित्याग।
- **सर्ग 15** - कुश-लव-जन्म, राम का स्वर्गारोहण।
- **सर्ग 16** - कुश का राज्याभिषेक।
- **सर्ग 17** - कुश स्वर्गवास, कुश-पुत्र अतिथि का राज्याभिषेक।
- **सर्ग 18** - अतिथि तथा उसके वंशज 21 राजाओं का संक्षिप्त वर्णन।
- **सर्ग 19** - अग्निवर्ण का राज्याभिषेक, उसकी अत्यधिक विषयाशक्ति, राजयक्ष्मा से पीड़ित होकर, स्वर्गवास, उसकी रानी का राज्याभिषेक, गर्भस्थ बालक के उत्तराधिकारी होने का अमात्यों द्वारा निर्णय ।

मङ्गलाचरण

वागर्थाविव संपृक्तौ वागर्थ प्रतिपत्तये ।
जगतः पितरौ वन्दे पार्वतीपरमेश्वरौ ।।

अर्थात्- वाणी और अर्थ के समान मिले हुए जगत के माता-पिता, शिव-पार्वती की वाणी और अर्थ की प्राप्ति के लिए मैं वन्दना करता हूँ।

- प्रस्तुत श्लोक में नमस्कारात्मक मङ्गलाचरण किया गया है।
- **पितरौ**- माताचपिता च (एकशेष द्वन्द्व समास)
- प्रस्तुत श्लोक अनुष्टुप छन्द व उपमा अलङ्कार है।

रघुवंश के प्रमुख सूक्तियाँ-

- क्व सूर्य थभवो वंशः क्व चाल्प विषया मतिः।
- हेम्नः संलक्ष्यन्ते ह्यग्नौ विशुद्धिः श्यामिकाऽपि वा।
- सहस्त्रगुणमुत्स्त्रष्टुमादत्ते हि रसं रविः।
- सन्ततिः शुद्ध वंश्या हि परत्रेह च शर्मणे।
- प्रतिबध्नाति हि श्रेयः पूज्यपूजाव्यतिक्रमः।
- पदं हि सर्वत्र गुणैर्निधीयते ।
- तेजसा हि न वयः समीक्ष्यते।

5. **अश्वघोष (प्रथम सदी)**- 'बुद्धचरितं महाकाव्य', कवि द्वारा 28 सर्गों में रचना किया किन्तु वर्तमान समय 14 ही सर्ग थाप्त होते है। शान्त रस प्रधान है। इसमें बुद्ध के जीवन के बारे में वर्णन किया गया है।

6. **भारवि (560-615 ई0)-**

- **भारवेः अर्थ गौरवम्**- भारवि को अर्थ गौरव का कवि कहां जाता है।
- भारवि दण्डी के बाबा थे।
- भारवि को मल्लिनाथ द्वारा-**नारिकेल फल संमितं वचो** (नारियल फल जैसे है ऊपर कठोर अन्दर से सरस है) कहाँ गया।
- केवल नकार वर्ण से श्लोक की रचना किया- **न नोननुन्नो नुन्नोनो नाना नानानना ननु।**
- भारवि की एकमात्र रचना प्राप्त होती है, **'किरातार्जुनीयम्'**।
- किरातार्जुनीयम् में 18 सर्ग है तथा वीर रस प्रधान ग्रन्थ है।
- किरातर्जुनीयम् को महाभारत के वनपर्व से लिया गया है।
- किरातर्जुनीयम् पर मल्लिनाथ की प्रसिद्ध टीका प्राप्त होती है- **घण्टापथ**
- किरातर्जुनीयम् के थथम 3 सर्ग को पाषाणत्रय कहा जाता है।
- किरातर्जुनीयम्- किरातश्च अर्जुनश्च द्वन्द समास छ प्रत्यय- **छस्य ईस्य आदेशः किरातर्जुनीयम्**

- किरातर्जुनीयम् में नायक अर्जुन नायिका द्रौपदी इसमें अर्जुन द्वारा हिमालय पर्वत पर जाकर तपस्या करना, किरातवेषधारी शिव से युद्ध और प्रसन्न शिव से पाशुपतास्त्र की प्राप्ति।

मङ्गलाचरण

श्रियः कुरुणामधिपस्य पालनीं प्रजासु वृत्तिं यमयुङ्क्त वेदितुम्।
स वर्णलिङ्गि विदितः समाययौ युधिष्ठिरं द्वैतवने वनेचरः॥

- प्रस्तुत मङ्गलाचरण भगवती लक्ष्मी की गई है।
- यह वस्तुनिर्देशात्मक मङ्गलाचरण है।
- मङ्गलाचरण में वंशस्थ, छन्द अनुप्रास अलङ्कार है।

किरातर्जुनीयम् के प्रसिद्ध पद्य-

- हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः।
- वरं विरोधोऽपि समं महात्मभिः।
- अहो दुरन्ता बलवद्विरोधिता।
- सहसा विदधीत न क्रियाम् ।
- वसन्ति हि प्रेम्णि गुणा न वस्तुनि।
- स्फुटता न पदैरपाकृता न च न स्वीकृतमर्थगौरवम्।
- न हि प्रवक्तुमिच्छन्ति मृषा हितैषिणः।
- न वञ्चनीया प्रभवोनुजीविभिः।
- व्रजन्ति ते मूढधियः पराभवं भवन्ति मायाविषु ये न मायिनः।
- विचित्ररूपा खलु चित्तवृत्तयः।
- पराभवोऽप्युत्सव एव मानिनाम् ।
- शमेन सिद्धिं मुनयो न भुभृतः।
- निराश्रया हन्त हता मनस्विता ।
- अरिषु हि विजयार्थिनः क्षीतिशा विदधति सोऽपधिसन्धिदूषणानि।
- मित्र लाभमनु लाभ सम्पदः ।
- अबन्ध्यकोपस्य विहन्तुरापदां भवन्ति वश्याः स्वयमेव देहिनः।
- सुलभा रम्यता लोके दुर्लभं हि गुणार्जनम्।

7. **भट्टि कवि (600-ई0)** - महाकवि भट्टि द्वारा भट्टिकाव्य या रावणवधं की रचना किया गया जो कि रामायण की सम्पूर्ण कथा पर आश्रित 22 सर्ग का महाकाव्य है।

8. **माघ (675 ई0)-**

- **काव्येषु माघः कवि कालिदासः**- काव्यों में माघ और कवियों में कालिदास
- **तावद् भारवेर्भाति यावन्माघस्य नोदयः**- भारवि तबतक ही भासित हो रहे थे, जबतक कि माघ नहीं आए थे।
- माघ प्रणीत शिशुपालवधं ग्रन्थ है।
- शिशुपालवधं में 20 सर्ग है तथा प्रधान रस वीर है।
- शिशुपालवधं का उपजीव्य महाभारत के सभापर्व के 33-45 अध्याय से ग्रहीत है।
- शिशुपालवधं की कथा श्रीमद्भागवत महापुराण दशम स्कन्ध 71-75 अध्याय।
- शिशुपालवधं का वर्णन- पद्मपुराण, विष्णुपुराण, अग्निपुराण, ब्रह्मवैवर्तपुराण में है।
- शिशुपालवधं में नायक श्रीकृष्ण व नायिका रुक्मिणी (सत्यभामा) है।
- शिशुपालवधं का अन्यनाम 'श्रयङ्कमहाकाव्यम् अथवा श्रीपदाङ्कमहाकाव्य' है।
- शिशुपालवधं पर आचार्य मल्लिनाथ की टीका का नाम-'सर्वाङ्कषा' है।
- मेघे माघे गतं वयः- मल्लिनाथ
- शिशुपालवधं शिशुपाल के तीन जन्मों कथा का वर्णन है-

  1. हिरण्यकश्यपु,
  2. रावण,
  3. शिशुपाल

- शिशुपालवधं में कुछ प्रसिद्ध वर्णन थाप्त होते है जो परीक्षा की दृष्टि से महत्वपूर्ण है-
  - षष्ठ सर्ग - षड् ऋतु वर्णन
  - चतुर्थ सर्ग - रैवतक पर्वत वर्णन (घण्टामाघ की उपाधि मिली)

- एकादश सर्ग - प्रभात वर्णन
- द्वादश सर्ग - यमुना वर्णन

मङ्गलाचरण

श्रियः पतिः श्रीमति शासितुं जगज्जगन्निवासो वसुदेवसद्मनि।
वसन् ददर्शावतरन्तमम्बराद् हिरण्यगर्भाङ्गभुवं मुनिं हरिः ॥

- प्रस्तुत श्लोक में मङ्गलाचरण भगवान श्रीकृष्ण का किया गया है।
- यह वस्तुनिर्देशात्मक मङ्गलाचरण है।
- मङ्गलाचरण में वंशस्थ, छन्द अनुप्रास अलङ्कार है।

शिशुपालवधम् के प्रसिद्ध पद्य

- गृहानुपैतुं थणयादभीप्सवो भवन्ति नापुण्यकृतां मनीषिणः (1 /14)
- मुहुर्महानुभावा हि नितान्तमर्थिनः (1/17)
- श्रेयसि केन तृप्यते (1/29)
- ऋते रवेः क्षालयितुं क्षमेत कः क्षपातमस्काण्डमलीमसं नभः (1/38)
- सदाभिमानैकधना हि मानिनः (1/67)
- ज्ञातसारोऽपि खल्वेकः सन्दिग्धे कार्यवस्तुनि (2/12)
- महीयांसः थकृत्या मितभाषिणः (2/13)
- क्रियासमभिहारेण विराध्यन्तं क्षमेत कः (2/43)
- सर्वः स्वार्थं समीहते (2/65)
- नान्यस्य गन्धमपि मानभृतः सहन्ते (5/42)
- शास्त्रं हि निश्चितधियां क्व न सिद्धिमेति (5/47)
- मन्दोऽपि नाम न महानवगृह्य साध्यः (5/46)
- समय एव करोति बलाबलम् (6/44)
- परिभवोऽरिभवो हि सुदुःसहः (6/45)
- भवति महत्सु न निष्फलः प्रयासः (7/1)
- क्षणे क्षणे यन्नवतामुपैति तदेव रूपं रमणीयतायाः (4/17)
- क्षत सकल विपक्षस्तेजसः स स्वभावः (11/56)
- हरत्यघं सम्प्रति हेतुरेष्यतः, शुभस्य पूर्वाचरितैः कृतं शुभैः ।

शरीरभाजां भवदीयदर्शनं व्यनक्ति कालतत्रितयेऽपि योग्यताम्।।(1/26).

- सतीव योषित्? प्रकृतिः सुनिश्चिता पुमांसमभ्येति भवान्तरेष्वपि (1/72)
- निपातनीया हि सतामसाधवः

9. **श्री हर्ष (1150-1200ई0)-**

- श्री हर्ष की कृति नैषधीयचरितम् है।
- नैषधीयचरितं में 22 सर्ग है व शृंगार रस प्रधान ग्रन्थ है।
- नैषधीयचरितं में नायक राजा नल व नायिका दमयन्ती है।
- **नैषधं विद्वदौषधम्-** नैषध विद्वानों के लिए 'टॉनिक' है।
- **तावद् भा भारवेर्भाति, यावन्माघस्य नोदयः।**
  उदिते नैषधे काव्ये, क्व माघः क्व च भारविः॥
- नैषधीयचरितं में नल- दमयन्ती के प्रणय से लेकर परिणय का साङ्गोपाङ्गवर्णन है।

मङ्गलाचरण

निपीय यस्य क्षितिरक्षिणः कथास्तथाद्रियन्ते न बुधाः सुधामपि।
नलः सितच्छत्रितकीर्तिमण्डलः, स राशिरासीन्महसां महोज्ज्वलः॥

- प्रस्तुत श्लोक में वस्तुनिर्देशात्मक मङ्गलाचरण है।
- मङ्गलाचरण में वंशस्थ छन्द व व्यतिरेक अलंकार है।

नैषधीयचरितं प्रमुख पद्य—

- रसैः कथा यस्य सुधावधीरणी
- क्व भोगमाप्नोति न भाग्यभागजनः
- त्यजन्त्यमूञ्शर्म च मानिनो वरं त्यजन्ति न त्वेकमयाचितव्रतम्
- कथाप्रसङ्गेषु मिथः सखीमुखात्तृणेऽपि तन्व्या नलनामनि श्रुते- यहाँ नल का अर्थतृण (घास) है।
- मदेकपुत्राजननी जरातुरा नवप्रसूतिर्वरटा तपस्विनी
- फलेन मूलेन च वारिभूरुहां मुनेरिवेत्थं मम यस्य वृत्तयः ।

खण्डकाव्य

- खण्डकाव्य, महाकाव्य के एक भागका अनुसरण करता है।

- आचार्य विश्वनाथ अपने ग्रन्थ साहित्यदर्पण में खण्डकाव्य का लक्षण लिखते है-

खण्डकाव्यं भवेत्काव्यस्यैकदेशानुसारि च।

- महाकवि कालिदास का मेघदूतम् खण्डकाव्य के रूप में अति प्रसिद्ध है।

मेघदूतम्

- लेखक महाकवि कालिदास है।
- इसको गीतिकाव्य भी कहा जाता है।
- मेघदूत 2 भागों विभक्त है- 1. पूर्वमेघ 2. उत्तरमेघ।
- मेघदूत में विप्रलम्भ शृंगार रस है व वैदर्भी रीति है।
- सम्पूर्ण मेघदूतं में मन्दक्रान्ता छन्द है।
- उपजीव्य ब्रह्मवैवर्त पुराण एवं दूत की कल्पना वाल्मीकि रामायण से है।
- मेघदूतं पर आचार्य मल्लिनाथ की 'सञ्जीवनी' टीका है।
- नायक यक्ष (हेममाली), नायिका यक्षिणी (विशालाक्षी)
- सम्पूर्ण मेघदूतं में कुल 121 श्लोक है।

मङ्गलाचरण

कश्चित् कान्ताविरहगुरुणा स्वाधिकारात् प्रमत्तः
शापेनास्तङ्गमितमहिमा वर्षभोग्येण भर्तुः।
यक्षश्चक्रे जनकतनयास्नानपुण्योदकेषु
स्निग्धच्छायातरुषु वसतिं रामगिर्याश्रमेषु ।।

- वस्तुत श्लोक में वस्तुनिर्देशात्मक मङ्गलाचरण किया गया है।
- मङ्गलाचरण में मन्दक्रान्ता छन्द का प्रयोग हुआ है।

पूर्व-मेघ की प्रमुख सूक्तियाँ—

- कामार्ता हि प्रकृतिकृपणाश्चेतनाचेतनेषु।
- याञ्चा मोघा वरमधिगुणे नाधमे लब्धकामा।
- आशाबन्धः कुसुमसदृशं प्रायशो ह्यङ्गनानाम्।
- सद्यः पाति प्रणयि हृदयं विप्रयोगे रुणद्धि।
- प्राप्ते मित्रे भवति विमुखः किं पुनर्यस्तथोच्चैः (आम्रकूट वर्णन)

- मध्ये श्यामःस्तन इव भुवः शेषविस्तारपाण्डुः (आम्रकूट वर्णन)
- रिक्तः सर्वो भवति हि लघु पूर्णता गौरवाय (रेवा नदी)
- स्त्रीणामाद्यं प्रणयवचनं विभ्रमो हि प्रियेषु (निर्विन्ध्या)
- कार्श्यं येन त्यजति विधिना स त्वयैवोपपाद्यः (सिन्धु)
- स्तोयक्रीडानिरतयुवतिस्नानतिक्तैर्मरुद्भिः (गन्धवती)
- मन्दायते न खलु सुहृदामभ्युपेतार्थकृत्याः
- ज्ञातास्वादो विवृतजघनांको विहातुं समर्थः (गम्भीरा)
- आपन्नार्ति थशमनफलाः सम्पदो ह्युत्तमानाम्
- के वा न स्युः परिभवपदं निष्फलारम्भयत्नः

उत्तर-मेघ की प्रमुख सूक्तियाँ—

- सूर्यापाये न खलु कमलं पुष्यति स्वामभिख्याम्
- प्रायेणेते रमणविरहेष्वङ्गनानां विनोदाः।
- साभ्रेऽह्नीव स्थलकमलिनीं न थबुद्धां न सुप्ताम्।
- प्रायः सर्वो भवति करुणावृत्तिरार्द्रान्तरात्मा।
- कान्तोदन्तः सुहृदुपनतः संगमात् किञ्चिदून
- पूर्वाभाष्यं सुलभविपदां प्राणिनामेतदेव।
- कस्यात्यन्तं सुखमुपनतं दुःखमेकान्ततो वा।
- नीचैर्गच्छत्युपरि च दशा चक्रनेमिक्रमेण।
- प्रत्युक्तं हि प्रणयिषु सतामीप्सितार्थ क्रियैव।
- मा भूदेवं क्षणमपि च ते विद्युता विप्रयोगः।

गद्यकाव्य

- **वृत्तगन्धोज्झितं गद्यं-** छन्दके बन्धसे रहित पदसमूह को 'गद्य' कहते है।
- गद्य के विभिन्न प्रकार है-

  1. मुक्तक - समास रहित

  2. वृत्तिगन्धि - जहा गद्य में छन्द के अंश हो

  3. उत्कलिकाप्राय - लम्बे समास

  4. चूर्णक- अल्प समास से युक्त,

- गद्य के मुख्यतः दो भेद है- 1. कथा 2.आख्यायिका

प्रमुख गद्यकार

1. दण्डी (600ई0)
2. दशकुमारचरितं - 8 उच्छवास - आख्यायिका
3. काव्यदर्श - 3 परिच्छेद
4. अवन्तिसुन्दर कथा
5. छन्दोविचित

2. सुबन्धु (600ई0)

वासवदत्ता- इसको प्रत्यक्षर श्लेषघन कथा कहते है।

3. बाणभट्ट (606-647 ई0)

1. **कादम्बरी-** यह कथा के कोटि के अन्तर्गत आता है। इसमें चन्द्रापीड धीरोदात्त नायक है,और मुग्धा नायिका कादम्बरी है। करुण रस थधान काव्य है। इसमें चन्द्रापीड के तीन जन्मों के कथा वर्णन किया गया है।
2. **हर्षचरितं-** यह आख्यायिका कोटि के अन्तर्गत आता है। इसमें कुल 8 उच्छवास है।

4. अम्बिकादत्त व्यास (1870 ई0)

- शिवराजविजयं- यह संस्कृत वाङ्मय का प्रथम ऐतिहासिक उपन्यास है। वीर रस प्रधान इतिहास प्रसिद्ध ग्रन्थ है। इसमें 3 विराम और 12 निःश्वास है। इसमे नायक वीर शिवाजी और कथानक वीर शिवाजी का जीवन चरित है। यह पाञ्चाली रीति में निबद्ध है।

चम्पूकाव्य

- जिसमें गद्य और पद्य दोनों का वर्णन रहे उसको चम्पूकाव्य कहते है। **गद्यपद्यमयं काव्यं चम्पूरित्यभिधीयते।**
- विभिन्न कवियों ने चम्पूकाव्य की रचना किया जिसमें प्रमुख चम्पूकार है-

1. जीवन्धर चम्पू - हरिश्चन्द्र
2. यशस्तिलक चम्पू - सोमदेव

3. रामायण चम्पू - महाकवि भोज
4. भारत चम्पू - अनन्तभट्ट
5. वरदाम्बिकापरिणय चम्पू - तिरुमलाम्बा कर्णपूर
6. उदयसुन्दरी कथा - सोड्ढल
7. मदालसचम्पू - त्रिविक्रम भट्ट

नलचम्पू- इसके लेखक महाकवि त्रिविक्रम भट्ट है; जिनका काल दशम शताब्दी है। यह 7 उच्छवासों में विभक्त है। इसका कथानक महाभारत के वनपर्व के नलोपाख्यान से ग्रहण किया है। इसमें राजा नल व दमयन्ती के कथा का वर्णन है जो की इस काव्य के नायक, नायिका भी है।

मङ्गलाचरण

जयति गिरिसुतायाः कामसन्तापवाहि-
न्युरसि रसनिषेकश्चान्दनश्चन्द्रमौलिः ।
तदनु च विजयन्ते कीर्तिभाजां कवीना-
मसकृदमृतबिन्दुस्यन्दिनो वाग्विलासाः ।।

- प्रस्तुत श्लोक में नमस्कारात्मक व वस्तुनिर्देशात्मक मङ्गलाचरण किया गया है।
- प्रस्तुत श्लोक में मालिनी छन्द व श्लेष अलङ्कार है।
- प्रस्तुत श्लोक में एक पक्ष में शिव पार्वती व दूसरे पक्ष में नल दमयन्ती का मङ्गलाचरण किया गया है।

लोककथा व नीतिग्रन्थ

- **पञ्चतन्त्र-** पञ्चतन्त्र के लेखक विष्णुशर्मा है, इनका काल 300 ई0पू0 है।उपजीव्य इसका ऋग्वेद व छान्दोग्य उपनिषद् है। यह एक नीतिकथा है जो कि 5 तन्त्रों में विभाजित है। इसमे 6 मुख्य कथा और 9 उपकथाएँ है।

तन्त्र	तन्त्रनाम	कथा
प्रथम	मित्रभेद	शेर व बैल की कथा
द्वितीय	मित्रसंप्राप्ति	काक, कूर्म, मृग, चूहे की मित्रता

तृतीय	काकोलूकीय	कौवा व उल्लू की कथा
चतुर्थ	लब्धप्रणाश	बन्दर व मगर की कथा
पञ्चम	अपरीक्षितकारक	ब्राह्मणी व नेवले की कथा

हितोपदेश- हितोपदेश के लेखक नारायण पण्डित है। इस ग्रन्थ का रचना का आधार पञ्चतन्त्र है। यह भी एक नीतिकथा है। हितोपदेश चार भागों में विभक्त है-

1. **मित्रलाभ -** काक-कूर्म-मृग-मूषक की कथा
2. **सुहृदभेद -** सिंह और वृष की मैत्री श्रृगाल द्वारा तोड़े जाने की
3. **विग्रह -** हंसो मयूरों के युद्ध की कथा
4. **सन्धि -** हंसो तथा मयूरों के बीच गीध और चकवे की मैत्री कथा।

- **नीतिशतकम् -** नीतिशतकं के लेखक भर्तृहरि है। यह एक प्रकार का मुक्तक काव्य है। इसमे कुल 111 श्लोक व 11 पद्धति है।

अन्य लोककथा एवं नीतिकथा

1. बृहत्कथा - गुणाढ्य (पैशाची भाषा में है)
2. बृहत्कथामञ्जरी - क्षेमेन्द्र - 19 लम्बक
3. कथासरित्सागर - सोमदेव - 18 लम्बक
4. वेतालपञ्चविंशति - बृहत्कथा का कश्मीरी संस्करण

।: यूनिट-10 इति :।

परिशिष्ट ग्रन्थ एवं ग्रन्थकार

परिशिष्ट वेद सम्बन्धित

वेद	शाखा	ब्राह्मण	आरण्यक	उपवेद
ऋग्वेद	शाकल,वाष्कल	एतेरेय, कौषितकी	एतेरेय, कौषितकी	आयुर्वेद
शुक्ल-यजुर्वेद	माध्यन्दिनीय (वाजसनेयी), काण्व शाखा	शतपथ	बृहदारण्यक	धनुर्वेद
कृष्ण-यजुर्वेद	कठ,कपिष्ठल, तैत्तिरीय,मैत्रीयणी	शतपथ	तैत्तिरीय	धनुर्वेद
सामवेद	कौथुम, राणायनीय, जैमिनीय	ताण्ड्य, षड्विंश, मन्त्र,उपनिषद्	-	गान्धर्ववेद
अर्थर्ववेद	शौनक,पैपलाद्	गोपथ	-	इतिहास, सर्प,पिशाच असुर,थापत्य वेद

वेद	ऋत्विक्	आचार्य	देवता
ऋग्वेद	होता	पैल	अग्नि
यजुर्वेद	अध्वर्यु	वैशम्पायन	वायु
सामवेद	उद्गाता	जैमिनी	सूर्य
अथर्ववेद	ब्रह्मा	सुमन्तु	सोम

वेद	अध्याय	मन्त्र
ऋग्वेद	10 मण्डल	10885
शुक्ल-यजुर्वेद	40 अध्याय	1975
सामवेद	पूर्वार्चिक-उत्तरार्चिक	1875
अथर्ववेद	20 काण्ड	5975

	काव्यशास्त्र	कर्ता	अध्याय संख्या	काल
1.	नाट्यशास्त्र	भरत मुनि	16 अध्याय	ई0पू0 द्वितीय सदी
2.	काव्यलङ्कार	भामह	6 परिच्छेद	सप्तम शताब्दी
3.	काव्यादर्श	दण्डी	3 परिच्छेद	सप्तम शताब्दी
4.	काव्यालंकारसारसंग्रह	उद्भट	6 वर्ग	800 ई0 लगभग
5.	काव्यालंकार सूत्र	वामन	5 अधिकरण/12अ0	8वीं शताब्दी
6.	काव्यालङ्कार	रुद्रट	16 अध्याय	840 ई0
7.	ध्वन्यालोक	आनन्दवर्धन	4 उद्योत	840 ई0
8.	(क) ध्वन्यालोक पर लोचन टीका	अभिनवगुप्त	-	11वीं शताब्दी
	(ख) नाट्यशास्त्र पर अभिनव टीका	अभिनवगुप्त	-	11वीं शताब्दी
	(ग) काव्यकौतुक पर विवरण टीका,	अभिनवगुप्त अभिनवगुप्त	-	11वीं शताब्दी दशम शताब्दी
9.	काव्यमीमांसा	राजशेखर	-	दशम शताब्दी
10.	अभिधामात्रवृत्तिका	मुकुलभट्ट	18 अध्याय	960-990 ई0
11.	काव्यकौतुकम्	भट्टतौत	15 कारिकाएं	900-1000 मध्य
12.	हृदयदर्पण	भट्टनायक	-	1055 ई0
13.	वक्रोक्तिजीवितं	कुन्तक	-	1000 ई0 लगभग
14.	दशरुपक	धनञ्जय	4 उन्मेष 6प्रकाश	1000 ई0 लगभग
15.	दशरुपक पर अवलोक टीका	धनिक	- -	
16.	व्यक्तिविवेक	महिमभट्ट	3 विमर्श	1025 ई0
17.	सरस्वतीकण्ठाभरण	राजाभोज	5 परिच्छेद	996-1051 के मध्य
18.	श्रृंगारप्रकाश	राजाभोज	36अध्याय	1025-80 के मध्य
19.	औचित्यविचारचर्चा	क्षेमेन्द्र	39 कारिकाएँ	1025 -80 ई
20.	कविकण्ठाभरण	क्षेमेन्द्र	5 सन्धियाँ	1050ई
21.	काव्यप्रकाश	मम्मट	10 उल्लास	12शतक
22.	अलंकार सर्वस्व	रुय्यक	88 सूत्र	1140 ई 0
23.	वाग्भट्टाऽलंकार	वाग्भट्ट	5 परिच्छेद	1088 ई0

24.	काव्यानुशासन	हेमचन्द्रसूरि	8 अध्याय	1300 ई0
25.	चन्द्रालोक	जयदेव	10 मयूख	12 शतक
26.	एकावली	विद्याधर	8 उन्मेष	14 वीं शताब्दी
27.	प्रतापरुद्रीय	विद्यानाथ	8 प्रकरण	14 वीं शताब्दी
28.	काव्यानुशासन	वाग्भट्ट	5 अध्याय	14 वीं शताब्दी
29.	साहित्यदर्पण	विश्वनाथ	10 परिच्छेद	14 वीं शताब्दी
30.	रसतरङ्गिणी	भानुदत्त	8 तरंग	1520 ई0
31.	उज्ज्वलनीलमणि	रूपगोस्वामी	-	16 वीं शताब्दी
32.	अलङ्कारशेखर	केशव मिश्र	8 रत्न	1520-1598 मध्य
33.	वृत्तिवातिक	अप्पय दीक्षित	-	1620-1660ई0
34.	रसगङ्गाधर	पण्डितराज जगन्नाथ	4 आनन	1524 ई0
35.	अलङ्कार कौस्तुभ	कर्णपूर	-	18वीं ई0
36.	अलङ्कार कौस्तुभ	विश्वेश्वर पर्वतीय	-	1250-1350
37.	अलङ्कार रत्नाकर	शोभाकर मिश्र	-	1703 ई0
38.	काव्यविलास	चिरञ्जीव भट्टाचार्य	-	1938-68 ई0
39.	वृत्तालङ्कार	छविलाल सूरि	-	

महाकाव्य	लेखक	सर्ग
1. जाम्बवन्ती/पाताल विजय	पाणिनी	18 सर्ग
2. स्वर्गारोहण	कात्यायन (वररुचि)	-
3. महानन्द काव्य	पतञ्जलि	-
4. कुमारसम्भव	कालिदास	17 (8 सर्ग)
5. रघुवंश	कालिदास	19 सर्ग
6. किरातार्जुनीयम्	भारवि	18 सर्ग
7. शिशुपालवधम्	माघ	20 सर्ग
8. बुद्धचरितम्	अश्वघोष	28 सर्ग
9. सौदरनन्द	अश्वघोष	18 सर्ग
10. नैषधीयचरितम्	श्री हर्ष	22 सर्ग

11. भट्टिकाव्यं (रावणवधं)	भट्टि	22 सर्ग
12. जानकीहरणम्	कुमारदास	15-25 सर्ग
13. हरविजयम्	रत्नाकर	50 सर्ग
14. कप्फिणाभ्युदय	शिवस्वामी	20 सर्ग
15. श्रीकण्ठचरितम्	मङ्खक	25 सर्ग
16. राघवपाण्डवीयम्	कविराज (माधवभट्ट)	13 सर्ग
17. यादवाभ्युदय	वेदान्तदेशिक	24 सर्ग
18. धर्माशर्माभ्युदय	हरिश्चन्द्र	21 सर्ग
19. सेतुबन्ध	प्रवरसेन	15 आश्वास
20. नवसाहसाङ्कचरितम्	पद्मगुप्त	18 सर्ग
21. राजतरङ्गिणी	कल्हण	8 तरङ्ग
22. कुमारपालचरित	हेमचन्द्र	28 सर्ग
23. विकमाङ्कदेवचरितम्	बिल्हण	-
24. वराङ्गचरितम्	जयासिंहनन्दी	-
25. सोमपाल विलास	जल्हण	-
26. कीर्तिकौमुदी	सोमेश्वरदेव	-
27. हम्मीर महाकाव्य	नयनचन्द्र	-
28. प्रयाग-प्रशस्ति	हरिषेण	-
29. गउडवहो	वाक्पति	-
30. कीचकवध	नीतिवर्मा	-
31. रामचरितम्	अभिनन्द	-

अन्य महाकव्य	लेखक
1. त्रिपुरदहन	वासुदेव
2. हरविलास	लोलिम्बराज
3. पारिजातहरण	कर्णपूर, नारायण

4. बालभारत	अमरचन्द्र, अगस्त्य
5. नलाभ्युदय	बाण
6. प्रतापविजय	मथुराप्रसाद
7. बोधिसत्व	डा0 सत्यव्रत शास्त्री
8. गुरूगोविन्दसिंह महाकाव्य	डा0 सत्यव्रत शास्त्री
9. हयग्रीव वध	भर्तृमेठ
10. कादम्बरीसार	अभिनन्द
11. रामायणमञ्जरी	क्षेमेन्द्र
12. भारतमञ्जरी	क्षेमेन्द्र
13. जातकमाला	आर्यशूर
14. सीताचरितम्	डा0 रेवाप्रसाद द्विवेदी
15. जानकीजीवनम्	डा0 अभिराज राजेन्द्र मिश्र
16. स्वराज्य विजयम्	द्विजेन्द्रनाथ शास्त्री
17. सत्याग्रहीता	पण्डिता क्षमाराव

व्याकरण	लेखक
अष्टाध्यायी	पाणिनी
महाभाष्य	पतञ्जलि
वाक्यपदीयम् , महाभाष्य पर दीपिका टीका	भर्तृहरि
सिद्धान्तकौमुदी, प्रौढ़मनोरमा, शब्दकौस्तुभ	भट्टोजिदीक्षित
लघुसिद्धान्त, मध्यसिद्धान्त	वरदराजाचार्य
लघु, परम-मञ्जूषा। लघुशब्देन्दु, परिभाषेन्दु-शेखरस्फोटवाद,	नागेश भट्ट
वैयाकरण भूषणसार	कौण्डभट्ट
वामन जयादित्य	अष्टाध्यायी पर काशिकावृत्ति
कात्यायन (वररुचि)	वार्तिककार

नाटक	लेखक	अङ्क
1. प्रतिज्ञायौगन्धरायण	भास	4 अङ्क
2. स्वप्नवासदत्तम्	भास	6 अङ्क
3. प्रतिमानाटक	भास	7 अङ्क
4. अभिषेक नाटक	भास	6 अङ्क
5. पञ्चरात्रम्	भास	3 अङ्क
6. बालचरितम्	भास	5 अङ्क
7. अविमारकम्	भास	6 अङ्क
8. चारुदत्तम्	भास	4 अङ्क
9. कर्णभारम्	भास	1 अङ्क
10. मध्यमव्यायोग	भास	1 अङ्क
11. उरुभङ्गम्	भास	1 अङ्क
12. दूतघटोत्कचम्	भास	1 अङ्क
13. दूतवाक्यम्	भास	1 अङ्क
14. मृच्छकटिकम्(प्रकरण)	शूद्रक	10 अङ्क
15. मालविकाग्निमित्रम्	कालिदास	5 अङ्क
16. विक्रमोर्वशीयम्	कालिदास	5 अङ्क
17. अभिज्ञानशाकुन्तलम्	कालिदास	7 अङ्क
18. मुद्राराक्षसम्	विशाखदत्त	7 अङ्क
19. देवीचन्द्रगुप्त	विशाखदत्त	-
20. प्रियदर्शिका	हर्षवर्धन	4 अङ्क
21. रत्नावली	हर्षवर्धन	4 अङ्क
22. नागानन्द	हर्षवर्धन	5 अङ्क
23. वेणीसंहार	भट्टनारायण	6 अङ्क
24. मालतीमाधव	भवभूति	10 प्रकरण

25. महावीरचरितम्	भवभूति	7 अङ्क
26. उत्तररामचरितम्	भवभूति	7 अङ्क
27. शारिपुत्रप्रकरण	अश्वघोष	9 अङ्क
28. अनर्घराघवम्	मुरारि	7 अङ्क
29. बालरामायण	राजशेखर	10 अङ्क
30. बालभारत/प्रचण्डपाण्डव	राजशेखर	2 अङ्क
31. विद्धशालभञ्जिका	राजशेखर	4 अङ्क
32. कर्पूरमञ्जरी	राजशेखर	4 अङ्क
33. कुन्दमाला	दिङ्नाग	6 अङ्क
34. प्रबोधचन्द्रोदय	कृष्ण मिश्र	6 अङ्क
35. प्रसन्नराघवं	जयदेव	7 अङ्क
36. आश्चर्यचूड़ामणि	शक्तिभद्र	-
37. रामाभ्युदय	यशोवर्मा	-
38. महानाटक	हनुमान	-
39. हनुमान नाटक	दामोदर मिश्र	-
40. रुक्मिणीहरणम्	वत्सराज	-
41. त्रिपुरदाह	वत्सराज	-
42. समुद्रमन्थन	वत्सराज	-
43. सौगन्धिकाहरण	विश्वनाथ	-
44. सामवतम्	अम्बिकादत्त व्यास	-
45. दूताङ्गद (छायानाटक)	सुभट	-
46. सुभद्रापरिणय (छायानाटक)	व्यासरामदेव	-
47. पार्वतीपरिणय	बाणभट्ट	-
48. मुकुटताडितक	बाणभट्ट	

गीतिकाव्य	लेखक
1. ऋतुसंहार	कालिदास
2. मेघदूतम्	कालिदास
3. नीतिशतकम्	भर्तृहरि
4. शृङ्गारशतक	भर्तृहरि
5. वैराग्यशतक	भर्तृहरि
6. अमरुकशतक	अमरूक
7. गीतगोविन्द	जयदेव
8. भामिनीविलास	पण्डितराज जगन्नाथ
9. गाथासप्तशती	हाल
10. आर्यासप्तशती	गोर्वधनाचार्य
11. देवीशतक	आनन्दवर्धन

कथा	लेखक
1. पञ्चतन्त्रम्	विष्णु शर्मा
2. हितोपदेश	नारायण पण्डित
3. बृहत्कथा	गुणाढ्य
4. बृहत्कथाश्लोकसंग्रह	बुधस्वामी
5. बृहत्कथामञ्जरी	क्षेमेन्द्र
6. कथासरित्सागर	सोमदेव
7. वेतालपञ्चविंशतिका	शिवदास एवं जम्भलदत्त
8. भोजप्रबन्ध	बल्लालसेन
9. जातकमाला	आर्यसूर
10. प्रबन्धकोष	राजशेखर
11. उदयसुन्दरी कथा	सोड्ढल

गद्यकाव्य	लेखक
1. दशकुमारचरितम्	दण्डी
2. अवन्तिसुन्दर कथा	दण्डी
3. वासवदत्ता	सुबन्धु
4. कादम्बरी	बाणभट्ट
5. हर्षचरितं	बाणभट्ट
6. मन्दारमञ्जरी	विश्वेश्वर पाण्डेय
7. शिवराजविजयम्	अम्बिकादत्त व्यास
8. प्रबन्ध मञ्जरी	हृषीकेश भट्टाचार्य
9. कथापञ्चकम्	पण्डिता क्षमाराव
10. ग्रामज्योतिः	पण्डिता क्षमाराव
11. कथामुक्तावलिः	पण्डिता क्षमाराव
12. कौमुदीकल्लोलिनी	डा0 रामशरण त्रिपाठी
13. तिलकमञ्जरी	धनपाल
14. गद्यचिन्तामणि	वादीभसिंह
15. वेमभूपालचरितम्	डा0 वामनभट्ट बाण
16. द्वासुपर्णा	डा0 रामजी उपाध्याय
17. गद्यरामायण	वरदेशिक

• लघुत्रयी	रघुवंशम्, कुमारसम्भवम्, मेघदूतम्
• बृहत्-त्रयी	किरातर्जुनीयम्, शिशुपालवधं, नैषधीयचरितं
• प्रस्थान-त्रयी	गीता, ब्रह्मसूत्र, उपनिषद्

साहित्य सम्प्रदाय	आचार्य	काल
1. रस सम्प्रदाय	आचार्य भरत	द्वितीय शताब्दी
2. अलङ्कार सम्प्रदाय	आचार्य भोज	छठीं शताब्दी
3. रीति सम्प्रदाय	वामन	आठवीं शताब्दी

4. वक्रोक्ति सम्प्रदाय	आचार्य कुन्तक	दशम शताब्दी
5. औचित्य सम्प्रदाय	क्षेमेन्द्र	11वीं शताब्दी
6. ध्वनि सम्प्रदाय	आनन्दवर्धन	9वीं शताब्दी

आचार्य	काव्यलक्षण
• काव्यप्रकाश (मम्मट)	तददोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलङ्कृति पुनःक्वापी।
• साहित्यदर्पण (विश्वनाथ)	वाक्यं रसात्मकं काव्यम् ।
• रसगङ्गाधर (पण्डितराज जगन्नाथ)	रमणीयार्थप्रतिपादकः शब्दः काव्यम्।
• काव्यालङ्कार (भामह)	शब्दार्थौ साहितौ काव्यम्।
• वक्रोक्तिजीवितम् (कुन्तक)	वक्रोक्तिः काव्यजीवितम् ।
• काव्यालङ्कार सूत्र (वामन)	रीतिरात्मा काव्यस्य।
• ध्वन्यालोक (आनन्दवर्धन)	काव्यस्यात्मा ध्वनिः।
• काव्यादर्श (दण्डी)	शरीरं तावदिष्टार्थव्यवच्छिन्ना पदावली।
• औचित्यविचारचर्चा (क्षेमेन्द्र)	औचित्यं रससिध्दस्य स्थिरं काव्यस्य जीवितम्।
• अग्निपुराण (व्यास)	संक्षेपाद्वाक्यामिष्टार्थव्यवच्छिन्ना पदावली।
• शृङ्गारप्रकाश (भोज)	काव्यं स्फुरदलङ्कारगुणवद् दोषवर्जिततम्। अदोषं गुणवद्काव्यमलङ्कारैरलङ्कृतम रसान्वित कविः कुर्वन कीर्तिं प्रीतिं च विन्दति।

रस	स्थायीभाव	वर्ण	देवता
1. शृङ्गार	रति	श्याम	विष्णु
2. हास्य	हास	शुक्ल	प्रमथ
3. करुण	शोक	कपोत	यम
4. रौद्र	क्रोध	रक्त	रुद्र
5. वीर	उत्साह	सुवर्णवत्	महेन्द्र
6. भयानक	भय	कृष्ण	काल
7. बीभत्स	जुगुप्सा	नील	महाकाल
8. अद्भुत	विस्मय	पीत	ब्रम्हा
9. शान्त	शम/निर्वेद	कुन्दपुष्पवत्	नारायण

।0परिशिष्ट इति 0।

CUETOld UG Qustion Paper - 2022

1. **कवि सम्मेलने..........काव्यपाठं कुर्वन्ति**

A. कविः **B. कवीनाम्**

C. कविषु **D. कवयः**

व्याख्याः- कर्तृवाच्य में सदैव कर्ता में प्रथमा विभक्ति होगी तथा क्रिया हमेशा कर्तानुसार होगी।यदि कर्ता का प्रथमा एकवचन होगा, तो क्रिया भी प्रथमा एकवचन में होगी।यदि कर्ता का प्रथमा द्विवचन होगा, तो क्रिया भी प्रथमा द्विवचन में होगी।यदि कर्ता का प्रथमा बहुवचन होगा, तो क्रिया भी प्रथमा बहुवचन में होगी।

- कविः - प्रथमा बहुवचन
- कविनाम् - षष्ठी बहुवचन
- कविषु - सप्तमी बहुवचन
- कवयः - प्रथमा बहुवचन
- **निष्कर्षः-** कविसम्मेलने कवयः काव्यपाठं कुर्वन्ति वाक्य बनेगा ।

Answer-D स्त्रोत- अनुवाद चन्द्रिका - कपिलदेव द्विवेदी

2. **राजन् शब्दस्य षष्ठी-विभक्ति-बहुवचने रूपं भवति**

A. राज्ञ B. राज्ञोः

C. राज्ञाम् D. राजनि

व्याख्याः-

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा	राजा	राजानौ	राजानः
द्वितीया	राजानम्	राजानौ	राज्ञः
तृतीया	राज्ञा	राजभ्याम्	राजभिः
चतुर्थी	राज्ञे	राजभ्याम्	राजभ्यः
पञ्चमी	राज्ञः	राजभ्याम्	राजभ्यः
षष्ठी	राज्ञः	राज्ञोः	राज्ञाम्
सप्तमी	राज्ञि	राज्ञोः	राजसु
सम्बोधन	हे राजा!	हे राजानौ!	हे राजानः!

- **निष्कर्ष-**उपर्युक्त शब्द-रूप से यह स्पष्ट है की राजन् शब्द के षष्ठी बहुवचन में राज्ञाम् रूप बनेगा।

Answer-C स्त्रोत- रूपचंद्रिका - ब्रम्हानन्द त्रिपाठी पेज सं० 47

3. 'मधुना मत्तः कोकिलः' इत्यत्र 'मधुना' पदे का विभक्तिः ?

A. द्वितीया B. तृतीया

C. चतुर्थी D. पञ्चमी

व्याख्या:-

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा	मधु	मधुनी	मधूनि
द्वितीया	मधु	मधु	मधूनि
तृतीया	मधुना	मधुभ्याम्	मधुभिः
चतुर्थी	मधुने	मधुभ्याम्	मधुभ्यः
पञ्चमी	मधुनः	मधुभ्याम्	मधुभ्यः
षष्ठी	मधुनः	मधुनोः	मधूनाम्
सप्तमी	मधुनि	मधुनोः	मधुषु
सम्बोधन	हे! मधु / मधो	हे! मधुनी	हे! मधूनि

- **निष्कर्षः** उपर्युक्त शब्द-रूप से यह स्पष्ट है की मधु शब्द के तृतीया एकवचन में मधुना रूप बनेगा।

Answer-B स्त्रोत- रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी पेज सं० 36

4. 'धेनुभ्यः जलमानय' इत्यत्र 'धेनुभ्यः' पदे का विभक्तिः ?

A. तृतीया B. चतुर्थी

C. पञ्चमी D. षष्ठी

व्याख्या:

धेनु अर्थात् गाय यह शब्द उकारान्त स्त्रीलिङ्ग है जिसका रूप है-

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा	धेनुः	धेनू	धेनवः
द्वितीया	धेनुम्	धेनू	धेनूः
तृतीया	धेन्वा	धेनुभ्याम्	धेनुभिः
चतुर्थी	धेन्वै/धेनवे	धेनुभ्याम्	धेनुभ्यः
पञ्चमी	धेन्वाः/धेनोः	धेनुभ्याम्	धेनुभ्यः
षष्ठी	धेन्वाः/धेनोः	धेन्वोः	धेनूनाम्
सप्तमी	धेन्वाम्/धेनौ	धेन्वोः	धेनुषु
सम्बोधन	हे धेनो !	हे धेनू !	हे धेनवः !

- **निष्कर्षः–**धेनुभ्यः जलमानय (धेनु अर्थात् गाय के लिए जल लाओ) उपर्युक्त शब्द-रूप चतुर्थी बहुवचन का शब्दरूप है।

Answer-B स्त्रोत -रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी - पेज सं०-28

5. महाभारते कति पर्वाणि सन्ति ?

A. दश B. द्वादश

C. षोडश D. अष्टादश

व्याख्याः— महाभारत के रचयिता 'वेदव्यास' है। जिसमे कुल 18 पर्व है-

1. आदि-पर्व
2. सभा-पर्व
3. वन-पर्व
4. विराट्-पर्व
5. उद्योग-पर्व
6. भीष्म-पर्व
7. द्रोण-पर्व
8. कर्ण-पर्व
9. शल्य-पर्व
10. सौप्तिक-पर्व
11. स्त्री-पर्व
12. शान्ति-पर्व
13. अनुशासन-पर्व
14. आश्वमेधिक-पर्व
15. आश्रमवासिक-पर्व
16. मौसल-पर्व
17. महाप्रस्थानिक-पर्व
18. स्वर्गारोहण-पर्व

- **निष्कर्षः–**महाभारत में कुल अष्टादश (18) पर्व है।

Answer-D स्त्रोत -संस्कृत-साहित्य का इतिहास - उमाशंकर ऋषि - पेज सं०-19

6. वन्दे इत्यस्य पुरुषवचने के ?

A. उत्तमपुरुषः एकवचनम् B. उत्तमपुरुषः बहुवचनम्

C. मध्यमपुरुषः एकवचनम् D. प्रथमपुरुषः बहुवचनम्

व्याख्याः—वन्द् धातु नमस्कार के अर्थ में चलता है जिसका अर्थ वन्दना करना होता है। यह भ्वादि प्रकरण के अन्तर्गत आता है। वन्द् धातु का रूप है-

वन्दते- वन्देते - वन्दन्ते
वन्दसे- वन्देथे - वन्दध्वे
वन्दे - वन्दावहे - वन्दामहे

निष्कर्षः—'वन्दे' लट् लकार के उत्तम पुरुष एकवचन का रूप है।

Answer- A स्त्रोत -रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी - पेज सं0-206

7. **बालकेषु इत्यस्मिन् विभक्तिवचने के ?**

A. सप्तमी बहुवचनम् B. षष्ठी एकवचनम्
C. सप्तमी एकवचनम् D. चतुर्थी बहुवचनम्

व्याख्याः- बालक शब्दरूप अकारान्त पुलिङ्ग है अतः रामवत् चलेगा

- **बालकेषु** - सप्तमी बहुवचन
- **बालकस्य** - षष्ठी एकवचन
- **बालके** - सप्तमी बहुवचन
- **बालकेभ्यः** - चतुर्थी बहुवचन
- **निष्कर्षः**–'बालकेषु' सप्तमी बहुवचन में रूप बनेगा।

Answer- A स्त्रोत- रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी - पेज सं0-01

8. **वाक्यपूर्त्यर्थं समुचितं समुचितं रूपं चिनुत-**

ब्रह्मचारिणः भिक्षाम्...

A. अयाचन्त B. अयाचथाः
C. अयाचावहि D. अयाचेथाम्

व्याख्याः-

- कर्तृवाच्य में क्रिया सदैव कर्तानुसार होती है। यहाँ ब्रह्मचारी शब्द के प्रथमा बहुवचन में 'ब्रह्मचारिणः' रूप बनेगा। अतः क्रिया भी प्रथमा बहुवचन की होगी।
- याच् धातु भ्वादिप्रकरण का द्विकर्मक धातु है, याच् धातु के आत्मनेपद लङ् लकार प्रथमा बहुवचन में 'अयाचन्त' रूप बनेगा।

अयाचत - अयाचेताम् - अयाचन्त
अयाचथाः- अयाचेथाम् - अयाचध्वम्
अयाचे - अयाचावहि - अयाचामहि

- **निष्कर्षः**–'ब्रह्मचारिणः' भिक्षाम् आयाचन्त।

Answer- A स्त्रोत -रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी - पेज सं0-198

9. **'नंस्यति' इत्यत्र पुरुषवचने के ?**

A. प्रथमपुरुषः बहुवचनम् B. उत्तमपुरुषः बहुवचनम्
C. मध्यमपुरुषः एकवचनम् D. प्रथमपुरुषः एकवचनम्

व्याख्याः- नम् धातु भ्वादिप्रकरण के अन्तर्गत है, जो की नमस्कार करना अथवा झुकने के अर्थ में है। नम् धातु लृट् लकार का रूप है-

नंस्यति - नंस्यतः - नंस्यन्ति
नंस्यसि - नंस्यथः - नंस्यथ
नंस्यामि - नंस्यावः नंस्यामः

- **निष्कर्षः**—'नंस्यति' लृट् लकार प्रथम पुरुष एकवचन का रूप है

Answer- D स्त्रोत -रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी - पेज सं0-165

10. **'विषमप्यमृतम्' इत्यस्मिन पदे कः सन्धि ?**

A. यण सन्धि B. गुण सन्धि
C. वृद्धि सन्धि D. दीर्घ सन्धि

व्याख्याः- विषमप्यमृतम् इस पद में मुख्यतः तीन पद है। 1. विषम् 2. अपि 3. अमृतम् विषम्+अपि=विषमपि, विषमपि+अमृतम्

इको यणचि सूत्र से इक् (इ,उ,ऋ, लृ) के स्थान पर यण् (य,व,र्,ल) आदेश होता है। यहाँ पर अपि के पकारोत्तरवर्ती इकार के स्थान पर यकार आदेश होता है- **विषमप्+य्+अमृतम्=विषमप्यमृतम्**

- गुण सन्धि - अ,ए,ओ (अदेङ् गुणः)
- वृद्धि सन्धि - आ,ऐ,औ (वृध्दिरादैच
- दीर्घ सन्धि - आ,ई,ऊ,ॠ (अकः सवर्णे दीर्घः)
- **निष्कर्षः**–'विषमप्यमृतम्' में यण् सन्धि है।

Answer- A स्त्रोत -लघुसिद्धान्तकौमुदी - गीताप्रेस गोरखपुर

11. **अधोलिखितेषु पदेषु कस्मिन् पदे श्चुत्वसन्धिरस्ति ?**

A. रामष्टीकते B. चिदानन्दः
C. सच्चरित्रम् D. दिङ्नागः

व्याख्याः-

- **स्तोः श्चुना श्चु-** सकार और तवर्ग के स्थान पर शकार और चवर्ग का योग होने पर शकार और आदेश होते है।

- **सच्चरित्रम्-** यहाँ तकार को चकार आदेश होकर सच्चरित्रम् सिद्ध होता है।
- **रामष्टीकते-** ष्टुना ष्टुः से सकार और तवर्ग के स्थान पर मूर्धन्य षकार व टवर्ग आदेश होते है।
- **चिदानन्दः-** चित्+आनन्द 'झलां जशोऽन्ते' सूत्र से तकार को दकार आदेश की चिदानन्द्ः सिद्ध होता है।
- **दिङ्नागः-** दिक्+नाग 'यरोऽनुनासिके वा' सूत्र से ककार को अनुनासिक होकर दिङ्नाग सिद्ध होता है।
- **निष्कर्षः—**प्रस्तुत व्याख्या से स्पष्ट होता है श्चुत्व सन्धि का उदाहरण सश्चरित्रम् है।

Answer- C स्त्रोत -लघुसिद्धान्तकौमुदी -गोविन्दाचार्य -पेज नं0 84

12. **'गङ्गौघः' इत्यत्र कः सन्धि ?**

A. दीर्घसन्धिः B. वृद्धिसन्धि

C. यणसन्धिः D. गुण सन्धि

व्याख्याः-

- **दीर्घ सन्धि-** 'अकःसवर्णेदीर्घः' अक् से सवर्णी अच् के परे होने पर पूर्व और पर के स्थान पर दीर्घ एकादेश होता है। दैत्यारिः, श्रीशः, विष्णूदयः
- **वृद्धि सन्धि -** 'वृद्धिरेचि' अवर्ण से एच् परे होने पर पूर्व और पर के स्थान् पर वृद्धिसंज्ञक एकादेश होता है। गङ्गौघः=गङ्गा+ओघः
- **यण् सन्धि-** 'इको यणचि' इक् के स्थान पर यण् आदेश होता है। सुद्ध्युपास्यः।
- **गुणसन्धि-** 'आदगुणः' अवर्ण से अच् परे होने पर पूर्व और पर के स्थान पर गुणसंज्ञक एकादेश होता है। उपेन्द्रः, गङ्गोदकम्
- **निष्कर्षः-**प्रस्तुत व्याख्या से स्पष्ट होता है की गङ्गौघः में 'औ' आदेश होकर वृद्धिसन्धि होता है।

Answer- B स्त्रोत -लघुसिद्धान्तकौमुदी -गीताप्रेस गोरखपुर

13. **'विष्णूदयः' इत्यस्य विच्छेदः कः ?**

A. विष्णो + उदयः B. विष् + णूदयः

C. विष्णु + उदयः D. विश् +उदय

व्याख्याः-

विष्णूदयः=(विष्णु का उदय) संधिविच्छेद -विष्णु+उदयः

विष्णु उदय में अक् है 'विष्णु' का उकार और सवर्ण अच् परे है 'उदय' का उकार दोनों के स्थान पर दीर्घ एक ही आदेश ऊकार हुआ। विष्ण+ऊ+दयः बना। वर्णसम्मेलन में (विष्ण+ऊष्णू) विष्णूदयः सिद्ध हुआ ।

- **निष्कर्षः-**विष्णूदयः का सन्धिविच्छेद विष्णु+उदयः होगा।

Answer-C स्त्रोत -लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य-पेज सं0 66

14. **'नखभिन्नः' इत्यत्र को विग्रहः ?**

A. नखानां भिन्नः B. नखाय भिन्नः

C. नखै भिन्नः D. नखात् भिन्नः

व्याख्याः-

नखभिन्नः- नाखूनों से चीरा गया। लौकिक विग्रह- नखैः भिन्नः

नख-भिस्+भिन्न सु अलौकिक विग्रह में कर्तृकरणे कृता बहुलम् से समास हुआ। यहाँ पर करण अर्थ में हुई तृतीया विभक्तियुक्त पद है नख+भिस् और समर्थ सुबन्त शब्द है. भिन्न+सु। समास के बाद नख भिस्+भिन्न सु की प्रातिपदिकसंज्ञा हुई और सुपो धातुप्रातिपदिकयोः से भिस् और सु इन दो सुप्-प्रत्ययों का लुक हुआ नख-भिन्न बना। प्रथमानिर्दिष्ट नखभिन्न की उपसर्जनसंज्ञा और पूर्वप्रयोग करके नखभिन्न बना है। सु विभक्ति और उसको रुत्व और विसर्ग करके नखभिन्नः सिद्ध हुआ ।

- **निष्कर्षः-**यहाँ नख कारण् है हृदयविदीर्ण हेतु अतः नख में तृतीया विभक्ति होगी । नखैः भिन्नः नखभिन्नः होगा जो कि तृतीया तत्पुरुष समस कहलायेगा। Answer-C स्त्रोत -लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य-पेज सं0 916

15. **'उपगङ्गम्' इत्यस्य विग्रह वाक्यं किम् ?**

A. गङ्गायाः समीपं B. गङ्गाम् उप

C. गङ्गायाः पार्श्वे D. गङ्गासमीपम्

व्याख्याः-

उपगङ्गम् (गङ्गा के समीप) लौकिक विग्रह- गङ्गायाः समीपं

गङ्गाङस् उप अलौकिक विग्रह है। समीप अर्थ में विद्यमान उप के साथ गङ्गा ङस् उप का अव्ययं विभक्ति-समीप-समृद्धि व्यृद्ध्यर्थाभावात्ययासम्प्रति-शब्दप्रादुर्भाव-

पश्चाद्यथानुपूर्व्य-यौगपद्य-सादृश्य-सम्पत्ति-साकल्यान्तवचनेषु से समास हो गया। समास करने के बाद कृष्ण ङस् उप इस समुदाय की कृत्तद्धित समासाश्च से प्रातिपदिक संज्ञा हो गई।ङस् का सुपो धातु प्रातिपदिकयोः से लुक् हुआ।गङ्गा उप बना। प्रथमानिर्दिष्ट उप की प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम् से उपसर्जनसंज्ञा हो गई तो उपसर्जनं पूर्वम् से उपसर्जनसंज्ञक उप का पूर्वप्रयोग हुआ अर्थात् पर में था पूर्व में आ गया- उपगङ्ग बना। एकदेशविकृतमनन्यवत् इस न्याय के बल पर उपकृष्ण को प्रातिपदिक मानकर सुविभक्ति आई और अव्ययप्रकरण के अव्ययीभावश्च से अव्ययसंज्ञक होने के कारण सु विभक्ति का अव्ययादाप्सुपः से लुक् प्राप्त हुआ तो नाव्ययीभावादतो ऽत्वपञ्चम्याः से विभक्ति के लुक् का निषेध तो हो ही गया साथ ही सु के स्थान पर अम् आदेश भी हुआ- उपगङ्ग+अम् बना। अमि पूर्वः से पूर्वरूप हुआ- उपगङ्गम्।

- **निष्कर्षः**—उपगङ्गम् में समीप के अर्थ में समास होने से गङ्गायाः समीपं उपगङ्गम् बनेगा।

  Answer-A स्त्रोत -लघुसिद्धान्तकौमुदी - गोविन्दाचार्य-पेज सं0 898

16. **'रामलक्ष्मणौ' विग्रह वाक्यं किम् ?**

    A. राम लक्ष्मणः यस्य B. रामश्चासौ लक्ष्मणः

    C. रामश्च लक्ष्मणश्च D. रामस्य लक्ष्मणः

व्याख्या- चकार के अर्थ में द्वन्द्व समास होता है।

चार्थ के 4 अर्थ है- समुच्चयान्वाचयेतरेतरयोगसमाहाराश्चार्थाः।

1 समुच्चय 2. अन्वाचय 3. इतरेतर 4. समाहार

द्वन्द्व समास तीन प्रकार का होता है- (1) इतरेतर द्वन्द्व। (2) समाहार द्वन्द्व। (3) एकशेष द्वन्द्व।

- इतरेतर द्वन्द्व- इसमें दो पद दोनों पद अपना प्रधानत्व व्यक्तित्व रखते है, तब उसे इतरेतरद्वन्द्व समास कहते है। मुख्य पहचान- इतरेतर द्वन्द्व समास के प्रयोग नित्य द्विवचन अथवाबहुवचन में होते है। जैसे- रामश्च लक्ष्मणश्च- रामलक्ष्मणौ।
- समाहार द्वन्द्व- जब दो या दो से अधिक पदार्थ पृथक्- पृथक् क्रिया में अन्वय न होकर समूहात्मक अर्थ में अन्वय होते है, तो समाहार द्वन्द्व कहलाता है। मुख्य पहचान- समाहार सदैव नपुंसक लिङ्ग एकवचन में होता है। जैसे- संज्ञापरिभाषम्

- निष्कर्षः प्रस्तुत व्याख्या से सिद्ध होता है कि रामश्च लक्ष्मणश्च रामलक्ष्मणौ यह रूप बनेगा ।

  Answer-C स्त्रोत -लघुसिद्धान्तकौमुदी - श्रीधरमुखोल्लासिनी -पेज सं0 974

17. **अधोलिखितेषु एकशेषद्वन्द्वस्योदाहरणं चिनुत -**

    A. मूषकमार्जार B. वागर्थौ

    C. पितरौ D. पाणिपादम्

व्याख्या-

- **मूषकमार्जार-** मूषक मार्जारश्च मूषकमार्जारम्। यहाँ समाहार द्वन्द्व समास होगा।
- **वागर्थौ-** वाक् च् अर्थश्च वागर्थौ। यह इतरेतर द्वन्द्व समास उदाहरण है।
- **एकशेष द्वन्द्व-** जब दो या दो से अधिक शब्दों में से केवल एक ही शेष रह जायें,तब उसको
- एकशेष द्वन्द्व समास कहते है। जैसे- माता च पिता च- पितरौ।
- **पाणिपादम्-** पाणि च पादौ च तेषां समाहारद्वन्द्वः। हाथ और पैर का समूह इसमें समाहार द्वन्द्वसमास हुआ है।
- **निष्कर्षः-**एकशेष द्वन्द्व समास में 'सरूपाणामेकशेष एकविभक्तौ' के बल से एक ही पद शेष रहता है। अतः पितरौ एकशेष उदाहरण है।

  Answer-C स्त्रोत - लघुसिद्धान्तकौमुदी - श्रीधरमुखोल्लासिनी।

18. **'विद्यालयं प्रविशन्तः छात्राः गुरुन् नमन्ति' इत्यत्र 'प्रविशन्तः' पदे प्रत्ययोऽस्ति ?**

    A. शतृप्रत्ययः B. शानच्प्रत्ययः

    C. क्तिन्प्रत्ययः D. तल् प्रत्ययः

व्याख्या-

- **शतृ-शानच् प्रत्यय**

लटःशतृशानचावप्रथमासमानाधिकरणे- प्रथमासे भिन्न समानधिकरण होने पर लट् के स्थान पर शतृ और शानच् आदेश होते है।

परस्मैपदी धातु से लट् के स्थान शतृ होता है और आत्मनेपदी धातु से शानच्। शतृ का अत् शेष रहता है और शानच् में आन।

- **क्तिन् प्रत्यय**

स्त्रियां क्तिन्- स्त्रीत्वयुक्त भाव की विवक्षा में धातु से क्तिन प्रत्यय होता है।

क्तिन् में शेष ति ही रहता है। क्तिन् प्रत्यय स्त्रीत्व की विवक्षा पर और भाव अर्थ में होता है। जैसे- कृतिः, स्तुतिः आदि।

- **तल् प्रत्यय**

तस्यभावस्त्वतलौ- उसका भाव ऐसा अर्थ हो तो षष्ठ्यन्त प्रातिपदिक से त्व और तल् प्रत्यय होता है। जैसे- गोता, जनता आदि।

- **निष्कर्षः-**विद्यालयं प्रविशन्तः छात्राः गुरुन् नमन्ति' यहाँ वर्तमानकालिक क्रिया है अतः प्रविशन्ति में शतृ प्रत्यय हुआ है।

  Answer-A स्त्रोत -लघुसिद्धान्तकौमुदी - श्रीधरमुखोल्लासिनी- पृष्ठ सं0- 818

19. 'कुरुचरी' इति पदे प्रत्ययःअस्ति ?

A. टाप् प्रत्ययः B. ङीप् प्रत्ययः

C. ङीष् प्रत्ययः D. ङीन् प्रत्ययः

व्याख्या-

- **टाप् प्रत्यय**

अजाद्यतष्टाप्- अज आदि गणअथवा ह्रस्व अकारान्त शब्दों से स्त्रीत्वकी विवक्षा में टाप् प्रत्यय होता है।इसे नित्यस्त्रीलिङ्गशब्द कहा जाता है।जिस शब्द के अन्त में 'आ' आये प्रायशः वह टाप् वाला होता है। जैसे- रमा, गङ्गा आदि।

- **ङीप् प्रत्यय-**

टिड्ढाणञ्द्वयसज्दघ्नञ्मात्रच्तयप्ठक्ठञ्कञ्क्वरपः- अनुपसर्जन जो टित्, ढ, अण्, द्वयसच्, दघ्नच्, मात्रच् तयप्, ठक्, कञ और क्वरपः जो प्रत्यय ऐसे प्रत्यय अन्त में होने वाले अदन्त प्रातिपदिक, उनसे स्त्रीत्व की विवक्षा में ङीप् प्रत्यय होता है। जैसे- कुरुचरी, नदी, देवी आदि।

- **ङीष् प्रत्यय-**

षिद्गौरादिभ्यश्च- गौर आदि गणपठित शब्दों में अथवा ह्रस्व अकारन्त शब्दों से स्त्रीत्व की विवक्षा में ङीन् प्रत्यय होता है। जैसे- गार्ग्यायणी नर्तकी, गौरी,अनडुही,अनड्वाही आदि।

- **ङीन् प्रत्यय-**

शार्ङ्गवाद्यञो ङीन् -शार्ङ्गरव आदि गणपठित शब्दों में स्त्रीत्व की विवक्षा में ङीष् प्रत्यय होता है। जैसे- शार्ङ्गरवी, वैदी, ब्राह्मणी, नारी आदि।

- **निष्कर्षः--**कुरुचरी में ङीप् प्रत्यय हुआ है।

  Answer-B स्त्रोत -लघुसिद्धान्तकौमुदी - श्रीधरमुखोल्लासिनी- पृष्ठ सं0- 1155

20. 'अजा ' इत्यत्र प्रत्ययः ?

A. तल् B. ङीष्

C. ङीप् D. टाप्

व्याख्या-

- **टाप् प्रत्यय**

अजाद्यतष्टाप्- अज आदि गणअथवा ह्रस्व अकारान्त शब्दों से स्त्रीत्वकी विवक्षा में टाप् प्रत्यय होता है।इसे नित्यस्त्रीलिङ्गशब्द कहा जाता है।

जिस शब्द के अन्त में 'आ' आये प्रायशः वह टाप् वाला होता है। जैसे- रमा, गङ्गा आदि।

- **ङीप् प्रत्यय-**

टिड्ढाणञ्द्वयसज्दघ्नञ्मात्रच्तयप्ठक्ठञ्कञ्क्वरपः- अनुपसर्जन जो टित्, ढ, अण्, द्वयसच्, दघ्नच्, मात्रच् तयप्, ठक्, कञ और क्वरपः जो प्रत्यय ऐसे प्रत्यय अन्त में होने वाले अदन्त प्रातिपदिक, उनसे स्त्रीत्व की विवक्षा में ङीप् प्रत्यय होता है। जैसे- कुरुचरी, नदी, देवी आदि।

- **ङीष् प्रत्यय-**

षिद्गौरादिभ्यश्च- गौर आदि गणपठित शब्दों में अथवा ह्रस्व अकारन्त शब्दों से स्त्रीत्व की विवक्षा में ङीन् प्रत्यय होता है। जैसे- गार्ग्यायणी नर्तकी, गौरी,अनडुही,अनड्वाही आदि।

- **ङीन् प्रत्यय-**

शार्ङ्गवाद्यञो ङीन् -शार्ङ्गरव आदि गणपठित शब्दों में स्त्रीत्व की विवक्षा में ङीष् प्रत्यय होता है। जैसे- शार्ङ्गरवी, वैदी, ब्राह्मणी, नारी आदि।

- निष्कर्षः अजा में टाप् प्रत्यय हुआ है।

  Answer-B स्त्रोत-लघुसिद्धान्तकौमुदी-श्रीधरमुखोल्लासिनी- पृष्ठ सं0- 1155

21. **'महाभाष्य' लेखकः कः ?**

A. पतञ्जलिः B.कात्यायनः

C. पाणिनिः D. भट्टोजिदीक्षितः

व्याख्याः-

- **पतञ्जलि (150ई0पू0)-** जन्मस्थानगोण्डा क्योंकिआधुनिक विद्वान् गोर्नद् का अर्थ वर्तमान गोण्डा मानते है। इनका प्रसिद्ध ग्रन्थ अष्टाध्यायी के सूत्रों पर बृहदाकार महाभाष्य है। इनको पातंजल योगसूत्र, चरक संहिता का भी रचयिता माना जाता है।
- **कात्यायन (4वीं शताब्दी)** -इन्होंने अष्टाध्यायी के सूत्रों पर वार्तिक व्याख्या सूत्र लिखे है। इन्हीं वार्तिकों को आधार बनाकर महर्षि पतञ्जलि ने महाभाष्य की रचना किया।
- **पाणिनी (500 ई0पू0)-** इनका सुविख्यात ग्रन्थ अष्टाध्यायी है। इसमें आठ अध्याय है। अतः इसे अष्टाध्यायी कहते है। इसमे सूत्रों की संख्या 3997 है।
- **भट्टोजिदीक्षित (1450ई0) -** इन्होंने अष्टाध्यायी के सूत्रों को विषयानुसार 14 प्रकरणों में बाँटकर सिद्धान्तकौमुदी ग्रन्थ की रचना की। ये महाराष्ट्री ब्राह्मण थे। इनके प्रसिद्ध ग्रन्थ- शब्दकौस्तुभ (अष्टाध्यायी की टीका), सिद्धान्तकौमुदी, प्रौढ़मनोरमा (सिद्धान्तकौमुदी की व्याख्या)
- निष्कर्षः महाभाष्य के लेखक महर्षि पतञ्जलि है। Answer-A स्त्रोत - वैदिक साहित्य एवं संस्कृति -कपिलदेव द्विवेदी -पृष्ठ सं0- 195

22. **कस्य पदलालित्यं प्रसिद्धमस्ति ?**

A. दण्डिनः B. बाणस्य

C. सुबन्धोः D. अम्बिकादत्तस्य

व्याख्याः-

- **उपमा कालिदासस्य भारवेर्थगौरवम्।**

दण्डिनः पदलालित्यं माघे सन्ति त्रयो गुणाः॥

- **दण्डी-** दशकुमारकेलेखक है और इनका काव्य पदलालित्य के लिए अति प्रसिद्ध है।

- **बाणभट्ट-** इनकाकालसातवीं शताब्दी है। इनके द्वारा रचित कादम्बरी, और हर्षचरित अतिप्रसिद्ध ग्रन्थ है।
- **सुबन्धु-** वासवदत्ता के लेखक् सुबन्धु है। वासवदत्ता एक आख्यायिका ग्रन्थ है।
- अम्बिकादत्त व्यास- यहआधुनिक उपन्यासकार है। संस्कृत जगत का एकमात्र उपन्यास शिवराजविजयं है।
- निष्कर्षः पदलालित्य के लिये दण्डी की प्रसिद्धि है।

Answer-A स्त्रोत -वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - कपिलदेव द्विवेदी

23. **पठन् इत्यत्र कः प्रत्ययः ?**

A. क्तिन् प्रत्ययः B. शानच् प्रत्ययः

C. शतृ प्रत्ययः D. क्त प्रत्ययः

व्याख्या-

- **क्तिन् प्रत्यय**

स्त्रियां क्तिन्- स्त्रीत्वयुक्त भाव की विवक्षा में धातु से क्तिन प्रत्यय होता है। क्तिन् में शेष ति ही रहता है। क्तिन् प्रत्यय स्त्रीत्व की विवक्षा पर और भाव अर्थ में होता है। जैसे- कृतिः, स्तुतिः आदि।

- **शतृ-शानच् प्रत्यय**

लटःशतृशानचावप्रथमासमानाधिकरणे- प्रथमासे भिन्न समानधिकरण होने पर लट् के स्थान पर शतृ और शानच् आदेश होते है। परस्मैपदी धातु से लट् के स्थान शतृ होता है और आत्मनेपदी धातु से शानच्। शतृ का अत् शेष रहता है और शानच् में आन ।

- **क्त प्रत्यय-**

क्तवतू निष्ठा- निष्ठासंज्ञक क्त और क्तवतु प्रत्यय भूतकाल अर्थ में सभी धातुओं से होते है।

क्त प्रत्यय भाव और कर्म् अर्थ में होता है।

- **निष्कर्षः**–'पठन्' शतृ प्रत्यय वर्तमान अर्थ हुआ है।

Answer-C स्त्रोत - लघुसिद्धान्तकौमुदी - श्रीधरमुखोल्लासिनी- पृष्ठ सं0- 818

24. 'बालः पर्यङ्कम् अधिशेते' इत्यस्मिन् वाक्ये 'पर्यङ्कम्' पदे का विभक्तिः ?

A. प्रथमा B. द्वितीया
C. तृतीया D. सप्तम

व्याख्या-

अधिशीङ्स्थासां कर्म- अधि उपसर्ग से युक्त शीङ् (सोना) स्था (ठहरना) आस् (बैठना) इन धातुओं के आधार की कर्मसंज्ञा होती है।बालः कर्ता है अतः इसमे प्रथमा विभक्ति हुई है। अधिशेते में यहाँ अधि उपसर्ग पूर्वक् शीङ् धातु का प्रयोग होने के कारण पर्यङ्कम् द्वितीयां विभक्ति हई है।

- **निष्कर्षः-**पर्यङ्कम् में द्वितीया विभक्ति एकवचन का प्रयोग हुआ है।

Answer-B स्त्रोत -सिद्धान्तकौमुदी - उमेशचन्द्र पाण्डेय- पृष्ठ सं0- 16

25. 'स्वर्गः' पदस्य विलोमपदं चिनुत-

A. पातालम् B.नरकम्
C. पारावरः D. विश्वभरा

व्याख्याः-

- पाताल का विलोम - आकाश है।
- नरक का विलोम - स्वर्ग है।
- पारावार का अर्थ समुद्र - भूमि विलोम होगा।
- विश्वम्भरा का अर्थ पृथ्वी - समुद्र विलोम होगा ।
- निष्कर्ष स्वर्ग का विलोम नरक होगा।

Answer-B स्त्रोत -अन्तर्जालमाध्यमेन

26. अधोलिखितेषु 'व्योमशब्दस्य' पर्याय कः ?

A. आशा B. वारिदः
C. प्रालेयम् D. वियत्

व्याख्याः-

- **आशा-** आशा का तात्पर्य 'दिशा' है। कालिदास अपने ग्रन्थ मेघदूतं में एक श्लोक उद्धृत किया है- 'प्रस्थितस्योत्तराशां' अर्थात् उत्तर दिशा की ओर प्रस्थान करना।

- **वारिदः-** वारि का तात्पर्य जल है तथा 'द' का अर्थ देना अर्थात् वारि को देने वाला मतलब मेघ अर्थ होगा।
- **प्रालेयम्-** प्रालेयम् का अर्थ बर्फ अथवा ओस है।
- **वियत्-** खुले स्थान के ऊपर के ओर दिखाई देने वाला खाली स्थान।
- **निष्कर्षः-**व्योम का अर्थ आकाश है इसका साम्यता केवल वारिद से हो रहा है। अतः वारिद ही होगा।

Answer-B स्त्रोत -अन्तर्जालमाध्यमेन

27. 'न मन्त्रं नो मन्त्रं तदपि च न जाने स्तुतिकथा' इत्यस्मिन् पदे किं छन्दः ?

A. उपजाति B. वंशस्थ
C. शिखरिणी D. मन्दक्रान्ता

व्याख्याः-

- **उपजातिः छन्द का लक्षण-**

अनन्तरोदीरितलक्ष्मभाजी, पादौ यदीयावुपजातयस्ताः ।
इत्थं किलान्यास्वपि मिश्रितासु, स्मरन्ति जातिष्विदमेव नाम ॥

उपजाति के प्रत्येक पाद में 11 वर्ण होते हैं।यह इन्द्रवज्रा और उपेन्द्रवज्रा दोनों छन्दों के मिश्रण से बनता है। किसी चरण में इन्द्रवज्राा छन्द होता है और किसी में उपेन्द्रवज्रा ।

उदाहरण- शाकुन्तल-

आजन्मनः शाठ्य मशिक्षितोयः,तस्याप्रमाणंवचनंजनस्य।
परातिसन्धानमधीयतेयैविद्येति ते सन्तु किलाप्तवाचः ॥

- **वंशस्थ छन्द-** जतौ तु वंशस्थमुदीरितं जरौ ।

वंशस्थ के प्रत्येक पाद में 12 वर्ण होते हैं। क्रमशः 1 जगण, 1 तगण, 1 जगण, 1 रगण।

उदाहरण-

गजाननं भूत गणादि सेवितं,कपित्थ जम्बू फल चारू भक्षणम्।
उमासुतंशोकविनाशकारकम्,नमामि विघ्नेश्वर पादपंकजम् ॥

- **शिखरिणी छन्द-** रसैः रुद्रैश्छिन्ना यमनसभला गः शिखरिणी ।

शिखरिणी छन्द के प्रत्येक पाद में 17 वर्ण होते हैं। क्रमशः 1 यगण, 1 मगण, 1 नगण, 1 सगण, 1 भगण, 1 लघु, 1 गुरु। इसमें 6-11 पर यति होती है, अर्थात् 6ठे और 17वें वर्ण पर।

उदाहरण-

न मन्त्रं नो यन्त्रं तदपि च न जाने स्तुतिमहो
न चाह्वानं ध्यानं तदपि च न जाने स्तुतिकथाः।
न जाने मुद्रास्ते तदपि च न जाने विलपनं
परं जाने मातस्त्वदनुसरणं क्लेशहरणम्।।

- **मन्दाक्रान्ता छन्द-** मन्दाक्रान्ता जलधिषडगैम्भौ नतौ ताद् गुरू चेत्।

मन्दाक्रान्ता के प्रत्येक पाद में 17 वर्ण होते हैं। क्रमशः 1 मगण, 1 भगण, 1 नगण, तगण, 2 गुरु। इसमें 4-6-7 पर यति होती है।चौथे, 10वें और 17वें वर्ण पर यति। (जलधिषडगैः-जलधि 4, षट् 6, अग 7)।

उदा0- **मेघदूतं मङ्गलाचरण-**

कश्चित् कान्ता विरहगुरुणा स्वाधिकारात् प्रमत्तः
शापेनास्तङ्गमितमहिमा वर्षभोग्येण भर्तुः।
यक्षश्चक्रे जनकतनयास्नानपुण्योदकेषु
स्निग्धच्छायातरुषु वसतिं रामगिर्याश्रमेषु।।

- **निष्कर्षः-**उपर्युक्त व्याख्या से स्पष्ट हुआ कि 'न मन्त्रं नो यंत्रं तदपि च न जाने स्तुतिकथा' में शिखरणी छन्द है ।

Answer-C । स्त्रोत -छन्दोविंशतिका, पृष्ठ सं0- 12

28. **अभिज्ञानशाकुन्तलस्य अङ्केषु कस्य अङ्कस्य वैशिष्ट्यम् अस्ति ?**

A. प्रथमाङ्कस्य B. द्वितीयाङ्कस्य
C. चतुर्थाङ्कस्य D. पञ्चमाङ्कस्य

व्याख्या - अभिज्ञानशाकुन्तलं के लेखक महाकवि कालिदास है। इसमें कुल 7 अङ्क है नायक दुष्यन्त व नायिका शकुन्तला है।

- **प्रथम अङ्क-** दुष्यन्त द्वारा शिकार करना, कण्व के आश्रम में प्रवेश और शकुन्तला पर आसक्त होना।

- **द्वितीय अङ्क-** राजा का आश्रम से छावनी आना और सम्पूर्ण सेना को राजधानी भेजना।
- **तृतीय अङ्क-** शकुन्तला का कामावस्था, राजा द्वारा विवाह का प्रस्ताव तथा विघ्न दूर हेतु राजाका आश्रम में प्रस्थान
- **चतुर्थ अङ्क-** गान्धर्व विवाह की सूचना, दुर्वासा द्वारा शकुन्तला को श्राप, कण्व द्वारा शकुन्तलाकी विदाई। कवि द्वारा इतना सजीव वर्णन है कि इसकी महत्ता अन्यतम हो जाती है। इस अङ्क के सन्दर्भ एक पंक्ति मिलती है-

काव्येषु नाटकं रम्यं तत्र रम्या शकुन्तला।
तत्रापि च चतुर्थोऽङ्कस्तत्र श्लोकचतुष्टयम् ।।

अर्थ-काव्य के जितने भी कोटि हैं उनमें नाटक रमणीय होता है। नाटकों में भी काव्य-सौन्दर्य की दृष्टि से अभिज्ञानशाकुन्तलं रमणीय है। अभिज्ञानशाकुन्तलं मेंभी उसका चतुर्थ अंक अत्यन्त रमणीय है, और चतुर्थ अंक में भी चार श्लोक तो बहुत ही रमणीय है।

- **पञ्चम अङ्क-** शकुन्तला का राजदरबार में उपस्थिति श्राप के कारण राजा के द्वारा त्याग, पुनः राजा का खिन्न हृदय व चिन्तामग्न।
- **षष्ठ अङ्क-**शकुन्तला को दी हुई अंगूठी राजा को प्राप्ति, राजा शोक में मूर्च्छित, इन्द्र का सारथि मातलि का आगमन, राजा का स्वर्ग प्रथान। (प्रवेशक का प्रयोग)
- **सप्तम अङ्क-**राजा का दानवों पर विजय, मारीच के आश्रम हेमकूट पर्वत पर राजा को अपने पुत्र व पत्नी शकुन्तला से पुनर्मिलन।
- **निष्कर्षः—**उपर्युक्त व्याख्या से स्पष्ट हुआ कि अभिज्ञानशाकुन्तलम् के 4 अङ्क की प्रसिद्धि अत्यधिक है, अतः चौथे अङ्क की वैशिष्ट्यता अधिक है ।

Answer-C स्त्रोत -अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कपिलदेव द्विवेदी

29. **'शिवराजविजयम्' अस्ति ?**

A. गद्यकाव्यम् B.खण्डकाव्यम्
C. चम्पूकाव्यम् D.महाकाव्यम्

व्याख्याः-

- **गद्यकाव्य-** 'वृत्तगन्धोज्झितं गद्यं'-छन्दके बन्धसे रहित पदसमूह को 'गद्य' कहते है।

गद्य के मुख्यतः दो भेद है- 1. कथा 2.आख्यायिका।

गद्य काव्य है- दशकुमारचरितं, कादम्बरी, हर्षचरितम्, शिवराजविजयं आदि।

- **खण्डकाव्य-** खण्डकाव्य, महाकाव्य के एक भागका अनुसरण करता है। आचार्य विश्वनाथ अपने ग्रन्थ साहित्यदर्पण में खण्डकाव्य का लक्षण लिखते है-

खण्डकाव्यं भवेत्काव्यस्यैकदेशानुसारि च।

महाकवि कालिदास का मेघदूतम् खण्डकाव्य के रूप में अतिप्रसिद्ध है।

- **चम्पूकाव्य-** जिसमें गद्य और पद्य दोनों का वर्णन रहे उसको चम्पूकाव्य कहते है।

गद्यपद्यमयं काव्यं चम्पूरित्यभिधीयते।

त्रिविक्रम भट्ट का नलचम्पू अति प्रसिद्ध है।

- **महाकाव्य-** महाकाव्य श्रव्यकाव्य के अन्तर्गत पद्यकाव्य का भेद है।महाकाव्यों में सर्ग होता है, जो कि 8 से अधिक होता है।इसमें प्रधान रस श्रृंगार, वीर और शान्त में से कोई एक होता है। महाकाव्य में नायक देवता अथवा कुलीन क्षत्रिय वंश का होता है। जैसे- कुमारसम्भव, रघुवंश, किरातार्जुनीयं शिशुपालवधं आदि।
- **निष्कर्षः-**शिवराजविजयं एक गद्यकाव्य के अन्तर्गत आता है, जो की संस्कृत उपन्यास के रूप में अतिप्रसिद्ध है, जिसके कर्ता पं0 अम्बिकादत व्यास है। Answer-A

30. 'क्रुद्धः पिता पुत्रं ताडयति' अस्मिन् वाक्ये विशेष्यपदं किम्?

A. ताडयति B. पुत्रम्

C. पिता D. क्रुद्धः

व्याख्याः-

- **विशेष्य किसे कहते है-** विशेषण जिस पद की विशेषता बतलाता है, उसे विशेष्य पद कहते है। जैसे- कृष्णः मृगः (काला मृग) यहाँ कृष्णः

मृग पद का विशेषण बतला रहा है अतः मृग पद विशेष्य है।

- **'क्रुद्धः पिता पुत्रं ताडयति'** (क्रोधित पिता पुत्र को मार रहा है)मेंपिता कर्ता है, ताड़ना क्रिया है, और पुत्र कर्म है। पिता रूपी कर्ता प्रथमा एकवचन का है तथा उसका विशेषण क्रुद्धः और वह भी प्रथमा एकवचन का है।
- **निष्कर्षः**—क्रुद्धः पिता पुत्रं ताडयति में पिता विशेष्य पद का क्रुद्धः विशेषण है अतः पिता विशेष्य है और क्रुद्धः विशेषण है ।

Answer-C स्त्रोत -रचनानुवादकौमुदी - कपिलदेव द्विवेदी

31. 'पीनः देवदत्तः भोजनं करोति' इत्यत्र विशेष्यपदं किम्?

A. देवदत्तः **B. पीनः**

C. भोजनम् **D. करोति**

व्याख्याः-

- विशेष्य किसे कहते है- विशेषण जिस पद की विशेषता बतलाता है, उसे विशेष्य पद कहते है। जैसे- पीनः देवदत्तः भोजनं करोति (मोटा देवदत्त भोजन करता है) इसमें देवदत्त कर्ता है।

करोति पद क्रिया है। भोजन कर्म है। पीन (मोटा) रूपी विशेषण देवदत्त का विशेषता बतला रहा है अतः देवदत्त विशेष्य पद हुआ।

- **निष्कर्षः**—देवदत्तः भोजनं करोति (मोटा देवदत्त भोजन करता है) पीन (मोटा) रूपी विशेषण देवदत्त का विशेषता बतला रहा है अतः देवदत्त विशेष्य पद हुआ।

Answer - A

32. यथोचितं मेलयत-

List 1	List 2
A. अध्यास्ते	I. कटम्
B. पटुतमः	II. छात्रेषु
C. स्मरति	III. मातुः
D. अलम्	IV. कोलाहलेन

अधोलिखितेषु समुचितं विकल्पं चिनुत-

A. A-IV, B-I, C-II, D-III
B. A-I, B-II, C-III, D-IV
C. A-I, B-II, C-IV, D-III
D. A-III, B-IV, C-II, D-I

व्याख्याः-

(क) अध्यास्ते - कटम् (अधिशीङ्स्थासां कर्म से द्वितीया विभक्ति हुई।)

(ख) पटुतमः - छात्रेषु (यतश्च निर्धारणं से निर्धारण अर्थ में सप्तमी विभक्ति हुई)

(ग) स्मरति - मातुः (षष्ठी शेषे से शेष अर्थ में षष्ठी विभक्ति हुई।)

(घ) अलम्- कोलाहलेन (अलम् निषेध अर्थ में होने से तृतीया हुई।)

- **निष्कर्षः-**उपर्युक्त व्याख्या से स्पष्ट है कि दूसरा सुमेल सही है। Answer-B स्त्रोत -सिद्धान्तकौमुदी कारकप्रकरण

33. यथोचितं मेलयत-

List 1	List 2
A. अनुरूपम्	I. यौगपद्यम्
B. सचक्रम्	II. योग्यता
C. सतृणम्	III. अत्ययः
D. अतिहिमम्	IV. साकल्यम्

अधोलिखितेषु समुचितं विकल्पं चिनुत-

A. A-II, B-I, C-IV, D-III
B. A-II, B-III, C-IV, D-I
C. A-III, B-IV, C-II, D-I
D. A-IV, B-II, C-III, D-I

व्याख्याः-

(क) अनुरूपम् - योग्यता (रूपस्य योग्यम्)

(ख) सचक्रम् - यौगपद्य (चक्रेण युगपत्)

(ग) सतृणम् - साकल्य (तृणमप्यपरित्यज्य)

(घ) अतिहिमम् - अत्यय (हिमस्यात्ययो)

- निष्कर्षः उपर्युक्त व्याख्या से स्पष्ट है कि प्रथम सुमेलित है।Answer-A स्त्रोत -सिद्धान्तकौमुदी समासप्रकरण

34. यथोचितं मेलयत-

List 1	List 2
A. वैद्यकशास्त्रम्	I. चरकसंहिता
B. खण्डकाव्यम्	II. मेघदूतम्
C. कथासाहित्यम्	III. हितोपदेश
D. महाकाव्यम्	IV. नैषधीयचरितम्

अधोलिखितेषु समुचितं विकल्पं चिनुत-

A. A-I, B-II, C-III, D-IV
B. A-IV, B-III, C-II, D-I
C. A-III, B-I, C-IV, D-II
D. A-II, B-IV, C-I, D-III

व्याख्याः-

(क) वैद्यकशास्त्रम् - चरकसंहिता (आचार्य चरक)

(ख) खण्डकाव्यम् - मेघदूतम् (कालिदास)

(ग) कथासाहित्यम् - हितोपदेश (नारायाण पण्डित)

(घ) महाकाव्यम् - नैषधीचरितम् (श्रीहर्ष)

- **निष्कर्षः—** उपर्युक्त व्याख्या से स्पष्ट है कि प्रथम सुमेलित है। Answer-A स्त्रोत - संस्कृत साहित्य का इतिहास - उमाशंकर ऋषि

35. यथोचितं मेलयत-

List 1	List 2
A. विक्रमोर्वशीयम्	I. विष्णुशर्मा
B. पञ्चतन्त्रम्	II. कालिदासः
C. नीतिशतकम्	III. अश्वघोषः
D. सौदरनन्दम्	IV. भर्तृहरिः

अधोलिखितेषु समुचितं विकल्पं चिनुत-

A. A-II, B-I, C-IV, D-III
B. A-I, B-II, C-III, D-IV
C. A-IV, B-III, C-II, D-I
D. A-III, B-IV, C-I, D-II

व्याख्याः-

(क) **विक्रमोर्वशीयम् -** कालिदास (त्रोटक 5 अङ्क)

(ख) **पञ्चतन्त्रम् -** विष्णुशर्मा (कथा)

(ग) **नीतिशतकम् -** भर्तृहरि (मुक्तककाव्य)

(घ) **सौदरनन्दम् -** अश्वघोष (महाकाव्य)

- **निष्कर्षः**—उपर्युक्त व्याख्या से स्पष्ट है कि प्रथम सुमेलित है।

Answer-A स्रोत -संस्कृत साहित्य का इतिहास

36. 'उपवेदः' अस्ति-

A. यजुर्वेदः   B. आयुर्वेदः
C. धनुर्वेदः   D. गान्धर्ववेद

अधोलिखितेषु समुचितं विकल्पं चिनुत-

A. B, D केवलम्
B. C, A केवलम्
C. D, A केवलम्
D. B, C केवलम्

व्याख्याः-

(क) **ऋग्वेद** - आयुर्वेद

(ख) **यजुर्वेद** - धनुर्वेद

(ग) **सामवेद** - गान्धर्ववेद

(घ) **अथर्ववेद** - इतिहास,पुराण,सर्प,पिशाचवेद

- **निष्कर्षः**—ऋग्वेद का आयुर्वेद एवं यजुर्वेद का धनुर्वेद उपवेद है।

Answer-D स्रोत - संस्कृत साहित्य का इतिहास

37. नास्तिकं दर्शनम् अस्ति-

A. योगदर्शनम्   B. वैष्णवदर्शनम्
C. वेदान्तदर्शनम्   D. जैनदर्शनम्

व्याख्याः-

दर्शन शब्द दृश् धातु से ल्युट् प्रत्यय मिलकर बना है। जिसका अर्थ होता है देखना।

भारतीय दर्शन के 9 भेद है। 6 आस्तिक दर्शन और 3 नास्तिक दर्शन।

- **आस्तिक दर्शन-** जो दर्शन वेद को स्वीकारता है उसको आस्तिक दर्शन कहते है। इनकी संख्या 6 है, जो कि है -

दर्शन		प्रवर्तक
i. योगदर्शन	-	महर्षि कपिल
ii. सांख्यदर्शन	-	महर्षि पतञ्जलि
iii. वैशेषिकदर्शन	-	महर्षि कणाद (उलूक)
iv. न्यायदर्शन	-	अक्षपाद गौतम
v. पूर्व-मीमांसा	-	महर्षि जैमिनी
vi. उत्तर-मीमांसा (वेदान्त)	-	बादरायण

नास्तिक दर्शन- जो दर्शन वेद को नहीं स्वीकारता है उसको नास्तिक दर्शन कहते है। (नास्तिको वेदनिन्दकः) इनकी संख्या 3 है, जो कि है -

दर्शन		प्रवर्तक
i. जैनदर्शन	-	ऋषभदेव
ii. बौद्धदर्शन	-	गौतम बुद्ध
iii. चार्वाकदर्शन (लोकायत)	-	चार्वाक

- **निष्कर्षः**—प्रस्तुत व्याख्या से स्पष्ट होता है कि नास्तिक दर्शन जैनदर्शन है।

Answer-D स्रोत -भारतीय दर्शन - पं० बलदेव उपाध्याय

38. सत्यं कथनम् अस्ति -

A. कात्यायनः वार्तिककारः अस्ति ।

B. मृच्छकटिकस्य लेखकः शूद्रकः अस्ति।

C. वैशम्पायनचन्द्रापीडो मेघदूते स्तः।

D. 'वृक्ष' शब्दस्य पर्यायशब्दः 'रजनी' अस्ति।

अधोलिखितेषु समुचितं विकल्पं चिनुत-

A. A, B केवलम्

B. B, C केवलम्

C. C, D केवलम्

D. D, A केवलम्

व्याख्याः-

(क) कात्यायन ने वार्तिक की रचना किया।

(ख) मृच्छकटिकं के लेखक शूद्रक है। यह प्रकरण ग्रन्थ है जिसमें 10 अङ्क है।

(ग) वैशम्पायन, चन्द्रापीड कादम्बरी मे है, मेघदूतं ये यक्ष व यक्षिणी का वर्णन है।

(घ) वृक्ष शब्द का पर्याय तरु,पादप,विटप,द्रुम है और रजनी का पर्याय रात्रि है।

- **निष्कर्षः**—उपर्युक्त व्याख्या से स्पष्ट है A और B सही है ।

  Answer-A स्त्रोत -संस्कृत साहित्य का इतिहास

39. 'मतुप्' प्रत्ययान्तौ शब्दौ चिनुत -

A. पठितवान् B. धनवान्

C. बुद्धिमान् C. गतवती

अधोलिखितेषु समुचितं विकल्पं चिनुत-

A. A, B केवलम्

B. B, C केवलम्

C. C, D केवलम्

D. D, A केवलम्

व्याख्या- वह इसके पास है या वह इसमें है इस अर्थ में प्रत्ययों का विधान किया गया है। जैसे जिसके पास धन है उसे धनी, जिसके पास ज्ञान है उसे ज्ञानी, जो पुत्र वाला है, उसे पुत्रवान् और जिसके पास बुद्धि है उसे बुद्धिमान् आदि शब्दों का व्यवहार होता है। उसी प्रकार संस्कृत में इन अर्थों को प्रकट करने के लिए मतुबादि प्रत्यय किये जाते हैं। भाष्यकार ने मतुप् प्रत्यय के लिए एक श्लोक उद्धृत किया है-

भूम-निन्दा - प्रशंसासु नित्ययोगेऽतिशायने ।
सम्बन्धेऽस्तिविवक्षायां भवन्ति मतुबादयः ।

अर्थात्

अस्तिविवक्षायां (विद्यमानता की विवक्षा में) भूमन् (बहुत्व), निन्दा (बुराई), प्रशंसा (प्रशंसा), नित्ययोगे (नित्य संयोग), अतिशायन (अतिशयता, आधिक्य) और सम्बन्ध (संयोग) इन छः अर्थों में मतुप् प्रत्यय एवं उसके योग में होने वाले प्रत्ययों का विषय प्रतिपादित किया है।

भूमा- बहुत्व, अधिकता अर्थ में, जैसे- गोमान् (बहुत गायों वाला) निन्दा-अर्थ में, जैसे- ककुदावर्तिनी (ककुदावर्ती वाली) लड़कीप्रशंसा अर्थ में, जैसे-रूपवान् (सुन्दर रूप वाला) नित्ययोग-नित्यसम्बन्ध अर्थ में, जैसे- क्षीरिणो वृक्षाः (सदा दूध वाले वृक्ष) आदि।

- **निष्कर्षः**—प्रस्तुत व्याख्या से स्पष्ट होता है कि धनवान और बुद्धिमान में मतुप् प्रत्यय है।

  Answer-B स्त्रोत -लघुसिद्धान्तकौमुदी - श्रीधरमुखोल्लासिनी व्याख्या

40. लभ् धातोः लङ्लकारस्य प्रथमपुरुषस्य बहुवचने रूपं भवति-

A. अलभन् B.अलभेन्

C. अलभन्त D. अलभन्ताम्

व्याख्याः

लङ्लकार (भूतकाल)

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमपुरुष	अलभत	अलभेताम्	अलभन्त
मध्यम पुरुष	अलभथाः	अलभेथाम्	अलभध्वम्
उत्तम पुरुष	अलभे	अलभावहि	अलभामहि

- **निष्कर्षः**—प्रथम पुरुष बहुवचन का रूप अलभन्त है ।

Answer-C स्त्रोत -रूपचन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी

अधोलिखितं गद्यखण्डं पठित्वा प्रश्नानां समुचितानि उत्तराणि चिनुत-

आसीत् पुरा निषधदेशे राज्ञः वीरसेनस्य पुत्रः नलः नाम। सः सौन्दर्येण तेजसा गुणैः च जनानाम् प्रियः अभवत्। तस्य पुत्री दमयन्ती अतीव सुन्दरी लोकप्रसिद्धा च आसीत्। एकदा राजा नलः राजभवनस्य उपवने परिभ्रमन् एकं स्वर्णमयं हंसम् अपश्यत। अतः सः सहजेन स्नेहन कराभ्यां तम् अगृह्णात्। परञ्च नलः दमयन्त्याः लोभात् हंसं तत्क्षणम् एवं अमुञ्चत्।

व्याख्याः- प्राचीन निषधदेश में राजा वीरसेन के पुत्र नल हुए। वह अपने सौन्दर्य और तेजरूपी गुणों के द्वारा सभी लोगों को अतिप्रिय थे। उसी समय विदर्भ देश में भीम नाम के राजा हुए। जिनकी पुत्री दमयन्ती अतिसुन्दर और लोकप्रसिद्ध थीं। एक बार राजा नल अपने राजभवन के उपवन में घूमते हुए एक सोने का हंस देखा और वह उस हंस को सहजता व स्नेहपूर्वक् अपने दोनों हाथों से पकड़ लिया। किन्तु उस हंस ने राजा नल को दमयन्ती का लोभ दिया तो राजा नल ने तत्काल ही उस हंस को छोड़ दिया।

41. **निषधदेशस्य राजा कः?**

A. दुष्यन्तः B. वीरसेनः
C. भीमः D. कौरवः

Answer-B

42. **विदर्भराजस्य पुत्र्याः नाम किम् ?**

A. लता B. गार्गी
C. शकुन्तला D. दमयन्ती

Answer-D

43. **वीरसेनस्य पुत्रस्य नाम किम् ?**

A. दुष्यन्तः B. नलः
C. हंसः D. कीचकः

Answer-B

44. **'उपवने' इत्यस्मिन् का विभक्तिः ?**

A. द्वितीया B. सप्तमी
C. षष्ठी D. पञ्चमी

Answer-B

45. **'भीमः' कस्य देशस्य राजा आसीत् ?**

A. पाटलिपुत्रस्य B. भोपालस्य
C. हरिद्वारस्य D. विदर्भस्य

Answer-D

अधोलिखितं अनुच्छेदं पठित्वा प्रश्नानां समुचितानि उत्तराणि दीयन्ताम्-

देशाटनस्य बहवः लाभाः सन्ति। देशाटनेन वयं सर्वेषां देशानां राजनैतिकं सामाजिकं सांस्कृतिकं च रूपं ज्ञातुं समर्थाः भवामः। वर्तमानसमये व्यापारोऽपि प्रायशः अन्ताराष्ट्रियः व्यापारः सञ्जातः। कस्मिन् देशे कदा किं च सुलभम् एतस्य ज्ञानं सर्वथा प्राप्तुं शक्नुमः। बहवः एतादृशाः अपरिपक्वाः पदार्थाः सन्ति, येषां प्राप्तिः समुचितपदार्थानां निर्माणाय अनिवार्या अस्ति। अतः तान् पदार्थान् प्राप्तुं देशाटनम् अवश्यमेव कर्तव्यम्। देशाटनेन जनानां ज्ञानवर्धनं भवति। तेषु परिपक्वता स्थिरता च आगच्छतः। देशाटनेन जनाः प्रफुल्लताम् अतिसन्तोषञ्च अनुभवन्ति।

व्याख्याः- देश भ्रमण करने से बहुत लाभ मिलता है। देशभ्रमण करने हम सब देश को राजनैतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक रूप से जानने में समर्थ होते है। वर्तमान समय में व्यापार भी अंतराष्ट्रीय व्यापार हो गया है। किस देश में क्या सुलभ है इसका ज्ञान हम आसानी से प्राप्त कर सकते है। ऐसे बहुत सारे अपरिपक्व पदार्थ है जिसकी प्राप्ति से हम समुचित पदार्थ बना सकते है। (जैसे कपास रूपी अपरिपक्व पदार्थ से समुचित पदार्थ कपड़ा बनाते है आदि) इसलिए उन पदार्थों को प्राप्त करने के लिए देश का भ्रमण अवश्य करना चाहिए। देश भ्रमण करने से लोगों का ज्ञान होता है। लोगों को जानने समझने में परिपक्वता और स्थिरता आती है। देश भ्रमण करने से लोग आनन्दित एवं संतोष का अनुभव करते है।

46. 'सांस्कृतिकं रूपं ज्ञातुं समर्थाः भवामः' इत्यत्र क्रियापदं किम्
A. सांस्कृतिकम् B. रूपम्
C. समर्थाः D. भवामः
Answer-D

47. अन्ताराष्ट्रियः व्यापारः भवति ?
A. लेखनेन B. अध्ययनेन
C. देशाटनेन D. व्याख्यानेन
Answer-C

48. देशाटनेन जनाः किमनुभवन्ति ?
A. दुःखम् B. समृद्धिम्
C. प्रफुल्लताम् D. चिन्ताम्
Answer-C

49. पदार्थान् प्राप्तुम् अवश्यमेव किं कर्तव्यम् ?
A. अध्ययनम् B. देशाटनम्
C. विद्यार्जनम् D. प्रातःकरदर्शनम्
Answer-B

50. अपरिक्वपदार्थैः किं भवति ?
A. समुचितपदार्थानां निर्माणम् B. पक्वपदार्थानां निर्माणम्
C. अदृष्टपदार्थानां निर्माणम् D. अनिष्टपदार्थानां निर्माणम्
Answer-A

CUETOld UG Qustion Paper - 2023

अनुच्छेदं पठित्वा अधः प्रदत्तानां प्रश्ननानां उत्तराणि लिखत-

अस्माकं देशः कृषिप्रधानः देशोऽस्ति। ग्रामेष्वव कृषिकर्म भवति । यतो हि देशस्य बहुसंख्यकाः मानवाः ग्रामेषु एव वसन्ति। ग्रामवासिनां जीवनं सुखमयं भवति । प्रकृत्याः मनोरमरूपं ग्रामवासिभ्यः प्रसन्नतां ददाति। कुत्रचित् हरितशस्यमयी स्थली शोभतेक्वचिच्च हरितानि क्षेत्राणि राजन्ते। वृक्षाः शोभयाः पवनः स्वसुन्धेनपुष्पाणि सौन्दर्येण च ग्रामवासिनां मनोरञ्जनं कुर्वन्ति। पक्षिणां मधुरः कलरवः कर्णेषु मधुधारां सिञ्चति।

उपवनानां शोभा ग्रामवासिनां जीवने सरसतायाः मधुरतायाश्च संचारं करोति। क्वचित् पुष्पाणि विकसन्ति। गुञ्जन्तो भ्रमराः पुष्पेषु भ्रमन्ति तेषां मधु च पिबन्ति। ग्रामं परितः सर्षपाणां पीतपुष्पैः आच्छादितानि क्षेत्राणि ग्रामवासिनां मनांसि मोहयन्ति। ग्रामिणनराः प्रकृतेः क्रोडे वर्द्धन्ते। स्वच्छः पवनः दिनकरस्य रश्मयः पवित्रं स्वच्छं च जलं ग्रामीणजनानां स्वास्थ्यस्य रक्षकाः सन्ति। ग्रामवासिना जीवनं परिभ्रमस्य सन्तोषस्य करुणायाः त्यागस्य च भवति। ग्रामवासिनः कृषिकर्मकुर्वन्ति अतः कृषकाः भवन्ति।

1. अस्माकं देशः विद्यते...............
A.कृषिप्रधानः B. प्रावारकप्रधानः
C. धनप्रधानः D. वाणिज्यप्रधानः

2. ....ग्रामवासिभ्यः प्रसन्नतां ददाति।
A. कृषिकार्यम् B. प्रातः भ्रमणम्
C. प्रकृत्याः मनोरमरूपम् D. दिनकरस्य रश्मयः

3. 'वृक्षाः शोभया, पवनः स्वसुगन्धेन पुष्पाणि सौन्दर्येण च ग्रामवासिनां मनोरञ्जनं कुर्वन्ति' वाक्येऽस्मिन् तृतीयान्तानि पदानि सन्ति -
A. पुष्पाणि B. शोभया
C. वृक्षाः D. सुगन्धेन E. सौन्दर्येण
अधः प्रदत्तेषु विकल्पेषु उचिततमम् उत्तरं चिनुत -
1. केवलम् B,D,E

2. केवलम् B,C,D
3. केवलम् A,C,E
4. केवलम् A,B,C

4. प्रथमां सूचीं द्वितीयया सूच्या सह मेलयेत -

सूची 1	सूची 2
A. स्वच्छः	I. कलरवः
B. पवित्रं स्वच्छं च	II. पवनः
C. हरितानि	III. जलम्
D. मधुरः	IV. क्षेत्राणि

अधः प्रदत्तेषु विकल्पेषु उचिततमम् उत्तरं चिनुत-

A. A-I, B-III, C-IV, D-II
B. A-II, B-III, C-IV, D-I
C. A-I, B-II, C-III, D-IV
D. A-II, B-I, C-III, D-IV

5. गद्यानुसारं वाक्यानां क्रम निर्धारयत -

A. क्वचित् पुष्पाणि विकसन्ति
B. गामेष्वेव कृषिकर्म भवति
C. ग्रामवासिनः कृषिकर्म कुर्वन्ति
D. अतः कृषकाः भवन्ति
E. ग्रामवासिनः कृषिकर्म कुर्वन्ति

अधः प्रदत्तेषु विकल्पेषु उचिततमम् उत्तरं चिनुत -

A. C,B,E,A,D
B. C,D,B,A,E
C. B,C,A,E,D
D. B,D,C,A,E

6. कीदृशी स्थली शोभते ?

A. पीतपुष्पैः युक्ता B. हरितशस्यमयी
C. सुगन्धिता D. प्रकृतिमयी

7. ग्रामेष्वेव इत्यस्य पदस्य समुचितं सन्धिविच्छेदं चिनुत ?

A. ग्रामेषु + एव B. ग्रामे + ष्वेव
C. ग्रामेष्व + एव D. ग्राम + एष्वेव

8. के मधु पिबन्ति ?

A. ग्रामवासिनः B. भ्रमराः
C. जनाः D. देवाः

9. भ्रमराः कुत्र भ्रमन्ति ?

A. वृक्षेषु B.पुष्पेषु
C. ग्रामेषु D.क्षेत्रेषु

10. 'ग्रामीणनराः प्रकृतेः क्रोडे वर्धन्ते' वाक्येस्मिन् क्रियापदमस्ति -

A. प्रकृतेः B.वर्धन्ते
C. क्रोडे D.ग्रामीणनराः

अनुच्छेदं पठित्वा अधः प्रदत्तानां प्रश्ननानां उत्तराणि लिखत-

एकः वृद्धः आसीत्। तस्य पुत्राः अलसाः आसन्। वृद्धः वारं वारं सर्वान् परिश्रमं कर्तुं वदति स्म। परन्तु तेषां रुचिः कार्येषु न आसीत्। वृद्धः रुग्णः जातः। सः पुत्रान् आहूय कथितवान् पुत्राः! मम कृषिक्षेत्रे कुत्रचित् अमूल्यः निधिः अस्ति। यूयम् सर्वे कृषिक्षेत्रं खनित्वा अमूल्यनिधिं प्राप्स्यथ। सर्वे पुत्राः अमूल्यनिधिं प्राप्तुम् उत्सुकाः अभवन्। सर्वप्रथमं ज्येष्ठपुत्रः खननकार्यम् आरभत। तं वीक्ष्य अन्ये अनुजाः अपि खननकार्ये संलग्नाः जाताः। सर्वे एव अमूल्यनिधिं अन्वेष्टु तत्पराः उत्साहिताः च आसन्। सम्पूर्णं क्षेत्रं खनित्वा ते अचिन्तयन् - यदि क्षेत्रे बीजवपनं कूर्मः तर्हि शस्यम् उत्पन्नं भविष्यति। तदा प्रभृति ते सर्वे सहोदराः परिश्रमेण क्षेत्रे कृषिकार्यं कुर्वन्ति स्म।

11. यदि क्षेत्रे बीजवपनं भविष्यति तर्हि किम् उत्पन्नं भविष्यति ?

A. मणिमौक्तिकादयः B.शस्यम्
C. अमूल्यनिधिः D.क्षेत्रम्

12. वृद्धस्य पुत्राः कीदृशाः आसन्

A. अलसाः B.परिश्रमिणः
C. रुग्णाः D.प्रेष्ठाः

13. कः रुग्णः जातः -

A. बालः B. पुत्रः

C. वृद्धः D. ज्येष्ठः

14. 'सर्वे पुत्राः निधिं प्राप्तुम् उत्सुकाः अभवन्' अस्मिन् वाक्ये क्रियापदं किम् अस्ति ?

A. सर्वे B. अभवन्

C. पुत्राः D.निधिम्

15. एतानि वाक्यानि गद्यांशानुसारं प्रयोगाधारेण यथाक्रमं व्यवस्थापयत।

A. वृद्धः रुग्णः जातः

B. पुत्राः निधिं प्राप्तुम् उत्सुकाः अभवन्

C. यूयं सर्वे अमूल्यनिधिं प्राप्स्यथ

D. एकः वृद्धः आसीत्

E. सः पुत्रान् आहूय कथितवान्

अधः प्रदत्तेषु विकल्पेषु उचिततमम् उत्तरं चिनुत -

A. A,C,B,E,D

B. A,B,C,D,E

C. D,E,C,B,A

D. D,A,E,C,B

16. निम्नलिखिते पदे लट्लकार अस्ति -

A. आसीत् B. आसन्

C. कूर्मः D. अस्ति

E. भविष्यति

अधः प्रदत्तेषु विकल्पेषु उचिततमम् उत्तरं चिनुत -

A. केवलम् A,B

B. केवलम् C,D

C. केवलम् D,E

D. केवलम् C,E

17. तस्य वृद्धस्य पुत्राः अलसाः आसन्। अत्र कर्तृपदम् किम् अस्ति ?

A. तस्य B. पुत्राः

C. वृद्धस्य D. अलसाः

18. सर्वप्रथमं खननकार्यं कः आरभत?

A. वृद्धः B. कृषकः

C. ज्येष्ठः पुत्रः D. कनिष्ठः पुत्रः

19. कः वारं वारं सर्वान् परिश्रमं कर्तुं वदति स्म ?

A. ज्येष्ठः पुत्रः B. अनुजः

C. रुग्णः D. वृद्धः

20. 'कथितवान्' इत्यत्र कः प्रत्ययः -

A. क्त B. क्तवतु

C. शतृ D. शानच्

अनुच्छेद पठित्वा अधः प्रदत्तानां प्रश्नानाम् उत्तराणि लिखत—

पञ्चानां सहोदराणां मध्ये कृष्णा एकेव भगिनी सञ्जाता। जन्मक्रमेणेयं चतुर्थी सन्ततिरासीत्पित्रोः ज्येष्ठतमो भ्राता गार्हस्थ्यप्रबन्धे विपुलकृषिकर्मणि च संलग्नआसीत्। द्वितीयतृतीयौ भ्रातरौ क्रमेण स्थलसेनायां वायुसेनायाञ्चाधिकारिणावास्ताम्। चतुर्थो भ्राता कृष्णानन्तरोत्पन्नो विश्वविद्यालये स्नातकोत्तरकक्षायामधीयान आसीत्। पञ्चमश्चापि सप्तदशवर्षदेशीयस्सम्प्रति द्वादशकक्षायाश्छात्र आसीत्।

मध्यमवर्गीयोऽयं क्षत्रियपरिवारो धर्माचरण-संस्कृति-कुलपरम्परानुपालनदृष्ट्या निखिलेऽपि क्षेत्रे मानगौरवधुरमधिरोहति स्म। कुटुम्बेऽस्मिन् परमेश्वरकृपयाइदानीमपि पितामहीपितामहौ, मातापितरौ चापि जीवन्त आसन्। इदानीमपि पितामही प्रायेण द्विनवतिवर्षदेशीया सूचिकाच्छिद्रे दोरकं सरलतया विन्यस्तुं प्रभवति स्म। पितामहोऽपि प्रायेण भार्यावस्थ एव शौचादिकर्म सम्पादयितुं दविष्ठे नदीतटे एवं गच्छति स्म। पितामहः स्वयौवने मल्लयुद्ध-कुशल आसीत्।

21. भगिन्याः नाम किमासीत्?

A. रमा B. कृष्णा

C. राधा D. सरला

22. गार्हस्थ्यप्रबन्धे कः संलग्न आसीत्?

A. पितामहः B. ज्येष्ठो भ्राता

C. तृतीयो भ्राता D. पिता

23. पितामही आसीत -

A. द्विसप्ततिवर्षीया B. द्विनवतिवर्षिया

C. द्विषष्टिवर्षीया D. द्विपञ्चाशद् वर्षीया

24. पितामहः कस्मिन् कुशल आसीत्?

A. मल्लयुद्धे B. शस्त्रक्षेपणे

C. पाककलायाम् D. धनुर्युद्धे

25. अनुच्छेदानुसारं वाक्यानाम् उचित क्रमं व्यवस्थापयत -

A. ज्येष्ठतमो भ्राता गार्हस्थ्यप्रबन्धे विपुलकृषिकर्मणि च संलग्न आसीत्

B. जन्मक्रमेणेयं चतुर्थी सन्ततिरासीत्पित्रोः

C. पञ्चानां सहोदराणां मध्ये कृष्णा एकैव भगिनी सञ्जाता

D. पञ्चमश्चापि सप्तदशवर्षदेशीयस्सम्प्रति द्वादशकक्षायाश्छात्र आसीत्

E. चतुर्थो भ्राता कृष्णानन्तरोत्पन्नो विश्वविद्यालये स्नातकोत्तरकक्षायामधीयान आसीत्

अधः प्रदत्तेषु विकल्पेषु उचिततमम् उत्तरं चिनुत-

A. B, A, E, D, C

B. C, B, A, E, D

C. B, C, D, E, A

D. C, B, A, D, E

26. मध्यमवर्गीयोऽयं क्षत्रियपरिवारो कया दृष्ट्या मानगौरवधुरमधिरोहति स्म -

A. धर्माचरणदृष्ट्या B. मल्लयुद्धदृष्ट्या

C. संस्कृतिदृष्ट्या D. कुलपरम्परानुपालनदृष्ट्या

E. कृषिकर्मदृष्ट्या

अधः प्रदत्तेषु विकल्पेषु उचिततमम् उत्तरं चिनुत-

A. केवलम् A, B, C

B. केवलम् A,D, E

C. केवलम् A, C, D

D. केवलम् A, C, E

27. प्रथमां सूचीं द्वितीयया सूच्या सह मेलयेत -

सूची 1	सूची 2
A. ज्येष्ठतमो भ्राता	I. द्वादशकक्षायामधीयमानः
B. द्वितीयो भ्राता	II. स्थलसैनिकः
C. चतुर्थो भ्राता	III. कृषिकः
D.पञ्चमी भ्राता	IV. स्नातकोत्तरकक्षायामधीयमानः

अधः प्रदत्तेषु विकल्पेषु उचिततमम् उत्तरं चिनुत-

A. A-II, B-III, C-IV. D-I

B. A-II, B-IV, C-I, D-III

C. A-III, B-II, C-IV. D-I

D. A-III,B- IV, C-I, D-II

28. 'आसन्' इत्यत्र कः लकारः ?

A. लट् B. लृट्

C. लङ् D. लोट्

29. 'एकैव' पदेऽस्मिन् सन्धिः अस्ति -

A. गुण - सन्धिः B. वृद्धि - सन्धिः

C. यण् - सन्धिः D. अयादि - सन्धिः

30. 'विन्यस्तुम्' पदेऽस्मिन् कः प्रत्ययः ?

A. क्त B. क्तवतु

C. तुमुन् D. ल्यप्

31. 'मंथरकः नाम तन्तुवायः आसीत्' इत्यत्र क्रियापदम् अस्ति-

A. नाम B. मन्थरकः

C. आसीत् D. तन्तुवायः

32 'यथाबलम्' इत्यस्य विग्रहवाक्यम् अस्ति -

A. बलस्य अतिक्रम्य B. बलम् अतिक्रम्य

C. बलम् इति D. बलम् अनतिक्रम्य

33. प्रथमां सूचीं द्वितीयया सूच्या सह मेलयेत -

सूची 1	सूची 2
A. स्मृतिः	I. क्तवतु
B. दृष्टः	II. क्तिन्
C. शोभायमानः	III. क्त
D. स्पृष्टवान्	IV. शानच्

अधः प्रदत्तेषु विविकल्पेषु उचिततमम् उत्तरं चिनुत-

A. A-II, B-I, C-IV, D-III

B. A-III, B-IV, C-I, D-II

C. A-II, B-III, C-IV D-I

D. A-IV, B-III, C-II, D-I

34. प्रथमां सूचीं द्वितीयया सूच्या सह मेलयेत -

सूची 1	सूची 2
A. नमः	I. तृतीया
B. उभयतः	II. सप्तमी
C. सह	III. चतुर्थी
D. कुशलः	IV. द्वितीया

अधः प्रदत्तेषु विकल्पेषु उचिततमम् उत्तरं चिनुत-

A. A-II, B-III, C-I, D-IV

B. A-III, B-I, C-IV, D-II

C. A-I, B-IV, C-III, D-II

D. A-III, B-IV, C-I, D-II

35. 'वृक्षपतितः' इत्यत्र कः समासः ?

A. बहुव्रीहिः B. द्वन्द्वः

C. तत्पुरुषः D. द्विगुः

36. 'गच्छन्' इत्यस्मिन् पदे कः प्रत्ययः अस्तिः

A. शतृ B. शानच्

C. ष्यञ् D. ष्वुन्

37. 'देवोऽयम्' इति पदस्य सन्धिच्छेदः भवति-

A. देवौ+अयम् B. देव् + अयम्

C. देवः + अयम् D. देवो + यम्

38. ....निकषा विद्यालयः अस्ति-

A. ग्रामः B. ग्रामम्

C. ग्रामात् D. ग्रामस्य

39. वसन्ततिलकाछन्दसः उदाहरणम् अस्ति -

A. मृगशावैः सममेधितो जनः

B. परिहासविजल्पितं सखे

C. परमार्थेन न गृह्यतां वचः

D. कालक्रमेण जगतः परिवर्तमाना

E. चक्रारपंक्तिरिव गच्छति भाग्यपंक्तिः

अधः प्रदत्तेषु विकल्पेषु उचिततमम् उत्तरं चिनुत-

A. केवलम् A, B

B. केवलम् B. C

C. केवलम् C, D

D. केवलम् D, E

40. 'अत्र एकः शोभनः बालकः प्रतिदिनम् आगच्छति' अस्मिन् वाक्ये विशेष्यपदम् किम् अस्ति ?

A. एकः B. शोभनः

C. बालकः D. अत्र

41. **प्रथमां सूचीं द्वितीयया सूच्या सह मेलयेत -**

सूची 1	सूची 2
A. श्लेषालङ्कारस्य लक्षणम्	I. साम्यं वाच्यमवैधर्म्यं वाक्यैक्य उपमाद्वयोः
B. उपमाऽलङ्कारस्य लक्षणम्	II. रूपकं रूपितारोपो विषये निरपह्नवे
C. रूपकालङ्कारस्य लक्षणम्	III. श्लिष्टैः पदैरनेकार्थाभिधाने श्लेष उच्यते
D. उत्प्रेक्षाऽलङ्कारस्य लक्षणम्	IV.भवेत्संभावनोत्प्रेक्षा प्रकृतस्य परात्मना

अधः प्रदत्तेषु विकल्पेषु उचिततमम् उत्तरं चिनुत -

A. A-II, B-IV, C-I, D-III

B. A-III, B-I, C-II. D-IV

C. A-II, B-I C-IV, D-III

D. A-III, B-II, C-IV, D-I

42. **'प्रतिकूलतामुपगते हि विधो' इति कस्य अलङ्कारस्योदाहरणमस्ति?**

A. अनुप्रासस्य B. यमकस्य

C. श्लेषस्य D. वक्रोक्तेः

43. **पञ्चतन्त्रम्' इत्यस्य रचयिता अस्ति -**

A. विष्णुः शर्मा B.नारायणपण्डितः

C.भवभूतिः D.भर्तृहरिः

44. **'पितृ + आदेशः' इत्यत्र सन्धिजं रूपं भवति -**

A. पितर्देशः B. पितादेशः

C. पित्रदेशः D. पित्रादेशः

45. **वर्णसङ्ख्यानुसारं छन्दसां क्रमं व्यवस्थापयत -**

A. वंशस्थम् B. अनुष्टुभ्

C. वसन्ततिलका D. इन्द्रवज्रा

E. मालिनी

अधः प्रदत्तेषु विकल्पेषु उचिततमम् उत्तरं चिनुत -

A. B, A, C, D, E

B. B, E, D, C, A

C. B. C. E. A. D

D. B, D, A, C, E

46. **शुद्धवाक्यानां चयनं कुरुत -**

A. हरये रोचते भक्तिः B. जटाभिः तापसः

C. सः जनकस्य सह गच्छामि D. हिमालयेन गंगा वहति

E. अहं ग्रामं वसामि

अधः प्रदत्तेषु विकल्पेषु उचिततमम् उत्तरं चिनुत -

A. केवलम् A, B

B. केवलम् A, C, D

C. केवलम् B. E

D. केवलम् A, C, E

47. **'तथा + एव' इत्यस्य सन्धिजं पदमस्ति -**

A. तथेव B. तथ एव

C. तथैव D. तथाएव

48. **'माता शिशोः मशकान् वारयति' वाक्येऽस्मिन् क्रियापदं किम्?**

A. मशकान् B. वारयति

C. शिशोः D. माता

49. **'नी+तव्य' इत्यस्य किं रूपं भवति -**

A. नीतव्यम् B. नौतव्यम्

C. नेतव्यम् D. नयतव्यम्

50. **कालिदासेन लिखितानि नाटकानि सन्ति -**

A. उत्तररामचरितम् B. मालविकाग्निमित्रम्

C. विक्रमोर्वशीयम् D. बालचरितम्

E. अभिज्ञानशाकुन्तलम्

अधः प्रदत्तेषु विकल्पेषु उचिततमम् उत्तरं चिनुत-

A. केवलम् A, B, C

B. केवलम् B, C, D

C. केवलम् B. C. E

D. केवलम् C, D, E

Answer

1. A	11. B	21. B	31. C	41. B
2. C	12. A	22. B	32. D	42. C
3. A	13. C	23. B	33. C	43. A
4. B	14. B	24. A	34. D	44. D
5. C	15. D	25. B	35. C	45. D
6. B	16. B	26. C	36. A	46. A
7. A	17. B	27. C	37. C	47. C
8. B	18. C	28. C	38. B	48. B
9. B	19. D	29. B	39. D	49. C
10. B	20. B	30. C	40. C	50. C